CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संत कबीर साहेब

कबीर सबद सागर

अज्ञान का अंधेरा मिटाकर चहुं ओर सद्ज्ञान का निर्मल प्रकाश फैलाने वाले कबीर साहेब के अनमोल सबदों का अभूतपूर्व संकलन!

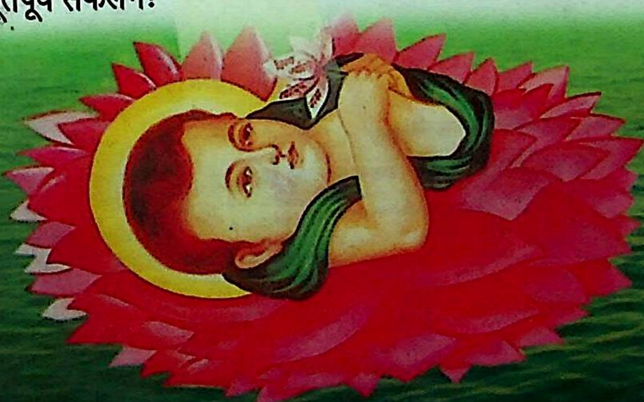

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5.5

॥ कबीर ॥
सबद सागर

(शब्दावली)

संकलनर्ता
महंत देवकीनन्दन दास

राजा पॉकेट बुक्स
330/1, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली–110084

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवीन संस्करण : 2011

● कबीर सबद सागर : सद्गुरु कबीर साहेब

● संकलनकर्ता : महंत देवकीनंदन दास
(अध्यक्ष कबीर मिशन मंदिर, विजय विहार, रिठाला, दिल्ली-85) द्वारा स्वीकृत

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

ISBN : 81-7604-661-2

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के तहत प्रस्तुत पुस्तक में निहित समस्त प्रकाशित सामग्री के कॉपीराइट राजा पॉकेट बुक्स के पास सुरक्षित हैं, अतः कोई भी व्यक्ति अथवा कम्पनी इस पुस्तक का नाम, कवर डिजाइन, प्रकाशित लेख इत्यादि को किसी भी प्रकार से तोड़-मरोड़कर आंशिक या पूर्ण रूप से किसी पुस्तक अथवा किसी सामयिक (न्यूजपेपर, मैगजीन इत्यादि) में प्रकाशक से लिखित अनुमति लिए बिना प्रकाशित करने की चेष्टा न करें, अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे-खर्चे के स्वयं जिम्मेदार होंगे। किसी भी प्रकार के मुकदमे के लिए न्यायक्षेत्र दिल्ली रहेगा।

राजा ऑनलाइन बुक स्टोर

अब आप हमारे ऑनलाइन बुक स्टोर www.rajapocketbooks.com पर अपनी पसंद की पुस्तकें ऑर्डर कर सकते हैं। इस स्टोर पर आप क्रेडिट कार्ड, बैंक ट्रांसफर, पोस्टल मनी ऑर्डर, आदि कई पेमेंट विकल्पों द्वारा पेमेंट कर सकते हैं। आपकी आदेशित पुस्तकें रजि. पोस्ट अथवा स्पीड पोस्ट से तुरंत ही भेज दी जाएंगी। आज ही www.rajapocketbooks.com पर जाएं।

प्रकाशक :
राजा पॉकेट बुक्स
330/1, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611410, 27612036, 27612039,
32938774, 27611227
ई-मेल : sales@rajcomics.com
वेबसाइट : www.rajapocketbooks.com

शोरूम (होलसेल व रिटेल बिक्री केंद्र)
राजा पॉकेट बुक्स
112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां, दिल्ली-110006
फोन : 23251092, 23251109, 32500860

मुद्रक :
प्रिंस प्रिंट प्रोसेस
A-60/1, आजादपुर, दिल्ली-110033

₹ : 110/-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेखकीय

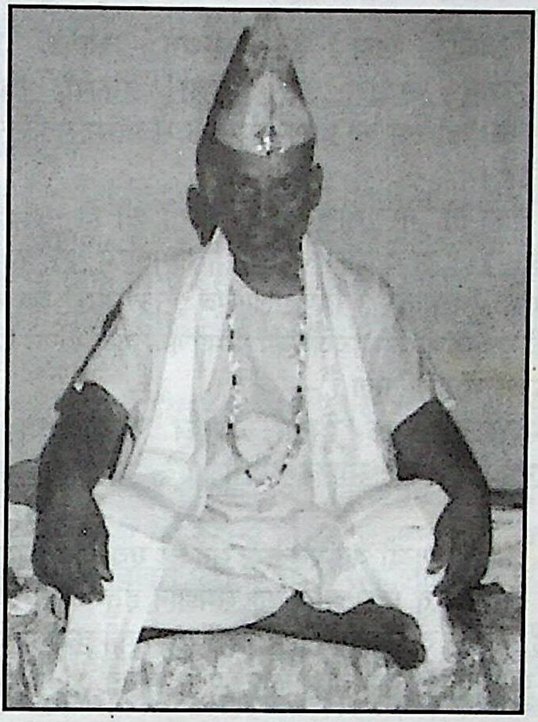

सद्मार्ग दिखाने वाली 'कबीर सबद सागर' नामक यह पुस्तक आपके हाथों में है। इस पुस्तक में आठ प्रकरण हैं—

प्रथम प्रकरण — 144 सबद।
द्वितीय प्रकरण — ज्ञान गुदड़ी।
तृतीय प्रकरण — 80 रेखता।
चतुर्थ प्रकरण — 25 झूलना।
पंचम प्रकरण — 12 मंगल।
षष्ठम प्रकरण — गारी, झूलना, कहरा, बसंत, होली, दादरा, ककहरादि।
सप्तम प्रकरण — अखरावती।
अष्टम प्रकरण — 350 शब्द, होली, चितावनी, प्रेम, मंगल, महिमा नाम, महिमा शब्द, साध महिमा, बिरह और प्रेम विनती, दीनता, भेदबानी, चेतावनी, उपदेश।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तुत पुस्तक कबीर साहेबजी की मूल वाणियों, सबदों को संकलित करने का प्रयास मात्र है। उनकी संपूर्ण वाणियों को संकलित करना एक दुष्कर कार्य है, क्योंकि—

जेते पत्र वनस्पति, औ गंगा की रेन।
पंडित बेचारा क्या कहे, कबीर कहे मुख बैन॥

वाणी अर्बों खर्ब है, ग्रन्थन कोटि हजार।
कर्त्ता पुरुष कबीर है, 'नाभा' किया विचार॥

अतः केवल उन वाणियों को ही इस पुस्तक में सम्मिलित किया गया है जो सुलभ हो सकी हैं।

अल्पबुद्धि वाले तो 'मूल बीजक' की वाणी को ही मूल वाणी कहते हैं जिसमें 84 रमैनी, 115 शब्द, ज्ञान चौंतीसा, विप्रमतीसी, 12 कहरा, 12 वसंत, 2 चाचर, 2 वेली, विरहुली, 3 हिण्डोला एवं 353 साखी का संकलन किया गया है। वे इसी को कबीर साहेबजी का प्रामाणिक ग्रंथ मानते हैं, परंतु बीजक के साखी प्रकरण में ही लिखा है——

जो मिला सो गुरु मिला, शिष्य न मिलया कोय।
छः लख छियानवे सहस्त्र रमैनी, एक जीव पर होय ॥

——288 बी.सा.

कबीर की साखी-शब्दों को पढ़कर, सुनकर एवं गाकर शिष्य साखा गुरु बनकर बढ़ाने लगे, परंतु एक जीव को समझाने हेतु जो 6 लाख 96 हजार रमैनी कही गईं, उन्हें न तो ढूंढ़ पाए और न ही ढूंढ़ने की कोशिश की गई। साक्ष्य के अभाव में कुछ कहा नहीं जा सकता, परंतु साखी-शब्द ही उनके प्रमाण हैं——

साखी आंखी ज्ञान की, समुझ देख मन मांहि।
बिन साखी संसार का, झगड़ा छूटत नाहिं॥

——353 बी.सा.

भागलपुर (बिहार) के उच्चकोटि के प्रतिष्ठित संत मेहीदासजी ने अपनी पुस्तक सत्संग भाग-1 और भाग-2 में बहुत-सी वाणियों को संकलित करने का अथक प्रयास किया है जो कबीर वाणी के नाम से प्रकाशित किसी भी प्रचलित ग्रंथ में नहीं हैं।

कबीर की 'अखरावती' किसी ग्रंथ में नहीं मिली तथा 'आदि ग्रंथ' का कहीं-कहीं जिक्र भले ही आया है परंतु पूर्ण रूप में उपलब्ध नहीं है।

पूजनीय आचार्य श्री गंगाशरण शास्त्रीजी द्वारा संपादित 'महाबीजक' नामक ग्रंथ में अधिक-से-अधिक वाणियों को संकलित किया गया है, परंतु वाणियों में अत्यधिक अशुद्धियां हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डॉ. योगेश्वरजी ने भी 'समग्र कबीर' नामक शोध ग्रंथ में अधिक-से-अधिक वाणियों को दो भागों में संकलित कर सराहनीय प्रयास किया है। उन्होंने बहुत ही परिश्रम व लगन के साथ वाणियों का संग्रह किया है।

हालांकि डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा प्रतिपादित 'कबीर ग्रंथावली' नामक शोध ग्रंथ में भी वाणियों को संकलित करने का यथोचित प्रयास किया गया है, परंतु इसमें 'गुरु ग्रंथ साहेब' को ही प्रामाणिक मानकर उसमें प्रस्तुत वाणियों को ही संकलित किया है।

कबीर पंथ के मूर्धन्य विद्वान पं. युगलानंद बिहारीजी ने पद-यात्रा कर संपूर्ण भारत ही नहीं, काबुल, कंधार, लाहौर, मुल्तान आदि स्थानों का भी भ्रमण किया। उन्हें जो भी वाणी मिली उसे उन्होंने 'कबीर साखी', 'कबीर शब्दावली', 'अनुराग सागर', 'कबीर सागर' आदि अनेकानेक ग्रंथों के रूप में मुंबई प्रेस से प्रकाशित करवाया।

बुरहानपुर नागझिरी से सिर्फ 'बीजक' ग्रंथ को ही प्रमुख स्थान देकर पठन-पाठन शुरू किया।

'साखी ग्रंथ' को मान्यता नहीं दी गई, परंतु श्रद्धेय श्री अभिलाष साहेबजी ने कुछ चुनी हुई साखियों को अपनी प्रेस से छपवाकर मान्यता दी है। फिर भी अधिकाधिक वाणी बिखरी पड़ी हैं, जिन्हें संकलित करने की आवश्यकता है।

परम पूज्य श्री रविन्द्रनाथ टैगोर ने कबीर के सौ पदों एवं साखियों को अंग्रेजी में अनुवादित कर प्रकाशित करवाया। इसी प्रकार कई अन्य लेखकों ने भी कबीर वाणी का उर्दू एवं अंग्रेजी में अनुवाद किया, जो पुस्तकालय तक ही सीमित रहा।

कबीर साहेब की वाणी, उनका दर्शन अपने आप में अद्भुत है।

प्रस्तुत पुस्तक **'कबीर सबद सागर'** (शब्दावली) में मैंने कबीर साहेब की उन वाणियों को संकलित करने का प्रयास किया है जो अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाई थीं। मेरा प्रयास कबीर साहेब की बिखरी वाणियों को संकलित करने एवं प्रकाशित करवाने का एकमात्र लक्ष्य है। निकट भविष्य में उन सभी अप्रकाशित वाणियों को प्रकाशित कर आप पाठकगण की सेवा में प्रस्तुत करना है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में **राजा पॉकेट बुक्स** के प्रकाशक श्रद्धेय श्री राजकुमार गुप्ताजी का बहुत बड़ा योगदान एवं सहयोग है। सुंदर प्रिंटिंग, उत्तम कागज, मोटे अक्षर, साफ एवं स्पष्ट लिपि के कारण सभी वर्ग एवं अवस्था के पाठकों के लिए यह पुस्तक सुरुचिकर और लाभप्रद सिद्ध होगी। इनके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परमार्थ एवं पुरुषार्थ के फलस्वरूप ही यह ग्रंथ संत-महात्माओं तथा पाठकगण की सेवा में निज एवं परहितार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक सभी के लिए कल्याणदायक एवं अनमोल उपहार सिद्ध होगी।

यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठकगण कृपया सूचित करें, जिससे अगले संस्करण में सुधार किया जा सके।

विनीत एवं मंगल कामनाओं सहित

देवकी नन्दन दास

कार्तिक पूर्णिमा

दिनांक 8 नवंबर, 2003

—महंत देवकी नन्दन दास
अध्यक्ष कबीर मिशन मंदिर
विजय विहार, रिठाला, दिल्ली-110085

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तावना

महाभारत काल के 2500 वर्षों के उपरांत भगवान बुद्ध एवं भगवान महावीर का आविर्भाव हुआ। इनके बाद यदि कोई महापुरुष संसार में त्रस्त आत्माओं को शांति एवं सद्मार्ग पर अग्रसित करने हेतु आए तो वह थे—कबीर। कबीर ने समाज की उन सारी मान्यताओं, परम्पराओं, पाखंडों से हटकर एक अनूठा मार्ग प्रदर्शित किया। उनके जैसा उदात्त भावना से युक्त, गंभीर चिंतक, प्रेरक व्यक्तित्व, स्पष्ट वक्ता, विलक्षण शैली, मस्त-मौला, पथ-प्रदर्शक, जन-जन के हृदय को झकझोरने एवं आकर्षित करने वाला कोई दूसरा महापुरुष न हुआ है और न होगा। भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व में उनका नाम श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है। हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान उन्हें भक्ति काल के आदि कवि की संज्ञा देते हैं। इनके बाद मानो संतों की बाढ़-सी आ गई। इसी शृंखला में रविदासजी, नानकदेव, दादू दरिया, भीखा, पानप देव, गरीबदासजी एवं घीसादासजी आदि उल्लेखनीय हैं।

आविर्भाव : कबीर ने ज्येष्ठ पूनम 1455 को लहरतारा (वाराणसी) में कमल पुष्प पर प्रकट होकर स्वयं अपना नाम 'कबीर' बताकर लोगों को आश्चर्य में डाल दिया—

हिन्दू तुरुक के बीच में, मेरा नाम 'कबीर'।
जीव मुक्तावन कारणे, अविगति धरा शरीर।।

कबीर साहेब के प्रमुख शिष्यों में संत मलूकदासजी (इलाहाबाद) हुए हैं—

काशी में गुरु प्रकट भए हैं, ऐसो ज्ञान गंभीर।
तजि काशी मगहर उठि धाए, हिन्दू तुरुक के पीर।।

—संत मलूकदास

कबीर जुलाहा दम्पती नीरु-नीमा को पूर्ण संस्कारवश बालक रूप में लहरतारा में कमल-पुष्प पर प्राप्त हुए। नीरु का घर नरहरपुर था जो 'कबीर चौरा' के नाम से प्रख्यात है। नीमा का घर 'मांडूर' वर्तमान में मडुवाडीह के नाम से जाना जाता है।

मानवता के उद्घोषक : पंडित, पुजारियों एवं पाखंडियों द्वारा शोषित समाज व हिन्दुओं तथा मुसलमानों द्वारा आतंकित दीन-हीन, तिरस्कृत, उपेक्षित समाज के उद्धार के लिए कबीर साहेब ने अपनी ओजस्वी एवं दो-टूक न्माययुक्त वाणियों के द्वारा समाज के अग्रगण्य साधु, योगी, पंडित एवं काजी, मुल्ला को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धर्मविरुद्ध आचरण के लिए फटकारा और उन्हें सद्मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित किया। कबीर घट-घट में, सबके हृदय में परमात्मा के दर्शन करते हैं——

सब घट मेरी साईयाँ, सूनी सेज न कोय।
बलिहारी वा घट की, जा घट प्रकट होय।।

——कबीर सा.

कबीर मानव मात्र के शुभचिंतक, दीन-हीनों एवं तिरस्कृत व्यक्तियों के सखा, मित्र, नेता एवं सभी के हृदय के अभिन्न अंग थे।

सामाजिक प्रेरणा के स्त्रोत : कबीर कुम्हार को देखते हैं, तो बरबस उनके अथक परिश्रम, लगन एवं पुरुषार्थ को देखकर कहते हैं——

माटी कहे कुम्हार से, क्यों तू रूँदे मोय।
एक दिन ऐसा होयगा, मैं रूदूँगी तोय।।

——कबीर

कबीर रूपक में कहते हैं, जिस मिट्टी को रौंदकर तू अपनी उदर-पूर्ति हेतु इतनी मेहनत करता है, परमात्मा को कभी याद तक नहीं करता। एक दिन इसी मिट्टी में तुझे मिलना है। अतः सृजनहार को भी स्मरण किया कर।

मार्ग में चलते हुए लोहार को देखते हैं——

लकड़ी कहे लोहार से, क्यों तू जाड़े मोय।
एक दिन ऐसा होयगा, मैं जारूंगी तोय।।

——कबीर

लोहार लोहे को गर्म कर रूपांतरित करने हेतु, अस्त्र-शस्त्र बनाने हेतु लकड़ी को जलाता है और अपनी उदरपूर्ति करता है। कबीर कहते हैं जब तू इस संसार से प्रस्थान करेगा तो इसी लकड़ी की चिता बनेगी और तू भी इसी तरह जलेगा, इसलिए प्रभु का नाम स्मरण करना चाहिए।

बाग के मार्ग से जाते हुए सुंदर उपवन के फूलों को देखते हैं। प्रातःकाल माली बाग में आता है। मधुर-मधुर मंद-मंद सुगंध आ रही है, भौंरा गुंजन कर रहा है और वे बोल उठते हैं——

माली आवत देखि के, कलियां करी पुकार।
फूली-फूली चुन लियो, काल हमारी बार।।

——कबीर

अर्थात् शरीर की नश्वरता, प्राणी और पदार्थ की नश्वरता की ओर इंगित करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार प्रातःकाल बाग में माली आकर खिले हुए फूलों को तोड़कर ले जाता है और माला आदि बनाकर अपनी उदरपूर्ति करता है ठीक उसी प्रकार तुम्हारा भी हाल होना है। बचपन गया, जवानी भी गई, बुढ़ापा आया, तुम अपने जीवन की पूर्णता को प्राप्त हो गए, लेकिन फिर भी चेतना न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जगी। जिस प्रकार कलियां कल के लिए निराश हो रही हैं कि कल मैं भी पूर्ण विकसित हो जाऊंगी और माली तोड़कर ले जाएगा, ठीक उसी प्रकार प्रतिदिन आस-पास में लोग अपनी जीवन-यात्रा पूरी करते हैं, परंतु चेतना नहीं आती है, माली रूपी काल मुझे भी ग्रासेगा। इसी प्रकार अनेकानेक रूपकों द्वारा कबीर साहेब ने मानव के हृदय की सोई हुई भावना को जगाने की चेष्टा की है।

'धोबिया जल विच मरत प्यासा'—प्यास लगी है पानी में खड़ा है, परंतु पानी के बिना प्यासा मर रहा है। बात कुछ अटपटी-सी लगती है, परंतु बिल्कुल सीधी है। अज्ञानी लोग मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, कैलाश, बद्री, चौसठ तीर्थ आदि में आत्मशांति हेतु भटकते हैं, परमात्मा को प्राप्त करने हेतु अनेकानेक प्रकार के कष्ट झेलते हैं, परंतु वे यह नहीं जानते कि उनके घट के भीतर परमात्मा निवास कर रहे हैं, इसलिए कबीर साहेब गुरु की महत्ता को बताते हुए कहते हैं—

गुरु धोबी शिष्य कापड़ा, साबून सृजनहार।
सुरति शिला पर धोइए, निकसे ज्योति अपार।।

—कबीर

कबीर ने अपनी साखी, शब्दों में गुरु की महत्ता भगवान से भी अधिक कही है। भगवान की कृपा से मनुष्य को जन्म मिलता है, परंतु गुरु-कृपा से मनुष्य भवसागर से तर जाता है। कबीर साहेब ने अपने जीवन में अनेक व्यक्तियों को सद्मार्ग दिखाया। इनमें कुछ नाम इस प्रकार हैं—

लोई : वैष्णव सम्प्रदाय के बनखंडी (वन) में रहने वाले दूधाधारी महात्मा की शिष्या जो बाद में कबीर साहेब की सेवा में शिष्यत्व धारण कर रहने लगी थी।

कमाल : ब्राह्मण मृत बालक को झूंसी (इलाहाबाद) में सिकंदर लोदी के पीर शेख तकी एवं सेना तथा जनसमूह के समक्ष कबीर साहेबजी के द्वारा जीवन-दान देने पर उपस्थित जन-समूह के मुक्त कंठ से 'वाह कबीर साहेब का कमाल, वाह कबीर साहेब का कमाल...' उद्घोष करने पर उस लड़के का नाम कमाल प्रख्यात हुआ और कबीर का शिष्य बनकर उनकी सेवा में रहने लगा।

कमाली : शेख तकी की इकलौती पुत्री 16 वर्ष की अवस्था में अचानक मृत्यु को प्राप्त हो गई। उस समय शेख तकी, सिकंदर आदि झूंसी (इलाहाबाद) में ही थे और कमाल की घटना को देख ही रहे थे कि उसी समय दिल्ली से संवाद-वाहक ने इलाहाबाद झूंसी जाकर शेख तकी को सूचित किया। फिर क्या था सारी दल-बल सेना एवं शेख तकी के विशेष आग्रह तथा सिकंदर लोदी के विशेष निवेदन पर कबीर साहेब दिल्ली आए। हजारों की संख्या में कब्रगाह पर लोग एकत्रित हुए और कब्र से निकलवाकर कबीर साहेब ने उस मृत शेख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तकी की लड़की को जीवनदान दिया। वहां पर भी सभी के मुक्तकंठ से 'वाह कबीर साहेब का कमाल, वाह कबीर साहेब का कमाल...' उद्घोषित हुआ और उसका नाम कमाली प्रख्यात हुआ। वह भी अपने माता-पिता के पास न जाकर कबीर साहेब के शिष्यत्व को धारण कर उनकी सेवा में रहने लगी और सत्संग लाभ लेती रही। कुछ लोगों ने कबीर साहेब को गृहस्थी में बांधने की भी भरपूर कोशिश की और पुत्र-पुत्री तथा पत्नी के रूप में प्रदर्शित करने का भी अज्ञानतावश प्रयास किया जो सर्वथा अनुचित है।

गुरु दीक्षा : स्वामी रामानंदजी उच्च वर्ग के सिवा अन्य वर्गों, वर्णों को दीक्षा नहीं देते थे। अस्पृश्यता, छुआ-छूत, घृणा का वातावरण अधिक जोर पर था। कबीर साहेब ने सबके लिए मुक्ति-द्वार खोल दिया। कबीर साहेब ने रामानंद स्वामी से दीक्षा तो ली, किंतु विधिवत शिष्यत्व को धारण न कर उनको सिर्फ गुरु माना। कबीर साहेब ने एक मर्यादा का पालन कर अनोखा रूप दिखाकर उनकी भ्रांति को तोड़कर सभी के लिए भक्ति-भजन का मार्ग प्रशस्त किया। इसी परम्परा में रविदासजी, नाभाजी आदि उच्च कोटि के संत उनके शिष्य बने और अपने गुरु के नाम को उजागर किया।

अंतर्ध्यान : 120 वर्षों तक काशी में रहने के पश्चात कबीर साहेब ने मगहर (बस्ती) में सन् 1575 में लीला समाप्त की। वहां भी एक विचित्र आश्चर्यजनक घटना घटी जिसे देखकर सभी अचंभित रह गए। कबीर कमल-पुष्प पर प्रकट होकर अंत में पुष्प ही रहे। हिन्दू, मुसलमान की एकता, मानवीय प्रेम का प्रतीक कबीर साहेब की समाधि जिसमें हिन्दू-मुसलमान अपनी-अपनी परम्पराओं के द्वारा आरती, पूजन तथा नमाज अदा करते हैं।

चारों युगों में कबीर : कबीर चारों युगों में स्वेच्छा से आकर भूले हुए जीवों को सद्मार्ग प्रशस्त करने हेतु आए।

चारों युग हम आय चेतावा, कोई कोई हंस हमारा हो।
चारों युगन पुकारियां, यह संशय दिल मांहि।।

—187 बी.सा.

सतयुग में सतसुकृत, त्रेता में मुनीन्द्र, द्वापर में करुणामय तथा कलियुग में कबीर नाम से आविर्भाव हुआ।

जय सत सुकृत, जय मुनीन्द्र प्रभु, जय करुणामय ईश।
जय कबीर कलिमल हरण, सदा नवाऊं शीष।।

विनीत एवं मंगल कामनाओं सहित

कार्तिक पूर्णिमा

देवकी नन्दन दास

दिनांक 8 नवंबर, 2003

—महंत देवकी नन्दन दास
(अध्यक्ष कबीर मिशन मंदिर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय सूची

- **प्रथम प्रकरण** — 13-71
  - सबद
- **द्वितीय प्रकरण** — 72-75
  - ज्ञान-गुदड़ी
- **तृतीय प्रकरण** — 76-118
  - रेखते
- **चतुर्थ प्रकरण** — 119-128
  - झूलने
- **पंचम प्रकरण** — 129-137
  - मंगल
- **षष्ठम प्रकरण** — 138-159
  - राग—गारी, झूलना, कहरा, बसंत, होली, दादरा, ककहरादि
- **सप्तम प्रकरण** — 160-184
  - अखरावती
- **अष्टम प्रकरण** — 185-338
  - शब्दावली (शब्द—होली, चितावनी, प्रेम, मंगल, महिमा नाम, महिमा शब्द, साध महिमा, विरह और प्रेम, विनती, दीनता, भेदवानी, चेतावनी, उपदेश, माया, मिश्रित)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तकी की लड़की को जीवनदान दिया। वहां पर भी सभी के मुक्तकंठ से 'वाह कबीर साहेब का कमाल, वाह कबीर साहेब का कमाल...' उद्घोषित हुआ और उसका नाम कमाली प्रख्यात हुआ। वह भी अपने माता-पिता के पास न जाकर कबीर साहेब के शिष्यत्व को धारण कर उनकी सेवा में रहने लगी और सत्संग लाभ लेती रही। कुछ लोगों ने कबीर साहेब को गृहस्थी में बांधने की भी भरपूर कोशिश की और पुत्र-पुत्री तथा पत्नी के रूप में प्रदर्शित करने का भी अज्ञानतावश प्रयास किया जो सर्वथा अनुचित है।

गुरु दीक्षा : स्वामी रामानंदजी उच्च वर्ग के सिवा अन्य वर्गों, वर्णों को दीक्षा नहीं देते थे। अस्पृश्यता, छुआ-छूत, घृणा का वातावरण अधिक जोर पर था। कबीर साहेब ने सबके लिए मुक्ति-द्वार खोल दिया। कबीर साहेब ने रामानंद स्वामी से दीक्षा तो ली, किंतु विधिवत शिष्यत्व को धारण न कर उनको सिर्फ गुरु माना। कबीर साहेब ने एक मर्यादा का पालन कर अनोखा रूप दिखाकर उनकी भ्रांति को तोड़कर सभी के लिए भक्ति-भजन का मार्ग प्रशस्त किया। इसी परम्परा में रविदासजी, नाभाजी आदि उच्च कोटि के संत उनके शिष्य बने और अपने गुरु के नाम को उजागर किया।

अंतर्ध्यान : 120 वर्षों तक काशी में रहने के पश्चात कबीर साहेब ने मगहर (बस्ती) में सन् 1575 में लीला समाप्त की। वहां भी एक विचित्र आश्चर्यजनक घटना घटी जिसे देखकर सभी अचंभित रह गए। कबीर कमल-पुष्प पर प्रकट होकर अंत में पुष्प ही रहे। हिन्दू, मुसलमान की एकता, मानवीय प्रेम का प्रतीक कबीर साहेब की समाधि जिसमें हिन्दू-मुसलमान अपनी-अपनी परम्पराओं के द्वारा आरती, पूजन तथा नमाज अदा करते हैं।

चारों युगों में कबीर : कबीर चारों युगों में स्वेच्छा से आकर भूले हुए जीवों को सद्मार्ग प्रशस्त करने हेतु आए।

चारों युग हम आय चेतावा, कोई कोई हंस हमारा हो।
चारों युगन पुकारियां, यह संशय दिल मांहि।।

—187 बी.सा.

सतयुग में सतसुकृत, त्रेता में मुनीन्द्र, द्वापर में करुणामय तथा कलियुग में कबीर नाम से आविर्भाव हुआ।

जय सत सुकृत, जय मुनीन्द्र प्रभु, जय करुणामय ईश।
जय कबीर कलिमल हरण, सदा नवाऊं शीष।।

विनीत एवं मंगल कामनाओं सहित

कार्तिक पूर्णिमा

देवकी नन्दन दास

दिनांक 8 नवंबर, 2003

—महंत देवकी नन्दन दास
(अध्यक्ष कबीर मिशन मंदिर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय सूची

- **प्रथम प्रकरण** — 13-71
  - सबद
- **द्वितीय प्रकरण** — 72-75
  - ज्ञान-गुदड़ी
- **तृतीय प्रकरण** — 76-118
  - रेखते
- **चतुर्थ प्रकरण** — 119-128
  - झूलने
- **पंचम प्रकरण** — 129-137
  - मंगल
- **षष्ठम प्रकरण** — 138-159
  - राग—गारी, झूलना, कहरा, बसंत, होली, दादरा, ककहरादि
- **सप्तम प्रकरण** — 160-184
  - अखरावती
- **अष्टम प्रकरण** — 185-338
  - शब्दावली (शब्द—होली, चितावनी, प्रेम, मंगल, महिमा नाम, महिमा शब्द, साध महिमा, विरह और प्रेम, विनती, दीनता, भेदवानी, चेतावनी, उपदेश, माया, मिश्रित)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तकी की लड़की को जीवनदान दिया। वहां पर भी सभी के मुक्तकंठ से 'वाह कबीर साहेब का कमाल, वाह कबीर साहेब का कमाल...' उद्घोषित हुआ और उसका नाम कमाली प्रख्यात हुआ। वह भी अपने माता-पिता के पास न जाकर कबीर साहेब के शिष्यत्व को धारण कर उनकी सेवा में रहने लगी और सत्संग लाभ लेती रही। कुछ लोगों ने कबीर साहेब को गृहस्थी में बांधने की भी भरपूर कोशिश की और पुत्र-पुत्री तथा पत्नी के रूप में प्रदर्शित करने का भी अज्ञानतावश प्रयास किया जो सर्वथा अनुचित है।

गुरु दीक्षा : स्वामी रामानंदजी उच्च वर्ग के सिवा अन्य वर्गों, वर्णों को दीक्षा नहीं देते थे। अस्पृश्यता, छुआ-छूत, घृणा का वातावरण अधिक जोर पर था। कबीर साहेब ने सबके लिए मुक्ति-द्वार खोल दिया। कबीर साहेब ने रामानंद स्वामी से दीक्षा तो ली, किंतु विधिवत शिष्यत्व को धारण न कर उनको सिर्फ गुरु माना। कबीर साहेब ने एक मर्यादा का पालन कर अनोखा रूप दिखाकर उनकी भ्रांति को तोड़कर सभी के लिए भक्ति-भजन का मार्ग प्रशस्त किया। इसी परम्परा में रविदासजी, नाभाजी आदि उच्च कोटि के संत उनके शिष्य बने और अपने गुरु के नाम को उजागर किया।

अंतर्ध्यान : 120 वर्षों तक काशी में रहने के पश्चात कबीर साहेब ने मगहर (बस्ती) में सन् 1575 में लीला समाप्त की। वहां भी एक विचित्र आश्चर्यजनक घटना घटी जिसे देखकर सभी अचंभित रह गए। कबीर कमल-पुष्प पर प्रकट होकर अंत में पुष्प ही रहे। हिन्दू, मुसलमान की एकता, मानवीय प्रेम का प्रतीक कबीर साहेब की समाधि जिसमें हिन्दू-मुसलमान अपनी-अपनी परम्पराओं के द्वारा आरती, पूजन तथा नमाज अदा करते हैं।

चारों युगों में कबीर : कबीर चारों युगों में स्वेच्छा से आकर भूले हुए जीवों को सद्मार्ग प्रशस्त करने हेतु आए।

चारों युग हम आय चेतावा, कोई कोई हंस हमारा हो।
चारों युगन पुकारियां, यह संशय दिल मांहि॥

—187 बी.सा.

सतयुग में सतसुकृत, त्रेता में मुनीन्द्र, द्वापर में करुणामय तथा कलियुग में कबीर नाम से आविर्भाव हुआ।

जय सत सुकृत, जय मुनीन्द्र प्रभु, जय करुणामय ईश।
जय कबीर कलिमल हरण, सदा नवाऊं शीष॥

विनीत एवं मंगल कामनाओं सहित

कार्तिक पूर्णिमा

देवकी नन्दन दास

दिनांक 8 नवंबर, 2003

—महंत देवकी नन्दन दास
(अध्यक्ष कबीर मिशन मंदिर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय सूची

- **प्रथम प्रकरण** — **13-71**
  - सबद
- **द्वितीय प्रकरण** — **72-75**
  - ज्ञान–गुदड़ी
- **तृतीय प्रकरण** — **76-118**
  - रेखते
- **चतुर्थ प्रकरण** — **119-128**
  - झूलने
- **पंचम प्रकरण** — **129-137**
  - मंगल
- **षष्ठम प्रकरण** — **138-159**
  - राग—गारी, झूलना, कहरा, बसंत, होली, दादरा, ककहरादि
- **सप्तम प्रकरण** — **160-184**
  - अखरावती
- **अष्टम प्रकरण** — **185-338**
  - शब्दावली (शब्द—होली, चितावनी, प्रेम, मंगल, महिमा नाम, महिमा शब्द, साध महिमा, विरह और प्रेम, विनती, दीनता, भेदवानी, चेतावनी, उपदेश, माया, मिश्रित)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रथम प्रकरण

संत कबीर साहेब के सबद

1

आपन करम न मेटो जाई।
कर्म का लिखा मिटै धौं कैसे, जो जुग कोटि सिराई।
गुरु बसिष्ठ मिलि लगन सोधाई, सुरज मंत्र इक दीन्हा।
जो सीता रघुनाथ विवाही, पल एक संच न कीन्हा।
तीन लोक के कर्त्ता कहिए, बालि बधो बरियाई।
एक समय ऐसी बनि आई, उनहूं औसर पाई।
नारद मुनि को बदन छिपायो, कीन्हो कपि को सरूपा।
सिसुपाल की भुजा उपारिन, आप भये हरि ठूंठा।
पारबती को बांझ न कहिये, ईस न कहिये भिखारी।
कहैं कबीर करता की बातें, करम की बात निनारी।

2

आपुनपौ आपुहि बिसरायो।
जैसे सुनहा कांच मंदिर में, भर्मित भूंकि मर्‌यो।
ज्यों केहरि बपु निरखि कूप जल, प्रतिमा देखि पर्‌यो।
वैसहि गज फटिक सिला में, दसनन आनि अर्‌यो।
मरकट मूंठि स्वाद नहिं बिहुरै, घर घर रटत फिर्‌यो।
कहै कबीर ललनी के सुवना, तोहि कौन पकर्‌यो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3

अब कहँ चलेउ अकेले मीता, उठहुन करहु घरहु की चिंता।
खीर खांड घृत पिंड संवारा, सो तन लै बाहर करि डारा।
जो सिर रचि रचि बांध्यो पागा, सो सिर रतन बिडारत कागा।
हाड़ जरै जस जंगल लकड़ी, केस जरै जस तृन की कूरी।
आवत संग न जात संघाती, काह भये दल बांधल हाथी।
माया के रस लेन न पाया, अंतर जम बिलारि होय धाया।
कहैं कबीर नर अजहुं न जागा, जम का मुगदर मांझ सिर लागा।

4

अब मन जागत रहु रे भाई।
गाफिल होई कै जनमु गंवायौ, चोर मुसै घरु जाई।।
षट चक्र की कीन्ह कोठरी, बस्तु अनूप बिच पाई।
कुंजी कुलफ प्रान करि राखे, उघरत बार न लाई।
पंच पहरुआ दर महिं रहते, तिनका नहीं पति आरा।
चेत सुचेत चित्त होइ रहहु, तौ लै परगसु उजारा।
नौ घर देखि जु कामिनि भूली, बस्तु अनूनु न पाई।
कहत कबीर नवै घरु मूसे, दसवैं तत्त समाई।

5

अब हम जानिया हो, हरि बाजी का खेल।
डंक बजाय देखाय तमासा, बहुरि सो लेत सकेल।
हरि बाजी सुरनर मुनि जहंडे, माया चाटक लाग्या।
घर में डारिं सकल भरमाया, हृदय ग्यांन न आया।
बाजी झूठ बाजीगर सांचा, साधुन की मति ऐसी।
कहैं कबीर जिन जैसी समुझी, ताकी मति भई तैसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

6

अब हम भयल बहुरि जलमीना, पुरब जनम तप का मद कीन्हा।
तब मैं अछलों मन वैरागी, तजलों मैं कुटुम राम रट लागी।
तजलों मैं कासी मति भई भोरी, प्राननाथ कहु का गति मोरी।
हमहि कुसेवक तुमहि अयाना, दुइमा दोष काहि भगवाना।
हम चलि अइलीं तुम्हरे सरना, कतहुं न देखौं हरि जी के चरना।
हम चलि अइलीं तुम्हरे पासा, दास कबीर भल कीन्ह निरासा।

7

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौं, सभ संतन के प्रतिपाल।
जल उपजी जल ही सो नेहा, रटत पियास पियास।
मैं बिरहिनि ठाढ़ी मग जोउं, राम तुम्हारी आस।
छाड़्यौ गेह नेह लगि तुमसे, भई चरन लौलींन।
तालाबेलि होत घट भीतर, जैसे जल बिनु मींन।
दिवस न भूख रैंनि नहिं निद्रा, घर अंगना न सुहाइ।
सेजरिया बैरिनि भई मोको, जागत रैनि बिहाइ।
मैं तो तुम्हारी दासी हौ सजनां, तुम हमरै भरतार।
दीन दयाल दया करि आवौ, समरथ सिरजनहार।
कै हम प्रान तजत हैं प्यारे, कै अपनी करि लेहु।
दास कबीर बिरह अति बाढ़्यौ, अब तो दरसन देहु।

8

ऐसो हरि सो जगत लरतु है, पांडुर कतहू गरुड़ धरतु है।
मूस बिलाई कैस न हेतू, जंबुक करै केहरि सों खेतू।
अचरज एक देखल संसारा, सोनहा खेदे कुंजर असवारा।
कहै कबीर सुनहु हो संतो, इहै संधि केहु बिरलै बूझै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

9

अवधू कुदरति की गति न्यारी।
रंक निवाज करै वै राजा, भूपति करै भिखारी।
यातै लोग हरफना लागै, चंदन फूलन फूलै।
मच्छ सिकारी रमै जंगल में, सिंघ समुन्दरहि झूलै।
रेंड रूख भये मलयागिरि, चहुं दिसि फूटी बासा।
तीनि लोक ब्रह्माण्ड खण्ड में, अंधरा देख तमासा।
पंगुला मेर सुमेर उलंघै, त्रिभुवन मुकुता डोलै।
गूंगा ग्यान बिग्यान प्रकासै, अदहद बांनी बोलै।
बांधि अकास पतालि पठावै, सेस सरग पर राजै।
कहै कबीर राम हैं राजा, जो कछु करैं सो छाजै।

10

अवधू छाड़हू मन विस्तारा।
सो पद गहो जाहिते सदगति, पारब्रह्म सो न्यारा।
नहीं महादेव नहीं मोहम्मद, हरि हजरत तब नाहीं।
आदम ब्रह्मा कछु नहिं होते, नहीं धूप नहिं छांही।
असी सहस पैगम्बर नाहीं, सहस अठासी मूनी।
सूर्य चन्द्र तारागन नाहीं, मच्छ कच्छ नहिं दूनी।
बेद कितेब सुम्रिति नहिं संजम, जीव नहीं परछाई।
बंग निमाज कलिमा नहिं होते, रामहु नाहिं खोदाई।
आदि अन्त मन मध्य न होते, आतस पवन न पानी।
लख चौरासी जीव जंतु नहिं, साखी सबद न बानी।
कहैं कबीर सुनो हे अवधू, आगे करहु बिचारा।
पूरन ब्रह्म कहां ते प्रगटे, किरतम किन उपचारा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

11

अवधू जांनि राखि मन ठाहरि।
जो कछू खोजौ सो तुमहीं माहिं, काहै को भरमैं बाहरि।
घट ही भीतरि बनखंड गिरिवर, घट ही सात समुंदा।
घट ही भीतरि तारा मंडल, घट भीतरि रवि चंदा।
ममता मेटि सांच करि मुद्रा, आसन सील दिढ़ कीजै।
अनहद सबद कींगरी बाजै, ता जोगी चित दीजै।
सत करि खपर क्षिमा करि झोरी, ग्यांन बिभूति चढ़ाई।
उलटा पवन जटा धरि जोगी, सींगी सुरति बजाई।
नाटक चेटक भरौं कलेवा, इनमैं जोग न होई।
कहै कबीर रमता सो रमना, देही बादि न खोई।

12

अवधू वैतत रावल राता, नाचै बाजन बाजु बराता।
मौर के माथे दुलहा दीन्हा, अकथ जोरि कहाता।
मड़ए के चारन समधी दीन्हा, पुत्र बिबाहल माता।
दुलहिन लीपि चौक बैठारे, निरभय पद परगाता।
भातै उलटि बरातै खायो, भली बनी कुसलाता।
पानीग्रहन भयो भव मंडन, सुखमनि सुरति समानी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, बूझौ पंडित ज्ञानी।

13

आपन आस कीजै बहुतेरा, काहु न मरम पावल हरि केरा।
इन्द्री कहां करै बिसराम, सो कहं गए जो कहत होते राम।
सो कहं गए जो होत सयाना, होय म्रितक वह पदहिं समाना।
रामानंद रामरस माते, कहैं कबीर हम कहि कहि थाके।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

14

आब वे आब मुझे हरि को नाम, और सकल तजु कौने काम।
कहां तब आदम कहां तब हव्वा, कहां तब पीर पैगम्बर हुवा।
कहां तब जिमीं कहां असमान, कहां तब वेदकितेब कुरान।
जिन दुनिया में रची मसीद, झूठा रोजा झूठी ईद।
सांचा एक अलह को नाम, जाको नै नै करहु सलाम।
कहु धौं भिस्त कहां ते आई, किसके कहे तुम छुरी चलाई।
करता किरतम बाजी लाई, हिन्दू तुरुक की राह चलाई।
कहां तब दिवस कहां तब राती, कहां तब किरतम की उतपाती।
नहिं वाके जाति नहीं वाके पांती, कहैं कबीर वाके दिवस न राती।

15

आसन पवन दूरि करि रउरा, छाड़ि कपट नित हरि भजि बौरा।
का सींगों मुद्रा चमकाए, का विभूति सब अंग लगाए।
सो हिन्दू सो मूसलमान, जिसका दुरुस रहै ईमान।
सो जोगी जो धरै उनमनी ध्यान, सो ब्रह्मा जो कथै ब्रह्मग्यान।
कहै कबीर कछु आन न कीजै, राम नाम जपि लाहा लीजै।

16

कोई राम रसिक रस पियहुगे, पियहुगे युग जियहुगे।
फल अलंकृत बीज नहिं बोकला, शुक पंछी रस खायो।
चुवै न बूंद अंग नहिं भीजै, दास भंवर सब संग लायो।।
निगम रिसाल चारि फल लागे, तामे तीन समाई।
एक दूरि चाहै सब कोई, जतन जतन कहु बिरले पाई।।
गए बसंत ग्रीसम रितु आई, बहुरि न तरुवर तर आवै।
कहै कबीर स्वामी सुख सागर, राम मगन होय सो पावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

17

इह जिउ राम नाम लौ लागै, तो जरा मरन छूटै भ्रम भागै।
अगम द्रुगम गढ़ि रचिऔ बास, जामहि जोति करै परगास।
बिजुली चमकै होई अनंद, तंह पउढ़े प्रभु बालगोविंद।
अबरन बरन स्यांम नहिं पीत, हाहू जाड़ न गावै गीत।
अनहद सबद होत झनकार, तंह पउढ़े प्रभु श्री गोपाल।
अखंड मंडल मंडित मंड, त्री असनांन करै त्री खंड।
अगम अगोचर अभिअंतरा, ताकौ पार न पावै धरनीधरा।
कदली पुहुप दीप परकास, ह्रिदा पंकज महि लिया निवास।
द्वादस दल अभिअंतर मंत, जहां पउढ़े श्री कंवलाकंत।
अरध उरध बिच लाइले अकास, सुन्नि मंडल महिं करि परगासु।
ऊहां सूरज नांहीं चंद, आदि निरंजन करै अनंद।
जो ब्रह्मांडि पिंडि सो जानु, मानसरोबरि करि असनांनु।
सोहं हंसा ताकौ जाप, ताहि न लिपै पुन्नि अरु पाप।
अबरन बरन घांम नहिं छांहां, दिवस न राति कछू है तहां।
टार्‌यौ टरै न आवै जाइ, सहज सुन्नि महिं रह्यौ समाइ।
मन मद्धे जांनैं जे कोइ, जो बोले सो आपै होइ।
जोति मांहि मन असथिरु करै, कहै कबीर सो प्रानीं तरै।

18

ऐसे मन लाई रे राम रसनां। कपट भगति कीजै कौन गुना।
ज्यूं मृग नादैं बेध्यो जाई, पिंड परे वाकौ ध्यान न जाइ।
ज्यूं जल मीन हेत करि जानि, प्राण तजै बिसरै नहिं बांनि।
भृंग कीट रहै ल्यौ लाई, ह्वै लौलीन भृंग ह्वै जाइ।
राम नाम निज अमृत सार, सुमिरि सुमिरि जन उतरे पार।
कहै कबीर दासनि को दास, अब नहीं छाड़ौं हरि के चरन निवास।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

19

इहु धन मेरे हरि कै नाउं, गांठि न बांधउं बेंचि न खांउं।
ना मेरे खेती नांउं मेरै बारी, भगति करउं जन सरनि तुम्हारी।
ना मेरे माया नाउं मेरैं पूंजी, तुमहिं छांड़ि जानउं नहिं दूजी।
ना मेरे बंधिप ना मेरे भाई, अंत की बेरियां ना सहाई।
ना मेरे निरधन ज्यूं निधि पाई, कहै कबीर जैसे रंक मिठाई।

20

ऐसी नगरिया मैं केहि बिधि रहनां।
नित उठि कलंक लगावै सहनां।
एकै कुवां पांच पनिहारी।
एकै लेजु भरैं नौ नारी।
फटि गया कुवां बिनसि गई बारी।
बिलग भई पांचौं पनिहारी।
कहै कबीर छांडि मैं मेरा।
उठि गया हाकिम लुटि गया डेरा।

21

कबीरा कबसे भये वैरागी, तुम्हरी सुरति कहां को लागी।
नाथ जी हम तब के वैरागी, हमरि सुरति राम सौं लागी।
ब्रह्मां नहीं जब टोपी दीन्हां, विष्णु नहीं जब टीका।
सिव सक्ती के जनमहुं नाहीं, जबै जोग हंम सीखा।
सतजुग में हम पहिरि पांवरी, त्रेता झोरी डंडा।
द्वापर में हम अड़बंद पहिरा, कलउ फिर्यौ नौ खंडा।
गुरु परताप साधु की संगति, जीति अमरगढ़ आया।
कहै कबीर सुनौ हो अवधू, मैं अभै निरंतर पाया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

22

ऐसो जोगिया है बदकर्मी, जाके गगन अकाश न धरनी।
हाथ न वाके पांव न वाके, रूप न वाके रेखा।
बिना हाट हटवाई लावै, करै बयाई लेखा।
करम न वाके, धरम न वाके, जोग न वाके जुक्ती
सींगी पात्र कछु नहीं वाके, काहे को मांगै भुक्ती।
मैं तोहि जाना, तैं मोहि जाना, मैं तोहि मांह समाना।
उतपति परलय किछवौ न होते, तब कहु कौन ब्रह्म को ध्याना।
जोगिया ने एक ठाठ कियो है, राम रहा भरपूरी।
औषध मूल कछु नहिं वाके, राम सजीवन मूरी।
नटवर बाजी पेखनि पेखै, बाजीगर की बाजी।
कहै कबीर सुनौ हो संतो, भई सो राज बिराजी।

23

झूठे जनि पतियाहु हो, सुनु संत सुजाना।
तेरे घट में ही ठग पूर हैं, मति खोवहु अपाना॥
झूठहि की मंडान है, धरती असमाना।
दसहुं दिसा वाके फंद हैं, जिव घेरिन आना॥
जोग जप तप संजमा, तीरथ व्रत दाना।
नौधा वेद कितेब है, झूठे का बाना॥
काहू के बचनहि फुरे, काहू के करामाती।
मान बड़ाई ले रहे, हिन्दू तुरुक दोऊ जाती॥
बात ब्यौंतै असमान की, मुद्दति नियरानी।
बहुत खुदी दिल राखते, बूड़े बिनु पानी॥
कहैं कबीर कासों कहौं, सकलो जग अंधा।
सांचा सों भागा फिरै, झूठे का बंदा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

24

कबिरा तेरो घर कंदला में, यह जग रहत भुलाना।
गुरु की कही करत नहिं कोई, अमहल महल दिवाना।।
सकल ब्रह्म मंह हंस कबीरा, कागा चोंच पसारा।
मनमथ कर्म धरै सब देही, नाद बिंदु बिस्तारा।।
सकल कबीरा बोलै बानी, पानी में घर छाया।
होत अनंत लूट घट भीतर, घट का मर्म न पाया।।
कामिनि रूपी सकल कबीरा, मृगा चरिन्दा होई।
बड़ बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके, पकरि सकै नहिं कोई।।
ब्रह्मा बरुन कुबेर पुरन्दर, पीपा औ प्रहलादा।।
हिरनाकुस नख उदर बिदारा, तिनहुं को काल न राखा।
गोरख ऐसे दत्त दिगम्बर, नामदेव जयदेव दासा।
तिनकी खबर कहत नहिं कोई, कहां कियो है बासा।।
चौपर खेल होत घट भीतर, जनम का पासा डारा।
दम दम की कोइ खबरि न जानै, करि न सकै निरुआरा।।
चारि दृग महि मंडल रचो है, रूम साम बिच झिल्ली।
तेहि ऊपर कछु अजब तमासा, मारो है जम किल्ली।।
सकल अवतार जाके महि मंडल, अनंत खड़ा कर जोरो।
अद्भुत अगम अगाह रचौ है, ई सब सोभा तोरे।।
सकल कबीरा बोलै बीरा, अजहुं हो हुसियारा।
कहैं कबीरा गुरु सिकली दर्पन, हरदम करहु पुकारा।।

25

देखहु लोगो हरि केर सगाई, माय धरी पूत धियो संग जाई।
सासु ननद मिलि अदल चलाई, मादरिया ग्रिह बैठी जाई।
हम बहनोई राम मोर सारा, हमहि बाप हरि पूत हमारा।
कहैं कबीर ई हरि के बूता, राम रमे ते कुकरि के पूता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

26

कबिरा तेरो बन कंदला में, मानु अहेरा खेलै।
बफ्फुवारी आनंद मृगा, रुचि रुचि सर मेलै।।
चेतत रावल पावन खेड़ा, सहजै मूलहि बांधै।
ध्यान धनुष धरि ज्ञान बान करि, जोगेश्वर सर साधै।।
षट चक्र बेधि कमल बेधि, जाय उजियारो कीन्हा।
काम क्रोध मद लोभ मोह को, हांकि के सावज दीन्हा।।
गगन मध्ये रोकिनि द्वारा, जहां दिवस नहिं राती।
दास कबीरा जाय पहूंचे, बिछुरे संग औ साथी।।

27

कहहु निरंजन कौने बानी।
हाथ पांव मुख स्त्रवन जिभ्या बिनु, का कहि जपहु हो प्रानी।।
ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिए, ज्योति कवन सहिदानी।
ज्योतिहि ज्योति ज्योति दै मारै, तब कहु कहां ज्योति समानी।
चारि बेद ब्रह्मै जो कहिया, तिनहुं न या गति जानी।
कहै कबीर सुनो हो संतो, बूझो पंडित ज्ञानी।।

28

पिया मोरा मिलिया सत्त गियांनी।
सब मैं व्यापक सबकी जांनै, ऐसा अन्तरजामी।
सहज सिंगार प्रेम का चोला, सुरति निरति भरि आनी।
सील संतोख पहिरि दोइ कंगन, होइ रही मगन दीवांनी।
कुमति जराइ करौं मैं काजर, पढ़ी प्रेम रस बांनी।
ऐसा पिय हमं कबहु न देखा, सूरति देखि लुभांनी।
कहै कबीर मिला गुर पूरा, तन की तपनि बुझांनी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

29

कहु रे मुल्ला बांग निवाजा।
एक मसीति दसो दरवाजा।।टेक।।
मनु करि मका किबला करि देही, बोलनहारु परम गुर एही।
बिसमिल तांमसु भरम कंदूरी, भखि लै पंचै होइ सबूरी।
कहे कबीर मैं भया दिवाना, मुसि मुसि मनुवा सहजि समाना।।

30

काको रोवौं गैल बहुतेरा, बहुतक मुअल फिरल नहिं फेरा।
जब हम रोया तब तुम न संभारा, गर्भ बास की बात बिचारा।
अब तैं रोया क्या तैं पाया, केहि कारन तैं मोहि रोवाया।
कहैं कबीर सुनहु नर लोई, काल के बसि परै मति कोई।।

31

गुणां का भेद न्यारौ न्यारौ।
कोई जानैं जाननहारी।। टेक।।
सोइ गजराज राजकुल मंडन, जाके मस्तकि मोती।
और सकल ए भार लदाऊ, महिषी सुत कै गोती।।
सोई भुवंग जाकै मस्तकि मनि है, जोति उजाले खेलै।
और सबै सावन कै भुवगा, जगत पगां तलि पेलै।।
सोई सुमेर उदात उजागर, जामैं धातु निवासा।
और सकल पाखांन बराबरि, टांकी अगिनि प्रकासा।।
सोइ तिरिया जाकै पतिव्रत, आग्यांकार न लोपै।
और सकल ए कूकरि सूकरि, सुंदरि नांउं न ओपै।।
कहै कबीर सोई जन गरुवा, राम भगति ब्रतधारी।
और सकल ए पेट भरन कौ, बहुबिधि बाना धारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

32

कैसे तरो नाथ कैसे तरो, अब बहु कुटिल भरो।
कैसी तेरी सेवा पूजा, कैसो तेरो ध्यान।
ऊपर उजर देखो, बग अनुमान।।
भाव तो भुवंग देखो, अति बिबिचारी।
सुरति सचान तेरी, मति तौ मंजारी।।
अति रे बिरोधी देखो, अति रे सयाना।
छव दरसन देखो, भेष लपटाना।।
कहैं कबीर सुनो नर बन्दा।
डाइनि डिंभ सकल जग खंदा।।

33

को न मुवा कहु पंडित जनां।
सो समुझाइ कहहु मोहि सनां।। टेक।।
मूए ब्रह्मा बिस्नु महेसा, पारबती सुत मुए गनेसा।
मूए चंद मुए रबि सेसा, मुए हनुमत जिन्हि बांधल सेता।
मूए कृस्न मुए करतारा, एक न मुवा जो सिरजनहारा।
कहै कबीर मुवा नहिं सोई, जाकै आवागवन न होई।

34

चतुराई न चतुरभुज पइऐ।
तब लगि मन माधौ न लगइऐ।।टेक।।
क्या जपु क्या तपु क्या ब्रत पूजा, जाकै हृदै भाव है दूजा।
परिहरु लोभ अरु लोकाचारु, परिहरु काम, क्रोध, हंकारु।
करम करत बंधे अहंमेउ, मिलि पाथर की करहीं सेउ।
कहैं कबीर जौ रहै सुभाइ, भोरै भाइ मिलै रघुराई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

35

खसम बिनु तेली को बैल भयो।
बैठत नाहिं साधु की संगति, नाधे जनम गयो।।
बहि बहि मरहु पचहु निज स्वारथ, जम कौ दंड सह्यो।
धन दारा सुत राज काज हित, माथे भार गह्यो।।
खसमहिं छांड़ि विषय रंग राते, पाप के बीज बोयो।
झूठि मुक्ति नर आस जिवन की उन प्रेत को जूठ खायो।।
लख चौरासी जीव जन्तु में, सायर जात बह्यो।
कहैं कबीर सुनहु हो संतो, उन स्वान की पूंछ गह्यो।।

36

गुर बिन दाता कोई नहीं, जग मांगनहारा।
तीनि लोक ब्रह्मांड मैं, सब के भरतारा।। टेक।।
अपराधी तीरथ चले, तीरथ कहां तारै।
काम क्रोध मल भरि रहे, कहा देह पखारै।।
कागद की नौका बनी, बिचि लोहा भारा।
सबद भेद बूझे बिनां, बूड़ै मझधारा।।
कहै कबीर भूलौ कहा, कहां ढूंढ़त डोलै।
बिन सतगुर नहिं पाइए, घट ही में बोलै।।

37

जोगिया फिरि गयौ गगन मंझारी।
रह्यौ समाइ पंच तजि नारी।।टेक।।
गयौ दिसावरि कौन बतावै, जोगिया बहुरि गुफा नहिं आवै।
जरि गौ कंथा धजा गयौ टूटी, भजि गौ डंड खपर गयौ फूटी।
कहै कबीर जोगी जुगुति कमाई, गगन गया सो आवै न जाई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

38

चातक कहां पुकारै दूरी, सो जल जगत रहा भरपूरी।
जेहि जल नाद विंदु को भेदा, षट कर्म सहित उपानेउ बेदा।
जेहि जल जीव सीव को बासा, सो जल धरती अमर परगासा।
जेहि जल उपजल सकल सरीरा, सो जल भेद न जानु कबीरा।।

39

जस मांसु पसु की तस मांसु नर की, रुधिर रुधिर एक सारा जी।
पसु के मांसु भखै सब कोई, नरहि न भखै सियारा जी।
ब्रह्म कुलाल मेदिनी भइया, उपजि बिनसि कित गइया जी।
मासु मछरिया तब तुम खइयो, जो खेतन में बोइया जी।
माटी के करि देवी देवा, काटि काटि जिव देइया जी।
जो तोहरी है सांची देवी, खेत चरत क्यों न लेइया जी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, राम नाम नित लेइया जी।
जो कछु किएउ जिभ्या के स्वारथ, बदला पराया देइया जी।।

40

पंडित देखहु हृदय बिचारी, को पुरुषा को नारी।
सहज समाना घट घट बोलै, वाको चरित अनूपा।
वाको नाम काह कहि लीजै, न वाके बरन न रूपा।।
तै मैं काह करसि नर बौरे, क्या तेरा क्या मेरा।
राम खोदाय सक्ति सिव एकै, कहु धौं काहि निहोरा।।
बेद पुरान कितेब कुराना, नाना भांति बखाना।
हिन्दू तुरुक जैन औ जोगी, ये कल काहु न जाना।।
छौ दरसन महं जो परमाना, तासु नाम मन माना।
कहैं कबीर हमहीं पै बौरे, ये सब खलक सयाना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

41

जारौ मैं या जग की चतुराई।
राम भजन नहिं करत बावरे, जिनि यहु जुगुति बनाई।।टेक।।
माया जोरि जोरि करै इकठी, हंस खैलैं लरिका ब्यौसाई।
सो धन चोर मूसि लै जावै, रहा सहा लै जाइ जंवाई।।
यह माया जैसे कलवारिनि, मद पियाइ राखै बौराई।
एक तौ पड़े धरनि पर लोटैं, एक कहैं चोखी दे माई।।
या माया सुर नर मुनि डंहके, पीर पैगंबर कौं धरि खाई।
जे जन रहैं राम कै सरनैं, हाथ मलै तिनकौं पछिताई।।
कहै कबीर सुनौ भाई साधौ, लै फांसी हमहूं पै आई।
गुर परताप साध की संगति, हरि भजि चल्यौ निसान बजाई।।

42

जियरा जाहुगे हम जांनी।
आवैगी कोई लहरि लोभ की, बूड़ैगा बिनु पानीं। टेक।।
राज करंता राजा जाइगा, रूप दिपंती रांनीं।
जोग करंता जोगी जइगा, कथा सुनंता ग्यांनी।
चंद जाइगा सूर जाइगा, जायगा पवन औ पानीं।
कहै कबीर तेरा संत न जाइगा, रांम भगति ठहरांनी।।

43

मैं कासे कहौं को सुने को पतिआय, फुलवा के छुअत भंवर मरि जाय।
गगन मंडल मंह फुल एक फूला, तर भौ डार उपर भौ मूला।
जोतिये न बोइये सिंचिये न सोई, डार पात बिनु फुल एक होई।
फुल भल फुलल मलिनि भल गांथल, फुलवा बिनसि गो भवंर निरासल।
कहै कबीर सुनो संतो भाई, पंडित जन फुल रहल लोभाई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

44

जोलहा बीनहु हो हरिनामा, जाके सुर नर मुनि धरै ध्याना।
ताना तनै को अहुठा लीन्हा, चरखी चारो वेदा।
सर खूटी एक राम नरायन, पूरऩ प्रगटे भेदा।।
भवसागर एक कठवत कीन्हा, तामें मांड़ी साना।
मांड़ी का तन माड़ि रहो है, माड़ी बिरलै जाना।।
चांद सुरुज दुइ गोड़ा कीन्हा, मांझदीप मांझा कीन्हा।
त्रिभुवननाथ जो मांजन लागे, स्याम मरोरिया दीन्हा।।
पाई करि जब भरना लीन्हो बै बांधन को रामा।
बै भरा तिहु लोकहि बांधे, कोइ न रहत उबाना।।
तीनि लोक एक करिगह कीन्हो, दिगमग कीन्हों ताना।
आदि पुरुष बैठावन बैठे, कबिरा जोति समाना।।

45

सार सबद गहि बांचिहौ, मांनौ इतबारा।
या संसार सभै बंधा, जम जाल पसारा।।टेक।।
अजर अमर एक बिरिछ, निरंजन डारा।
तिरदेवा साखा भए, पाती संसारा।।
ब्रह्मां बेद सही किया, सिव जोग पसारा।
बिस्नु माया परगट किया, उरलै ब्यौहारा।।
कीर भए सब जीयरा, लिए बिख कर चारा।
करम की पासी लाय कै, पकर्‌यौ संसारा।।
जोति सरूपी हाकिमा, जिन अमल पसारा।
तीनि लोक दसहूं दिसा जम रोकै द्वारा।।
अमल मिटावौं तासु का पठवौं भव पारा।
कहै कबीर निरभय करौं जो होइ हमारा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

46

पांड़े बूझि पियहु तुम पानी।
जेहि मटिया के घर मंह बैठै, तामे सृष्टि समानी।
छप्पन कोटि जादव जंह भीजे, मुनि जन सहस अठासी।
पैग पैग पैगम्बर गाड़े, सो सब सरि भो माटी।
तेहि मटिया के भांड़े पाड़े, बूझि पियहु तुम पानी।
मच्छ कच्छ घरियार बियाने, रुधिर नीर जल भरिया।
नदिया नीर नरक बहि आवै, पसु मानुष सब सरिया।
हाड़ झरी झरि गूद गलीगल, दूध कहां ते आया।
सो लै पांडे जेंवन बैठे, मटियहि छूति लगाया।
बेद कितेब छांडि देहु पांड़े, ई सब मन के भर्मा।
कहैं कबीर सुनो हो पांड़े, ई सब तुम्हरे कर्मा।।

47

संतो मते मातु जन रंगी।
पियत पियाला प्रेम सुधारस, मतवाले सतसंगी।।
अरध उरधे ले भट्ठी रोपिनि, ब्रह्म अगिनि परजारी।
मूंदे मदन काटि कर्म कस्मल, संतत चुवत अगारी।।
गोरखदत्त वसिष्ट व्यास कपि, नारद सुक मुनि जोरी।
बैठे सभा संभु सनकादिक, तहं फिरे अधर कटोरी।।
अंबरीख औ जाग जनक जड़, सेख सहस मुख फाना।
कहं लौं गनौं अनंत कोटि लौं, अमहल महल दिवाना।।
ध्रुव प्रहलाद बिभीखन माते, माती सेवरी नारी।
निर्गुन ब्रह्म माते बिन्द्राबन, अजहूं लागि खुमारी।।
सुर नर मुनि यति पीर औलिया, जिन रे पिया तिन्ह जाना।
कहहिं कबीर गूंगे की सक्कर, क्यों करि करै बखाना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

48

तन धरि सुखिया कोइ न देखा, जो देखा सो दुखिया हो।
उदै अस्त की बात कहतु हौ, सबका किया बिबेका हो।।टेक।।
घाटे बाटै सब जग दुखिया, क्या गिरही बैरागी हो।
सुकदेव अचारज दुःख कै कारनि, गरभ सौं माया त्यागी हो।।
जोगी दुखिया जंगम दुखियां, तपसी को दुःख दूनां हो।
आसा त्रिसनां सब कौं ब्यापै, कोई महल न सूनां हो।।
सांच कहौं तो कोई न मांनै, झूठ कहा नहिं जाई हो।
ब्रह्मां बिस्नु महेसर दुखिया, जिन यहु राह चलाई हो।।
अवधू दुखिया भूपति दुखिया, रंक दुखी बिपरीती हो।
कहै कबीर सकल जग दुखिया, संत सुखी मन जीती हो।।

49

जो चरखा जरि आय बढ़ैया ना मरै।
मैं कातौं सूत हजार, चरखुला जिन जरै।।टेक।।
प्रथमहिं नगर पहूंचते परिगौ सोक संतपा।
एक अचंभौ देखिया बिटिया ब्याही बाप।
बाबुल मेरा ब्याह कराव बर ऊतिम लै आइ।
जौ लौं अच्छा वर ना मिलै, तौ लौं तुमहि बिहाय।
प्रथमें नगर पहुंचते, परिगौ सो संताप।
एक अचम्भव हम देखा, जो बिटिया बयाहिल बाप।
समधी के घर लमधी आऐ, आए बहू के भाय।
गोड़े चूल्हा दै दै, चरखा दियो दृढ़ाय।
देव लोक मरि जाएंगे, एक न मरे बढ़ाय।
यह मनरंजन कारणे, चरखा दियो दृढ़ाय।
जो यह चरखा लिखि परे, ताको आवागवन न हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

50

तुम यहि बिधि समुझहु लोई, गोरी मुख मंदिर बाजै।
एक सगुन षट चक्रहि बेधै, बिना वृषभ कोल्हू माचा।
ब्रह्महि पकरि अगिनि महं होमै, मच्छ गगन चढ़ि गाजा।।
नित्त अमावस नित्त ग्रहन है, राहु ग्रासे नित दीजै।
सुरभी भच्छन करत वेद मुख, घन बरिसै तन छीजै।।
त्रिकुटि कुंडल मधे मंदिर बाजै, औघट अंमर भीजै।
पुहुमी का पनिया अंमर भरिया, ई अचरज कोई बूझै।।
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, योगिन सिद्धि पियारी।
सदा रहे सुख संयम अपने, बसुधा आदि कुमारी।।

51

दरमांदा ठाढौ दरबारि।
तुम बिन सुरति करै को मेरी, दरसन दीजै खोलि किंवार।।टेक।।
तुम सम धनी उदार न कोऊ, स्त्रवनन सुनियत सुजस तुम्हार।
मांगौं काहि रंक सभ देखौं, तुम ही तैं मेरो निस्तार।।
जैदेउ नामा विप्र सुदामां, तिनकौं क्रिपा भई है अपार।
कहै कबीर तुम समरथ दाता, चारि पदारथ देत न बार।।

52

देखि देखि जिय अचरज होई, यह पद बूझै बिरला कोई।
धरती उलटि अकासै जाई, चिउंटी के मुख हस्ति समाई।
बिना पवन जहं पर्वत उड़ै, जीव जंतु सब बिरछा चढ़ै।
सूखे सरवर उठे हिलोरा, बिनु जल चकवा करत किलोरा।
बैठा पंडित पढ़ै पुरान, बिनु देखे का करत बखान।
कहैं कबीर जो पद को जान, सोई संत सदा परमान।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

53

नर को ढाढ़स देखहु आई, कछु अकथ कथा है भाई।
सिंह सार्दुल एक हर जोतिन, सीकस बोइन धाना।
बन की भलुइया चाखुर फेरै, छागर भये किसाना।।
कागा कापड़ धोवन लागे, बगुला क्रीपहि दांता।
मांखी मूड़ मुड़ावन लागी, हमहूं जाब बराता।।
छेरी बाघहि ब्याह होत है, मंगल गावै गाई।
बन के रोझ धरि दाइज दीन्हो, गोह लोकन्धे जाई।।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, जो यह पद अर्थावै।
सोई पंडित सोई ज्ञाता, सोई भगत कहावै।।

54

साधौ सो जन उतरे पारा।
जिन मन तैं आपा डारा।। टेक।।
कोई कहै मैं ग्यानी रे भाई, कोई कहै मैं त्यागी।
कोई कहै मैं इन्द्री जीती, अहं सभनि कौ लागी।।
कोई कहै मैं जोगी रे भाई, कोई कहै मैं भोगी।
मैं तैं आपा दूरि न डारा, कैसे जीवै रोगी।।
कोई कहै मैं दाता रे भाई, कोई कहै मैं तपसी।
निज तत नांउं निहचै नहिं जानां, सब माया मैं खपसी।।
कोई कहै मैं जगती जांनौं, कोई कहै मैं रहनी।
आतम देव सौं परचा नांहीं, यह सब झूठी कहानी।।
कोई कहै धरम सब साधे, और बरत सब कीन्हा।
आपा कौ आंटी नहिं निकसी, करज बहुत सिरि लीन्हा।।
गरब गुमांना सब दूरि निवारै, करनी कौ बल नाहीं।
कहै कबीर साहेब का बंदा, पहुंचा हरिपद मांही।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

55

नर को नहिं परतीति हमारी।
झूठा बनिज कियो झूठे सो, पूंजी सबन मिली हारी॥
षट दरसन मिलि पंथ चलायो, तिरदेवा अधिकारी।
राजा देस बड़ो परपंची, रइयत रहत उजारी॥
इतते उत उतते इत रहहीं, जम की सांड़ सवारी।
क्यों कपि डोरि बांधि बाजीगर, अपनी खुसी परारी॥
इहै पेड़ उतपति परलय का, बिषया सबै बिकारी।
जैसे स्वान अपावन राजी, त्यौं लागी संसारी॥
कहैं कबीर यह अद्‌भुत ज्ञाना, को मानै बात हमारी।
अजहूं लेउं छुड़ाय काल सो, जो करै सुरति संभारी॥

56

मन तू नाहक दुंद मचाये॥टेक॥
कर अस्नान छूयो नहि काहू,
पाती फूल चढाये।
मूरत से दुनिया फल मांगे,
अपने हाथ बनाये॥
यह जग पूजे देव देहरा,
तीरथ वर्त अन्हाये।
चलत फिरत में पांव दुखित भये,
यह दुःख कहां समाये।
सांचे के संग सांच बसत है,
झूठे मार हटाये।
कहे कबीर जहं सांच वस्तु है,
सहज दर्शन पाये॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

57

नरहरि लागी दौं बिकार बिनु ईंधन, मिलै न बुझावनहारा।
मैं जानौं तोही सो ब्यापै, जरत सकल संसारा।।
पानी मांही अगिनि को अंकुर, जरत बुझावै पानी।
एक न जरै जरै नव नारी, जुक्ति न काहू जानी।।
सहर जरै पहरू सुख सोवै, कहै कुसल घर मेरा।
पुरिया जरै वस्तु निज उबरै, बिकल राम रंग तेरा।।
कुबुजा पुरुष गले एक लागा, पूजि न मन की सरधा।
करत विचार जनम गौ खीसे, ई तन रहल असाधा।।
जानि बूझि जो कपट करतु है, तेहि अस मंद न कोई।
कहैं कबीर तेहि मूढ़ को, भला कवन बिधि होई।।

58

नाचु रे मेरो मन नट होई।।टेक।।
म्यांन कै ढोल बजाइ रैनि दिन, सबद सुनैं सब कोई।
राहु केतु अरु नवग्रह नाचैं, जमपुर आनंद होई।।
छापा तिलक लगाइ बांस चढ़ि, होइ रहु जग तैं न्यारा।।
प्रेम मगन होइ नाचु सभा मैं, रीझै सिरजनहारा।।
जौं तूं कूदि जाउ भवसागर, कला बदौं मैं तेरी।
कहै कबीर राजा रांम भजन सौं, नव निधि होइगी चेरी।।

59

हंसा प्यारे सरवर तजि कहं जाय।
जेहि सरवर बिच मोतिया चुगते, बहुबिधि केलि कराय।।
सूखे ताल पुरइन जल छांड़े, कमल गए कुम्हिलाय।
कहैं कबीर जो अबकी बिछुरे, बहुरि मिलो कब आय।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

60

बंदे करिले आपु निबेरा।
आपु जियत लखु आपु ठौर करु, मुए कहां घर तेरा।।
यहि अवसर नहिं चेतहु प्रानी, अंत कोई नहिं तेरा।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, कठिन काल का घेरा।।

61

ना हरि भजसि न आदति छूटी।
सब्दहिं समुझि सुधारत नाहीं, आंधर भए हियेहु की फूटी।।
पानी मांहि पखान की रेखा, ठोंकत उठै भभूका।
सहस घड़ा नित उठि जल ढारै, फिर सूखे का सूखा।।
सेतहि सेत सितंग भौ, सैन बाढ़ि अधिकाई।
जो सनिपात रोगिया मारै, सो साधुन सिधि पाई।।
अनहद कहत कहत जग विनसै, अनहद सृष्टि समानी।
निकट पयाना जमपुर धावै, बोलै एकै बानी।।
सतगुरु मिलै बहुत सुख लहिए, सतगुरु सब्द सुधारै।
कहैं कबीर ते सदा सुखी है, जो यह पदहिं बिचारैं।।

62

लाज न मरहु कहहु घरु मेरा।
अंत की बार नहीं कछु तेरा।।टेक।।
उपजै निपजै निपजि समाई, नैनन देखत यह जगु जाई।
बहुत जतन करि काया पाली, मरती बार अगिनि संग जाली।
चोआ चंदन मरदन अंगा, सो तनु जलै काठ कै संगा।
कहै कबीर सुनहु रे गुनियां, बिनसैगो रूप देखै सभ दुनियां।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

63

पंडित एक अचरज बड़ होई।
एक मरे मुए अन्न नहिं खाई, एक मरै सीझै रसोई।।
करि अस्नान देवन की पूजा, नवगुन कांध जनेऊ।
हंड़िया हाड़ हाड़ थारीया मुख, अब षट कर्म बनेऊ।।
धरम करै जहां जीव बधै तहां, अकरम करे मोरे भाई।
जो तोहरा को ब्राह्मन कहिए, तो काको कहिए कसाई।।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, भर्म भुली दुनियाई।
अपरमपार पार पुरुषोतम, या गति बिरलै पाई।।

64

पंडित देखहु मन में जानी।
कहु धौं छूति कहां से उपजी, तबहिं छूति तुम मानी।।
नादे बिंदे रुधिर के संगे, घटही में घट सपचै।
अष्ट कमल होइ पुहमी आया, छूति कहां से उपजै।।
लख चौरासी नाना वासन, सो सब सरि भौ माटी।
एकहि पाट सकल बैठाए, छूति लेत धौं काकी।।
छूतिहि जेवन छूतिहि अंचवन, छूतिहि जगत उपजाया।
कहैं कबीर ते छूति विवरजित, जाके संग न माया।।

65

बुझ बुझ पंडित बिरवा न होय, आधा बसे पुरुष आधा बसे जोय।
बिरवा एक सकल संसारा, स्वर्ग सीस जड़ गई पाताला।
बारह पखुरी चौबिस पाता, धन बरोह लागे चहुं पासा।
फूलै न फलै वाकी है बानी, रैनि दिवस विकार चुवै पानी।
कहैं कबीर कछु अछलो न तहिया, हरि बिरवा प्रतिपालि यो जहिया।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

66

पंडित मिथ्या करहु बिचारा, ना वह सृष्टि न सिरजनहारा।
थूल अस्थूल पवन नहिं पावक, रबि ससि धरनि न नीरा।
जोति सरूप काल नहिं तहंवा, बचन न आहि सरीरा।।
धर्म कर्म कछु नाहीं उहवां, ना वहां मंत्र न पूजा।
संजम सहित भाव नहिं उहवां, सो धौं एक कि दूजा।।
गोरख राम एकौ नहिं उहवां, ना वहां बेद बिचारा।
हरि हर ब्रह्मा नहिं सिव सक्ती, तीर्थउ नाहिं अचारा।।
माय बाप गुरु जाके नाहीं, सो धौं दूजा कि अकेला।
कहैं कबीर जो अब की बूझै, सोइ गुरु हम चेला।।

67

पंडित सोधि कहहु समुझाई, जाते आवागमन नसाई।
अर्थ धर्म औ काम मोक्ष कहु, कवन दिसा बसे भाई।।
उतर कि दच्छिन पुरुब कि पच्छिम, सरग पाताल कि मांही।
बिनु गोपाल ठौर नहिं कतहूं, नरक जात धौं कांही।।
अनजाने को सरग नरक है, हरि जाने कौ नांहीं।
जेहि डर ते सब लोग डरत हैं, सो डर हमरे नांही।।
पाप पुन्न की संका नाहीं, सरग नरक नहिं जाहीं।
कहै कबीर सुनो हो संतो, जहां का पद तहां समाहीं।।

68

राम जपत तनु जरि किन जाई।
राम नाम चितु रह्यौ समाई।।टेक।।
आपहिं पावक आपहिं पवनां, जारै खसम त राखै कवनां।
काको जरै काहि होइ हांनि, नटबिधि खेलै सारंगपांनि।
कहै कबीर अक्खर दुइ भाखि, होइगा राम त लेइगा राखि।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

69

पवनपति उनमनि रहनु खरा।
तहां जनम न मरन जुरा।।टेक।।
मन बिंदत बिंदहि पावा, गुरमुख तैं अगम बतावा।
जब नख सिख यहु मन चीन्हा, तब अंतरि मज्जनु कीन्हा।
उलटीले सकंति सहारं, पैसीले गगन मझारं।
बेधीले चक्र भुअंगा, भेठीले राइ निसंगा।
चूकीले मोह पियासं, तहां ससिहर सूर गरासं।
जब कुभंक भसरिपुरि लीनां, तब बाजै अनहद बीनां।
मैं बकतै बकति सुनावा, सुरतैं तहां कछू न पावा।
कहै कबीर बिचारं, करता लै उतरसि पारं।

70

है साधू संसार मैं कंवला जल मांहीं।
सदा सरबदा संगि रहैं जल परसत नांहीं।।टेक।।
जल केरी ज्यौं कुकुही जल मांहि रहाई।
पांनीं पंख लिपै नहीं कछु असर न जाई।।
मींन तलै जल ऊपरै कछु लगै न भारा।
आड़ अटक मांनै नहीं पौंड़े जलधारा।।
जैसै सीप समंद मैं चित देइ अकासा।
कूर्म कला है खेलही तस साहेब दासा।।
जुगति जंबूरै पाइया बिसहर लपटाई।।
वाकौ बिख व्यापै नहीं गुरगंमि सो पाई।।
षड रस भोजन बिंजना बहु पाक मिठाई।
जिभ्या लेस लगै नहीं उनकै चिकनाई।।
बांबी मैं बिसहर बसै कोई पकरि न पावै।
कहै कबीर कोई गारड़ तापैं सहजैं आवै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

71

पूजहु राम एक ही देवा।
सांचा न्हावन गुरु की सेवा॥टेक॥
अंतरि मैल ले तीरथ न्हावै, तिन बैकुण्ठ न जाना।
लोक पतीजैं कछू न होवै, नांहीं राम अयांनां॥
जल कै मज्जनि जे गति होवै, नित नित मेंडुक न्हावै।
जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर, फिरि फिरि जोनीं आवैं॥
हिरदै कठोर मरै बानारसि, नरकु न बांच्या जाई।
हरि का दास मरै जो मगहरि, तौ सगली सैंन तराई॥
दिवस न रैनि बेदु नहिं सासत, तहां बसै निरंकारा।
कहै कबीर नर तिसहिं धियावहु, बावरिया संसारा॥

72

भाई रे गइया एक बिरंचि दियो है, भार अभार भौ भाई।
नौ नारी को पानि पियतु है, तृखा न तेउ बुझाई॥
कोठा बहत्तर औ लौ लावै, बज्र केंवार लगाई।
खूंटा गाड़ि डोरि दृढ़ बांधे, तइयों तोरि पराई॥
चारि वृक्ष छव साखा वाके, पत्र अठारह भाई।
एतिक ले गम कीहिस गइया, गइया अति हरहाई॥
ई सातो औरो हैं सातो, नौ औ चौदह भाई।
एतिक ले गइया खाय बढ़ायो, गइया तहुं न अघाई॥
पुरता में राती है गइया, स्वेत सींग है भाई।
अबरन बरन कछू नहिं वाके, खाद्य अखाद्यै खाई॥
ब्रह्मा विष्नु खोजि कै आए, सिव सनकादिक भाई।
सिद्ध अनंत वहि खोजि परे है, गइया किनहु न पाई॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, जो यह पद अर्थावै।
जो यहि पद को गाय बिचारै, आगे होय निरवाहै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

73

फल मीठा पै तरवर ऊंचा, कौन जतन करि लीजै।
नेक निचोइ सुधा रस वाकौ, कौन जुगति सौं पीजै।।टेक।।
पेड़ विकट है महा सिलहला, अगह गहा नहिं जावै।
तन मन मेल्हि चढ़ै सरधा सौं, तब वा फल कौं खावै।।
बहुतक लोग चढ़े अनभेदू, देखा देखी गहि बांहीं।
रपटि गांव गिरि परे अधर तैं आइ परे भुई मांहीं।।
सील सांच कै खूंटे धरि पग, ग्यांन गुरू गहि डोरा।
कहै कबीर सुनौ भाई साधौ, तब वा फल कौं तोरा।।

74

बाबा माया मोह मोहित कीन्हा।
तातैं ग्यांन रतनु हरि लीन्हा।।टेक।।
जगि जीवनु ऐसा सुपिनै जैसा, जीवन सुपिन समानं।
सांचु कहि हम गांठि दीन्हों, छोड़ि परम निधांन।।
जोति देखि पतंग उरझौ, पसु न पेखै आगि।
काल फांस न मुगध चेतै, कनक कांमिनि लागि।।
करि बिचार बिकार परिहरि, तरन तारन सोई।
कहै कबीर भगवंत भजि नर, दुतिआ और नांहीं कोई।।

75

वह बिरवा चीन्है जो कोई, जरा मरन रहित तन होई।
बिरवा एक सकल संसारा, पेड़ एक फूटल तिनि डारा।
मध्य कि डार चारि फल लागा, साखा पत्र गिनै को वाका।
बेलि एक त्रिभुवन लपटानी, बांधे ते छूटहिं नहिं ज्ञानी।
कहैं कबीर हम जात पुकारा, पंडित होय सो लेइ बिचारा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

76

बाबू ऐसा है संसार तिहारो, ई है कलि ब्यौहारो।
को अब अनुख सहै प्रतिदिन को, नाहिन रहनि हमारो।।
सुम्रिति सुहाय सबै कोइ जानै, हृदया तत्व न बूझै।
निरजिव आगे सरजिव थापै, लोचन कछू न सूझै।।
तजि अमृत बिख काहे को अंचवैं, गांठी बांधिन खोटा।
चोरन दीन्हा पाट सिंहासन, साहुन से भयो ओटा।।
कहैं कबीर झूठे मिलि झूठा, ठगही ठग ब्यौहारा।
तीनि लोक भरपूर रहो है, नाहिन है पतियारा।।

77

बावरे तैं ग्यांन बिचारु न पाया।
बिरथा जनमु गंवाया।। टेक।।
थाके नैन स्त्रवन सुनि थाके, थाकी सुन्दर काया।
जांमन मरनां ए दोइ थाके, एक न थाकी माया।।
तब लगि प्रानीं तिसै सरेवहु, जब लगि घट मंहि सांसा।
भगति जाउ पर भाव न जइयौ, हरि के चरन निवासा।।
जो जन जांनि भजहिं अबिगत कौं, तिनका कछू न नासा।
कहैं कबीर ते कबहुं न हारहिं, ढालि जु जानंहि पासा।।

78

हो दारी के ले देउं तोहि गारी, तैं समुझु सुपंथ बिचारी।
घरहू के नाह जो अपना, तिनहू से भेंट न सपना।
ब्राह्मन छत्री बानी, तिनहू कहल नहिं मानी।
जोगी जंगम जेते, आपु गहे हैं तेते।
कहैं कबीर एक जोगी, वे तो भरमि भरमि भौ भोगी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

79

जारो जग का नेहरा, मन बौरा हो।
जामें सोग सन्ताप, समुझि मन बौरा हो।
तन धन से क्या गर्भ सी, मन बौरा हो।
भस्म कीन्ह जाके साज, समुझि मन बौरा हो।
बिना नेव का देव घरा, मन बौरा हो।
बिन कहगिल की ईंट, समुझि मन बौरा हो।
कालबूत की हस्तिनी, मन बौरा हो।
चित्र रचो जगदीश, समुझि मन बौरा हो।
काम अन्ध गज बशि परे, मन बौरा हो।
अंकुश सहियो सीस, समुझि मन बौरा हो।
मर्कट मूठी स्वाद की, मन बौरा हो।
लीन्हों भुजा पसारि, समुझि मन बौरा हो।
छूटन की संशय परी, मन बौरा हो।
घर-घर नाचेउ द्वार, समुझि मन बौरा हो।
ऊंच नीच समझेउ नहीं, मन बौरा हो।
घर घर खायो डांग, समुझि मन बौरा हो।
ज्यों सुवना ललनी गह्यो, मन बौरा हो।
ऐसो भरम विचार, समुझि मन बौरा हो।
पढ़े गुने क्या कीजिए, मन बौरा हो।
अन्त बिलैया खाय, समुझि मन बौरा हो।
सूने घर का पाहुना, मन बौरा हो।
ज्यों आवैं त्यों जाय, समुझि मन बौरा हो।
नहाने को तीरथ घना, मन बौरा हो।
पुजबे को बहु देव, समुझि मन बौरा हो।
बिनु पानी नर बूड़हीं, मन बौरा हो।
तुम टेकेउ राम जहज, समुझि मन बौरा हो।
कहहिं कबीर जग भर्मिया, मन बौरा हो।
तुम छाड़हु हरि की सेव, समुझि मन बौरा हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

80

बुझ बुझ पंडित पद निरबान, सांझ परे कहवां बसे भान।
उंच निच परबत ढेला न ईंट, बिनु गायन तहंवा उठे गीत।।
ओस न प्यास मंदिर नहिं जंहवा, सहसौं धेनु दुहावैं तहंवा।
नित्त अमावस नित संक्रान्ति, नित नित नवग्रह बैठे पांति।।
मैं तोहि पूछौं पंडित जना, हृदया ग्रहन लागु केहि खना।
कहैं कबीर इतनो नहिं जान, कवन सबद गुरु लागा कान।।

81

बुझ बुझ पंडित मन चित लाय।
कबहुं भरल है कबहुं सुखाय।।
खन ऊबै खन डूबै खन औगाह।
रतन न मिलै पावै नहिं थाह।।
नदिया नहीं सांसरि बहै नीर।
मच्छ न मरै केवट रहै तीर।।
पोखर नहिं बांधल तहं घाट।
पुरइन नांहि कवंल मंह बांट।।
कहै कबीर ई मन का धोख।
बैठा रहै चला चहै चोख।।

82

लोग बोलैं दूरि गए कबीर, या मति कोइ कोइ जानै धीर।
दसरथ सुत तिहुं लोकहिं जाना, राम नाम का मरम है आना।।
जेहि जिव जानि परा जस लेखा, रजु को कहे उरग सम पेखा।
जद्यपि फल उत्तम गुन जाना, हरि छोड़ि मन मुक्ति अनुमाना।
हरि अधार जस मीनहि नीरा, और जतन कछु कहै कबीरा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

83

बूझहु पंडित करहु बिचारा, पुरुषा है की नारी।
ब्राह्मन के घर ब्राह्मनि होती, जोगी के घर चेली।
कलमा पढ़ि पढ़ि भई तुर्किनी, कलि मंह रहति अकेली।।
बर नहिं बरै ब्याह नहिं करई, पूत जनवामन हारी।
कारे मूंड एक नहिं छाड़ै, अजहूं आदि कुमारी।।
मैके रहै जाय नहिं ससुरे, सांई संग न सोवै।
कहहिं कबीर वे जुग जुग जीवैं, जाति पांति कुल खोवैं।।

84

बूझि लीजै ब्रह्म ज्ञानी।
घूरि घूरि बरखा बरसावै, परिया बूंद न पानी।।
चिंउटी के पग हस्ती बांधे, छेरी बीग रखावै।
उदधि मांह ते निकरि छांछरी, चौड़े ग्रीह करावै।।
मेढ़क सर्प रहत एक संगे, बिलैया स्वान बियाही।
नित उठि सिंह सियार सों डरपे, अद्भुत कथो न जाई।।
संसय मिरगा तन बन घेरे, पारथ बाना मेलै।
उदधि भूप ते तरुवर डाहै, मच्छ अहेरा खेलै।।
कहैं कबीर यह अद्‌भुत ज्ञाना, जो यहि ज्ञानहि बूझै।
बिनु पंखै उड़ि जाइ अकासै, जीवहिं मरन न सूझै।।

85

यह भ्रम भूत सकल जग खाया, जिन जिन पूजा तिन जहंड़ाया।
अंड न पिंड प्रान नहिं देही, कोटि कोटि जिव कौतुक देही।
बकरी मुर्गी कीन्हेउ छेवा, अगिले जनम उन औसर लेवा।
कहैं कबीर सुनहु नर लोई, भुतवा के पूजे भुतवै होई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

86

भाई रे अद्भुत रूप अनूप कथो है, कहौं तो को पतियाई।
जहं जहं देखौं तहं तहं सोई, सब घट रहा समाई।।
लछि बिनु सुख दरिद्र बिनु दुख है, नींद बिना सुख सोवै।
जस बिनु ज्योति रूप बिनु आसिक, रत्न बिहूना रोवै।।
भ्रम बिनु गंजन मनि बिनु निरखन, रूप बिना बहु रूपा।
थिति बिनु सुरति रहस बिनु आनंद, ऐसो चरित अनूपा।।
कहहिं कबीर जगत हरि मानिक, देखहु चित अनुमानी।
परिहरि लाभै लोभ कुटुंब तजि, भजहु न सारंगपानी।।

87

भाई रे अनी लड़ै सोई सूरा।
दोइ दल बिचि खेलै पूरा।।टेक।।
जब बजै जुझाउर बाजा, तब कायर उठि उठि भाजा।
कोई सूर लड़ै मैदाना, जिन मारि किया घमसाना।
जहं बांधि सकल हथियारा, गुर ग्यांन कौ खड्ग सम्हारा।
जब बस कियौ पांचौ थाना, तब राम भया मिहरबांना।
मन मारि अगमपुर लीया, चित्रगुप्त परे डेरा कीया।
गढ़ फिर गई राम दोहाई, कबीरा अबिगति की सरनाई।।

88

राम न रमसि कौन डंड लागा, मरि जैबे का करिबै अभागा।
कोई तीरथ कोई मुंडित केसा, पाषंड मंत्र भर्म उपदेसा।
बिद्या वेद पढ़ि करै हंकारा, अंत काल मुख फांकै छारा।
दुखित सुखित होइ कुटुंब जेंवावै, मरण बेर एकसर दुख पावै।
कहै कबीर यह कलि है खोटी, जो रहै करवा सो निकसै टोटी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

89

भाई रे नयन रसिक जो जागै।
पारब्रह्म अविगत अविनासी, कैसेहु के मन लागै।।
अमली लोग खुमारी तृष्ना, कहुं संतोष न पावै।
काम क्रोध दूनो मतवारे, माया भरि भरि प्यावै।।
ब्रह्म कुलाल चढ़ाइन भट्ठी, लै इन्द्री रस चाखै।
संगहि पोच है ज्ञान पुकारै, चतुरा होय सो नाखै।।
संकट सोच पोच यह कलिमहं, बहुतक ब्याधि सरीरा।
जहंवा धीर गंभीर अति निस्चल, तहं उठि मिलहु कबीरा।।

90

भाग जाकै संत पाहुनां आवैं।
द्वारै रचिहैं कथा कीरतन, हिलिमिलि मंगल गावैं।।टेक।।
भयौ लाभ चरनां अंम्रित कौ, महाप्रसाद की आसा।
जाकौं जोग जग्गि तप कीजै, सो संतन के पासा।।
जो प्रसाद देवन कौ दुरलभ, संत सदा ही पाहीं।
कहै कबीर हरि भगतबछल है, सो संतन के मांही।।

91

संतो अचरज एक भौ भारी, पुत्र धरल महतारी।
पिता के संगहि भई बावरी, कन्या रहलि कुंवारी।
खसमहिं छोड़ि ससुर संग गौनी, सो किन लेहु बिचारी।।
भाई के संग सासुर गौनी, सासुहि सावत दीन्हा।
ननद भौज परपंच रच्यौ है, मोर नाम कहि लीन्हा।।
समधी के संग नाहीं आई, सहज भई घरबारी।
कहै कबीर सुनो हो संतो, पुरुष जन्म भौ नारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

92

भूला बे अहमक नादाना, तुम हरदम रामहिं ना जाना।
बरबस आनि कै गाय पछारिन, गला काटि जिव आपु लिआ।
जियत जीव मुर्दा करि डारा, तिसको कहत हलाल हुआ।।
जाहि मासु को पाक कहत हो, ताकी उतपति सुनु भाई।
रज बीरज सो मांस उपाने, मांस नपाक जो तुम खाई।।
अपन दोस कहत नहिं अहमक, कहत हमारे बड़न किया।
उसका खून तुम्हारी गर्दन, जिन्ह तुमको उपदेस दिया।।
स्याही गई सपेदी आई, दिल सपेद अजहूं न हुआ।
रोजा बंग निमाज का कीजै, हुजरे भीतर पैठि मुआ।।
पंडित बेद पुरान पढ़तु है, मुल्ला पढ़ै कुराना।
कहैं कबीर दोउ गए नरक महं, जिन्ह हरदम रामहि ना जाना।।

93

ई मन बानियां बांनि न छोड़ै।
जाकै घर में कुबुधि बनांनीं पल पल में चित चोरै।।टेक।।
जनम जनम के मारा बनियां अजहूं पूर न तोलै।
कूर कपट की पासंग डारै फूला फूला डोलै।
पांच कुटुम्बी महा हरामी अम्रित मैं बिख घोलै।
कहैं कबीर सुनौ भाई साधौ कुटिल गांठि नां खोलै।।

94

हौं बारी मुख फेरि पियारे।
करवट दै मोहि काहे कौं मारे।। टेक।।
करवत भला न करवट तोरी, लागु गलै सुनु बिनती मोरी।
हम तुम बीच भयौ नहिं कोई, तुमहिं सो कंत नारी हंम सोई।
कहत कबीर सुनौ रे लोई, अब तुम्हरी परतीति न होई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

95

मरिहो रे तन का ले करिहो, प्रान छुटे बाहर लै डरिहो।
काया बिगुरचनि अनबनि बाटी, कोई जारै कोई गाड़ै माटी।
हिन्दू जारैं तुरुक ले गाड़ैं, यहि विधि अंत दुनो घर छांड़ै।
करम फांस जम जाल पसारा, जस धीमर मछरी गहि मारा।
राम बिना नर होइहो कैसा, बाट मांझ गोबरौरा जैसा।
कहैं कबीर पीछे पछितैहो, या घर से जब वा घर जैहो।।

96

माई मैं दूनौ कुल उजियारी।
सासु ननद पटिया मिलि बंधलौं, भसुरहिं परलौं गारी।।
जारौं मांग मैं तासु नारि की, जिन सरवर रचल धमारी।
जना पांच कोखिया मिलि रखलों, और दुई औ चारी।।
पार परोसिनि करौं कलेवा, संगहि बुधि महतारी।
सहजहिं बपुरे सेज बिछावल, सुतलौं मैं पांव पसारी।।
आवों न जावों मरौं नहिं जीवों, साहेब मेटल गारी।
एक नाम मैं निज कै गहिलौं, तो छूटल संसारी।
एक नाम मैं बदि के लेखौं, कहै कबीर पुकारी।।

97

मोहिं तोहिं लागी कैसे छूटै।
जैसे हीरा फोरे न फूटै।। टेक।।
मोहिं तोहिं आदि अंत बनि आई, अब कैसे दुरत दुराई।
जैसे कंवल पत्र जल बासा, ऐसे तुम साहेब हम दासा।
मोहिं तोहिं कीट भ्रिंग की नांई, जैसे सरिता सिंधु समाई।
कहै कबीर हरि से मन लागा, जैसे सोना मिलत सुहागा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

98

मानुख तन पायौ बड़ें भाग।
अब बिचारि कै खेलौ फाग॥टेक॥
बिनु जिभ्या गावै गुन रसाल, बिनु चरनन चालै अधर चाल।
बिनु कर बाजा बजै बेन, निरखि देखि जहं बिनां नैंन।
बिनु ही मारे मृतक होइ, बिनु जारें होइ खाक सोइ।
बिनु मांगैं ही बस्तु देइ, सो सालिम बाजी जीति लेइ।
बिनु दीपक बरै अखंड ज्योति, तहां पाप पुन्नि नहिं लगे छोति।
जंह चंद सूर नहिं आदि अंत, तंह कबीर गावै बसंत॥

99

माया महा ठगिनि हम जानी।
तिरगुन फांसि लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी॥टेक॥
केसव कै कंवला होइ बैठी, सिव के भवन भवानी।
पंडा कै मूरति होइ बैठी, तीरथ हूं मैं पानी॥
जोगी कै जोगिनि होइ बैठी, राजा कै घरि रानी।
काहू कै हीरा होइ बैठी, काहू कै कौड़ी कांनी॥
भगता कै भगतिनि होई बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहहि कबीर सुनो हो संतो, ई सब अकथ कहानी॥

100

संतो घर में झगरा भारी।
राति दिवस मिलि उठि उठि लागै, पांच ढोटा एक नारी॥टेक॥
न्यारो न्यारो भोजन चाहैं, पांचौ अधिक सवादी।
कोई काहु को हटा न मानै, आपुहि आप मुरादी॥
दुर्मति केर दोहागिनि भेटै, ढोटहि चांप चपेरे।
कहै कबीर सोई जन मेरा, जो घर की रारि निबेरे॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

101

मोहिं बैराग भयौ।
यहु जिउ आइ रे कहां गयौ।।टेक।।
आकासि गगनु पातालि गगनु है, दह दिसि गगनु रहाईले।
आनंद मूल सदा पुरखोतम घट बिनसै गगनु न जाईले।।
पंच तत्त मिलि काया कीनी, तत्त कहां तैं कीनु रे।
करम बुद्ध तुम जीउ कहत हौं, करमहिं किन जिउ दीनु रे।।
हरि महिं तनु है तन महिं हरि है, सरब निरंतरि सोइ रे।
कहै कबीर हरि नांउं न छांड़उं, सहजै होइ सु होइ रे।।

102

संतो देखत जग बौराना।
सांच कहौं तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना।।टेक।।
नेमी देखा धरमी देखा, प्रात करै असनाना।
आतम मारि पखानहि पूजै, उनमें कछु नहिं ज्ञाना।।
बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़ै कितेब कुराना।
कै मुरीद तदबीर बतावैं, उनमें उहै जो ज्ञाना।।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्व भुलाना।।
टोपी प्रहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।
साखी सब्दहि गावत भूले, आतम खबरि न जाना।।
हिन्दू कहै मोहि राम पियारा, तुर्क कहै रहिमाना।
आपस में दोउ लरि लरि मूए, मर्म न काहू जाना।।
घर घर मन्तर देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु सहित सिख्य सब बूड़े, अंत काल पछिताना।।
कहै कबीर सुनो हो संतो, ई सब भर्म भुलाना।
केतिक कहौं कहा नहिं मानै, सहजै सहज समाना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

103

रमइया गुन गाइऐ रे, जातै पाइऐ परम निधानु।।टेक।।
सुरगबासु न बांछिअै, डरिऐ न नरकि निवासु।
होना है सो होइहै, मनहि न कीजै आसु।।
क्या जप क्या तप संजमो, क्या ब्रत क्या असनान।
जब लगि जुगति न जानिअै, भाउ भगति भगबान।।
सम्पति देखि न हरखिऐ, बिपति देखि नां रोई।
ज्यौं सम्पति त्यौं बिपति है, करता करै सो होइ।।
कहै कबीर अब जानियां, संतन हृदै मंझारि।
जो सेवक सेवा करै, ता संगि रमैं मुरारि।।

104

हमारैं गुर बड़े भिंग्री।
आंनि कीटक करत भिंग्र सो आपतैं रंगी।।टेक।।
पाइं औरै पंख औरै, और रंग रंगी।
जाति पांति न लखै कोई, भगत भौ भंगी।
नदी नांला मिले गंगा, कहावै गंगी।
समांनी दरियाव दरिया, पार नां लंघी।
चलत मनसा अचल कीन्हीं, मांहि मन पंगी।
तत्त मैं निहतत्त दरसा, संग मैं संगी।
बंध तै निबंध कीया, तोरि सब तंगी।
कहै कबीर अगम किया गम, राम रंग रंगी।।

105

उलटि पाछिलो पैंड़ा पकड़ो, पसरा मना बटोर,
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, तब पैहो निज ठौर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

106

संतो आवै जाय सो माया।
है प्रतिपाल काल नहिं वाके, ना कहूं गया न आया।।

क्या मकसूद मच्छ कछ होना, संखासुर न संहारा।
है दयाल द्रोह नहिं वाके, कहहु कौन को मारा।।

वै करता नहिं ब्राह कहाया, धरनि धरो नहिं भारा।
ई सब काम साहेब के नाहीं, झूठ कहै संसारा।।

खंभ फोरि जो बाहर होई, तेहि पतिजै सब कोई।
हिरनाकुस नख उदर बिदारे, सो कर्त्ता नहिं होई।।

बावन रूप न बलि को जांचो, सो जांचै सो माया।
बिना विवेक सकल जग भरमै, माया जग भरमाया।।

परसुराम छत्री नहिं मार्‌यो, ई छल माया कीन्हा।
सतगुरु भक्ति भेद नहिं जाने, ज़ीवहि मिथ्या दीन्हा।।

सिरजनहार न ब्याही सीता, जल पषान नहिं बंधा।
वै रघुनाथ एक कै सुमिरै, जो सुमिरै सो अंधा।।

गोपी ग्वाल न गोकुल आए, करते कंस न मारा।
है मेहरबान सबहिन को साहेब, ना जीता ना हारा।।

वै करता नहिं बौद्ध कहावै, नहीं असुर संहारा।
ज्ञानहीन कर्ता के भर्मे, माया जग भरमाया।।

वै करता नहिं भये निकलंकी, नहीं कलिंगहि गहि मारा।
ई छलबल सब माया कीन्हा, यतिन सतिन सब टारा।।

दस अवतार ईस्वरी माया, कर्त्ता कै जिन पूजा।
कहै कबीर सुनो हो संतो, उपजै खपै सो दूजा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

107

रस गगन गुफा मैं अजर झरै।
अजपा सुमिरन जाप करै।।टेक।।
बिनु बाजा झनकार उठै जहं समुझि परै जब ध्यान धरै।
बिनु चंदा उजियारी दरसै, जंह तहं हंसा नजरि परै।।
दसवैं द्वारै ताड़ी लागी, अलख पुरुष जाकौ ध्यान धरै।
काल कराल निकटि नहिं आवै, काम क्रोध मद लोभ जरै।।
जुगन-जुगन की त्रिखा बुझांनी, करम भरम अघ ब्याधि टरै।
कहै कबीर सुनौ भाई साधौ, अमर होइ कबहूं न मरै।।

108

रहहु ररा ममा की भांति हो, सब संत उधारन चूनरी।
बालमीकि बन बोइया, चुनि लीन्ह सुखदेव।
करम बिनौला होय रहा, सुत काते जैदेव।।
तीनि लोक ताना तनो, ब्रह्मा विष्णु महेस।
नाम लेत मुनि हारिया, सुरपति सकल नरेस।।
विष्णु जिभ्या गुन गाइया, बिनु बस्ती का देश।
सूने घर का पाहुना, कासों लावै हेत।।
चारि वेद कैंडा कियो, निराकार कियो राछ।
बिनै कबीरा चूनरी, बै नहिं बांधल बारि।।

109

राखि लेहु हम तैं बिगरी।
सील धरम जप भगति न कीन्हीं, हौं अभिमान टेढ़ पगरी।।टेक।।
अमर जानिं संची यह काया, सो मिथ्या कांची गगरी।
जिनहिं निवाज साज सब कीन्हें, तिनहि बिसारि और लगरी।
संधिक साध कबहुं नहिं भेंट्यो, सरनि परै जिनकी पगरी।
कहै कबीर इक बिनती सुनिए, मत घालौ जम की खबरी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

110

राजा राम अनहद किंगरी बाजै।
जाकी दिस्टि नाद लौ लागै।।टेक।।
अचरज एक सुनहु रे पंडिया, अब किछु कहन न जाई।
सुर नर गण गंध्रब जिनि मोहे, त्रिभुवन मेखुली लाई।।
भाठी गगन सींगी करि चोंगी, कनक कलस इक पावा।
तिंसु महिं धार चुऐ अति निरमल, रस महिं रसन चुआवा।।
एक जु बात अनूप बनी है, पवन पिआला साजा।
तीनि भवन महि एकै जोगी, कहहु कवन है राजा।।
ऐसे गिआंन प्रगटा पुरखोतम, कह कबीर रंगि राता।
अउर दुनीं सभ भरमि भुलांनीं, मैं राम रसाइन माता।।

111

राम गुन न्यारो न्यारो न्यारो।
अबुझा लोग कहां लौं बूझे, बूझनहार बिचारो।।
केतेहि रामचन्द्र तपसी से, जिन यह जग बिटमाया।
केतेहि कान्ह भए मुरलीधर, तिन्ह भी अंत न पाया।।
मच्छ कच्छ औ ब्राह सरूपी, बावन नाम धराया।
केतेहि बौद्ध भए निकलंकी, तिन्ह भी अंत न पाया।।
केते सिध साधक सन्यासी, जिन्ह बनवास बसाया।
केते मुनिजन गोरख कहिए, तिन भी अंत न पाया।।
जाकी गति ब्रह्मा नहिं जाना, सिव सनकादिक हारे।
ताके गुन नर कैसेक पैइहौ, कहहिं कबीर पुकारे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

112

राम तेरी माया दुंद मचावै।
गति मति वाकी समुझि परै नहिं, सुर नर मुनिहिं नचावै॥
का सेमर तेरी साखा बढ़ाए, फूल अनूपम मानी।
केतिक चातकी लागि रहे हैं, चाखत रुवा उड़ानी॥
काह खजूर बड़ाई तेरी, फल कोई नहिं पावै।
ग्रीसम ऋतु जब आइ तुलानी, छाया काम न आवै॥
अपना चतुर और को सिखवै, कनक कामिनी स्यानी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, रामचरन रति मानी॥

113

राम भजा सोइ जीता जग मैं।
राम भजा सोइ जीता रे॥टेक॥
हाथ सुमिरनीं पेट कतरनी, पढ़ै भागवत गीता रे॥
हिरदै सुद्ध किया नहिं बौरे, कहत सुनत दिन बीता रे।
आंन देव की पूजा कीन्हीं, हरि से रहा अमीता रे।
धन जोबन तेरा यहीं रहैगा, अंत समय चलि रीता रे।
बांवरिया बन मैं फंदा रोपै, संग मैं फिरै निचीता रे।
कहै कबीर काल यौं मारै, जैसे म्रिगा कौ चीता रे॥

114

रामुरा झीं झीं जंतर बाजै, कर चरन बिहूना नाचै।
कर बिनु बाजै सुनै स्त्रवन बिनु, स्त्रवन सरोता सोई।
पाटन सुवस सभा बिनु अवसर, बूझहु मुनि जन लोई॥
इन्द्री विनु भोग स्वाद जिभ्या बिनु, अक्षय पिंड बिहूना।
जागत चोर मंदिर तहं मूसै, खसम अछत घर सूना।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बीज बिनु अंकुर पेड़ बिनु तरवर, बिन फूले फल फरिया।
बांझ के कोख पुत्र अवतरिया, बिनु पग तरवर चढ़िया।।
मसि बिनु द्वात कलम बिनु कागद, बिनु अक्षर सुधि होई।
सुधि बिनु सहज ज्ञान बिनु ज्ञाता, कहैं कबीर जन सोई।।

115

रामुरा चली बिनावन माहो।
घर छोड़ै जाइ जुलाहो।।टेक।।
गज नव गज दस गज उनइस की पुरिया एक तनाई।
सात सूत नौ गंड बहत्तरि, पाट लागु अधिकाई।।
ता पट तुला तुलै नहिं गज न अमाई, पैसन सेर अढ़ाई।
तामें घटै बढ़े रतियो नहिं, करकच करे गहराई।।
नित उठि बैठि खसम सो बरबस, तापर लागु तिहाई।
भींगी पुरिया काम न आवै, जोलहा चला रिसाई।।
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, जिन यह सृष्टि बनाई।
छाड़ पसार राम भजु बौरे, भवसागर कठिनाई।।

116

हमारै गुर दीन्हीं अजब जरी।
कहा कहौं कछु कहत न आवै, अम्रित रसन भरी।।टेक।।
याही तैं मोहिं प्यारी लागी, लैकै गुपुत धरी।
पांचौ नाग पचीसौ नांगिनि, सूंघत तुरत मरी।
डांइनि एक सकल जग खायौ, सो भी देखि डरी।
कहै कबीर भया घट निरमल, सकल बियाधि टरी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

117

रामुरा संसै गांठि न छूटै, तातै पकरि पकरि जम लूटै।
होय कुलीन मिसकीन कहवै, तूं जोगी सन्यासी।
ज्ञानी गुनी सूर कवि दाता, या मति किनहु न नासी।।
सुम्रिति वेद पुरान पढ़ै सब, अनुभौ भाव न दरसै।
लोह हिरन्य होय धौं कैसे, जो नहिं पारस परसै।।
जियत न तरेउ मुए का तरिहौ, जियतहि जो न तरे।
गहि परतीत कीन्ह जिन्ह जासो, सोइ तहां अमरे।।
जो कछु कियो ग्यान अग्याना, सोई समुझ सयाना।
कहै कबीर तासों का न कहिए, जो देखत दृष्टि भुलाना।।

118

राम सुमिरि पछिताइगा।
पापी जियरा लोभ करत है, आजु कालि उठि जाइगा।।टेक।।
लालच लागै जनम गंवाया, माया भरमि भुलाइगा।
धन जोबन का गरब न कीजै, कागद ज्यौं गलि जाइगा।।
जब जम आइ केस गहि पटकै, ता दिन कछु न बसाइगा।
सुमिरन भजन दया नहिं कीन्हीं, तौ मुखि चोटा खाइगा।।
धरमराइ जब लेखा मांगै, क्या मुख लै कै जाइगा।
कहत कबीर सुनहु रे संतौ, साध संगति तरि जाइगा।।

119

राम सुमिरि राम सुमिरि राम सुंमिरि भाई।
राम नाम सुमिरन बिनु बूड़त अधिकाई।।टेक।।
बनिता सुत देह ग्रेह संपति सुखदाई।
इन्ह मैं कछु नांहि तेरौ काल अवधि आई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अजामेल गज गनिका पतित करम कीन्हें।
तेऊ उतरि पारि गए राम नाम लीन्हें॥
सूकर कूकर जोनि भ्रमे तऊनां लाज आई।
राम नाम छाड़ि अंम्रित काहे बिखु खाई॥
तजि भरम करम बिधि निखेध राम नामु लेही।
गुर प्रसादि जन कबीर रांमु करि सनेही॥

120

रामहि गावै औरहि समुझावै, हरि जाने बिनु विकल फिरै।
जेहि मुख वेद गायत्री उचरै, जाके वचन संसार तरै॥
जाके पांव जगत उठि लागे, सो ब्राह्मन जीव वध करै।
अपने ऊंच नीच घर भोजन, घीन कर्म करि उदर भरै॥
ग्रहन अमावस ढुकि ढुकि मांगै, कर दीपक लिए कूप परै।
एकादसी बरत नहिं जानै, भूत प्रेत हठि हृदय धरै॥
तजि कपूर गांठि बिख बांधै, ग्यान गंवाय के मुगुध फिरै।
छीजै साहु चोर प्रतिपालै, संत जना की कूटि करै।
कहै कबीर जिभ्या के लंपट, यहि विधि प्रानी नरक परै॥

121

वा घर की सुधि कोई न बतावै, जा घर तैं जिउ आया हो।
काया छाडिं चला जब हंसा, कहौ न कहां समाया हो॥टेक॥
धरती अकास पवन नहिं पानीं, नहिं तब आदी माया हो।
ब्रह्मां बिष्नु महेस नहीं तब, जीव कहां तैं आया हो॥
मैं मेरी ममता कैं कारनि, बार बार पछिताया हो।
लखि नहिं परै नाम साहेब का, फिरि फिरि भटका खाया हो॥
मेरी प्रीति पीव सौं लागी, उलटि निरंजन ध्याया हो।
कहै कबीर सुनौ भाई साधौ, वा घर बिरलै पाया हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

122

संतो मंहतो सुमिरो सोई, काल फांस जो बांचा होई।
दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना, मिथ्या स्वाद भुलाना।
सलिल को मथिकै घृत को काढ़िनि, ताहि समाधि समाना।।
गोरख पवन राखि नहिं जाना, जोग जुक्ति अनुमाना।
रिधि सिधि संजम बहुतेरा, पार ब्रह्म नहिं जाना।।
बसिष्ठ श्रेष्ठ विद्या सम्पूरन, राम ऐसो सिख साखा।
जाहि राम को कर्ता कहिए, तिनहु को काल न राखा।।
हिन्दू कहैं हमहि लै जारो, तुर्क कहैं मोर पीर।
दोऊ आप दीनन में झगरैं, ठाढ़े देखिहिं हंस कबीर।।

123

संतो अचरज एक भौ भारी, कहौं तो को पतियाई।
एकै पुरुष एक है नारी, ताकर करहु बिचारा।
एकै अंड सकल चौरासी, भर्म भुला संसारा।।
एकै नारी जाल पसारा, जग महं भया अंदेसा।
खोजत खोजत अंत न पाया, ब्रह्मा विष्णु महेसा।।
नाग फांस लीये घट भीतर, मूसिन सब जग झारी।
ग्यान खडग बिनु सब जग जूझै, पकरि न काहू पाई।।
आपुहि मूल फूल फुलवारी, आपुहि चुनि चुनि खाई।
कहहिं कबीर तेई जन उबरे, जेहि गुरु लियो जगाई।।

124

संतौ ई मुरदन कै गाउं।
तन धरि कोई रहन न पावै, काकौ लीजै नांउं।।टेक।।
पीर मूवा पैगम्बर मूवा, मूवा जिंदा जोगी।
राजा मूवा परजा मूवा, मूवा बैद औ रोगी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चंदौ मरिहै सुरजौ मरिहै, मरिहै धरनि अकासा।
चौदह भुवन चौधरी मरिहै, काकी धरिऐ आसा॥
नौ हूँ मूवा दस हूँ मूवा, मूवा सहस अठासी।
तैंतिस कोटि देवता मूए, परे काल की फांसी॥
एकहिं जोति सकल घट व्यापक, दूजा तत्त न होई।
कहै कबीर सुनौ रे संतौ, भटकि मरै जनि कोई॥

125

संतो ऐसि भूल जग माहीं, जाते जीव मिथ्या में जाहीं।
पहिले भूले ब्रह्म अखंडित, झांई आपुहि मानी।
झांई मानत इच्छा कीनी, इच्छा ते अभिमानी॥
अभिमानी कर्ता ह्वै बैठे, नाना पंथ चलाया।
वही भरम में सब जग भूला, भूल का मरम न पाया॥
लख चौरासी भूल ते कहिये, भूल ते जग बिटमाया।
जो है सनातन सोई भूला, अब सोई भूलहि खाया॥
भूल मिटै गुरु मिलै पारखी, पारख देहिं लखाई।
कहैं कबीर भूल की औषध, पारख सबकी भाई॥

126

संतौ कहौं तो को पतियाई, झूठ कहत सांच बनि आई॥
लौके रतन अबेध अमोलिक, नहिं गाहक नहिं सांई।
चिमिकि चिमिकि चिमिकै दृग दुहु दिस, अर्ब रहा छिरिआई॥
आपै गुरु क्रिपा कछु कीन्हा, निर्गुन अलख लखाई।
सहज समाधि उनमुनी जागै, सहज मिलै रघुराई॥
जहं जहं देखौ तहं तहं सोई, मन मानिक बेध्यो हीरा।
परम तत्व गुरु ही से पावै, कहै उपदेस कबीरा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

127

संतो पांडे निपुन कसाई।
बकरा मारि भैंसा पर धावैं, दिल में दर्द न आई॥
करि अस्नान तिलक दै बैठे, बिधि से देवि पुजाई।
आतम राम पलक में बिनसे, रुधिर कि नदी बहाई॥
अति पुनीत ऊंचे कुल कहिए, सभा मांहि अधिकाई।
इन्हते दीक्षा सब कोई मांगै, हंसि आवै मोहि भाई॥
पाप कटन को कथा सुनावहिं, कर्म करावहिं नीचा।
बूड़त दोउ परस्पर देखा, जम लाए हैं खींचा॥
गाय बधे तेहि तुरुका कहिए, इन्हते वै क्या छोटे।
कहहिं कबीर सुनहु हो संतो, कलि में ब्राह्मन खोटे॥

128

संतो बोले ते जग मारै।
अनबोले ते कैसक बनिहै, सब्दहिं कोइ न बिचारै॥
पहिले जन्म पूत को भयऊ, बाप जनमिया पाछे।
बाप पूत की एकै नारी, ई अचरज को काछे॥
दुंदर राजा टीका बैठे, बिखहर करै खवासी।
स्वान बापुरो धरनि ढाकयो, बिल्ली घर की दासी॥
कार दुकार कारकुन आगे, बैल करै पटवारी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, भैंसे न्याव निबेरी॥

129

संतो भक्ती सतगुर आनी।
नारी एक पुरुष दुइ जाए, बूझो पंडित ज्ञानी॥टेक॥
पाहन फोरि गंग एक निकरी, चहुं दिसि पानी पानी।
तेहि पानी दुइ पर्वत बूड़े, दरिया लहरि समानी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उड़िं माखी तरवर को लागी, बोलै एकै बानी।
वहि माखी को माखा नाहीं, गर्भ रहा बिनु पानी।।
नारी सकल पुरुष वहि खायो, ताते रहेउं अकेला।
कहहिं कबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरु हम चेला।।

130

संतो राह दुनौ हम दीठा।
हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानैं, स्वाद सबनि को मीठा।।
हिन्दू बरत एकादसि साधैं, दूध सिधारा सेती।
अन्न को त्यागैं मन नहिं हटकैं, पारन करैं सगोती।।
तुरुक रोजा निमाज गुजारैं, बिसमिल बांग पुकारैं।
इनको भिस्त कहां ते होइहै, जो सांझै मुरगी मारैं।।
हिन्दु कि दया मेहर तुरकन की, दूनो घट से त्यागी।
ई हलाल वै झटका मारैं, आगि दुनौ घर लागी।।
हिन्दू तुरुक की एक राह है, सतगुरु इहै लखाई।
कहहिं कबीर सुनहु हो संतो, राम न कहेउ खुदाई।।

131

सतगुर संग होरी खेलिए।
जातैं जरा मरन भ्रम जाइ।।टेक।।
ध्यान जुगति की करि पिचकारी, खिमा खेलावनहार।
आतम ब्रह्म जो खेलन लागे, काया नग्र मझार।।
ग्यान गली मैं होरी खेलै, मची प्रेम की कीच।
लोभ मोह दोऊ कढ़ि भागे, सुनि सुनि सबद अतीत।।
त्रिकुटी महल मैं बाजा बाजै, होत छतीसौं राग।
सुरति सखी जहां देखि तमासा, सतगुर खेलै फाग।।
सतगुरु मिलिया फगुवा दीया, पैंड़ा दिया बताइ।
कहै कबीर सोई ततबेता, जीवन मुक्ति समाइ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

132

सतगुर साह संत सौदागर, तहं मैं चलि कै जाऊं जी।
मन की मुहर धरौं गुरु आगैं, ग्यान कै घोड़ा लाऊं जी।।टेक।।
सहज पलान चित कै चाबुक, लौ की लगाम लगाऊं जी।
विवेक विचार भरौं तन तरगस, सुरति कमान चढ़ाऊं जी।।
धीर गंभीर खड़ग लिए मुदगर, माया कै कोट ढहाऊं जी।
मोह मस्त मैवासी राजा, ताकौं पकड़ि मंगाऊं जी।।
रिपु कै दल में सहजहिं रौंदौं, अनहद तबल घुराऊं जी।
कहै कबीर मेरै सिर पर साहेब मैं ताकौं सीस नवाऊं जी।।

133

साई के संग सासुर आई।
संग न सूती स्वाद न मानी, गयो जौवन सपने की नाई।।
जना चारि मिलि लगन सुधाये, जना पांच मिलि मांड़ौ छाए।
सखी सहेली मंगल गावै, दुख सुख माथे हलदी चढ़ावे।
नाना रूप परी मन भांवरि, गांठि जोरि भाई पतिआई।
अरघा दे लै चली सुआसिनि, चौके रांड़ भई संग सांई।
भयो विवाह चली बिनु दुलहा, बाट जात समधी समुझाई।
कहै कबीर हम गौने जैबे, तरब कंत लै तूर बजाई।।

134

साधौ बाघिनि खाइ गई लोई।
खाता जांन न कोई।। टेक।।
काजल टीकि चसम मटकावै, कसि कसि बांधै गाढ़ी।
लुभुकी लुभुकि चरै अभिअंतर, खात करेजा काढ़ी।।
कान गहि काजी नाक गहि मुल्ला, पंडित कै आंखी फोरी।
सींगी रिखि औ गुर कनफूका, बाघिनि सभै मरोरी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर इन्द्रादिक बर ब्रह्मादिक, ते बाघिनि धरि खाया।
गिरि गोबर्धन नख पर राख्यौ, ते बाघिनि मुख आया।।
उतपति परलै जनी बघिनियां, सतगुर एह बिचारी।
कहै कबीर सुनौं भाई साधौ, हमसूं बाघिनि न्यारी।।

135

साधौ भगति भेख ते न्यारी।
मन पवनां पांचौं बसि कीया, तिन या राह संवारी।।टेक।।
काया कोट मैं अमर न रहनां, कागद का घर कीन्हां।
माला तिलक तिर्‍यौ नहिं कोई, परम तत्त नहिं चीन्हां।।
गोरखनाथ न मुद्रा पहिरी, मस्तक नहीं मुंड़ाया।
ऐसा भगत भया भू ऊपरि, गुरु पै राज छुड़ाया।।
ग्रभबास मैं सुमिरन कीन्हां, सुखदेव कौंन सु माला।
कहै कबीर सब भेख भुलानां, मूल छांड़ि गहि डाला।।

136

सुभ़ागे केहि कारन लोभ लागे, रतन जनम खोयो।
पूरब जनम भूमि के कारन, बीज काहे को बोयो।।
बुंद से जिन्ह पिंड संजोयो, अग्रिहि कुंड रहाया।
जब दस मास माता के गर्भे, बहुरि के लागल माया।।
बारहु ते पुनि बृद्ध हुवा, जब होनिहार सो होया।
जब जम ऐहैं बांधि चले हैं, नैन भरी भरि रोया।।
जीवन की जनि राखहु आसा, काल धरे है स्वासा।
बाजी है संसार कबीरा, चित्त चेति डारो पासा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

137

हंसा संसय छूरी कुहिया, गइया पिये बछरुवै दुहिया।
घर घर साउज खेलै अहेरा, पारथ ओटा लेई।
पानी मांहि तलफि गौ भूभुरि, धूरि हिलोरा देई॥
धरती बरसै बादर भीजै, भींट भए पैराऊं।
हंस उड़ाने ताल सुखाने, चहले बिंधा पांऊं॥
जौलों कर डोलै पग चालै, तौलौं आस न कीजै।
कहै कबीर जेहि चलत न दीसै, तासु बचन क्या लीजै॥

138

हंसा हो चित चेतु सबेरा, इन्ह परपंच करल बहुतेरा।
पाषंड रूप रचो इन तिरगुन, तेहि पाषंड भूलल संसारा।
घर के खसम बधिक वै राजा, परजा का धौं करै विचारा॥
भगति न जानै भगत कहावै, तजि अमृत विष कैलिन सारा।
आगे बड़े ऐसही बूड़े, तिनहूं न मानल कहा हमारा॥
कहा हमार गांठि दृढ़ बांधे, निसि बासर रहियो हुसियारा।
ये कलि गुरु बड़े परपंची, डारि ठगौरी सब जग मारा॥
बेद कितेब दुइ फंद पसारा, तेहि फंदे परु आप बिचारा।
कहै कबीर ते हंस न बिसरै, जेहिमा मिले छुड़ावनहारा॥

139

गुरु ने कहा भिक्षा लेकर आना

पहली भिक्षा अन्न की लाना,
गांव नगर के निकट न जाना।
मनुष्य स्त्रियां छोड़ के लाना,
जाना झोली भर के लाना।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूजी भिक्षा जल की लाना,
कूआं बाबड़ी छोड़ के लाना।
नदी नाला छोड़ के लाना,
लाना झाड़ी भर के लाना।।
तीजी भिक्षा लकड़ी की लाना,
रूखे वृक्ष को नहीं सताना।
गीली सूखी छोड़ के लाना,
लाना गट्ठड़ बांध के लाना।।
चौथी भिक्षा मांस की लाना,
जीव जंतु को नहीं सताना।
जिंदा मुर्दा छोड़ के लाना,
लाना हाड़ी भर के लाना।।
कहत कबीर सुनो भई साधो,
यह पद है निरावाना।
जो कोई इसका अर्थ लगावे,
वही संत है सयाना।।

140

हो बलैया कब देखौंगी तोहि।
अह निस आतुर दरसन कारनि, ऐसी ब्यापै मोहि।।टेक।।
नैन हमारे तुम्ह कूं चाहैं, रती न मानैं हारि।
बिरह अगिनि तन अधिक जरावै, ऐसी लेहु बिचारि।।
सुनहु हमारी दादि गुसांई, अब जिन करहु बधीर।
तुम्ह धीरज मैं आतुर स्वामी, काचै भांडै नीर।।
बहुत दिनन कै बिछुरे माधौ, मन नहिं बांधै धीर।
देह छतां तुम्ह मिलहु कृपा करि, आरतिवंत कबीर।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

141

चुनरिया पंचरंग हमें न सुहाय।।टेक।।
पांच रंग को हमरी चुनरिया।
प्रेम बिना रंग फीक दिखाय।।
यह चुनरी मेरे मैके से आए।
अपने पिया से लियां बदलाय।।
तोरी चूनर पर साहब रीझो।
जम दहिजरबा फिर फिर जाय।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो।
को आबे को घर जाय।।

142

साधो पांडे निपुन कसाई।।टेक।।
बकरा मारि भैंसा को धावै,
दिल में दरद न पाबै।।
कर अंस्नान तिलक दे बैठे,
विधि से देवी पुजावै।।
आतम राम पलक में बिनसै,
रुधिर कौ नदी बहाये।।
अति पुनीत ऊंचे कुल कहिये,
सभा मांझ अधिकाई।।
इनसे गुरु दिच्छा सभ कोई मांगे,
हंसी आवे मोहि भाई।।
पाप कटन को कथा सुनावै,
करम करावे नीचा।।
हम तो दूनो परस्पर देखा,
यम लाए हैं धोखा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाय बधे तो तुरुक कहिए,
इनते वै क्या छोटे॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो,
कलि में ब्राह्मण खोटे॥

143

साधो सो जन उतरे पारा,
जिन मनते आपा डारा।
कोई कहे मैं ज्ञानी रे भाई,
कोई कहे मैं त्यागी।
कोई कहे मैं इंद्री जीती,
अहं सबन को लागी॥
कोई कहे मैं जोगी रे भाई,
कोई कहे मैं भोगी।
मैं तो आपा दूर न डारा,
कैसे जीवे रोगी॥
कोई कहे मैं दाता रे भाई,
कोई कहे मैं तपसी।
निज तत नाम निश्चय नहि जाना,
सब भ्रम में खपसी॥
कोई कहे जोग सब जानूं,
कोई कहे मैं रहा।
आतमदेव से परचा नाहीं,
यह सब झूठी कहानी।
कोई कहे धर्म सब साधे,
और वर्त सब कीन्हा।
आपकी भरम निकसी नांही तो,
कलेस बहुत सिर लीन्हां॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गरब गुमान सब दूर निकारो,
करनी का बल नाहीं।
कहैं कबीर साहेब का बंदा,
पहुंचा निज पद माहीं।।

144

ऐसी दिवानी दुनियां,
भक्ति भाव न बूझे जी।
कोई आबे तो बेटा मांगे,
यही गुसाईं दीजे जी।।
कोई आबे दुख का मारा,
हम पर किरपा कीजे जी।
कोई आबे तो दौलत मांगे,
भेंट रुपइया लीजे जी।।
सांचे को कोइ गाहक नाहीं,
झूठे जगत खोजे जी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,
अंधों का क्या कीजे जी।।
जाके प्रेम न आवत हिये।
काह भये नर कासी बसे से,
काह गंगा जल पीए।
काह भये नर जटा बढ़ाए,
का गुदरी के सीए।।
का रे भये कंठी के बांधे,
काह तिलक के दीए।
कहै कबीर सुनो भाई साधो,
नाहक ऐसे जीए।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का जोगी मुद्रा करे,
साहिब गति न्यारी।
झाड़ी जंगल रे फिरें,
अन्ध व्यापारी।।
पूजा तर्पन जाप में,
भूले ब्रह्माचारी।
उलटा पवन चढाय के,
जीवें अधिकारी।।
वायु तज के अजगर भये,
गये बाजी हारी।
शून्य महल कहां सोइए,
जहं निस अंधियारी।।
कहैं कबीर वहं सोइयं,
रवि ससि उजियारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीय प्रकरण

ज्ञान-गुदड़ी

धर्मदास बिनवै कर जोरी।
सतगुरु सुनिये बिनती मोरी।।1।।

ज्ञान गुदड़ी करो प्रकासा।
जा से मिटै जीव जग-फांसा।।2।।

अलख पुरुष जब किया बिचारा।
लख चौरासी धागा डारा।।3।।

पांच तत्त से गुदड़ी बीनी।
तीन गुनन से ठाढ़ी कीनी।।4।।

ता में जीव ब्रह्म अरु माया।
समरथ ऐसो खेल बनाया।।5।।

जीवन पांच पचीसो लागी।
काम क्रोध मोंह मद पागी।।6।।

काया गुदड़ी कै बिस्तारा।
देखो संतो अगम सिंगारा।।7।।

चांद सुरज दोउ पैवंद लागे।
गुरु प्रताप सोवत उठि जागे।।8।।

सब्द की सुई सुरत कै डोरा।
ज्ञान के डोंभन सिरजन जोरा।।9।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब गुदड़ी की करु हुसियारी।
दाग न लागे देखु बिचारी।।10।।

सुमति के साबुन सिरजन धोंई।
कुमति मैल को डारों खोई।।11।।

जिन गुदड़ी कों किया बिचारा।
तिन ही भेटे सिरजनहारा।।12।।

धीरज धूनी ध्यान को आसन।
सत कोपीन सहज सिंहासन।।13।।

युक्ति कमंडल कर गहि लीन्हा।
प्रेम फावरी मुरसिद दीन्हा।।14।।

सेली सील बिबेक की माला।
दया कि टोपी तन धर्मसाला।।15।।

मेहर मतंगा मत बैसाखी।
मृगछाला मनहीं की राखी।।16।।

निःचय धोती पवन जनेऊ।
अजपा जपै सो जानै भेऊ।।17।।

लौ की लकुटी हिरदा झोरी।
छिमा खड़ाऊं पहिरि बहोरी।।18।।

मुक्ति मेखला सुकृत सुमिरनी।
प्रेम पियाला पीवे मौनी।।19।।

उदास कूबरी कलह निवारी।
ममता कुतिया को ललकारी।।20।।

युक्ति जंजीर बांधि जब दीन्हा।
अगम अगोंचर खिड़की चीन्हा।।21।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्त तिलक दीन्हे निरबाना।
वैराग त्याग विज्ञान निधाना।।22।।

गुरु गम चकमक मनसा तूला।
ब्रह्म अगिनि परगट करि मूला।।23।।

संसय सोग सकल भ्रम जारा।
पांच पचीसो परगट भारा।।24।।

दिल का दरपन दुबिधा खोई।
सो बैरागी पक्का होई।।25।।

सुन्न महल में फेरी देई।
अमृत रस की भिच्छा लेई।।26।।

दुख सुख मैला जगत कै भावा।
तिरबेनी के घाट नहावा।।27।।

तन मन सोंधि भयों जब ज्ञाना।
तब लख पायों पद निर्बाना।।28।।

अष्ट कंवल दल चक्कर सूझे।
जोंगी आप आप में बूझें।।29।।

इंगला पिंगला के घर जाई।
सुखमन सेज जाय ठहराई।।30।।

ओंहं सोहं तत्त बिचारा।
बंक नाल में किया सम्हारा।।31।।

मन को मारि गगन चढ़ि जाई।
मानसरोवर पैठि नहाई।।32।।

छूटे गये कलमल मिले अलेखा।
इन नैनन साहिब को देखा।।33।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहंकार अभिमान बिडारा।
घट का चौका करि उजियारा।।34।।

अनहद नाद नाम की पूजा।
सत्त पुरुष बिन देव न दूजा।।35।।

चित कर चंदन तुलसी फूला।
हित कर संपुट कर ले मूला।।36।।

सरधा चंवर प्रीति कर धूपा।
नूतन नाम साहिब करो रूपा।।37।।

गुदड़ी पहिरे आप अलेखा।
जिन यह प्रगट चलायो भेषा।।38।।

साहेब कबीर बकस जब दीन्हा।
सुरनर मुनि सब गुदड़ी लीन्हा।।39।।

रहै निरंतर सतगुरु दाया।
सतसंगति में सब कछु पाया।।40।।

ज्ञान गूदड़ी पढ़ै प्रभाता।
जनम जनम के पातक जाता।।41।।

जों जन जाय जपै ये ध्याना।
सो लखि पावै पद निर्बाना।।42।।

संझा सुमिरन जो जन करहीं।
जरा मरन भौसागर तरहीं।।43।।

कहै कबीर सुनो धर्मदासा।
ज्ञान गूदड़ी करो प्रकासा।।44।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीय प्रकरण

रेखते

1

गुरुदेव बिन जीव की कल्पना ना मिटै,
गुरुदेव बिन जीव का भला नाहीं।
गुरुदेव बिन जीव का तिमर नासै नहीं,
समुझि बिचारि ले मन माहीं।।
राह बारीक गुरुदेव तें पाइये,
जनम अनेक की अटक खोलै।
कहै कबीर गुरुदेव पूरन मिलै,
जीव और सीव तब एक तोलै।।

2

करौ सतसंग गुरुदेव के चरन गहि,
जासु के दरस तें भर्म भागै।
सील औ साच संतोष आवै दया,
काल की चोंट फिरि नाहिं लागै।।
काल के जाल में सकल जिव बंधिया,
बिन ज्ञान गुरुदेव घट अंधियारा।
कहै कबीर जन जनम आवै नहीं,
पारस परस पद होंय न्यारा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3

गुरुदेव के भेद को जीव जानै नहीं,
जीव तो आपनी बुद्धि ठानै।
गुरुदेव तो जीव को काढ़ि भवसिंध तें,
फेरि लै सुक्खं के सिन्ध आनै।।
बंद करि दृष्टि को फेरि अंदर करै,
घट का पाट गुरुदेव खोलै।
कहत कबीर तू देख संसार में,
गुरुदेव समान कोइ नाहिं तोलै।।

4

है कोई दिल दरवेस तेरा।
नासूत मलकूत जबरूत को छोड़ि के,
जाइ लाहूत पर करै डेरा।।
अकिल की फहम तें इलम रोसन करै,
चढ़ै खरसान तब होय उजेरा।
हिर्स हैवान को मारि मरदन करै,
नफस सैतान जब होय जेरा।।
गौस औ कुतुब दिल फिकर जा का करै,
फतह कर किला तहं दौह फेरा।
तख्त पर बैठिके अदल इन्साफ करु,
दोजख और भिस्त का करु निबेरा।।
अजाब सवाब का सबब पहुंचे नहीं,
जहां है यार महबूब मेरा।
कहै कबीर यह छोड़ि आगे चला,
हुआ असवार तब दिया दरेरा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5

रैन दिन संत यों सोवता देखता,
संसार की ओर से पीठि दीये।
मन और पवन फिर फूटि चालैं नहीं,
चंद औ सूरकों सम्म कीये॥
टकटकी चंद चकोंर ज्यों रहतु है,
सुरत और निरत का तार बाजै।
नौबत घुरत है रैन दिन सुन्न में,
कहै कबीर पिउ गगन गाजै॥

6

रूप बिनु रेख अलख सबही कथै,
पिंड पग सीस नहिं प्रान क़ाया।
पृथ्वी जल पवन पावक तहां कछु नहीं,
रज सत तम नहीं त्रिगुन माया॥
बीज नहिं बृच्छ नहिं पुरुष नारी नहीं,
जीवन मरन नहिं अस्त लखाया।
दिवस और रैन नहिं तारागन चंद नहिं,
गगन आकास नहिं धूप छाया॥
जल नहीं थल नहीं जीव औ सृष्टि नहिं,
काल जिवमार नहिं संसय सताया।
पार के पार परब्रह्म पुरुष बसै,
कथैं पंडित जना निगम गाया॥
कहै कबीर यह दुन्द चहुं दिसि मचा,
जुगन की भूल नहिं भेद पाया॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

7

पाव और पलक की आरती कौन सी,
रैन दिन आरती संत गावै।
घुरत निस्सान तहं गैब की झालरा,
गैब के घट का नाद आवै॥
तहं नीव बिन देहरा देव निर्बान है,
गगन के तख्त पर जुगत सारी।
कहै कबीर तहं रैन दिन आरती,
पासिया पांच पूजा उतारी॥

8

दूर वे दूर वे दूर वे दूरमति,
दूर की बात तोहि बहुत भावै।
है हजूर हाजिर साहिब धनी,
दूसरा कौन कहु काहि गावै॥
छोड़ि दे कल्पना दूरि का धावना,
राज तजि खाक मुख काहि लावै।
पेड़ के गहे तें डारि पल्लौ मिलै,
डारि के गहे नहि पेड़ पावै॥
डारि औ पेड़ औ फूल फल प्रगट है,
मिलै जब गुरू इतनी लखावै।
संपति सुख साहिबी छोड़ि जोगी भये,
सून्य की आस बनखंड जावै॥
कहै कबीर बनखंड में क्या मिलै,
दिल को खोजु दीदार पावै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

9

साईं आप की सेव तो आप ही जानिहो,
आप का भेद कहो कौन पावै।
आपनी आपनी बुद्धि अनुमान से,
बचपन बिलास करि लहरि लावै।।
तू कहै तैसा नहीं, है सो दीखै नहीं,
निगम हूं कहत नहिं पार जावै।
कहै कबीर या सैन गूंगा तईं,
होइ गूंगा सोई सैन पावै।।

10

जीभ का फूहरा पंथ का चूहरा,
तेज तमा धरे आप खोंवै।
काम औ क्रोध दुई पाप का मूल है,
कुबुधि का बीज क्या जानि बोवै।।
सील संतोष लै सबद उच्चारहू,
साध के दरस क्यों जान गोवै।
साध के दरस में परस पारस मिलै,
ज्ञान की दृष्टि में सरस होंवै।।
साध लच्छन गुनवन्त गंभीर है,
बचन लौलीन भाषा सुनावै।
पातरी फूहरी अधम का काम है,
रांड़ का रोवना भांड़ गावै।।
कहै कबीर तू पैठ दरियाव में,
लाल अमोल तब नजर आवै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

11

कर्म और भर्म संसार सब करत है,
पीव की परख कोई संत जानै।
सुरत और निरत मन पवन को पकर करि,
गंग और जमुन के घाट आनै।।
पांच को नाथ करि साथ सोहूं लिया,
अधर दरियाव का सुक्ख मानै।
कहै कबीर सोइ संत निर्भय घरा,
जनम और मरन का भर्म मानै।।

12

अजख के पलक में खलक सब जायगा,
परख दीदार दिल यार तेरा।
सूरत में निरत करि भाव गाया करो,
यदी बंदे बंदगी फलै तेरा।।
चोट का पै करो उलटि आपै डरो,
जहां देखो तहां प्रान मेरा।
अकिल से खोजि ले गाफिली छोड़ि दे,
चेंति ले समुझि ले यही बेरा।।
सुन्न का बुदबुदा सुन्न उतपात भया,
सुन्नहीं माहिं फिर गुप्त होई।
जाप अजपा जपो अलख आपै लखो,
बाहरे भीतरे एक होई।।
बैराट के खेल में सकलही रमि रहा,
भर्म की भांति मति नांघ कोई।
अडोल अबोल गुरु सबद लागा रहै,
कहै कबीर फकीर सोई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

13

राम का नाम संसार में सार है,
राम का नाम अमृत बानी।
राम के नाम तें कोटि पातक हरे,
राम का नाम बिस्वास मानी।।
राम का नाम लै साधु सुमिरन करै,
राम का नाम लै भक्ति ठानी।
राम का नाम लै सूर सन्मुख लरै,
पैठि संग्राम में जुद्धि ठानी।।
राम का नाम लै नारि सत्ती भई,
जरी मरी कंत संग खेह उड़ानी।
राम का नाम लै तीर्थ सब भरमिया,
करत अस्नान झक्कोरि पानी।।
राम का नाम लै मूर्ति पूजा करै,
राम का नाम लै देत दानी।
राम का नाम लै बिप्र भिच्छुक बनै,
राम का नाम दुर्लभ्भ जानी।।
राम का नाम चारि बेद का मूल है,
निगम निचोर करि तत्व छानी।
राम का नाम षट सासतर मत्थिये,
षट दरसन में चली कहानी।।
राम का नाम अगाध लीला बड़ी,
खोंजते खोज नहिं हारि मानी।
राम का नाम लै बिस्नु सुमिरन करै,
राम का नाम सिव जोग ध्यानी।।
राम का नाम लै सिद्ध साधक बनै,
सिव सनकादि नारद गियानी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राम का नाम लै रामचंद दृष्टि लइ,
गुरु बसिष्ठ भये मंत्र दानी।।
कहां लौं कहौं अगाध लीला रची,
राम का नाम काहू न जानी।
राम का नाम लै कृस्न गीता कथी,
बांधिया सेत तब मर्म जानी।।
है कैसो निरगुन निराकार परम जोति,
तासु को नाम निरंकार मानी।
रूप बिन रेख बिन निगम अस्तुति करै,
सत्त की राह अकथ कहानी।।
बिस्नु सुमिरन करै सिव जाग जा को धरै,
भनै सब ब्रह्म बेदान्त गाया।
सनकादि ब्रह्मादि कोई पार पावै नहीं,
तासु का नाम कह रामराया।।
कहै कबीर वह सक्स तहकीक करू,
राम का नाम जो पृथी लाया।

14

भेष दरियाव में हंस भी होत हैं,
भेष दरियाव में बग्ग होई।
भेष दरियाव में रत्न भी होत है,
भेष दरियाव में संख होई।।
जिवत मरे बिना भेद पावै नहीं,
जिवत हीं मरै तब भेद पावै।
कहै कबीर गुरुदेव के ज्ञान से,
तब कछू नीमन दृष्टि आवै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

15

राम ही राम सब जगत कहत है,
कहों जी राम का रूप कैसा।
कौन सी कोठरी कौन दर्बार है,
कौन से महल में राम वैसा॥

कौन सी सुन्दरी रमैं सुख सेजि में,
दिवस औ रैन मिलि स्याम संगा।
मिल गई पीव से और दरसै नहीं,
नारि और पुरुष मिलि एक अंगा॥

कहो जी राम का कौन सा रंग है,
हरित की सेत रत पीत काला।
कहो जी राम का कौन अस्थूल है,
ज्वान देखा किधौं बृद्ध बाला॥

बेद से रहित है भेद कैसे प्रगट,
बिना मुख जीभ आवाज होई।
रमैं घट घट में आपु न्यारा रहै,
पूर्व आनंद है राम सोई॥

पांच पच्चीस गुन तीन तें रहित है,
कौन सी दृष्टि से राम देखा।
सोई हैं संत जिन्ह भेद पाया सही,
कहै कबीर जिन्ह राम पेखा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

16

संत की चाल संसार तें भिन्न है,
सकल संसार में चुहर–बाजी।
हिन्दू मुसलमान दोइ दीन सरहद बने,
बेद कितेब परपंच साजी।।
हिन्दू के नेम आचार पूजा घनी,
बर्त एकादसी रहत राजी।
बकरी मारि कै मास भच्छन करै,
भगत न होय यह दगाबाजी।
जीव का हतन अपराध का मूल है,
कठिन यह चूक चित चेतु हाजी।
सकल धर्म ऊपर कृस्न गीता कथी,
कृस्न का कहा तू मान पाजी।।
कृस्न गीता पढ़ै दृष्टि उघरी नहीं,
येहि बक मुआ तूं मूढ़ पाजी।
जीव दया मम दया कृस्न कहि,
भैंस के आगे ज्यों बेनु बाजी।।
मुसलमान कलमा पढ़ै तीस रोजा रहै,
बग निमाज धुनि करत गाढ़ी।
बकरी मुरगी मारि जिबह करै,
गाय पछाड़ि कै कोह काढ़ी।।
हठा न मानों मियां पाओ अपना किया,
भिस्त न्यारी रही नर्क डारी।
होइगा हिसाब तो ज्वाब क्या देवगे,
ले जाइंगे फिरिस्ते पकरि दाढ़ी।।
कठिन कुन्दी करैं कष्ट भारी पड़ै,
होइ तबही चीन्हि पड़ै गाढ़ी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुख दुन्द भारी अबहूं चेता नहीं,
फेर पछितावगे रार बाढ़ी।।
मोम दिल मेहरबां दया दिल में धरो,
भिस्त हर रोज सो रहे ठाढ़ी।
कहै कबीर सुख साहिबी सो करै,
सांच को चीन्ह करि झूठ छाड़ी।।

17

देख वोजूद में अजब बिसराम है,
होय मौजूद तो सही पावै।
फेरि मन पवन को घेरि उलटा चढ़ै,
पांच पच्चीस को उलटि लावै।।
सुरत की डोर सुख सिंधु का झूलना,
घोर की सोर तहं नाद गावै।
नीर बिन कंवल तंह देख अति फूलिया,
कहै कबीर मन भंवर छावै।।

18

चक्र के बीच में कंवल अति फूलिया,
तासु का सुक्ख कोइ संत जानै।
कुलुफ नौद्वार औ पवन को रोकना,
तिरकुटी मद्ध मन भंवर आनै।।
सबद की घोर चहुं ओर ही होत है,
अधर दरियाव को सुक्ख मानै।
कहै कबीर यों झूल सुख सिंधु में,
जन्म औ मरन का भर्म भानै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

19

दीद बरदीद परतीत आवै नहीं,
दूरि की आस बिस्वास भारी।
कथा और कबित इस्लोक रसरीं बटै,
बकै वहु बाय मुख मूढ़ अनारी।।
हृदै सूझै नहीं संधि बूझै नहीं,
निकटही बस्तु लै दूरि डारी।
तत्त को छाड़ि निःतत्त को सब कथै,
भर्म में पड़े सब भेषधरी।
जटाधारी घने जती जोगी बने,
मुद्दरा पहिरि कै कान फारी।
नग्न नागा रहै सर्ब लज्जा तजै,
बज्र कछोट कसि काम जारी।
(एकै) छेदि अजूज तन घूंघरू बांधि कै,
स्वांग केते कहू गर्ब धारी।
(एकै) आकास मौनी मुखी उर्धबाहू नखी,
भये थानेस्वरी दंभकारी।।
(एकै) बांधि पग खंभ में अधोमुख झूलिया,
घूम घूंटै तन कष्ट कारी।
(एकै) बैठे गोसा मारि पंच अगिन तन तपै,
(एकै) बैठे जल सैन आसन मारी।।
(एकै) अन्न छाड़े फिरै दूबर अंगन रहै,
(एकै) दूध भोजन करै दूधाधारी।
(एकै) लोन छाड़ि के भये हैं अलोनियां,
गड़ि रहे गुफा में लाय तारी।।
(एकै) तिलक माला धरे मूरति पूजा करै,
संख धुनि आरती जोति बारी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेवा कीन्हा सही देव चीन्हा नहीं,
आत्मा-राम तजि जड़ पूजकारी॥
पूजि पाषान अभिमान अंधा हुआ,
चित्त चेतन्य तैं बीच पारी।
जोग पंडित बड़ें सास्त्र गीता पढ़े,
भर्म की भीत नहि टरत टारी॥
कहां लै कहौं बहुरूप कौ पेखना,
आपु आपनो सभनि बिसारी।
इतनी बिडम्बना तें बस्तु न्यारे रही,
ज्ञान की दृष्टि लीजै बिचारी॥
कहै कबीर कोई संत जन जौहरी,
काटि जम फंद उठि चेत संभारी॥

20

गुरु की नारि तो हरि लई चन्द्रमा,
कुन्ती ने क्वारे ही करन कीन्हा।
सुग्रीव की नारि तो छीनि लइ बालि ने,
मोहनी देखि सिव भये दीना॥
अहिल्या बाम्हनी तें इन्द्र ने छल किया,
द्रोंपदी पंच भरतार कीन्हा।
पारा ऋषि मछोदरी तें काम क्रीड़ा करी,
कृष्ण गोपिन के रंग भीना॥
ब्रह्मा पुत्रीं तें भोग बरबस किया,
पाप और पुन्न दोइ घोरि पीना।
कहै कबीर सब देव अन्याई भये,
इनहीं का कहां सब सृष्टि कीन्हा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

21

दीदबरदीद परगट परतच्छ है,
दृष्टि डारी बेदृष्टि ज्ञानी।
सृष्टि यहां आपु है आपु यहां सृष्टि है,
आपुही अगिन छिति पवन पानी।।
आपुही बीज है आपुही अंकुर है,
रज और सत्त तम गुन बखानी।
पिंड महं प्रान है प्रान महं पिंड है,
पिंड औ प्रान को भिन्न मानी।।
पिंड का सिरजता बोलता ब्रह्म है,
नजर पसारि तूं देखु ज्ञानी।
जासु कारन तुम देस पृथ्वी तजी,
तत्व को छाड़ि भये जोग ध्यानी।।
सोइ दूरि काहे धरी दरस ले हर घरी,
दूर का आसरा सुपन कहानी।
बोलता जीव सरबज्ञ साहिब बना,
कर्ता सरूप की यह निसानी।।
एक तें अनंत है अनंत तैं एक है,
सुघर जन दृष्टि करि साच मानी।
सकल बिस्तार परकास जा तें भया,
सोई घट माहिं निज तत्त छानी।।
दया की दृष्टि महं दरस और परस है,
दया बिनु दुंद दुनिया दिवानी।
दूनिया दुरमति सुमति तें बीछुड़ी,
धंध धोख किया कुमति ठानी।।
आपु को ना लखै आपु भटकत फिरे,
आपु हीं बावरी आपु स्यानी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाफिलीं आपनी जापु समझै नहीं,
छुच्छ के फटके फोफ उड़ानी॥
कहै कबीर बौवाय में सब गये,
कहा हम बहुत काहू न मानी॥

22

ब्रह्म है बृच्छ ता फूल माया भई,
फूल तें तीन फल लिये उपाई।
लख चौरासी जोनि बाजी रची,
ब्रह्महीं बीज ता में समाई॥
पांच जो तत्त्व ता बीज वे खंभ भये,
काया यह दुर्मति देवल बनाई।
पांच संग लाय परकिर्ति पच्चीस लै,
झोपड़ी बदन सो सुघर छाई॥
ब्रह्म तें जीव भौ जगत में बहि रहा,
बिखरिया खांड़ ज्यों रेत समाई।
बीनते ना बनै छानते ना छनै,
पकड़िये एक सों मूल जाई॥
एक जिव जानि कुल कानि तजु रे मना,
समुझु रे मन बहुत कष्ट पाई।
जुगन जुग भर्मिया कर्म बहु कर्मिया,
आस की फांस में क्या सताई॥
सरन सतगुरु लिया सुमति ऐसे भई,
घोरि के खांड़ जल में जमाई।
ब्रह्महीं अग्नि पर औंटि के ताइया,
कहै कबीर बहु कंद पाई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

23

चाम के महल में बोलता राम है,
चाम औ राम को चीन्हु भाई।
धन्न उस्ताद जिन्ह चाम मूरति गढ़ी,
सकल सिंगार छबि रूप छाई।।
एक ही बुंद तें साज साबित किया,
बिबिध परकार करि जन्त्र लाई।
पांव और पिडुरी जंघ कटि केहुनी,
नाभि कुण्डलि रची सरस भाई।।
पवन की गांठि दे महल ठाढ़ा किया,
हृदय बिचित्र भुजडंड लाई।
हाथ औ अंगुरी सकल पूरी बनी,
अंगुरी अग्र में नखन लाई।।
कंठ मस्तक मनी मुकुट लीलाट है,
रत्न धन नैन दुइ दृष्टि पाई।
श्रवण मुख नासिका दसन सीखर बने,
बदन उजियार सोभा निकाई।।
पीठि पाछो बनी मेरु डंड लागिया,
पांसुरी बीच पिजर गढ़ाई।।
चाम बीच मांस है मांस बिच हाड़ है,
हाड़ के बिच नस रोम लाई।।
गूद बिच बिंद है बिंद बिच पवन है,
पवन बिच प्रान बोलत जु होई।
कहैं कबीर यह ख्याल करता किया,
ज्ञान की दृष्टि तें चीन्हु सोई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

24

भेष को देखि के काई भूलो मती,
भेष पहिरे कोई सिद्ध नाहीं।
काम औ क्रोध मद लोभ माहीं घने,
सील औ सांच संतोष नाहीं॥
कपट के भेष तें काज सीझै नहीं,
कपट के भेष नहिं राम राजी।
कहै कबीर इक सांच करनी बिना,
काल की चोट फिर खाइगा जी॥

25

कहत बैराग औ राग छूटै नहीं,
पांच को राचि करि सांच खोया॥
इन्द्री स्वारथ को सबद अनुभव कथै,
पंथ को बाद करि जीव छोया॥
नाम निरगुन कहै रहै सरगुन महीं,
सिष्य साखा की भूख घेरी॥
कहै कबीर जब काल गढ़ घेरिहै,
कौन है जीव की गत्ति तेरी॥

26

बिना बैराग कहु ज्ञान केहि काम का,
पुरुष बिन नारि नहि सोभ पावै।
स्वांग तो साहु का काम है चोर का,
कपट की झपट में बहुत धावै॥
बात बहुते कहै झूठ छूटै नहीं,
मुख के कहे कहा खांड़ खावै।
कहै कबीर जब काल गढ़ घेरिहै,
बात बहु बकै सब भूलि जावै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

27

नाच आवै तबै काछ को काछिये,
नाच बिन काछ केहि काम आवै।
पहिरि सलाह धरि नांव रनजीत का,
वे घमासानं किये भागि जावै।।
उतरि रन सन्मुख का डरै रन महीं,
दाद दरगाह में नाहि पावै।
चाल है भेंड़ की खाल है सिंघ की,
कहै कबीर तेहि स्यार खावै।।

28

बेद बेदान्त औ कहत है भागवत,
अर्थ अनुभव का करत नीका।
आत्म को भूलि के ढूंढ़ते सास्त्र को,
रहा सरजाम बिनु सर्ब फीका।।
काम औ क्रोध उर माहिं कांटा घना,
नाम निर्बान का नाहि टीका।
कहै कबीर कारज कैसे सरै,
कनक औ कामिनी हाथ बीका।।

29

गंग उलटी धरो जमुन बासा करो,
पलटि पंच तीरथ पाप जावै।
नीर निर्मल तहां रैन दिन झरतु है,
नहाय जो बहुरि भवसिंधु न आवै।।
फिरत बौरे तहां बुद्धि को नास है,
बाज के झपट में सिंघु नाहिं।
कहै कबीर उस जुक्ति को गहैगा,
जनम औ मरन तब अंत पाईं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

30

गंग औ जमुन के घाट को खोजि ले,
भंवर गुंजार तहं करत भाई।
सरसुती नीर तहं देखु निर्मल बहै,
तासु के नीर पिये प्यास जाई॥
पांच की प्यास तहं देखि पूरी भई,
तीन की ताप तहं लगे नाहीं।
कहै कबीर यह अगम का खेल है,
गैब का चांदना देख माहीं॥

31

माड़ि मत्थान मन रई को फेरना,
होत घमसान तहं गगन गाजै।
उठत झनकार तहं नाद अनहद घुरै,
तिरकुटी महल के बैठु छाजै॥
नाम की नेत करि चित्त को फेरिया,
तत्त को ताय करि घिर्त लीया।
कहै कबीर यो संत निर्भय हुआ,
परम सुख धाम तहं लागि जीया॥

32

गड़ा निस्सान तहं सुन्न के बीच में,
उलटि के सुरत फिर नाहिं आवै।
दूध को मत्थ करि घिर्त न्यारा किया,
बहुरि फिरि तत्त में ना समावै॥
माड़ि मत्थान तहं पांच उलटा किया,
नाम नौनीति लै सुरत फेरी।
कहै कबीर यों संत निर्भय हुआ,
जन्म औ मरन की मिटी फेरी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

33

ससि परकास तें सूर ऊगा सही,
तूर बाजै तहां संत झूलै।
तत्त झनकार तहं नूर बरसत रहै,
रस्स पीवै तहां पांच भूलै॥
दरियाव औ बुन्द ज्यों देखु अन्तर नहीं,
जीव औ सीव यों एक आहीं।
कहै कबीर या सैन गूंगा तई,
बेद कित्तेब की गम्म नाहीं॥

34

अगम अस्थान गुरु-ज्ञान बिन ना लहै,
लहै गुरु-ज्ञान कोइ संत पूरा।
द्वादस पलटि के खोड़स परगटै,
गगन गरजै तहां बजै तूरा॥
इंगला पिंगला सुषमना सम करै,
अर्ध और उर्ध बिच ध्यान लावै।
कहै कबीर सोइ संत निर्भय रहै,
काल की चोट फिर नाहिं खावै॥

35

अधर आसन किया अगम प्याला पिया,
जोग की मूल गहि जुगति पाई।
पंथ बिन जाइ चलि सहर बेगमपुरे,
दया गुरुदेव की सहजि आई॥
ध्यान धरि देखिया नैन बिन पेखिया,
अगम अगाध सब कहत गाई।
कहै कबीर कोइ भेद बिरला लहै,
गहै सो कहै यां सैन भाई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

36

सहर बेगमपुरा गम्म को ना लहै,
होय बेगम्म सो गम्म पावै।
गुनों की गम्म ना अजब बिसराम है,
सैन को लखै सोंई सैन गावै॥
मुक्ख बानी तिको स्वाद कैसे कहै,
स्वाद पावै सोई सुक्ख मानै।
कहै कबीर या सैन गूंगा तईं,
होय गूंगा सोई सैन जानै॥

37

अधर ही ख्याल और अधर ही चाल है,
अधर के बीच तहं मट्ठ कीया।
खेल उलटा चला जाइ चौथे मिला,
सिंघ के मुक्ख फिर सीस दीया॥
सबद घनघोर टंकोर तहं अधर है,
नूर कों परसि के पीर पाया।
कहै कबीर यह खेल अवधूत का,
खेलि अवधूत घर सहजि आया॥

38

छका अवधूत मस्तान माता रहै,
ज्ञान बैराग सुधि लिया पूरा।
स्वास उस्वास का प्रेम प्याला पिया,
गगन गरजै तहां बजै तूरा॥
पीठ संसार से नामा-राता रहै,
जतन जरना लिया सदा खेलै।
कहै कबीर गुरु पीर से सुरखरू,
परम सुख धाम तहं प्रान मेलै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

39

छाका सो थका फिर देह धारै नहीं,
करम और कपट सब दूर कीया।
जिस स्वास उस्वास का प्रेम प्याला पिया,
नाम दरियाव तहं पैसि जीया॥
चढ़ी मतवाल और हुआ मन साबिता,
फटिक ज्यों फेंर नहिं फूटि जावै।
कहै कबीर जिन बास निर्भय किया,
बहुरि संसार में नाहिं आवै॥

40

तरक संसार से फरक फारिग सदा,
गरक गुरु ज्ञान में जुगत जोगी।
अर्ध और उर्ध के बीच आसन किया,
बंक प्याला पिवै रस्स भोगी॥
अर्ध दरियाव तहं जाय डोरी लगी,
महल बारीक का भेद पाया।
कहै कबीर यों संत निर्भय हुआ,
परम सुख धाम तहं प्रान लाया॥

41

माड़ि मतवाल जहं ब्रह्म भाठी जरै,
पिवै कोइ सूरमा सीस मेलै।
पांच को पेंलि सैतान को पकरि के,
प्रेम प्याला जहां अधर झेलै॥
पलटि मन पवन को उलटि सूधा कंवल,
अर्ध और उर्ध बिच ध्यान लावै।
कहै कबीर मस्तान माता रहै,
बिना कर तांतिया नाद गावै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

42

आठ हूं पहर मतवाल लागी रहै,
आठ हूं पहर की छाक पीवै।
आठ हूं पहर मस्तान माता रहै,
ब्रह्म की छौल में साध जीवै॥
सांच ही कहतु औ सांच ही गहतु है,
कांच को त्याग करि सांच लागा।
कहै कबीर यों साध निर्भय हुआ,
जनम और मरन का भर्म भागा॥

43

करत कलोल दरियाव के बीच में,
ब्रह्म की छौल में हंस झूलै।
अर्ध औं उर्ध की पेंग बाढ़ी तहां,
पलटि मन पवन कों कंवल फूलै॥
गगन गरजै तहां सदा पावस झरै,
होत झनकार नित बजत तूरा।
बेद कित्तेब की गम्म नाहीं तहां,
कहै कबीर कोई रमै सूरा॥

44

गगन की गुफा तहं गैब का चांदना,
उदय औ अस्त का नांव नाहीं।
दिवस और रैन तहं नेक नहिं पाइये,
प्रेम परकास के सिंध माहीं॥
सदा आनंद दुख दुन्द व्यापै नहीं,
पूरनानन्द भरपूर देखा।
भर्म और भ्रांति तहं नेक आवै नहीं,
कहै कबीर रस एक पेखा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

45

खेज ब्रह्मण्ड का पिंड में देखिया,
जगत की भर्मना दूर भागी।
बाहरा भीतरा एक आकासवत,
सुषमना डोरि तहं उलटि लागी।।
पवन को पलटि के सुन्न में घर किया,
धर अधर भरपूर देखा।
कहै कबीर गुरु पूर की मेहर से,
तिरकुटी मद्ध दीदार पेंखा।।

46

देखि दीदार मस्तान मैं होइ रह्यो,
सकल भरपूर है नूर तेरा।
सुभग दरियाव तहं हंस मोंती चुगैं,
काल का जाल तहं नाहिं नेड़ा।।
ज्ञान का थाल और सहज मति बाति है,
अधर आसन किया अगम डेरा।
कहै कबीर तहं भर्म भासै नहीं,
जनम और मरन का मिटा फेरा।।

47

सूर परकास तहं रैन कहं पाइये,
रैन परकास नहिं सूर भासै।
ज्ञान परकास अज्ञान कह पाइये,
होय अज्ञान तहं ज्ञान नासै।।
काम बलवान तहं नाम कहं पाइये,
नाम जहं होंय तहं काम नाहीं।
कहै कबीर यह सत्त बीचार है,
समुझ बिचार करि देखु माहीं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

48

मूक समसेर इकसार बजती रहै,
खेल कोइ सूरमा संत झेलै।
काल दल जीत करि क्रोध पैमाल करि,
परम सुख धाम तहं सुरत मेलै॥
सील से नेह करि ज्ञान कौ खड़क लै,
आय चौगान में खेल खेलै॥
कहै कबीर सोई संत जन सूरमा,
सीस को सौंप करि करम ठेलै॥

49

पकरि समसेर संग्राम में पैसिये,
देह परजंत कर जुद्ध भाई।
काटि सिर बैरियां दाब जहं का तहां,
आय दरबार में सीस नाई॥
करत मतवाल जहं संत जन सूरमा,
घुरत निस्सान तहं गगन धाई।
कहै कबीर अब नाम से सुरखुरू,
मौज दरबार की भक्ति पाई॥

50

देह बंदूक और पवन दारू किया,
ज्ञान गोली तहां खूब डाटी।
सुरत की जामकी मूठ चौथे लगी,
भर्म की भीत सब दूर फाटी॥
कहै कबीर कोई खेलिहै सूरमा,
कायरां खेंल यह होत नाहीं।
गस की फांस को काटि निर्भय भया,
नाम रस रस्स कर गरक मांहीं॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

51

ज्ञान समसेर को बांधि जोगी चढ़ै,
मार मन मीर रन धीर हूवा।
खेंत को जीत करि विषन सब पेलिया,
मिला हरि माहि अब नाहिं जूवा।।
जगत में जस्स और दाद दरगाह में,
खेंल यह खेंलिहै सूर कोई।
कहै कबीर यह सूर का खेल है,
कायरां खेल यह नाहिं होई।।

52

सूर संग्राम को देखि भागै नहीं,
देखि भागै सोई सूर नाहीं।
काम और क्रोध मद लोभ से जूझना,
मंडा घमसान तहं खेंत माहीं।।
सील और सांच संतोष साही भये,
नाम समसेर तहं खूब बाजै।
कहै कबीर कोई जूझिहै सूरमा,
कायरां भीड़ तहं तुरत भाजै।।

53

साध का खेंल तो बिकट बेंड़ा मती,
सती औ सूर की चाल आगे।
सूर घमसान है पलक दो चार का,
सती घमसान पल एक लागे।।
साध संग्राम है रैन दिन जूझना,
देह पर्जंत का काम भाई।
कहै कबीर टुक बाग ढीली करै,
उलटि मन गगन से जमीं आई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

54

भगति सब कोइ करै भर्मना ना टरै,
भर्म जंजाल दुख दुन्द भारी।
काल के जाल में जगत सब फंदिया,
आस की डोर जम जोर डारी॥
ज्ञान सूझै नहीं सबद बूझै नहीं,
सरन ओटा नहीं गर्ब धारी।
ब्रह्म चीन्है नहीं भर्म पूजत फिरै,
हिये के नैन क्यों फोरि डारी॥
थापि निर्जीव को काटि सजीव धर,
जीव का हतन अपराध भारी।
जीव का दर्द बेदर्द कसकै नहीं,
जीभ के स्वाद नित जीव मारी॥
एक पग ठाढ़ कर जोरि बिनती करे,
रच्छ बलि जांउ सरना तिहारी।
वहां कोइ नहीं है अर्ज अंधा करै,
कठिन दंडौत नहि टरत टारी॥
जीव अपराध सिर पर चढ़ाइ के,
रतन सों जनम सो हारि डारी।
कहै कबीर तूं सांच की नजर करु,
बोलता ब्रह्म घट महं उजारी॥

55

सबद को खोजि ले सबद को बूझि ले,
सबद ही सबद तू चलो भाई।
सबद आकास है सबद पाताल है,
सबद तें पिंड ब्रह्मंड छाई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सबद बयन बसै सबद सरवन बसै,
सबद के ख्याल मूरति बनाई।
सबद ही बेद है सबद की नाद है,
सबद ही सास्त्र बहु भांति गाई॥
सबद ही जंत्र है सबद ही मंत्र है,
सबद ही गुरु सिष को सुनाई।
सबद ही तत्व है सबद निःतत्व है,
सबद आकार निराकार भाई॥
सबद ही पुरुष है सबद ही नारि है,
सबद ही तीन देवा थपाई।
सबद ही दृष्ट अदृष्ट ओंकार है,
सबद ही सकल ब्रह्मांड जाई।
कहै कबीर तैं सबद को परिख ले,
सबद ही आप करतार भाई॥

56

स्वारथ की बात को सभन मिलि समुझिया,
सांच की बात मन में न आवै।
बेद और सास्त्र सब स्वारथ की कथत है,
और जी कहो वह कहां पावै॥
अस्थि औ मांस तें दूध की आदि है,
स्वाद के हेतु घृत पबित्र बतावै।
तिल और तेल उतपत्ति है घास की,
मद्धम कहैं कोई नाहिं खावै॥
तुचा तें ऊन और किर्म तैं पाट हैं,
पाट अंबर सोई मनै भावै।
काठ का फूल फल सुघर बस्तर बना,
मद्धम कहै मन में न आवै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाय और हरिन दोउ चाम के महल में,
गऊछाला कोई ना बिछावै।
जीवते दूध आचार पूजा करै,
मरे पंडित बड़ दोष लावै।।
सांच और झूठ का ज्ञान करि देखिये,
लीन अलीन है द्वैत बाजी।
एक को निदिंया एक को बंदिया,
कहै कबीर नहि साहिब राजी।।

57

जागते देव को सेव रे मुग्ध नर,
नहीं तों बिकल चित होई सोई।
पुरुष की सेव तें परम पद पाइये,
नारि सेवा नहीं मुक्ति होई।।
पुरुष परमात्मा देव निर्बान है,
नारि यह करत परपंच सारा।
कर्म अकर्म को त्यागु रे बावरे,
कहै कबीर तब होई पारा।।

58

रैन दिन फिरत खरसान गुरुदेव की,
आरसी दाग नहि लगन पावै।
ज्ञान का कड़ा और सबद का मसकला,
काटि के मोरचा दरस पावै।।
झूठ के ऊपरे सांच चालै नहीं,
होय जो धात तो सान खावै।
कहै कबीर यह जीव है कांच का,
टूकड़ा टूकड़ा होइ जावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

59

मुरसिद की मेरह से मोम दिल पाक है,
बंदगी नूर पहिचान भाई।
हक्क हलाल ईमान साबूत कर,
मान परतीत छुटि जाय काई।।
छोंड़ दे कहर को जहर सै देह का,
सांच से सफा का गुसल होई।
कहै कबीर कलमा काया हुआ,
जुक्ति के सग साहिब सोई।।

60

ज्ञान का गुसल कर पाक का ओजू कर,
पंज तकबीर परतीत पाई।
जत सत रोजा रह पचीस को जेर कर,
तीन को मेट दरवेस भाई।।
तीन को मेट रहमान कों भेंट तूं,
तोहि हर रोज आपै लखाई।
भिस्त फारिग हुआ पीर परचै लहा,
बिरला मुरीद दरगह बताई।।
कहै कबीर सरबंग अविगत लखा,
सिफ़त क्या करौं दुसर नाहि पाई।।

61

चेतु रे चेतु नर कहां भटकत फिरै,
आप संभारि चित चेतु प्यारे।
दूसर कौन है कहां दूंढ़त फिरै,
देखु संभारि सोवै कहा रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहां तेरि आदि है कहां बुनियाद है,
कहां तें आया कहां जायगा रे।
आगे औ पीछे की खबर करु बावरे,
कौन है तूं कौन करनहारे॥
सृष्टि जा की रची सकल घट पूर है,
आप अपनायो सबही बिसारे।
तीर्थ और बर्त आचार पूजा घनी,
जोग और जुक्ति सब पचे हारे॥
नाम सुमिरत रहै न्यारा सबही कहै,
मोहिं हरि मिलैं धीरज धारे।
जिन्हें हरि ना मिले आस झूठी तजी,
जियत मिलि रहै सोइ जन नियारे॥
कहै कबीर कोई जियतही मिलि रहै,
आपहूं तरे औरन को तारे॥

62

चेत रे चेंत नर जतन कर जीव का,
रतन सा जनम क्या जानि खोवै।
छोड़ परपंच पाखंड सब जीव का,
डारु बहु बोझ क्यों बोझ ढोवै॥
भर्म की भक्ति में नष्ट जीव जायगा,
सांच सो रूप लख काज होवै।
का भयो बहुत बिस्तार मूरत पुजे,
सिला जड़ सेइ नितनेम धोंवै॥
बहुत लौलीन होइ संख धुन करत है,
घंट घनघोर अंदोर होवै।
धूप और गंध लै पुहुप पूजा करै,
स्वाद के संग सदा नींद सोवै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिये का सुन्न जड़ देव पूजत मरै,
सच्चिदानन्द नहि ब्रह्म जोवै।
बोलता ब्रह्म सिरताज है सभन का,
प्रगट परतच्छ क्या जानि खोवै।।
ऐसा संसार पाखंड का खेल है,
असल को मेटि के नकल जोवै।
कहै कबीर बीचार बिन दुनियां,
काल के संग सदा नींद सोवै।।

63

भजन करु भजन करु भजन करु राम का,
भजन है सोई जो राम रीझै।
प्रेम है सोई जो ओर ले निर्बहै,
राम को चीन्ह जो काम सीझै।।
डिंभ बहुतै करै फायदा कुछ नहीं,
बढ़त है ब्याज दिन मूल छीजै।
मान सबही करै चीन्ह नाहीं पड़े,
प्रेम बिनु स्वाद कहु काहि पीजै।।
दुलह घर में नहीं दुलहिन भांवरि फिरै,
अजब अचरज्ज का खेल बूझै।
मुए मिलने की आस सबही करी,
गैल की सैल नहिं नैन सूझै।।
भये कहुं और तें चले कहुं और पै,
कहा मानै नहीं कहा कीजै।
मन के रंग संसार टीड़ी भई,
भेड़ और टिड्डी को काज कीजै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पड़े अंध कूप में पार पावैं नहीं,
छुटि न जंजाल जम जुआ दीजै।
कहै कबीर संभार कछु कहा सुनु,
दूसरा है नहीं दृष्टि कीजै॥

64

सील संतोष ते सबद जा मुख बसै,
संत जन जौहरी सांच मानी।
बदन बिकसित रहै ख्याल आनन्द में,
अधर में मधुर मुसकात बानी॥
सांच डोलै नहीं झूठ बोलै नहीं,
सुरत में सुमति सोइ श्रेष्ठ ज्ञानी।
कहत हौं ज्ञान पूकारि कै सभन से,
देत उपदेस दिल दर्द जारी॥
ज्ञान को पूर है रहनि को सूर है,
दया की भक्ति दिल माहि ठानी।
ओर ते छोर ले एक रस रहत हैं,
ऐसे जन जक्त में बिरले प्रानी॥
ठग बटमार संसार में भरि रहे,
हंस की चाल कहं काग जानी।
चपल और चतुर हैं बने बहु चीकने,
बात में दुरुस्त पै कपट ठानी॥
कहा तिन्ह से कहौं दया जिन्ह के नहीं,
घात बहुते करैं बकुल ध्यानी।
दुर्मति जीव की दुबिधि छूटै नहीं,
जनम जन्मान्तर पड़े नर्क खानी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काग कूबुद्धि सबुद्धि पावै कहां,
कठिन कठोर बिकराल बानी।
अगिन के पुंज हैं सितलता तन नहीं,
विष औ अमृत दोंउ एक सानी।।
कहा साखी कहे सुमति जागी नहीं,
सांच की चाल बिन घूर धानी।
सत सुकृत की चाल सांची सही,
काग बक अधम की कौन खानी।।
कहै कबीर कोई सुघर जन जौहरी,
सदा सवधान छीन नीर छानी।
आप को आप लख आपु तहकीक कर,
आदि औ अंत रस एक जानी।।

65

वाह वाह उस मुरसिद कै कदम को,
एक ही ख्याल में निहाल कर दिया है।
मारत है तान तान सुरत की कमान जान,
वाही जानै जिसे वार पार किया है।।
पीर मेरा सांचा मैं मुरीद ता का,
जिन्ह मेहर करि मस्तक पर दस्त पंजा दिया है।
आप कहूं असा कहुं तसबीह कहूं कितेब,
कबीर किरपा तें जिन मुआ है न जिया है।।

66

दुरुस्त जिभ्या रहै बचन अमृत कहैं,
काम औ क्रोध का खोज खोई।
ज्ञान का पूर है रहनि का सूर है,
संत जन जौहरी सबद जोई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञान की दृष्टि में झूठ धोंखा तजा,
सांच बिन काज काहू न होई।
बोलता ब्रह्म से दूसरा कौन है,
आतमा राम तहकीक सोई॥
देखि दिव्य दृष्टि करि दूसरा है नहीं,
भर्म के फंद मति परै कोई।
दूसरा खोजते केते जुग टरि गये,
सिद्ध समाधि नहिं पार पाई॥
सिद्ध साधक मुनि जन सब पचि मुए,
ब्रह्म-ऋषि बेद पढ़ि निगम गाई।
कोई आकार कहि कोई निराकार कहि,
तत्व को छोड़ि निःतत्त धाई॥
समुझि नाहीं परै उक्ति सब कोइ करै,
आप को आप नहि लखै भाई।
राज और पाट तजि चले बनखंड गये,
सिद्ध समाधि धुनि गगन छाई॥
अहरनिसि आस लागी रहै सुन्न में,
बिना जल पिये क्या प्यास जाई।
आस लागी रहै प्यास बूझै नहीं,
सुन्न गृह से फलहि कौन पाई॥
भर्मना छोड़ि दे ज्ञान को मानि ले,
आप को चीन्ह तूं कौन भाई।
देख दिल ढूंढ़ि कै सृष्टि का की रची,
जल से जुगति कहु को बनाई॥
कहै कबीर तूं ताहि तहकीक करु,
लाल की खान कहु कौन ठांई।
कौने के तुम अहौ कहां तुम जाहुगे,
बिना देखे परतीत लाई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

67

कहां लों कहौं चहुं जुग की मूल है,
गुरु सब सृष्टि ब्रह्मा भुलाना।
बाट चीन्हैं नहीं उक्ति मन में धरै,
बुद्धि परगास मन माहिं ठाना।।
नाम करतार का कहा कहि लीजिया,
बिबि अच्छर गहि बांधि लीन्हा।
ररा और ममा दुइ अच्छर इन्ह सों कही,
यही बिबि अच्छर का ध्यान कीन्हा।।
कहीं बिरंचि बिस्नु निजु कै सुनी,
सुना सिव स्त्रवन दै सांच माना।
यदि पुरुष पुरान और पारब्रह्म निरगुन हैं,
साधन सो भिन्न हैं राम जाना।।
यही सुनि सिव और बिस्नु हूं चित गहे,
रहे सुख पाय धन धाम चीन्हा।
कहै कबीर यह ज्ञान त्रिदेव का,
फैलाया आप सब सृष्टि दीन्हा।।

68

अजब आचरज संसार का खेल है,
झूठ को थामि के प्रेम लागै।
सांच के कहे छुइ जात है तुरतही,
उठै भिन्नाइ ज्यों फनिक जागै।।
पाथर को सुर कहै ईसुर नाहीं लखै,
जड़ को सेवै चेंतन्य त्यागै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बोलता ब्रह्म चेतन्य ईसुर सही,
सेव मन कर्म सब भर्म भागै॥
आत्म परमातमा देखु सब एक को,
दया धरु हृदय में सुमति जागै।
काम औ क्रोध खनि गाडु चित चेंति कै,
तब तोहिं तरत नहिं बार लागै॥
चतुर चतुरंग है सुघर पंडित बने,
लिये जड़ देव बहु खंभ बागै।
जगन्नाथ रामनाथ परसि गोदावरी,
द्वारका छाप लै देह दागै॥
नित नेत आचार और संख धुनि करतु है,
सुमिरन ध्यान नहिं कबहुं स्वांगै।
संसय की मोट अपार सिर पर चढ़ी,
जन्म जन्मान्तर कहं मोच्छ मांगै॥
मोच्छ और मुक्ति को दांव ऊहां नहीं,
आस की डोरि में सुरति टांगै।
आस अपनपौ चीन्हि पावै नहीं,
सुघट को छोड़ि औघट्ट रांगै॥
मन को चरित्र काहू जानि नहिं परै,
दूसरा भाव मन रंग लागै।
मनहि की थाप में तीर्थ और मूर्ति हैं,
जाति और पांति मन नाहिं त्यागै॥
रैन और दिवस मन ध्यान सुमिरन करै,
मन सावज होइ झांकि भागै।
कहै कबीर सुख साहिबी सो करै,
सांच औ झूठ को भेद पावै।
चीन्ह अपनपौ आपही होइ रहै,
भर्म तें मुक्त होइ बिमल गावै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

69

मेहर बिनु मेहरबां किस तरह पाइये।
मेहर की कफनी कुलह भी मेहर की,
मेहर का मुतंगा कमर में लगाइये।
मेहर का आसा तमासा भी मेहर का,
मेहर का आब दिल को पिलाइये।।
अंदर भी मेहर है बाहर भी मेहर है,
मेहर के महल में मेहरबां मनाइये।
कहर की लहर में कोटि जन बहि गये,
(कबीर) मेहर बिनु मेहरबां किस तरह पाइये।।

70

फहम करु फहम करु फहम करु मान यह,
फहम बिनु फिकिर नहिं मिटै तेरी।
सकल उंजियार दीदार दिल बीच है,
जौक औ सौक सब मौज तेरी।।
बोलता अलमस्त मस्तान महबूब है,
इन से अदल कहु कौन केरी।
एकही नूर दरियाव भरि देखिये,
फैल वह रहा सब सृष्टि मेरी।।
आपही गनी गरीब है आपही,
आप गनीम होई आप घेरी।
आपही चोर पुनि साहु है आपही,
आपही कथै ज्ञान आप सुने री।।
आपही हरी हिरनाकुस आपही,
आप नरसिंह होइ आप गेरी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपही रावना आप रघुनाथ जी,
आपको आपही आप दलै री॥
आप बलिराम होंइ दान बसुधा किया,
आप बावन होंइ आप छलै री।
आप ही कृष्ण है कंस है आपही,
आप को आप आपही हतै री॥
आपही भक्त भगवंत है आपही,
और नहिं दूसरा अर्ज सुनै री।
आप तें दूसरा धिगड़ ठाढ़ा किया,
आप ही मूर्ति है आप पुजेरी॥
कहै कबीर कोंइ जगे जन जौहरी,
जिन सत का सरूप हेरि लिये री॥

71

देख बे देख अलेख के खेल को,
बना सरबज्ञ नाना अपारा।
आपही भोग बिलास रस कामिनी,
आपही नन्द का कान्ह कुमारा॥
आप ही भक्त प्रहलाद हिरनाकुस,
अपना उदर लै आप फारा।
कहै कबीर यह मन का खेंल है,
चित्र के बान तें कौन मारा॥

72

कहर की जहर दिल बीच तें दूर कर,
खोज दिल बीच जहं बसत हक्का।
खूब महबूब है खूब वह यार है,
करन कारन जहां सबद पक्का॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खड़े दर्दवंत दरवेश दरगाह में,
खैर औ मेहर मौजूद मक्का।
जिकिर कर जिकिर कर फिकिर को दूर कर,
कहै कबीर यह सखुन पक्का।।

73

कहै कबीर तू साध गुरु सेइ ले,
दया के तख्त पर बैठु भाई।
ज्ञान के महल में सकल सुख साहिबी,
साध की संगति मिले भेद पाई।।
भेद पाये बिना भर्म भागै नहीं,
भर्म जंगल धरि काल खाई।
सांच और झूठ को परखि तहकीक करि,
संत जन जौहरी भला भाई।।
प्रगट परतच्छ है सांच सोइ जानिये,
दृष्टि ना परै सो झूठ झांई।
बड़ी मरजाद पाखंड की जगत में,
सांच के कहतही कलह होई।।
चीन्हि साहिब परै काज तबही सरै,
परम आनंद बड़ भाग सोई।
सिफत बहुतै सुनी अजब दुलहा बना,
बिरहनी बिरह गुन बहुत गाई।।
दरस बिना परस बिन आस पूजै नहीं,
नीर बिन प्यास कबहूं न जाई।
नीर नियरे हुता प्यास भइ दूर की,
मर्म जानै नहीं जुगत कोई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कांच के महल में भूसि कुत्ता मरा,
आपनी छांह को आप धाई।
देखु दिव्य दृष्टि यह सृष्टि जहंड़े गई,
मड़ि रहा धोख सब घट्ट माहीं॥
मरकट मूठि गहि आप छोड़ै नहीं,
फंसि रहा मूढ़ जम फांस माहीं।
देखि के केहरी आपनी पर्तिमा,
पड़ा है कूप में प्रान खोई॥
कहै कबीर यह भर्म है दूसरा,
मर्म जानैं नहीं अंध लोई।
करतूत बहुतै कहैं रहनि में ना रहैं,
कहै ज्यों रहै त्यों संत सोंई॥

74

सुखी सब जीव गुरुदेव की सरन हैं,
काल का बान तहं नाहिं लागै।
आठहू पहर जहं राम रस पीवना,
करम औ भरम सब दूरि भागै॥
ज्ञान बिचार औ ध्यान निर्भय रहैं,
रैन दिन ध्यान गुरु और नाहीं।
कहै कबीर सुख सिंधु का झूलना,
मन और पवन कों पलट माहीं॥

75

जीव अज्ञान सब अंध चेंतै नहीं,
बहै बिष धार में खाय गोता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खोंट करनी करै राम उर ना धरै,
पाप का बीज सो फिरै बोता।।
यार असनाय से प्रीति अति करत है,
राम के जनन की करत हांसी।
कहत कबीर नर ऊबरै कौन बिधि,
मारि के काल गल डार फांसी।।

76

ज्ञान का धनुष ले मुक्ति मैदान में,
सील का बान ले मतंग मारा।
सबद का घाव सो सांच उर में धसा,
काम दल लोभ हंकार मारा।।
क्रोंध अरु मोंह दहि चोर पांचो गये,
जोति परकास देखि उंजियारा।
सुन्न के महल में रमे कबीर गुरु,
सबद अनहद से काल टारा।।

77

मोह के माहि सब जीव मस्तान है,
खान औ पान सब मगन हूवा।
नारि सों पुरुष और पुरुष सो नारि है,
अरस और परस मिलि नाधि जूवा।।
नारि के रैन दिन ध्यान है पुरुष का,
पुरुष को ध्यान है नारि केरा।
कहै कबीर सब जीव यों ऊरझा,
कहो क्यों छोड़िहै गर्भ फेरा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

78

देह तो देख मिलि जायगी खेह में,
देह से काज कुछ कीजिये रे।
राम का भजन औ गुरू की बंदगी,
देह धरि लाभ यह लीजिये रे।।
चालती कौड़ियां काज भल कीजिये,
कौड़ियां साथ कुछ नहिं जाई।
प्रान के छूटते पलक नहिं यार की,
कहै कबीर सुन चेत लाई।।

79

सोवता होय जो सोंई तो जागिहै,
जागता सोंवता कहां जागै।
मान मन माहिं अभिमान ज्ञानी हुआ,
सबद अवधूत का कहां लागै।।
कहत और सुनत सब अवधि पूरी भई,
अन-पायिनी भक्ति नहिं हाथ आई।
कहै कबीर यह ज्ञान सब थोथरा,
जीव का भला क्यों होय भाई।।

80

साध जो होंय तों ब्याध को नास कर,
ब्याध के नास तें साध होई।
बासना ब्याध सब जीव को दहत है,
बिना गुरुदेव कहु कौन खोई।।
कतरनी कपट दिल बीच से दूर कर,
सांच की सुमरनी हाथ लीजै।
कहै कबीर जब होय निर्बासना,
निर्मला नाम रस राम पीजै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुर्थ प्रकरण

झूलने

1

खाक जान तो खाक में रलि जावै,
तब आपु गुलाब समाइये जी।
वह नूर नबी तहकीक करै,
तब आदि मुराद को पाइये जी।।
असमान की दृष्टि को गर्द करै,
तब सुन्न समाधि लगाइये जी।
सुन्न छोड़ि बेसुन्न तें रहित होंवै,
तब धाम कबीर का पाइये जी।।

2

पाक जाति साहिब आलम की जी,
इसे जानि के दूसरा कौन जोवै।
कसरत करै दुख मेटने को,
सुख दम के साध करार होवै।।
सुख दुख को मेटि के एक करै,
यहि जानि आपु को आपु मोवै।
बुजुर्ग कबीर के संग दया,
हर दम में एका एक होवै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3

सब घट में आप वह खेलता है,
तू दूसरा ओर क्या पेखता है॥
पृथ्वी पवन के बीच पानी,
दरमियान में तेज कलोलता है।
सत रज मिलाय आकास ही को,
दम धरि के पानी बानी बोलता है॥
याहि बोल को तहकीक करो,
क्या हलुका भारी तोलता है।
दम दम सेती जगत खेती,
दया संग कबीर जो खोलता है॥

4

बार पार की हद्द हदूद देखो,
बिच आवना जावना लेखा है।
नदी नाव का यह संजोग बना,
तहां मिलना जुलना देखा है॥
देख भालि के यों आनन्द करो,
हम तुम में एक परे क्या है।
कोई वार रहै कोइ पार रहै,
दया संग कबीर बिबेका है॥

5

कोइ ज्ञान करै भावै ध्यान धरै,
गुन रूप उचारि के गावता है।
कोइ जोग भावै भावै मौन धरै,
अनहद अलेख बतावता है॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुरझी उरझी की मूल पड़ी,
घट घट का भेद नहि पावता है।
रहै जीव जगत के संग दया,
कायम कबीर बतावता है॥

6

तखत बना हाड़ चाम का जी,
दाना पानी का भोग लगावता है।
मल मूत्र झरै लोहू मांस बढ़ै,
आप अपना अंस बढ़ावता है॥
नाद बिंद के बीच कलोंल करै,
सो आतमराम कहावता है।
अस्थान यही कहां ढूंढ़ता है,
दया देस कबीर बतावता है॥

7

(एक) नर नारी छोड़ि उदास फिरै,
सो तो संगहि मनसा नारि भोगी।
अलख की प्यास बिन बिरहित तन,
भो छीन सद पिंडरोग रोगी॥
सुरझी उरझी की मूल पड़ी,
दुख जेर भये संसार सोगी।
कबीर कहै कोइ नाहिं बूझै,
यह मन के रंग सब भये जोगी॥

8

काठ के बीच में अगिनि जैसे,
जैसे तिल में तेल निवास है जी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूध के बीच में घीव जैसे,
ऐसे फूल के बीच में बास है जी॥
कबीर कहै घट को जो मथै,
तब पावै सबद प्रकास है जी।
मिहनत बिना सब ढूंढ़ फिरे,
यह बात से लोग निरास है जी॥

9

यह तो एक हुबाब है जी,
साकिन दरियाव के बीच सदा।
हुबाब तो ऐन दरियाव है जी,
देखो मौज बहर नजर जुदा॥
उठने में तो हुबाब है जी,
बैठने में है मतलब खुदा।
हुबाब दरियाव कबीर है जी,
दूजा नाम बौलै सो बुदबुदा॥

10

जब लग खोज चला जावै,
तब लग नहिं हाथ मुद्दा आवै।
जहां खोज थकै तहां हीं घर करै,
वहां घर को पकड़ि के बैठि जावै॥
थकित रहै जब दिल सेती,
तब आगे चलना नहि भावै।
कबीर मुद्दा हासिल हूआ,
बातन से नहिं कोइ महल पावै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

11

तन महजिद मन मुलना बसै,
चित्त के चौतरा बंग देवै।
पांच को जेर पचीस को जिबह कर,
तत्त की तसबी हाथ लेवै॥
मेहर को देख के कहर को खोई के,
इस भांति मेहर ते कहर खोवै।
कहै कबीर कोइ संत जन जौहरी,
आप साहिब आसिक होवै॥

12

सूर को कौन सिखावता है,
रन माहिं असी का मारना जी।
सती को कौन सिखावता है,
संग स्वामी के तन जारना जी॥
हंस को कौन सिखावता है,
नीर छीर का भिन्न बिचारना जी।
कबीर को कौन सिखावता है,
तत्त रंगों को धारना जी॥

13

दरियाव की लहर दरियाव है जी,
दरियाव और लहर में भिन्न कोयम।
उठे तो नीर है बैठे तो नीर है,
कहो दूसरा किस तरह होयम॥
उसी नाम को फेर के लहर धरा,
लहर के कहे क्या नीर खोयम।
जक्त ही फेर सब जक्त और ब्रह्म में,
ज्ञान करि देख कब्बीर गोयम॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

14

अनप्राप्त बस्तु को कहा तजे,
प्रापत तजै सो त्यागी है।
असील़ तुरंग को कहा फेरे,
अफतर फेंरै सो तो बागी है॥
जग भव का गावना क्या गावै,
अनुभव गावै सो रागी है।
बन गेह की बासना नास करै,
कबीर सोई बैरागी है॥

15

खुदी छोड़ि खुदा को याद करो,
पढ़ि पाक साहिब का झूलना जी।
केते झूलि गये केते झूलते हैं,
सो तो रैन का देखना पेखना जी॥
जहां नेह लगा जहां जोर न था,
तहां नेह लगाइ क्या तोड़ना जी।
दास कबीर बिचारि कहै,
क्या कुल्हिये में गुड़ फोड़ना जी॥

16

दीदार करो रोसन प्यारे,
गुलजार यही है और न कोई।
दरगाह में पींर मुकाम सदा,
इंक सग रहो छोड़ो दिल दोई॥
तुम आप में आप सबूत करो,
जिय जान जमाते चेतन सोई।
औजुद मौजूद कबीर बोलै,
पहिचान अवाज कायम सोई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

17

असमान का आसरा छोड़ प्यारे,
उलटि देखो घट अपना जी।
तुम आप में आप तहकीक करो,
और छोड़ दो मन की कल्पना जी।।
बिन देखे जो निज नाम जपै,
सो कहिये रैन का सपना जी।
कबीर दीदार परघट देखा,
तब आपका जपना जी।।

18

हाय हाय जहान में मौत बुरी,
जिन्ह मारि जहान को जेर कीया।
अब बोलता था अब चालता था,
अब जाइ ज़ंगल में घर कीया।।
कौड़ी भर आग मंगाय के जी,
लख चारि का माल जलाय दीया।
घर बार के सब रोवैं बैठे,
पांच तत्त कबीर बताय दीया।।

19

दार गृह छोड़ि उदास फिरै,
बन खंड में जाइ समाधि लागै।
इंगला पिगला सुखमना ध्यान,
झिलिमिलि जोति के मद्ध पागै।।
तीरथ में नित भरमि फिरै,
द्वारका जाइ के देह दागै।
कबीर कहै पै बिबेक बिना,
कछू नहिं बंदे हाथ लागै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

20

मुक्त होवै छुटै बंधन सेती,
तब कौन मरै तिसे कौन मारै।
अहंकार तजै भय रहित होवै,
तब कौन तरै तिसे कौन तारै॥
मरना जीना है ताही को,
जो आपु को आपु बिसारि डारै।
चेतन्य होवै उठि जागि देखै,
दया देखि के जोति कबीर धारै॥

21

घट घट में रटनां लागि रही,
परघट हुआ अलेख है जी।
कहुं चोर हुआ कहुं साह हुआ,
कहुं बाम्हन है कहुं सेख है जी॥
बहुरंगी प्यारा सब से न्यारा,
सबही में एकै भेष है जी।
कबीर मुरसिद मिला उस में,
हम तुम नाहीं वह एक है जी॥

22

गुरु प्रेम का अंक पढ़ाय दिया,
अब पढ़ने में कुछ नहिं बाकी।
बावन चिराग जलाय दिया,
पट खोलि महल में ले झांकी॥
चार बेद तो पासै तखत लगे,
सुछम बेद उपर आसन जा की।
कहै कबीर इक नूर सेती,
सरफराज हुआ बंदा खाकी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

23

कोई कुच्छ कहै कोइ कुच्छ कहै।
हम अटके हैं जहां अटके हैं।
सुरत कमल पर अमल किया।
महबूब के नाम पै मटके हैं॥
संसार बिचार के छोड़ दिया।
हम इसी बात पै सटके हैं।
दास कबीर के झूलने में।
सब पंडित काजी फटके हैं॥

24

भाषा तो संतन ने कहिया।
संस्कृत ऋषिन की बानी है जी।
ज्यों काली पाली धेनु दुहिया।
एकही छीर सो जानी है जी॥
ज्यों सरिता सागर कूप जथा।
सिद्धान्त तिहूं में पानी है जी।
कहै कबीर एक अर्थ लीजै।
भिन्न मानते सो अज्ञानी हैं जी॥

25

ब्रह्मा की औलाद कमल ते है।
अगस्त कुंभ ते जानिये जी।
शृंगी की माय तो मृगिनी है।
किरती सुत ब्यास बखानिये जी॥
बसिष्ट की माय तो गनिका है।
गोकरन गऊ तें जानिये जी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बालमीकि की माय तों बामिया है।
संकर पिता कर मानिये जी॥
हम तो बूझि बिचारी देखा।
दासी नारद कर मानिये जी।
कबीर एते आचारजों में।
बाम्हन कवन बखानिये जी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंचम प्रकरण

शब्दावली

(राग मंगल)

1

मंगल एक अनूप, संत जन गावहीं।
उपजै प्रेम बिलास, परम सुख पावहीं।।
सतगुरु बिप्र बुलाय, तो लगन लिखावहीं।
संत कुटुम परिवार, तो मंगल गावहीं।।
बहु बिधि आरति साजि, तो चौक पुरावहीं।
मोतियन थार भराइ के, कलस लेसावहीं।।
हीरा हंस बिठाय, तो सब्द सुनावहीं।
जेहि कुल उपजे संत, परम पद पावहीं।।
मिटो करम को अंक, जबै आगम भयो।
पाया सूरति सोहं, संसय सब गयो।।
भक्ति हेत चित लाय, तो आरति उर धरो।
तजि पाखंड अभिमान, तो दुरमति परिहरो।।
तन मन धन औ प्रान, निछावर कीजिऐ।
त्रिगुन फन्द निरुवारि, पान निज लीजिऐ।।
यह मंगल सत लोक के, हंसा गावहीं।
कहै कबरि समुझाय, बहुरि नहि आवहीं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2

पिया मिलन की आस, रहौं कब लौं खड़ी।
ऊंचे चढ़ि नहिं जाय, मनें लज्जा भरी॥
पांव नहीं ठहराय, चढ़ूं गिरि गिरि पड़ूं॥
फिरि फिरि चढ़हुं सम्हारि, चरन आगे धरूं॥
अंग अंग थहराय, तो बहु बिधि डरि रहूं।
कर्म कपट मग घेरि, तो भ्रम में भुलि रहूं॥
निपट बारि अनारि, तो झीनी गैल है।
अटपट चाल, तुम्हारि, मिलन कस होइ है॥
तेजो कुमति बिकार, सुमति गहि लीजिये।
सतगुरु सब्द सम्हारि, चरन चित दीजिये॥
अन्तर पट दे खोल, सब्द उर लाव री।
दिल बिच दास कबीर, मिलैं तोहि बावरी॥

3

उठो सोहंगम नारि, प्रीति पिया सों करो।
यह उरले ब्योहार, दूर दुरमति धरो॥
पांच चोर बड़ जोर, संगि एते घने।
इन ठगियन के साथ, मुसै घर निसु दिने॥
सोवत जागत चोर, करै चोरी घनी।
आपु भये कुताल, भली बिधि लूटहीं॥
द्वादस नगर मंझार, पुरुष इक देखिये।
सोभा अगम अपार, सुरति छबि पेखिये॥
होत सब्द घनघोर, संख धुनि अति घनी।
ततन की झनकार, बजत झीनी झीनी॥
है कोई महरम साध, भले पहिचानिये।
सतगुरु कहै कबीर, सत की बानि ये॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

4

गुन करु बावरी गुन करु, जब लग नैहर बास हो।
पुनि धनि जैहौ ससुरे, कंत पियारे पास हो।।
जब लग राज पिता घर, गुन करि लेहु हो।
सासु ननद के बुलवन, उत्तर का देहु हो।।
आये भाट बराम्हन, लगन धराइन हो।
लगन सुनत गवने कै, मुंह कुम्हिलाइन हो।।
बाजन बाजै गहगहा, नगर उठे झनकार हो।
प्रीतम कहूं न देखल, आयो चालनहार हो।।
लै रे उतारिन तेहि घर, जहं दिस न दुवार हो।
मन मन झुरवै दुलहिनि, काह कीन्ह करतार हो।।
जो मैं जनतिउं ऐसन, गुन करि लेतिउं हो।
जातिउ साहिब के देसवां, परम सुख पौतिउं हो।।
चेति ले बावरी चेति ले, चेति लेहु दिन चारी हो।
यह संगत सब छूटि है, कहत कबीर बिचारी हो।।

5

पूरनमासी आदि, जो मंगल गाइये।
सतगुरु के पद परसि, परम पद पाइये।।
प्रथमे मंदिर झराइ के, चंदन लिपाइये।
नूतन बस्तर आनि के, चंदेवा तनाइये।।
(तब) पूरन गुरु के हेत, तो आसन बिछाइये।
गुरु के चरन प्रछालि, तहां बैठाइये।।
गज मोतियन को चौक, सो तहां पुराइये।
ता पर नरियर धोति, मिष्ठान्न धराइये।।
केरा और कपूर, तो बहु बिधि लाइये।
अष्ट सुगंध सुपारि, तो पान मंगाइये।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पल्लौ सहित सो कलसा, जोति बराइये।
ताल मृदंग बजाइ के, मंगल गाइये।।
साधु संत संग लैके, आरति उतारिये।
आरति करि पुनि नरियर, तबहि मोराइये।।
पुरुष कों भोग लगाइ, सखा मिलि पाइये।
जुगन जुगन की छुधा बुझाइ, तो प्रसाद पाइ अघाइये।।
परमानन्दित होय, तो गुरुहि मनाइये।
कहैं कबीर सत भाय, तो लोक सिधाइये।।

6

सत्त सुकृत सत नाम, सुमिरु नर प्रानी हो।
सुमति से रचहु बियाह, कुमति घर छाड़ी हो।।
सत्त सुकृत कै मांड़ो, तो रुचि रुचि छावो हो।
सतगुरु बिप्र बुलाय कै, कलस धरावो हो।।
पहिली भंवरिया बेद, पढ़ै मुनि ज्ञानी हो।
दुसरि भंवरिया तिरथ, जा को निरमल पानी हो।।
तिसरी भंवरिया भक्ति, दुबिधा जिनि लावो हो।
चौथी भंवरिया प्रेम, प्रतीति बढ़ावो हो।।
पंचई भंवरिया अलख, संग सुमति सयानी हो।
छठईं भंवरिया छिमा, जहं अमी नहानी हो।।
सतईं भंवरिया साहिब मिले, मिटि आवा जानी हो।
प्रेम मगन भइ भांवर, उत धुन तानी हो।।
सतगुर गांठि प्रेम की, छोड़ि ना छूटै हो।
लागि रहो गुरु ज्ञान, डोरि ना टूटै हो।।
दास कबीर कै मंगल, जो कोइ गावै हो।
बसै सत लोक में जाइ, अमर पद पावै हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

7

मानुष जन्म अमोल, सुकृत कौ धाइये।
सुरति कुंवारी कन्या, हंसा संग ब्याहिये।।
सतगुरु बिप्र बुलाइ के, लगन धराइये।
बेरौ कन्या बराइ, बिलंब ना लाइये।।
पांच पचीस तरुनिया, तौ मंगल गाइये।
चौरासी के दुक्ख, बहुरि ना लाइये।।
सुरति पुरुष संग बैठि, हाथ दोउ जोरिये।
जम से तिनुका तोरि, भंवरि भल फेरिये।।
सुरति कियो है सिंगार, पिया पहं जाइये।
जनम करम के अंक, सो तुरत मिटाइये।।
हंसा कियो है बिचार, सुरति सो अस कही।
जुग जुग कन्या कुंवारि, एतक दिन कहं रही।।
सुरति कियो है प्रनाम, पिया तुम सत कही।
सतगुरु कन्या कुंवारि, एतक दिन तहं रही।।
प्रेम पुरुष कै साज, अखंड लेखा नहीं।
अमृत प्याला पियै, अधर महं झूलहीं।।
पान पर्वाना पाय, तौ नाम सुनावही।
सतगुरु कहैं कबीर, अमर सुख पावही।।

8

आजु लगे पुनर्मासी, तो मंगल गाइये।
बस्तर सेत आनि के, चंदेवा तनाइये।।
प्रेम कै मंदिर झारि, चंदन छिरकाइये।
सतगुरु पूरा होय, तो चौक पुराइये।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाजिम गद्दी बिछाइ के, तकिया सजाइये।
गुरु के चरन पखारि, तो आसन कराइये।।
गज मोंती मंगवाइ के, चौक पुराइये।
ता पर मेवा मिष्ठान्न तो पान चढ़ाइये।।
पल्लौ सहित तहं कलस, तो आनि धराइये।
पांच जोति कै दीपक, तहवां बराइये।।
जल थल सील सुधारि, तो ज़ाति जगाइये।
साध संत मिलि आइ के, आरति उतारिये।।
ताल मृदंग बजाइ, तो मंगल गाइये।
आरति करु पुनर्मासी, तो नरियर मोरिये।।
जम सों तिनुका तोरि, तो फंद छुड़ाइये।
पुरुष को भोग लगाइ, हंसा मिलि पाइये।।
जुगन जुगन छुधा की बुझाइ के, गुरु को मनाइये।
कहै कबीर सत भाव, सो लोक सिधाइये।।

9

सतगुरु जौहरि आय, तो मानिक लाइया।
काया नगर मंझारि, बजार लगाइया।।
चहुं मुख लागि दुकान, तो झिलिमिलि है रहे।
पारख सौदा बिसाहि, अधर डोरि झूलि रहे।।
जिन जिन हंसा गाहक, बस्तु बिसाहिया।
पाया सब्द अमोल, बहुरि नहि आइया।।
बारहबानी के ज्ञान, तो सोई सुरंग है।
निर्गुन सब्द अमोल, साहिब को अंग है।।
करि ले सोरहो सिगार, तो पिया को रिझाइये।
दिल बिच दास कबीर, हंसा समुझाइये।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

10

साहिब को नाम अखण्ड, और सब खंड है।
खण्ड है मेरु सुमेरु, खण्ड ब्रह्मंड है।।
नारी सुत धन धाम, सो जीवन बंध है।
लख चौरासी जीव, परे जम फंद है।।
चंचल मन करु थीर, तबै भल रंग है।
उलटि निरंतर पीव, तो अमृत संग है।।
जिन कै साहिब से नेह, सोई निरबंध है।
उन साधुन के संग, सदा आनन्द है।।
दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है।
कहैं कबीर चित चेतो, जक्त पतंग है।।

11

(*पंचायन मंगल*)

सत्त सुकृत सत नाम को, आदि मनाइये।
सुर्त जोग-संतायन, निसि दिन ध्याइये।।
सतगुरु चरन मनाय, परम पद पाइये।
करि दंडवत प्रनाम, तों मंगल गाइये।।
गावै जो मंगल कामिनी, जहं सत्त सीतल थान है।
परम पावन ठाम अबिचल, जहां ससि सुरज की खान है।।
मानिकपुर इस गांव अबिचल, जहं न रैन बिहानि है।
कहैं कबीर सो हंस पहुंचे, जो सत्त नामहि जानि है।।

अष्ट खंड जहं कामिनि, आरति साजहीं।
चार भानु की सोभा, संग बिराजहीं।।
दृष्टि भाव जहं होत, हंस सुख पावहीं।
हंसन हंस बिलास, कामिनि सचि मानहीं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांचि मानि कामिनि सुक्ख, हंसा आगे को पग धारहीं।
सुख सागर सुख बास में, जहं सुकृत दरस निहारहीं॥
पतित-पावन भये हंसा, काया सोरह भान है।
कहै कबीर सो हंस पहुंचे, जो सत्त नामहि जानि है॥

सुख सागर की सोभा, कहा बखानिये।
कोटिन रबि चहुं ओर, उदय तहं पेखिये॥
धरनि अकास जहां नहि, हीरा जगमगै।
उहवां दीनदयाल, हंस के संग लगै॥
संग लगि उहवां हंस के, कहै तुम हमें भल चीन्ह हो।
अंबु करि सों दीप दिखावों, प्रथम पुर्ष जो कीन्ह हो॥
असंख रबि औ कोटि दामिनि, पुहुप सेज अरघान है।
कहैं कबीर सो हंस पहुंचे, जो सत्त नामहि जानि है॥

आदि अंत जोग-जीत, हंस के संग लगे।
पंकज करिये अंजोर, होत साहिब मिले॥
दोउ कर जोरि मनाय, बहुत बिनती करी।
साहिब दरसन देव, हंस सरधा धरी॥
दया कीन्हा पुर्ष बिहंसे, मस्तक दरस दिखाइ हो।
अमृत फल जब चार दीन्हा, सकल हंस मिलि पाइ हो॥
अटल काया जब भई, मंजुल करी अस्थान है।
कहैं कबीर सो हंस पहुंचे, जो सत्त नामहि जानि है॥

सदा बसंत जहं फूलो, कुंज सुहावहीं।
अछै बृच्छ तर हंसा, सेज बिछावहीं॥
चहुं दिसि हंस की पांती, हीरा जगमगै।
सोरह रबि को रूप, अंग में चमकहीं॥
अंग हंसा चमक सोभा, सूर सोरह पावहीं।
धन सतगुरु कों सार बीरा, पुर्ष दरस दिखावहीं॥
हंस सुजन जन अंस भेंटे, हंस को पहिचानि है।
कहै कबीर सो हंस पहुंचे, जो सत्त नामहिं जानि है॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

12

(बेदी)

लगन लगी सत लोक, सुकृत मन भावहीं।
सुफल मनोरथ होय, तो मंगल गावहीं।।
चलु सखि सुरति संजोय, अगम घर उठि चलो।
हंस सरूप संवारि, पुरुष सो तुम मिलो।।
कनक पत्र पर अंक, अनूपम अति कियो।
तुमहि सकल संदेस, लगन पिय लिख दियो।।
लिख दियो सब्द अमोल, सोहंग सुहावता।
पूरन परम-निधान, ताहि बल जम जिता।।
तत करनी कर तेल, हरदि हित लावहीं।
कंकन नेह बंधाय, मधुर धुन गावहीं।।
अच्छत थार भराय, तो चौक पुरावहीं।
हीरा हंस बिठाय, तो सब्द सुनावहीं।।
कंचन खम्भ अजोर, अधर चारो जुगा।
बाजत अनहद तूर, सेत मंडप छजा।।
अगर अमी भरि कुम्भ, रतन चौरी रची।
हंस पढ़ै तहं सब्द, मुक्ति बेदी रची।।
हस्त लिये सत केल, ज्ञान गढ़ बन्धना।
मोच्छ सरूपी मौर, सीस सुन्दर बना।।
सुरति पुरुष सों मेल, तो भांवरि परि गई।
अमर तिलक ताम्बूल, सुघर माला दई।।
दीन्हो सुरति सुहाग, पदारथ चारि को।
निस दिन ज्ञान बिचार, शब्द निर्वार को।।
यह मंगल सत लोक के, हंसा गावहीं।
कहैं कबीर समुझाय, बहुरि नहिं आवहीं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षष्ठम प्रकरण

राग गारी

1

सतगुरु साहिब पाहुन आये, का ले करों मेहमानी जी॥
निरति के गेंहुवा गंगा जल पानी, परसे सुमति सयानी जी॥
प्रथम लालसा लुचई आई, जुगत जलेबी आनी जी॥
भाव की भाजी सील कि सेमा, बने कराल करेला जी॥
हिय कैं हींग हृदय कै हरदी, तत्त के तेल बघारे जी॥
डारे धोइ बिचार के जल से, करमन कै करुवाई जी॥
यह जेवनार रच्यो घट भीतर, सतगुरु न्योति बुलाये जी॥
जेवन बैठे साहिब मोरे, उठत प्रेम रस गारी जी॥
कहैं कबीर गारी की महिमा, उपमा बरनि न जाई जी॥

2

जो तूं अपने पिय की प्यारी, पिया कारन सिंगार करो॥टेक॥
जा के जुगुत की ककही, करम केस निरुवार करो।
जा के तत के तेल, प्रेम की डोरी से चोटी गुहो॥
जा के अलख के काजर, बिरह कि बिंदी लिलार दई।
जा के नेह नथुनिया, गुंज कैं लटकन झूलि रहे॥
जा के सुमति के सूत, दया हमेल हिये माहिं परी।
जा के चित की चौकी, अकिल के कंगना झलकि रहे॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जा के चोप की चुनरी, ज्ञान पछेली चमक रही।
जा के तिल के छल्ले, सब्द के बिछुवा बाजि रहे।।
तुम एतन धनि पहिरो, रूसल पिया के मनाइ लई।
उठि के चलो सुहागिनि, निरखत बदन हुलास भरी।।
पिय तुम मो तन हेरो, मैं हौं दासी तुम्हार खड़ी।
गारी गावै कबीरा, साधो सुनो बिचार धरी।।

3

(नारियल मोरना)

बनजारिन बिनती करै, सुन साजना।
नरियल लीन्हो हाथ, संत सुन साजना।।
बिना बीज को बृच्छ है, सुन साजना।
बिना धरती अंकूर, संत सुन साजना।।
वाको मूल पताल है, सुन साजना।
नरियल सीस अकास, संत सुन साजना।।
बिना सब्द जिनि मोरहू, सुन साजना।
जीव एकोतर हानि, संत सुन साजना।।
गुरु के सब्द ले मोरहू, सुन साजना।
फूटै जम को कपार, संत सुन साजना।।
सखियां पांच सहेलरी, सुन साजना।
नौ नारी बिस्तार, संत सुन साजना।।
कहैं कबीर बघेल सों, सुन साजना।
रानी इन्द्रमती सरदार, संत सुन साजना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(राग झूलना)

1

करेगा सोई करता ने हुंकुम किया,
सब्द का संग समसेर बंका।
ज्ञान का चौंर ले प्रेम का पंखा ले,
खैंच के तेल छोड़ाव संका॥
कड़ी कमान जब ऐंठि के खैंचिया,
तीन बेर टनकार सहज टंका।
मगन मुसक्यात गगन में कूदिया,
ढील कर बाग मैदान हंका॥
पांच पच्चीस और तीन भागा फिरै,
बड़े सहुंकार औ राव रंका।
कहैं कबीर कोउ संत जन जौहरी,
बड़े मैदान मों दिया डंका॥

2

खुदी को छांड़ि खुदाय को याद कर,
वो खुदाय क्या दूर है जी॥
खुद बोलते को तहकीत करि ले,
हर दम हजूर जरूर है जी॥
ठोर ठौर क्या भटकत फिरो,
करो गौर तुम हीं में नर है जी॥
कबीर का कहना मानि ले अब,
परवाना सहित मंजूर है जी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3

चलु रे जीव जहं हंस को देस है,
बसत कबीर आनन्द सोई।
काल पहुंचै नहीं सोग ब्यापै नहीं,
रहैगा हंस तहं संग होई।।
यह परपंच है सकल जाहि को,
ता में रहे का पार पावै।
कठिन दरियाव जहं जीव सब बाझिया,
माया रूप धरि आपै खेलावै।।
(तहं) खेलावै सिकार जम त्रिगुन के फंद में,
बांधि के लेत सब जींव मारी।
मोह के रूप तहं नारि इक ठाढ़ि है,
जहां तुम जाहु तहं मारि डारी।।
तेहि देखि सब जीव जल के सरूप भे,
तदपि परतीत कोइ नाहि पाई।
कहैं कबीर परतीत कर सब्द की,
काम औ क्रोध कमान तोरी।।

(राग कहरा)

1

सुनो सयानी अकथ कहानीं, गुरु अपने का सनेसा हो।।
जो पिया मारै झझकारै, बाहर पगु ना दीन्हा हो।।
निरत पिया को अंतर ताको, सबद नेह ना छूटै हो।।
जैसे डोरी उड़ै अकासा, सब्द डारि नहिं टूटै हो।।
डोरी टूटे खसे भूमि पर, तब पिय बाद गंवावा हो।।
सिर पर गागर बात सखिन सों, चित से गागर न छूटै हो।।
दास कबीर के निर्गुन कहरा, महरम होय सो बूझै हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2

बिमल बिमल अनहद धुनि बाजै, समुझि परै जब ध्यान धरै॥टेक॥
कासी जाइ कर्म सब त्यागै, जरा मरन से निडर रहै।
बिरले समुझि परै वह गलिया, बहुरि न प्रानी देंह धरे॥
किगरी संख झांझ डफ बाजै, अरुझा मन तहं ख्याल करै।
निरंकार निरगुन अबिनासी, तीन लोक उंजियार करै॥
इंगला पिंगला सुखमन सोधो, गगन मंदिर में जोति बरै।
अष्ट कंवल द्वादस के भीतर, वहं मिलने की जुगत करै॥
जीवन मुक्ति मिले जेहि सतगुरु, जन्म जन्म के पाप हरै।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, धिरज बिना नर भटकि मरै॥

(दस मुकामी रेख़ता)

चला जब लोक को सोक सब त्यागिया।
हंस कों रूप सतगुरु बनाई।
भृंग ज्यों कीटि को पलटि भृंगै किया,
आप सम रंग दै लै उड़ाई॥
छोड़ि नासूत मलकूत को पहुंचिया,
बिस्नु की ठाकुरी दीख जाई।
इंद्र कुबेर रंभा जहां नृत करैं,
देव तैंतीस कोटिक रहाई॥
छोड़ि बैकुंठ का हंस आगे चला,
सून्य में जोति जगमग जगाई।
जोति परकास में निरधि निःतत्व को,
आप निर्भय भया भय मिटाई॥
अलख निर्गुन जेही बेद अस्तुति करै,
तीनहूं देव को है पिताई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भगवान तिन के परे सेत मूरत धरे,
भग की आनि तिनकों रहाई॥
चार मोकाम पर खंड सोरह कहें,
अंड को छोर ह्यां तें रहाई।
अंड के परे अस्थान आचित को,
निरखिया हंस जब उहां जाई॥
सहस और द्वादसौं रूह है संग में,
करत किलोल अनहद बजाई।
तातु के बदन की कौन महिमा कहौं,
भासती देंह अति नूर छाई॥
महल कंचन बने मनी ता में जड़े,
बैठ तहं कलस अखंड छाजे।
अचिंत के परे अस्थान सोहंग का,
हंस छत्तीस तहवां बिराजे॥
नूर का महल और नूर की भूमि है,
तहां आनंद सों दुंद भाजे।
करत किलोल बहु भांति से संग इक,
हंस सोहंग के जों समाजे॥
हंस जब जात षट चक्र को बेधि के,
सात मोकाम में नजर फेरा।
परे सोहंग के सुरति इच्छा कहीं,
सहस बावन जहां हंस हेरा॥
रूह की रासि तें रूप उन को बनो,
नाहिं उपमाहिं दूजी निबेरा।
सुर्त से भेंट के सब्द की टेक चढ़ि,
देखि मोकाम अंकूर केरा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सून्य के बीच में बिमल बैठक तहां,
सहज अस्थान है गैब केरा।
नवो मोकाम यह हंस जब पहुंचिया,
पलक बिलंब ह्वां कियो डेरा।।
तहां से डोरिमक तार ज्यों लागिया,
ताहि चढ़ि हंस गौ दै दरेरा।
कये आनंद सों फंद सब छोड़िया,
पहुंचिया जहां सतलोक मेरा।।
हंसनी हंस सब गाय बजाय कें,
साजि के कलस वोहि लेन आए
जुगन जुग बीछुरे मिले तुम आई के,
प्रेम करि अंग सों अंग लाए।।
पुरुष ने दरस जब दीन्हिया हंस को,
तपनि बहु जन्म की तब नसाए।
पलटि कें रूप जब एक सों कीन्हिया,
मनहुं तब भानु षोड़स उगाए।।
पुहुप के दीप पियूष भोजन करै,
सब्द देंह जब हंस पाई।
पुष्प के सेहरा हंस और हंसिनी,
सच्चिदानन्द सिर छत्र छाई।।
दिपै बहु दामिनी दमक बहु भांति की,
जहां घन सब्द की घुमड़ लाई।
लगे जहैं बरसने गरज घन घोर कें,
उठत तहं सब्द धुनि अति सुहाई।।
सुनै सोइ हंस तहं जुत्थ के जुत्थ है,
एक ही नूर इक रंग रागे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करत बिहार मन भावनी मुक्ति भे,
कर्म और भर्म सब दूरि भागे॥
रंक औ भूप कोइ परखि आवै नहीं,
करत किलोल बहु भांति पागे।
काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब,
छाड़ि पाखंड सत सब्द लागे॥
पुरुष के बदन की कौन महिमा कहौं,
जगत में उभय कछु नाहिं पाई।
चंद्र औ सूर गन जोति लागै नहीं,
एकहू नख की परकास भाई॥
पान परवान जिन बंस का पाइया,
पहुंचिया पुरुष के लोक जाई।
कहैं कबीर यहि भांति सों पाइ हो,
सत की राह सो प्रकट गाई॥

(राग जंतसार)

1

सुरति मकरिया गाडहुं हे सजनी–अरे सजनी।
दूदों रे नयनवां जोतिया लावहु रे की॥
मन धरु मन धरु मन धरु हे सजनी–अहे सजनी।
अइसन समइया फिरि नहिं पांवहु रे की॥
दिन दस रजनी हे सुख करु सजनी–अहे सजनी।
इक दिन चांद छपायल रे की॥
संगहि अछत पिय भस्म भुलइली–अहे सजनी।
मोरे लेखे पिया परदेसहिं रे की॥
नव दस नदिया अगम बहे सोतिया हो–अहे सजनी।
बिचहिं पुरइनि दह लागल रे की॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फुल इक फुलले अनुप फुल सजनी–अहे सजनी।
तेहि फुल भंवरा लुभाइल रे की॥
सब सलि हिलि मिलि निज घर जाइब–अहे सजनी।
समुंद लहरिया समाइब रे की॥
दास कबीर यह गवलैं लगनियां हो–अहे सजनी।
अब तो पिया घर जाइब रे की॥

2

अपने पिया की मैं होंइबौं सोहागिनी–अहे सजनी।
भइया तजि सइयां संग लागब रे की॥
सइयां के दुअरिया अनहद बाजा बाजै–अहे सजनी।
नाचहिं सुरति सोहागिनि रे की॥
गंग जमुन के औघट घटिया हो–अहे सजनी।
तेहि पर जोगिया मठ छावल रे की॥
देहौं सतगुर सुतीं के बिरवा हो–अहे सजनी।
जोगिया दरस देखे जाइब रे की॥
दास कबीर यह गवलैं लगनियां हो–अहे सजनी।
सतगुरु अलख लखावल रे की॥

(राग बसंत)

खेलत सतगुरु ऋतु बसंत। मुक्ति पदारथ मिले कंत।। टेक॥
धरती रथ चढ़ि देखो देस। घर घर निरखो नृप नरेस॥
जोजन चार पैतरे फेर। बांधि मवासी गढ़ में घेर॥
अधर निअच्छर गहो ढाल। भागि चालै जब धरौ काल॥
सर सुधाारि घट कर कमान। चंच चिला गहि मारो बान॥
साधु संग रन करो जोर। तब घट छोड़ै चतुर चोर॥
ऐसी बिधि से लड़ै सूर। काल मवासी होय दूर॥
अधर निअच्छर गहो डोर। जो निज मानो बचन मोर॥
धरती तुरंग होंय असवार। कहै कबीर भव उतरो पार॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(राग होली)

1

सतगुरु दीन-दयाल पिरीतम पाइया।।टेक।।
बंदी छोर मुक्ति के दाता, प्रेम सनेही नाम।
साध संत के बसी अभिलाषा, सब-बिधि पूरन काम।।
जैसे चात्रिक स्वांती जल को, रटतु है आठो जाम।
ऐसी सुरति लगी सतगुरु, सो पाये सुख धाम।।
आनंद मंगल प्रेम चारि गुरु, अमर करत हैं जीव।
सुमिरन दे सतलोक पठाये, ऐसे समरथ पीव।।
चरन कमल सतगुरु की सेवा, मन चित गहु अनुराग।
कहै कबीर अस होंरी खेलै, जा के पूरन भाग।।

2

ऐसी होरी खेल, जा में हुरमत लाज रहो री।।टेक।।
सील सिंगार करो मोर सजनी, धीरज मांग भरो री।
ज्ञान गुलाल लगावों सजनी, अगम घर सूझि परोरी।।
उठत धमार काया गढ़ नगरी, अनहद बेनु बजो री।
फगुवा खेलूं अपने साहिब संग, हिरदे सांच धरो री।।
लेती करो जग आइ के साधो, चेला सिष न बटोरीं
मने मने की सिर पर मेटुकी, नाहक बोझ मरो री।
मेटुकी उतारि मिलो तुम पिय सों, सत्त कबीर कहो री।।

3

माया भ्रम भारी सगरो जंग जाति लियो।।टेक।।
गज गामिनि कठोर है माया, समय कीन्ह सिंगारा।
लै के डारै मोह नदी में, कोइ न उतरै पारा।।
निज आंखिन में अंजन दीन्हा, पंडित आंखि में राई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जोगी जती तपी सन्यासी, सुर नर पकरि नचाई॥
गोरख दत्त बसिष्ट ब्यास मुनि, खेलन आये फागा।
सिंगी ऋषि पारासर आये, छोड़ि बैरागा॥
सात दीप और नवो खंड में, सब से फगुवा लीन्हा।
ठाढ़ कबीर सों अरज करतु है, तुमहीं ना कछु दीन्हा॥

4

खेलों खेलों सोहागिनि होरी।
चरन सरोज पिया हित जानो, रज के केसर घोरी॥
सोहंग नारि जहं रंग रचो है, बिच में सुखमन जोरी।
सदा सजीवन प्रेम पिया को, गहि लीजे निज डोरी॥
लिये लकुट कर बरन बिचारों, प्रेम प्रीति रंग बोरी।
रंग अनेक अनुभव गहि राचो, पिय के पांव परो री॥
कहैं कबीर अस होरी खेलो, कोई नहिं झकझोरी।
सतगुरु समरथ अजर अमर हैं, तिन के चरन गहों री॥

(राग दादरा)

1

बलम संग सोय गई दोई जनी॥टेक॥
इक ब्याही इक अरधी कहावै, दूनों सुभग सुहाग भरी॥
ब्याही तो उंजियार दिखावै, अरधी ले अंधियार खड़ी॥
ब्याही तो सुख निदिया सोवे, अरधी दुख सुख माथ धरी॥
कहै कबीर सुनो भाई साधों, दूनों पिया की पियारी रहीं॥

2

रमैया की दुलहिन लूटा बजार॥टेक॥
सुरपुर लूटा नागपुर लूटा तिन लोक मचि गइ हाहाकार॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रह्मा को लूटे महादेव को लूटे, नारद मुनि के परी पिछार।।
स्त्रिगी की भृंगी करि डारी, पारासर कै उदर बिदार।।
कनफूंका चिदाकासी लूटे, जोगेसुर लूटे करत बिचार।।
हम तो बचि गये साहिब दया से, सब्द डोरि गहि उतरे पार।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, इस ठगनी से रहो हुसियार।।

(ककहरा)

1

(क) काया कुंज करम की बाड़ी, करता बाग लगाया।
किनका ता में अजर समाना, जिन बेली फैलाया।।
पांच पचीस फूल तहै फूले, मन अलि ताहि लुभाया।
वोहि फूलन के बिषै लपटि रस, रमता राम भुलाया।।
सा:-मन भंवरा यह काल है, बिषै लहरि लपटाया।
ताहि संग रमता वहै, फिरि फिरि भटका खाय।।

2

(ख) खालिक की तो खबर नहीं कछु, खाब ख्याल में भूला।
खाना दाना जोड़ा घोड़ा, देखि जवानी फूला।।
खासा पलंग से जबंद तकिया, तोसक फूल बिछाया।
नवल तारि लै ता पर पौढ़ा, काम लहर उमड़ाया।।
सा:-लागी नारी प्यारी अति, छुटा धनी सों नेह।
काल आय जब ग्रासि है, खाक मिलेगी देह।।

3

(ग) गुरु कीजिये निरखि परिख कै, ज्ञान रहनि का सूरा।
गर्ब गुमान माया मद त्यागे, दया छिमा सत पूरा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गैल बतावै अमर लोक की, गावै सतगुरु बानी।
गज मस्तक अंकुस गहि बैठे, गुरुवा गुन गलतानी॥
सा:-पाप पुनय की आस नहिं, करम भरम से न्यार।
कृतृम पाखंड परिहरे, अस गुरु करो बिचार॥

4

(घ) घट गुरु ज्ञान बिना अंधियारा, मोह भरम तम छाया।
सार असार बिचारत नाहीं, अमी धोख बिष खाया॥
घर का घृर्त रेत में डारै, छाछ ढूंढ़ता डोलै।
कंचन देके कांच बिसाहै, हरू गरू नहिं तौले॥
सा:-ज्ञान बिना नर बावरा, अंध कूर मतिहीन।
सांच गहै नहि परखि कै, झूठै के आधीन॥

5

(ङ) डंभ मनै मत मानियो, सत्त कहौ परमारथ जानी।
उपजै सुख तब हृदय तुम्हारी, जब परखो मम बानी॥
ऊंचा नीचा कोंइ नहीं रें, करम कहावै छोटा।
जासु के अंदर करकै नखरा, सोई साल है खोंटा॥
सा:-ऊपर जटा जनेऊ पहिने, माला तिलक सुहाय।
संसय सोक मोह भ्रम अन्दर, सकले में रहु छाय॥

6

(च) चित से चेतहु चतुर चिकनियां, चैन कहा तुम सोया।
चतुराई सब भाड़ परैगी, जनम अचेते खोया॥
चौथा पन तेरा अब लागा, अजहुं चेत गुरु ज्ञान।
नहिं तो परैगो घोर अंधेरों, फिरि पाछे पछितान॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा:-ऐसे पाटन आइकै, सौदा करौ बनाय।
जो चूकौ तुम जन्म यह, तो दुख भुगतौ जाय॥

7

(छ) छन में छल बल सब निकसत है, जब जम छेंकै आई।
छटपट करिहौ बिष ज्वाला तें, तब कहु कौन सहाई॥
जम का मुगदर ऊपर बरसै, तब को करै उबारी।
तात मातु भ्राता सुत सज्जन, काम न आवै नारी॥
छूट्यो सर्ब सगाई, भया चोर का हाल।
संगी सब न्यारें भये, आय गये मुख काल॥

8

(ज) जम के पाले पड़ै जीव, तब तब कछू बात नहिं आवै।
जोर कछू काबू नहीं, सिर धुनि धुनि पछितावै॥
जब ले पहुंचावैं चित्रगुप्त पहं, लिखनी लिखै बिचारि।
दयाहीन गुरु बिमुखी ठहरै, अग्नि कुंड लै डारि॥
सा:-जनम सहस अजगर को पावै, बिष ज्वाला अकुलाय।
ता पाछे कृमि बिष्टा कीन्हा, भूत खानि को जाय॥

9

(झ) झंखल झुरवन सबही छोड़ो, झमकि करों गुरु सेव।
झांईं मन की दूर करो अब, परखि सब्द गुरु देव॥
झगरा झूठ झाल झल त्यागो, झटक भजो सतनाम।
झीन करो मन मैलो मंदिर, तब पावो विश्राम॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा:-होइ अधीन गुरु चरन गहु, कपट भाव करि दूर।
पतिब्रता ज्यों पिव को चाहै, ताके न दूजा दूर॥

10

(ञ) इस्क बिना नहिं मिलिहै साहिब, केतो भेष बनावै।
इस्क मासुक न छिपै छिपाये, केतो छिपे छिपावै॥
इत उत इहां उहां सब छोड़ो, निःचल गहु गुरु चरना।
या से सुक्ख होय दुख नासै, मेटे जीवन भरना॥
सा:-आदि नाम है जाहि पहं, सोई गुरु है सार।
जे कृतृम कहं ध्यावही, ते भव होंय न पार॥

11

(ट) टीम बाह बहुतेरे, दिल दासी से बंधा।
करै आरती संख बाज धुनि, छूटै न घर के धंधा॥
टिकुली सेंदुर टकुवा चरखा, दासी ने फरमाया।
कचे बचे ने मांगि मिठाई, मगन भया मन आया॥
सा:-जिन सेवक पूजा दियो, ताहि दियो आसीस।
जहां नहीं कछु तहां मैं ठाढ़े, भस्म करैं जगदीस॥

12

(ठ) ठग बहुरे भेष बनावैं, गले लगावैं फांसी।
स्वांग बनाये कौन नफा है, जो न भजे अविनासी॥
ठोकर सहै गुरु के द्वारें, ठीक ठौर तब पावै।
ठकठक जन्म रन का मेटै, जम के हाथ न आवै॥
सा:-मृतक होय गुरु पद गहै, ठीस करै सब दूर।
कायर तें नहिं भक्ति है, ठरि रहै कोई सूर॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

13

(ड) डगमग तें तो काज सरे नहिं, आडिग नाम गुन गहिये।
डर मेटे तब विषम काल का, अछे अमर पद लहिये।।
डरते रहिये गुरु साधु से, डम्भि काम नहिं आवै।
डिम्भी होय के भवसागर में, डहन मरन दुख पावै।।
सा:-डेढ़ रोज का जीवना, डारो कुबुधि नसाय।
डेरा पावो सत्त लोंक में, सतगुरु सब्द समाय।।

14

(ढ) ढूंढ़त जिसे फिरी सो ढिंग है, तेरा तैं उलटि निरेखो।
ढाल मारि के सबै चेंतावों, सतगुरु सब्द बिबेखो।।
तुम हो कौन कहां तें आये, कहं है निज घर तेरा।
केहि कारन तुम भरमत डोंलो, तन तजि कहां बसेरा।।
सा:-को रच्छक है जीव का, गहो ताहि पहिचानि।
रच्छक के चीन्हें बिना, अन्त होयगी हानि।।

15

(ण) निर्गुन गुनातीति अबिनासी, दया-सिंधु सुख-सागर।
निःचल निःठौर निर्बानी, नाम अनादि उजागर।।
निरमल अमी क्रांति अद्भुत छबि, अकह अजावन सोई।
नख सिख नाभि नयन मुख नासा, स्त्रवन चिकुर सुभ होई।।
सा:-चिरकुन के उजियार तें, बिधु कोटिक सरमाय।
कहा क्रांति छबि बरनों, बरनत बरनि न जाय।।

16

(त) ताहि पुरुष की अंस जीव यह, धर्मराय ठगि राखा।
तारन तरन आप कहलाई, बेद सास्त्र अभिलाखा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्व प्रकृति तिरगुन से बंधा, नीर पवन की बारी।
धर्मराज यह रचना कीन्ही, तहां जहां जीव बैठारी।
सा:-जीवहि लाग ठगोरी, भूला अपना देस।
सुमिरन करही काल को, भुगतै कष्ट कलेस॥

17

(थ) थकित होय जिव भरमत डोलै, चौरासी के माहीं।
नाना दुक्ख परै जम फांसी, जरै मरै पछिताहीं॥
थाह न पावै बिपति कष्ट को, बूड़ै संसय धारा।
भवसागर की विषम लहर है, सूझै वार न पारा॥
सा:-तन बिलखै अघ योनि में, पड़े जीव बिकरार।
सतगुरु सब्द बिचार नहिं, कैसे उतरै पार॥

18

(द) दुन्द बादहै और देंह में, परिचै तहां न पावै।
नर तन लहि जो मोहि गहै, जो जम के निकट न आवै॥
दरस कराओं सत्त पुरुष का, देंह हिरम्बर पाइहौ।
सुख सागर सुख बिलसौ हंशा, बहुरि जोनि नहिं आइहौ॥
सा:-अपना घर सुख छाड़ि के, अंगबै दुख को भार।
कहां भरम बसि परे जिव, लखैं न सब्द हमार॥

19

(ध) धर्मराय को सबै पुकारै, धर्म चीन्ह न पावै।
धर्मराय तिहु लोकहिं ग्रासै, जीवहिं बांधि झुलावै॥
धोखा दै सब को भरमावै, सुर नर मुनि नहिं बाचै।
बर बपुरे की कौन बतावै, तन धरि धरि सब नाचै॥
सा:-असुर होय सतावही, फिर रच्छक को भाव।
रच्छक जानि के जपै जिव पुनि वे भच्छ कराव॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

20

(न) निरभै निडर नाम लौ लावै, नकल चीन्हि परित्यागै।
नाद बिंद तें न्यार बतायो, सुरति सोहंगम जागै।।
निराधार निःतन्व निअच्छर, निःसंसय निःकामी।
निःस्वादी निर्लिप्त बितापित, निःचिंत अगुन सुख धामी।।
साः-नाम-सनेही चेतहू, भाखों घर की डोरि।
निरखो गुरु गम सुरति सों, तब चलि तृन जम तोरि।।

21

(प) पाप पुन्य में जिव अरुझाना, पारि कौंन बिधि पावै।
पाप पुन्य फल भुक्तै तन धरि, फिर फिर जम संतावै।।
प्रेम भक्ति परमातम पूजा, परमारथ चित धारै।
पावन जन्म परसि पद पैहै, पारस सब्द बिचारै।।
साः-पीव पीव करि रटन लगावै, परिहरि कपट कुचाल।
प्रीतम बिरह बिजोग जेहिं, पांव परै तेहिं काल।।

22

(फ) फरामोस कर फिकर फेंल बद, फहम करै दिल माहीं।
प्रफुल्लित सतगुरु गुन गावै, जम तेहि देखि डेराही।।
फाजिल सो जों आपा मेटै, फना हो गुरु सेवै।
फांसी काटै कर्म भर्म की, सत्त सब्द चित देवै।।
साः-फिरै फिरै नर भरम बस, तीरथ माहिं नहाय।
कहा भये नर घोर के पीये, ओस तें प्यास न जाय।।

23

(ब) ब्रह्म बिदित है सर्ब भूत में, दूसर भाव न हो।
बर्त्तमान चित चेंतै नाहीं, भूत भविष्य बिलोय।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बड़े पढ़े ते विषम बुद्धि लिये, बोलनहार न जोहै।
ब्रह्म दुखित करि पाहन पूजै, बरबस आपु बिगोहै॥
सा:-बन्दी परे नर काल के, बुद्धि ठगाइनि जानि।
बन्दी छोड़ लै चलौ, जो मोहि गहि पहिचानि॥

24

(भ) भाड़ परै पर देस बिराना, भवसागर अवगाहा।
भक्त अभक्त सभन को बौरै, कोई न पावै थाहा॥
भच्छक आप लीना बिसतारा, कला अनंत दिखावै।
भच्छक को रच्छक करि जानै, रच्छक चीन्हि न पावै॥
सा:-भजै जाहि सो भच्छक, रच्छक रहा निनार।
भर्भ चक्र में परे जीव सब, लखै न सब्द हमार॥

25

(म) मन मयगर मद मस्त दिवाना, जीवहि उलटि चलावै।
अकरम करम करैं मन आपहिं, पीछे जिव दुख पावै॥
मोह बस जीव मनहि नहिं चीन्है, जाने यह सुखदाई।
मार परै तब मन ह्वै न्यारो, नरक परै जिव जाई॥
सा:-मन गजअगुवा काल को, परखो संत सुजान।
अंकुस सतगुरु ज्ञान है, मन मतंग भयमान॥

26

(य) यो जिव सतगुरु सब्द बिबेकै, तौ मन होवै चेरा।
जुक्ति जतन से मन को जीतै, जियतै करै निबेरा॥
जहं लगि जाल काल बिस्तारा, सो सब मन की बाजी।
मनै निरंजन धर्मराय है, मन पंडित मन काजी॥
सा:-गुरु प्रताप भौ जोर जिव, निर्बल भौ मन चोर।
तस्कर संधि न पावही, गढ़-पति जगै अंजोर॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

27

(र) रहनि रहै रजनी नहिं ब्यापै, रते मते गुरु बानी।
राह बतावौं दया जानि जिव, जा तें होय न हानी।।
रमता राम काम करि अपना, सुपना है संसारा।
रार रोर तजि रच्छक सेवो, जा तें होय उबारा।।
सा:-रैन दिवस उहवां नहीं, पुरुष प्रकास अंजोर।
राखो तेई ठांव जिव, जहां न चौपै चोर।।

28

(ल) लगन लगी जेहि गुरु चरनन को, लच्छन प्रगट तेहिं ऐसा।
लगन लगी तब मगन भये मन, लोक लाज कुल कैसा।।
लगा रहै गुरु सुरत परेखै, निज तन स्वार्थ न सूझै।
लागै ठोकर पीठ न देवै, सूरा सन्मुख जूझै।।
सा:-लहर लाजमन बुद्धि की, निकट न आवै ताहि।
लोटै गुरु चरनन तरें, गुरु सनेह चित जाहि।।

29

(व) वाके निकट काल नहिं आवै, सो सत सब्द समाना।
वार पार की संसय नाहीं, वाही में मन माना।।
वासिलबाकी का डर नाहीं, वारिस हाथ बिकाना।
वारिस को सौंपे अपने तइं, वाही हृदय समाना।।
सा:-वाकिफ हो सो गमि लहै, वाजिब सखुन अजूब।
वाही की करु बन्दगी, पाक जात महबूब।।

30

(श) शहर चोर घनघोर करे रे, सोवै सब घरबारी।
शोर कर निर्भरमै सोवै, लागी विषम खुमारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साहिब से तो फेंर दिल अपना, दुनियां बीच बंधाया।
साला साली ससुरा सरहज, समधी सजन सुहाया।।
सा:-सतगुरु सब्द चेतावहीं, समुझि गहै कोइ सूर।
सम बल लीजे हाथ करि, जाना है बड़ दूर।।

31

(ष) खलक सयाना मन बौराना, खोय जान निज कामा।
खबर नहीं घर खरच घटाना, चेंतै रमता रामा।।
खोलि पलक चित चेंतै अजहूं, खाविंद सों लौ लावै।
खाम ख्याल करि दूरि दिवाना, हिरदे नाम समावै।।
सा:-खाल भरी है बायु तें, खाली होत न बार।
खैर परै जेहि काम तें, सो करु बेगि बिचार।।

32

(स) सहज सील संतोष धरन धर, ज्ञान बिबेक बिचार।
दया छिमा सतसंगति साधो, सतगुरु सब्द अधार।।
सुमिरन सत्त नाम का निस दिन, सूर भाव गहि रहना।
समर करै और जोंर परै जो, मन के संग न बहना।।
सा:-सैन कहा समुझाय कै, रहनी रहै सो सार।
कहे तरै तो जग तरै, कहनि रहनि बिनु छार।।

33

(ह) हरि आवै हरि नाम समावै, हरि में हरि कों जानै।
हरि हरि कहे तरै नहिं कोई, हरि भज लोक पयानै।।
हरि बिनसै हरि अजर अमर है, हरी हरी नहिं सूझै।
हाजिर छाड़ि बुत्त को पूजै, हसद करै नहि बूझै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा:-हम हमार सब छाड़ि कै, हक्क राह पहिचान।
हासिल हो मकसूद तब, हाफिर अमन अमान।।

34

(क्ष) छैल चिकनियां अभै घनेरे, छका फिरै दिवाना।
छायां माया इस्थिर नाहीं, फिरि आखिर पछिताना।।
छर अच्छर निःअच्छर बूझै, सूझि गुरु परिचावै।
छर परिहरि अच्छर लौ लावै, तब निःअच्छर पावै।।
सा:-अच्छर गहै बिबेक करि, पावै तेहि से भिन्न।
कहै कबीर निःअच्छरहिं, लहै परखी चीन्ह।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तम प्रकरण

अखरावती

।।दोहा।।

सतगुरु की परतीत, सत्तनाम निज सार है।
सोई मुक्ति संदेस, सुनो साध सत भाव से॥

।।सोरठा।।

नाम सनेही होय, काग कुमति गति परिहरे।
कलह करम सब खोय, हंस होय सतगुरु मिले॥

।।चौपाई-1।।

सत्तलोक की अकह कहानी। सोई निज सतगुरु की सहदानी॥
रूप बरन जहं वहं नहिं देसा। तीन लोक अचरज सा देखा॥
नहिं वहं पांच तत्त की काया। सत्तपुरुष आपहि निर्माया॥
नहिं परकिर्ति पचीसो होई। जरा मरन जाने नहिं कोई॥
दस इंद्री नाहीं षट कर्मा। बरन भेद नाहीं कुल धर्म्मा॥
दिवस न रैन चंद्र नहिं सूरा। बिमल प्रकास सकल बिधि पूरा॥
स्वर्ग नर्क गुन तीन न होई। सब्द सरूप सकल है सोई॥

।।दोहा।।

सब्द सरूप सतगुरू अहैं, जाका आदि न अंत।
काया माहीं अग्र हैं, निहचे मानों संत॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।सोरठा।।

सत्त सब्द परमान, अनहद बानी जो दृढ़े।
और झूठ सब ज्ञान, कहैं कबीर बिचारि के।।

।।चौपाई-2।।

सुनहु संदेसा सुरत सनेही। कहूं संदेसा अचल बिदेही।।
जुग अनंत हम आन पुकारा। कोई न माना बचन हमारा।।
सतजुग त्रेता द्वापर बीता। काहु न हुई सब्द परतीता।।
जप तप जोग सबन ठहराया। काहू न खोज सब्द का पाया।।
कलजुग एको थिति ना होई। बिन सतनाम तरै नहिं कोई।।
जोनी संकट कबहुं न छूटै। पकरि पकरि जम सबहिन लूटै।।
तीरथ बरत नेम जग लागा। काहू के मन धोख न भागा।।

।।दोहा।।

धोखे सब जग पचि मुआ, नहिं पाया थिति ज्ञान।
सतगुरु सब्द पुकारही, बहिरा सुनै न कान।।

।।सोरठा।।

बिन सतगुरु उपदेस, सुन नर मुनि नहिं निस्तरे।
कहा बिस्नु महेस, और सबन की कौन गति।।

।।चौपाई-3।।

भरमि भरमि मूआ संसारा। बिरले काहू तत्व बिचारा।।
या जग में बहुत गुरुवा भयेऊ। स्वर्गे आसा नरकहि गयेऊ।।
सबै सियान कृतिम मन दीन्हा। औगुन तें नहिं साहेब चीन्हा।।
जो कहते जिव भौजल पारा। एको जिव उन नाहिं उबारा।।
बूड़ि मरे ते भौजल माहीं। आतम ज्ञान बिचारे नाहीं।।
राम कहत मूआ संसारा। आतम राम न काहू बिचारा।।
मुझी से जे त्रिभुवन सूझै। गहिरी बानी बिरला बूझै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।दोहा।।

कोटिक पढ़ गुन पचि मुआ, कहै कबीर समझाय।
बिन सतुगुरु पावै नहीं, कोटिक करै उपाय।।

।।सोरठा।।

कर भक्ति छांड़ि कुल लाज, जो सतगुरु उपदेस दिय।
होय जीव को काज, निहचे कर परतीत कर।।

।।चौपाई-4।।

बहुत ग्रंथ कथा पद साखी। जीवन काज अखरावति भाखी।।
अगम निगम दोउ सब्द समोधा। एक सब्द तें जीव प्रबोधा।।
सब्द रूप होय सब्द सनेही। सत्तनाम की महिमा येही।।
बिन सतनाम न संसै जाई। संसै मिटे बिन नाहिं समाई।।
सब जग तजि जो होय नियारा। सोई पावे सब्द हमारा।।
सब्द गहै तज जग की आसा। निहचें कै मानो धर्मदासा।।
निजपुर जाय बहुरि नहिं आवै। मन बच कर्म जो नाम धियावै।।

।।दोहा।।

अछै बृछ की छांह में, जो सतनाम समाय।
सत्त सब्द परमान है, सत्तलोक को जाय।।

।।सोरठा।।

कहैं हंसपति सोइ, हंसराज धर्मदास सुन।
जीव काज जेहि होइ, सोई देहुं सिखापन।।

।।चौपाई-5।।

काया तें आगे जो होई। ता में राखों सुरति समोई।।
मूल अछर का नाम जो अहई। ता को बूझें जग नहिं बहई।।
सब्द लागि जो मूल है गहिया। मूलहिं ते पावै निरमैया।।
अच्छर सांच झूठ सब ज्ञाना। सोई अच्छर मूल बखाना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सतगुरु दया ते अच्छर पाई। अच्छर ते हंसा घर जाई।।
अच्छर मूल सबन को होई। बिन अच्छर सब जाय बिगोई।।
आदि अंत जिन अच्छर चीन्हा। तिन सतलोक पयाना कीन्हा।।

।।दोहा।।

आदि अच्छर ही अगम है, ता को सब बिस्तार।
सतगुरु दया तें पाइये, सत्तनाम निज सार।।

।।सोरठा।।

करै बिचार बिबेक, कहूं जीव निस्तार जेहि।
सत्तनाम की टेक, और सकल धन धाम है।।

।।चौपाई-6।।

षट कर्म तजु हे जीव अजानी। सुनो सब्द सतगुरु मुखबानी।।
अजपा जाप जपो मन लाई। जाके जपे मिटे दुचिताई।।
सब्द सार चीन्हो नर लोई। सब घट ब्याप रहा है सोई।।
चीन्हे ताहि जीव निस्तरि है। जिन रसना सो सब्द उचरि है।।
है जोगी जोगी होइ अइया। (सो) मरे नाहि जो तन मन बहिया।।
मन्सा पवन जो निसदिन प्याना। बानी केवल चित बिसराना।।
धन सेवक जो अवसर पड़े। ठाकुर हो के सेवा करे।।

।।दोहा।।

तिमिर मलिन तें ना टरे, (जौ लौं) सूर उदय नहिं होय।
सत्त सब्द जो जानई, करम भरम सब खोय।।

।।सोरठा।।

काहु को करै समीप, करम बृच्छ सत भाव है।
गहै सब्द निज दीप, जोग ठीक भेदा मिलै।।

।।चौपाई-7।।

गुरु गम गहै ज्ञान जो पावै। आवागवन की सुधि बिसरावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञान होय जो सतगुरु भेटैं। सतगुरु मिलैं तो संसा मेटैं॥
गुरु प्रताप तें सब कुछ बूझै। गुरु की दया तें त्रिभुवन सूझै॥
षट दरसन जो गये भुलाई। बिन गुरु घाट न काहू पाई॥
सतगुरु मिलैं तो घाट बतावैं। औघट तें घाटे ले आवैं॥
देही का गुरु सबहिन कीन्हा। सतगुरु रूप न काहू चीन्हा॥
करम हेत देही गुर करई। मन का धोखा न उनसे टरई॥

॥दोहा॥

तन की आस सब छूटई, मन का करै बिचार॥
मन चीन्हे बिन थित नहीं, सतगुरु कहैं पुकार॥

॥सोरठा॥

सतगुरु खोजो संत, जीव काज जेहि होय जो।
मेटैं भव का अंत, आवागवन निवारहीं॥

॥चौपाई-8॥

घट परमान है सब के माहीं। है घट में घट की सुधि नाहीं॥
निकट रहै नहिं करै बिचारा। मृग कस्तूरी ढूढ़ै बन झाड़ा॥
जनम अनेकन गये निरासी। थित पावै नहिं मिटै चौरासी॥
किरतम को सबहिन सत माना। सत्त सब्द का मरम न जाना॥
जब लग सार सब्द नहिं बुझई। चौरासी कैसे के तजई॥
सतगुरु मिलैं तो संसय जाई। बिन सतगुरु नहिं करम नसाई॥
काल फांस सत सब्द से कटई। निस बासर जो नामै रटई॥

॥दोहा॥

जंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरमो जग कोय।
सत्त सब्द जाने बिना, कौवा हंस न होय॥

॥सोरठा॥

पतिबर्ता नहिं सोय, जो पति तजि औरहि रतै।
वाका नीक न होय, दूजा पति जो पै लखै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।चौपाई-9।।

निहचे कर जो सतगुरु भाखा। मूलहि गहे तेजि सब साखा।।
नाम गहै तज जग की आसा। नाम बिना जग गया निरासा।।
देह धरे का सुख है येही। सतगुरु मिलि होइ नाम सनेही।।
करम भरम तजि कुल से टूटै। चौरासी का बन्धन छूटै।।
नाम बिना नर सब कोइ पचिया। काल के मुख से कोई नहिं बचिया।।
नाम समान न जग कछु होई। सब्द में ब्याप रहा है सोई।।
नाम सनेही जग से न्यारा। जस जल माहिं कंवल निरधारा।।

।।दोहा।।

सतगुरु का उपदेस है, जो सतनाम समाय।
सत्त सब्द छूटै नहीं, निहचें निज घर जाय।।

।।सोरठा।।

बिनवों दोउ कर जोर, साहेब बंदछोर को।
पावों नाम की डोर, जरा मरन भव का मिटै।।

।।चौपाई-10।।

सतगुरु सब्द खेल चौगाना। यह ना गोंय रहै मैदाना।।
सुरत निरत दोउ हाल बनाई। तेहि का गोय गगन पहुंचाई।।
चीन्हैं सब्द सब्द सब जानै। दूजा भाव न मन में आनै।।
तुचा सहित जो अनहद राता। और सभी झूठी है बाता।।
नाम भेद संसा मिटि जाई। अनुभव पद में जाय समाई।।
उधरै सब्द बिबेकी होई। सब्द बिना जग जाय बिगोई।।
बिना सब्द मुक्ती नहिं पावै। ज्ञानी होय सो यह अर्थावै।।

।।दोहा।।

पंडित पढ़ गुन पचि मुए, बिन गुरु मिलै न ज्ञान।
बिना सब्द नाहि मुक्ति है, सत्त सब्द परमान।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।सोरठा।।

ज्ञानी सुनहु संदेस, तीन लोक के बाहरे।
तहां मुक्ति परवेस, सब्द बिबेकी परखिहै।।

।।चौपाई-11।।

अच्छर निःअच्छर सतनामा। अच्छर सांच झूठ सब जाना।।
पंडित होइ अच्छर नहिं चीन्हा। सो पंडित है काल अधीना।।
पंडित सो जिन अच्छर चीन्हा। अच्छर सभी घाट परबीना।।
अच्छर मूल और सब जाई। बिन अच्छर नहिं मन पतियाई।।
इक अच्छर का नाम जो पावै। जोनी संकट बहुरि न आवै।।
अच्छर होय जो अच्छर जानै। अछै लोक का भेद बखानै।।
अछै बृच्छ अच्छर तें पावै। सब्द डोर हंसा चढ़ि आवै।।

।।दोहा।।

अछै होय अच्छर गहै, अच्छर ही उपदेस।
अछर डोर चढ़ जाय जिव, अच्छर जाके देस।।

।।सोरठा।।

अच्छर ही परमान, सतगुरु कहैं पुकार के।
पावै मुक्ति कर दान, सत्त बचन परमान है।।

।।चौपाई-12।।

जीव काज होवै सोइ लागी। सोई करो कुल लज्जा त्यागी।।
सुर नर मुनि गन सब पचि हारे। काहू सब्द भेद न बिचारे।।
ये संसय संसारहि पड़िया। तब सब जीवन को स्त्रुत कहिया।।
कौन होय तो भेद बतावै। कहैं सतगुरु जो नाम सुनावै।।
हंस होय तो निज घर जाई। चौरासी में नाहीं भरमाई।।
तब सतगुरु मिलि कीन्ह बिचारा। जीव काज लख ज्ञान पुकारा।।
सत्त नाम या का परमाना। जो पावै सो देय पयाना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।दोहा।।

सत्त सब्द निज जानि के, जिनके मन परतीत।
काग कुमति तजि है सभी, चलै सो भव जल जीत।।

।।सोरठा।।

क्यों छूटे जम जाल, पांव बंध जो बंधिया।
काटैं दीनदयाल, करम फंद इक नाम तें।।

।।चौपाई-13।।

झनकारै अनहद है जहवां। सुरति सनेही पहुंचे तहवां।।
और और कछु अनै न भाखै। उनमुनि सर्द अमीरस चाखै।।
मन थिर होय न एको बाता। तौ पतियाय जो अनहद राता।
जहं लग जग में बाजे होई। अनहद माहि सुने सब कोई।।
सुरति से देखे निरत अखाड़ा। सतगुरु मता यही है सारा।।
वाही घर जो सुरत लगावै। सो घर सतगुरु अजर दिखावै।।
ज्ञानी होय कोई सुरति सनेही। भेद बखानै अविचल देही।।

।।दोहा।।

बंधन तें न्यारा रहै, बिरला पावै भेद।
काहे को जप तप करै, पढ़ै सास्त्र और बेद।।

।।सोरठा।।

मन तब गगन समाय, धुन सुन कर जो मगन होय।
नहिं आवै नहिं जाय, सुन्नी सब्द थिति पावई।।

।।चौपाई-14।।

जो कोइ जग से न्यारा होई। सात दीप को जानै सोई।।
रेचक पूरक कोइ कोइ जानै। कुम्भक बिरला भेद बखानै।।
इंगला पिंगला का करे बिबेका। सुखमन तत्त न काहू देखा।।
मन पवना निसि दिन भरमावा। बाहर भीतर थिति नहिं पावा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करम अनेक जोग जो करई। जुगत बिना नर नरकै परई।।
सहज जोग जिन सब्दे पैया। सहजहि से मन गगन चढ़ैया।।
सो जोगी जो मन को चीन्हा। मन चीन्हे बिन जोग अधीना।।

।।दोहा।।

सब्द खोजि मन बस करे, सहज जोग है येह।
सत्तनाम निज सार है, नहिं तो झूठी देह।।

।।सोरठा।।

सत माने नर सोय, सतगुरु जो दाया करैं।
और झूठ सब होय, काहे को भरमत फिरै।।

।।चौपाई-15।।

झूठा होइ कस नामहि लागी। मन बच कर्म होय बैरागी।।
कुल छूटै तब सतगुरु भेटैं। जो उपजै सो संसा मेटैं।।
नाव अहै पर खेंवट नाहीं। भवजल जीव कहां होइ जाहीं।।
भवसागर बहु संकट होई। बिना नाम डूबै सब कोई।।
सत्त नाम भवतारन येही। जेहि जानि जिव निर्भय रहही।।
नाम अहै साथी कढ़िहारा। सतगुरु खेय लगावैं पारा।।
नाम गहै जग जुगति बहावै। मिथ्या जग जो नामहि पावै।।

।।दोहा।।

एक नाम जाने बिना, नहिं मिटे करम का अंक।
तबही से सच पाइये, जब होय जीव निसंक।।

।।सोरठा।।

आपा डारै खोय, वह प्रानी रंगै मिलै।
तबही ते सुख होय, जाति बरन जाके नहीं।।

।।चौपाई-16।।

जो दृढ़ के सत नामहि जानै। सतगुरु बचन सत्त कर मानै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सतगुरु कहैं सोई यह करई। सतगुरु आज्ञा से निस्तरई॥
सत्त बचन सतगुरु को भाखे। सतगुरु ते राखै अभिलाखे॥
निस बासर सतगुरु लौ लावा। सतगुरु दया से नामहि पावा॥
जाको मिलै सब्द सहदानी। तिन सतगुरु की महिमा जानी।
जाको सतगुरु की परतीती। निर्भय होय सो भवजल जीती॥
प्रेमहि से सतगुरु जिन पावा। भवजल में सतलोक दिखावा॥

॥दोहा॥

मूल ध्यान गुरु रूप है, मूल पूजा गुरु पांव।
मूल नाम गुरु बचन है, सत्त मूल सत भाव॥

॥सोरठा॥

निर्गुन निस दिन गाव, रटै दास जिव जाहि को।
गुरु विद्या बतलाव, गोबिन्द गुरु बिन ना मिलै॥

॥चौपाई-17॥

जेहि डारी घर में बैठाई। तेहि पर बैठि जुगन जुग भाई॥
तेहि डर तीनों लोक डेराई। जरा मरन चौरासी भाई॥
पंडित पढ़ि पढ़ि बेद बखानी। गुन तीनों की स्तुति जानी॥
वही चाल संसार चलावै। करम भरम भवफंद दृढ़ावै॥
सरगुन में संसार भुलाना। निर्गुन का कोइ भेद न जाना॥
अर्थ बिचारे पढ़ि पढ़ि गीता। भई नहीं सतगुरु परतीता॥
देह धरी सतनाम न गाया। कैसे तेहि छाड़े जमराया॥

॥दोहा॥

सत्तनाम लौ लावही, गहै संत की ओट।
सतगुरु की परतीत कर, हंस जाप सतलोक॥

॥सोरठा॥

सतगुरु बिन नहिं काज, जीव कहां होइ बाचई।
काल तीन पुर राज, नाम बिना कैसे बचै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।चौपाई-18।।

टूटि जाय यह मंदिर कांचा। तौ यह जीव कहां होइ बाचा।।
सब्द से परिचै नाहीं करई। कैसे जिव भवसागर तरई।।
बहुतक मंदिर खोज जो कीन्हा। येही सब्द साध नहिं चीन्हा।।
सब्द बिदेह न कोई बिबेकी। रूप बरन को सब कोई देखी।।
ताहि सार को आप जो करई। तब सतलोक पयान धरई।।
जिन नहिं तन मन सब्द समोई। तिन सब जनम अकारथ खोई।।
सब्द रतन की दृष्टि जो होई। तब अदृष्ट को देखै सोई।।

।।दोहा।।

सब्द सार जानै जोई, जिव बिरले तरि जाय।
काया माया थित नहीं, सब्द लेव अर्थाय।।

।।सोरठा।।

सब्द काया में सार, और सकल बेसार है।
ज्ञानी करो बिचार, सतगुरु ही से पाइये।।

।।चौपाई-19।।

नहिं आसा यह जिवरा केरी। पावै नाम तो काटै बेरी।।
जो कोई जीव मुक्ति को चाहै। सो अज्ञा सतगुरू निर्बाहै।।
सुर नर भरमि मुए जग माहीं। जब तप गर्ब न नाम समाई।।
ऐसेहि भरम मुआ जग सारा। काहु न सतगुरु मर्म बिचारा।।
ज्ञानी बहुत देव आराधे। कर्म करे और इन्द्री साधे।।
दीन्हों फंदा जम ही ऐसे। ओहि भवसागर छूटै कैसे।।
मत कोई भटक मरो एहि बाटा। धरनि अकास माहि जहि घाटा।।

।।दोहा।।

कर्म फंद जिव फंदिया, तप जप पूजा दान।
जेहि बस्तू जिव काज होय, सो नहिं परी पिछान।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।सोरठा।।

तरै जो नाम समाय, बिना थीर जिव बूड़िया।
सब्दहि कहा दृढाय, सतगुरु के सतभाव से।।

।।चौपाई-20।।

तत्व सार जाने नर कोई। किरतम में जग गया बिगोई।।
निसदिन सतगुरु सब्द पुकारै। पंडित सतगुरु नाहिं बिचारै।।
झूठ धोख सबहिन पतियाई। सत्त सब्द हिरदे न समाई।।
जग में बाजी काल पसारी। जग में भ्रम बाजी बिस्तारी।।
सारदा चंडी माया चित लाई। बिन चकमे जग परा भुलाई।।
बाजी तभी दृष्टि में आई। सतगुरु तत्व सार बतलाई।।
सुमिरन सार यही तत सारा। और सबै पाखंड ब्योहारा।।

।।दोहा।।

सतजुग त्रेता द्वापर, और कलिजुग परमान।
तत्तसार सतनाम है, और झूठ सब ज्ञान।।

।।सोरठा।।

बुझहु तत्त बिलोइ, सतगुरु सीख हृदय धरो।
तत दरसी सोइ होय, तत्व सार बीचारिये।।

।।चौपाई-21।।

छीत हीय जो सतगुरु भाषा। और सबै छूटै अभिलाषा।।
थित पावे भाजन थिर होई। बिन थिति सो नर गये बिगोई।।
काहू न खोज किया थित केरा। जिव चौरासी होय बसेरा।।
जप तप तीरथ बर्त भुलाना। काहू थित का मर्म न जाना।।
सब जग धोखे की पतियाई। कौतक का सुपना होय जाई।।
सब जग बिष्नू को थित राखा। बिष्नुहि को निज सतगुरु भाषा।।
पंडित बेद पढ़ी पढ़ि मरहीं। बुधि ठगाय थित खोज न करहीं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।दोहा।।

थीर सब्द माने नहीं, सब ही ग्रासे काल।
भर्म तजे जेहि थिर मिले, तब छूटे जम जाल।।

।।सोरठा।।

जग गयो सागर माहिं, कहो कैसे कै निस्तरै।
गहु सतगुरु की बांह, बेगहि पार उतारहीं।।

।।चौपाई-22।।

दरपन मांजे निसदिन जैसे। रूप अरु रेख रहे नहिं ऐसे।।
सब्द भजे जन निरमल होई। जो पल पल में सब्द बिलोई।।
सब्द सरूप सदा कनिहारा। पल पल निस दिन ज्ञान मंझारा।।
मांजत रहे न लागे काई। दरसन देखे मन पतियाई।।
जो न होत दरसन का भेऊ। तो ये दरपन को पतियेऊ।।
दरपन है दरसन को साजा। पंच तत्त सब को उपराजा।।
निरखि परखि दरपन को राखा। सब्द बिचारि के दरसन दाखा।।
बिन दरपन दरसे नहीं रूपा। धरमनि यह गुरुगम्म अनूपा।।

।।दोहा।।

सत्त सब्द निज सार है, नहिं तो झूठी देह।
दरपन देखे मांज के, दरसन लीयो येह।।

।।सोरठा।।

सत्त सरूपी भाव, सब्द सरूप बसे जहां।
सत्त नाम नहिं पाव, बिमल दरस देखे बिना।।

।।चौपाई-23।।

ज्ञानी कोई ध्यान लगावै। तन बिचार मन तारी लावै।।
सब्द सुरति करि स्वामी मेलै। माहीं पैठि गगन में खेलै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञानी कोई मन सुरति चढ़ावै। सुरति बांधि ऊंचे को लावै।।
निसि दिन राखै तत्व बिचारा। सतगुरु आवागवन निवारा।।
बाहर भीतर लौ जो राखै। अगम निगम का भेद सो भाखै।।
देह धरे जाको लौ लावै। तन त्यागे तब तहां सिधावै।।
ज्ञानी जुगति से जोग धराई। सो जोगी भौ सिंधु तिराई।।

।।दोहा।।

सब्द खोज निज सब्द होइ, एकहि यह निस्तार।
सतगुरु सब्द पुकारही, करनी करे सो सार।।

।।सोरठा।।

सब्द गहो गुरु ज्ञान, मूल ध्यान सतगुरु कहै।
सोई संत सुजान, सब्द बिबेकी होय जो।।

।।चौपाई-24।।

जिव निस्तार निज नाम से होई। बिना नाम बाचै नहिं कोई।।
सुर नर मुनि षट कर्म भुलाना। होइ निःकर्म नहिं नाम समाना।।
फिर फिर कर्म बंधन सब होई। नाम बिना नहिं बाचै कोई।।
ऐसे बहुते भये उदासी। नाम बिना न छुटै चौरासी।।
नाम बिना जिव जम ले जाई। नाम बिना नहिं कर्म कटाई।।
नाम बिना बहु देह धराई। जोनी संकट फिर फिर आई।।
सबहि पचे धन धामहि लागी। बिरला भया नाम अनुरागी।।

।।दोहा।।

कोई न जम से बंचिया, बिना नाम धर खाय।
जो जन बिरले नाम के, ता को देख डेराय।।

।।सोरठा।।

तब मिटै करम को अंक, सत्त नाम को पाइहैं।
जीव होय निःसंक, सत्त बचन सतगुरु कहैं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।चौपाई-25।।

प्रानी नाम का पावै बीरा। होय हंस तजि काग सरीरा।।
तब ही मिटै करम को अंका। जो सत नाम गहे निःसंका।।
जीव प्रतीत करे परवाना। नाहीं तो होइ नरक निदाना।।
सतगुरु मिलै दयानिधि पावै। निज घर जाय बहुरि नहिं आवै।।
जेहि देखि जम करै सलामा। निज परवाना मुहर सतनामा।।
घाट बाट जम रोकै नाहीं। मुहर देखि सिक्का जो त्राहीं।।
बिन परवाना नहिं निसतारा। जो पावै सो उतरै पारा।।

।।दोहा।।

नर नारी और बालका, सबही को परवान।
निज सतलोकहि जाइहैं, बोले संत सुजान।।

।।सोरठा।।

जहां छांह नहिं धूप, तहां जो सब्द सरूप है।
देखै बिमल सरूप, जनम सुफल करि मानई।।

।।चौपाई-26।।

पार उतरना जो कोई चाहे। सो खेवट से प्रीत निबाहै।।
भवसागर भव संकट होई। पार सार नहिं बूझै कोई।।
सूझे जो नहिं अगम पसारा। होय पार खेवट करे सारा।।
खेवट महिमा जाने कोई। तीन लोक खेवट को होई।।
पारब्रह्म जो कहिये ऐसा। जाके आगे सतगुरु देसा।।
जम को जहां नहीं परबेसा। आदि पुरुष कै जहवां देसा।।
जहं सोइ जाय और सो होई। जरा भरन से बाचे सोई।।
तीन लोक को भेद बखाने। चौथे उनमुनि भेद न जाने।।

।।दोहा।।

सतगुरु निज सत भाव से, ऐसा भेद बताय।
धन्य सिष्य कर लाय नेह, जो अस छापा पाय।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।सोरठा।।

बिन बैराग निस्तार, कहो कैसे भौजल तरै।
ता को करहु बिचार, सतगुरु मिलै तो पाइये।।

।।चौपाई-27।।

फंदा जम का कैसे कटे। निसि वासर जो नाम न रटे।।
यह घाटी है जम की फांसी। सुर नर मुनि फंदे चौरासी।।
तीन लोक जम जाल पसारा। ता में उरझि रहा संसारा।।
जनम जनम है जम को त्रासा। मृत्यु लोक पाताल अकासा।।
सत्त सब्द परतीत न कोई। ऐसे सब जग गया बिगोई।।
चौथे लोक का तब सुख पावै। जब सतगुरु सत सब्द बतावै।।
मन बच कर्म जो नामहि लागै। जनम मरन छूटै भ्रम भागै।।

।।दोहा।।

कर्म करै देही धरै, फेर फेर पछिताय।
बिना नाम बांचै नहीं, जीवहि जम लै जाय।।

।।सोरठा।।

गाढ़ो जम का फंद, जेहि फंदे जिव फंदिया।
कटै तो होय अनंद, सार नाम सतगुरु दिया।।

।।चौपाई-28।।

बानी जो गहिरानी बोलै। गहिरा होय सो उनमुनि खोलै।।
इंगला पिंगला पै अंतस रहै। सुषमना तत्व जान के गहै।।
जब लग कीट गति नहिं बिसरावै। तब लग कस भृंगी कहलावै।।
त्रिकुटी मध्य सुरति संचरै। उनमुनि मद्धे पांवहि धरै।।
कूंची कर गहि खोल किवारा। अनहद नाद सून्य झनकारा।।
सुनै जो गुरुमुख देखै नैना। तब पतियावै गुरु के बैना।।
धुन के सुनै आतमा जागै। अनुभै तारी सहजै लागै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।दोहा।।

अगम जो अगोचर पैठि के, देखै तत्व बिलोइ।
बानी जहं निरबान है, समरथ सांचा सोइ।।

।।सोरठा।।

जग में बहु परपंच, तामें जिव भूला सबै।
नहिं पावै कोइ संच, एक नाम जाने बिना।।

।।चौपाई–29।।

भौजल तबही उतरै पारा। जबहि मिलै सतगुरु कनिहारा।।
बिन कनिहार न भौजल तरही। डूबहि फिर फिर देही धरही।।
जो कोइ खोज लीन्ह कनिहारा। नाम जहाज चढ़ि उतरै पारा।।
गुरु प्रताप से भौजल छांड़ै। धुजा सुरति की सुन में गाड़ै।।
अनहद के नीसान बजावै। हंसराज होइ संत कहावै।।
सतगुरु मिलै सतनाम समावै। भौजल तजि सतलोकहि आवै।।
भौजल का बिसरै सब साज। सुख सागर बिलसै सुख राज।।

।।दोहा।।

सतगुरु को बिस्वास कर, तजै लोक कुल लाज।
भौजल पार सो होइ जिव, चढ़ सत नाम जहाज।।

।।सोरठा।।

भौजल अगम अपार, अति अथाह अंबुज अहै।
डूब सकल संसार, बिन परचे कनिहार सब।।

।।चौपाई–30।।

मन में किरति जो ऐसी होई। धरती रहै गगन में जोई।।
जेहि खोजत सुर नर मुनि थाके। जाको खेल न जाने वाके।।
ऐसे भये दसो औतारा। और बहु भांति भया संसारा।।
पल में दसा अनेकन होई। नहिं कितहूं थिर गये समोई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाको अहै सकल बिस्तारा। नहिं कोइ ता का रूप निहारा।।
पांच तत्त दस इन्द्री संगा। उपजे बिनसे नाना रंगा।।
तेहि धोखे जग रहा भुलाई। जब चीन्हे तब धोखा जाई।।

।।दोहा।।

पाछे जन्महि को गहै, कागद को उच्चार।
उलटा है सूधा करै, तब दीखै संसार।।

।।सोरठा।।

निज मन सतगुरु पास, जहां जाय सब सिधि मिलै।
जग ते होय उदास, तो को कोइ नहिं खोजिया।।

।।चौपाई-31।।

सत्त नाम आहै तत सारा, अगम निगम का कुंजी तारा।।
रारंकार सब्द इक होई। ता में राखो सुरति समोई।।
मूल नाम का करो बिबेका। ज्ञान चक्षु ते बिरले देखा।।
जाकर कुन्जी तारा होई। घट का भेद लखेगा सोई।।
सतगुरु मिलें तो भेद बतावें। भौजल माहिं बहुर नहिं आवें।।
सुनै जो ऐसा अगम संदेसा। निहचै छूटै जम का देसा।।
चेला गुरु परतीत जो धरई। जम तेहि देख डंडवत करई।।

।।दोहा।।

यह सतगुरु उपदेस है, जो मानै परतीत।
करम भरम सब त्यागि के, चलै सो भौजल जीत।।

।।सोरठा।।

गहै सब्द को मूल, बुन्द सिंध में मिलि रहै।
सब्द माहिं अस्थूल, बीज बृच्छ बिस्तार भो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।चौपाई-32।।

लख सोई अलक्ख जो होई। सब्द सुरत सम राख समोई।।
सब्द सनेही राखै चीन्हा। निसि दिन रहै सब्द में लीना।।
निर्गुन सर्गुन तासु पसारा। आप आपना रूप निहारा।।
तेहि सब दृष्टि रहै अनुरागी। आस्त्रम माहि हो बैरागी।।
ऐसी सुरति रहै लौ लाई। निद्रा भूख सहज ही जाई।।
पारब्रह्म की महिमा भाखै। विषय तजै अमृत रस चाखै।।
मन थक ब्रह्म होय जो वाके। देखै सुन्य मार्ग फिर ताके।।

।।दोहा।।

पृथ्वी आब और तेज नहिं, नहीं वायु आकास।
अलखपच्छ तहं होइ रहो, सत्त सब्द बिस्वास।।

।।चौपाई-33।।

सो तहं हंस रावरा होई। मानसरोवर पहुंचै सोई।।
काया पलट होय आवर्ना। तब पावै सतगुरु की सैना।।
देह दसा बिसरै जेहि केरी। काटै करम भरम की बेरी।।
फिर देही नाहीं धर लेही। सुख बासा सुखसागर रहही।।
हंसन के संग करै जहीरा। पांच तत्त को रहै सरीरा।।
बिमल होय हंसा की देही। सदा रहै जो सब्द सनेही।।
मिटै बिदेस की आसा जबही। पहुंचै जाय देस में तबही।।

।।दोहा।।

हंस होय सत जीव जो, करै देस की आस।
जिन प्रतीत है सब्द की, करिहै सो सुख बास।।

।।सोरठा।।

महिमा अगम अपार, ताहि अगोचर जानिये।
सोई है तत सार, जो सतगुरू दया करैं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।चौपाई-34।।

ओंकार को सब जग जानी। ता ते पंडित बेद बखानी।।
निराकार ते भया अकारा। या बिधि भौसागर बिस्तारा।।
सूछम से जो भया अस्थूला। हिलमिल बिलसे ता को मूला।।
सूछम कार जाहि निरमाया। आपहि सब का मूल कहाया।।
ता बर्द्ध निःतत का बासा। बिमल सरूप सदा परकासा।।
तीन लोक में रहा समोई। चौथे को जब पावै कोई।।
पांच तत्त गुन तीन जो राचा। देह लागि सुर नर मुनि नाचा।।

।।दोहा।।

तिरबिधि ताप को काटही, चौथे आप कहाय।
सत्त सब्द जाने बिना, सब जग रहा भुलाय।।

।।सोरठा।।

मूल छांड़ि गह डार, सुर नर मुनि जो रहे सब।
भूल रहा संसार, तिरबिधि रूप पखंड में।।

।।चौपाई-35।।

बिर्लै नाम कोई कोइ ध्यावै। जेहि ते आवागवन नसावै।।
ममता ते जग को बिस्तारा। नाम गहे सो उतरे पारा।।
काहे पंडित विद्या पढ़ई। सतगुरु के सत पंथ न चलई।।
बेद कतेब धरे इक ओरा। तन मन अर्पे नाम निहोरा।।
पटतर नाम न जग कछु अहई। भ्रिंगी जीव जो नाम छंटैई।।
नाम बिना जिव परले होई। सुर नर मुनि सब गये बिगोई।।
नाम एक सार जग माहीं। नाम बिहूना आवै जाही।।

।।दोहा।।

नाम भजै धन धाम तजि, नर नारी सब कोय।
अविचल महिमा जेहि बसै, तो अविचल देही होय।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।सोरठा।।

सत्तनाम बिस्वास, करम भरम जग परिहरै।
सतगुरु पुरवै आस, जो नर आस ऐसी करै।।

।।चौपाई-36।।

मूलहि कोइ न लागे आई। फेर फेर जग परलै जाई।।
देह धरे बहु कर्म कमाई। कैसे आवन गवन नसाई।।
तीरथ बरत नेम अचारा। येही में भूला संसारा।।
पूजि पषान नहि आतम जाना। तन छूटे पाषान समाना।।
मंत्र जंत्र सीखे ओछाई। नाटक चेटक सक्ति दिखाई।।
बाजी में संसार भुलाना। सतगुरु मिले न नाम समाना।।

।।दोहा।।

बिबिध रूप की भक्ति में, फिरि फिरि धरे सरीर।
एक नाम बिन मुक्ति नहिं, ऐसी कहै कबीर।।

।।सोरठा।।

परलय जनम अनेक, करम करै सुख दुख सहै।
नहिं पावै कोई एक, जेहि मिले जिव काज होय।।

।।चौपाई-37।।

सत्तनाम इक अच्छर सोहै। जाके बूझे जिव निर्मोहै।।
अच्छर में निःअच्छर होई। ज्ञानी होय सो बूझै कोई।।
पंडित अच्छर बेद बखानै। निःअच्छर का मरम न जानै।।
निःअच्छर है नाम की डोरी। जेहि मिले जिव फंदा तोरी।।
बिन रसना गुन गावै कोइ। सुरत सब्द धर जानै सोई।।
कथा होय तो कहूं सुनाई। अकथ कथा कस जाय बताई।।
ज्ञानी होय सो ज्ञान बिबेकी। अच्छर भेदी निःअच्छर देखी।।

।।दोहा।।

कहत बिकल सब कोय, मूल मरम ना पावई।
अकथ कथा सतगुरु कहीं, सुन्नी सुन जो चावई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।सोरठा।।

अथाह अमूल जो बेद, पार लोक बिस्तार जेहि।
सतगुरु कहैं सो भेद, बीज वस्तु पहिचानई।।

।।चौपाई-38।।

सहज रूप धुन होत सदाई। सत्त सुक्रित को आसन जहंई।।
अगम चढ़े जो चीन्हे कोई। धरती सुरति सो गगन समोई।।
तारी दसवें द्वारे लागी। गुरु प्रताप से आतम जागी।।
तन मन की गति मति बिसरावै। सुरतिवंत कोई सहज समावै।।
धरती तजि जब चढ़ै अकासा। देखै झिलमिल बिमल तमासा।।
उर्ध रूप जाय निज अहई। गगन के मध्य मगन होइ रहई।।
बज्र किवाड़ी लेहि उघारी। थाके मन जब बाज बिचारी।।

।।दोहा।।

सहज सुन्न के आगे, तीन लोक के पार।
जहां निसान बजावही, सब्दन की झनकार।।

।।सोरठा।।

सुनै जो अगम संदेस, निगम थके गुन गाय के।
छूटे सब भ्रम भेस, निहचै जाय प्रमान कर।।

।।चौपाई-39।।

अच्छर है निज सार अरूपा। जा ते सब जग धरा सरूपा।।
लौ लावै छिन नहिं बिसरावै। आदि अंत की मद्धै पावै।।
मूल मंत्र यह सतगुरु बोला। कुंजी कुफल ते कुन्डी खोला।।
मूल अहै जो सब में धरिया। अनहद बानी अनुभव कहिया।।
मूल सब्द जो बोले बानी। आदि अंत की मध सहदानी।।
मूल मंत्र सोई लख पावै। जाको सतगुरु सुरति लगावै।।
सुरति सनेही सभी बिचारा। सतगुरु ऊपर चढ़े पुकारा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।।दोहा।।

सुरति सनेही है कोई, करै बिबेक बिचार।
चीनी चुने पपील ज्यों, चीनी रेत मंझार।।

।।सोरठा।।

मूल मंत्र सब माहिं, बानी से उजियार भव।
तहां धूप नहिं छांह, निगम जो नेत पुकारही।।

।।चौपाई-40।।

यही जगत है जम को देसा। नाम भजै तब मिटै कलेसा।।
जग को डार लेय परवाना। सतगुरु सहज अमी रस आना।।
जाते बिष नहिं ब्यापि सरीरा। अमृत पियै तजै बिष नीरा।।
जग में काल जो जाल पसारा। तीरथ बरत को करि बिस्तारा।।
कोई न सत्त नाम बिन बाचें। नेम अचार काम में राचे।।
सबही उरझे भूत परेता। बिन चेते जग हुआ अचेता।।
सकल देह जानि लिपटाई। कैसे मन का धोखा जाई।।

।।दोहा।।

सत्तनाम निर्आस पद, सत्तलोक को जाय।
झूठ आस संसार की, जेहि लागो जिव धाय।।

।।सोरठा।।

करम काल बस जीव, भर्मे जो जिव पचि मरे।
नाम अमी रस पीव, काहे को बिष सींचही।।

।।चौपाई-41।।

उनमुन ते जो सब रस चाखा। मन पवना जो अंतर राखा।।
काया में पाताल अकासा। निःअच्छर मजहर है देसा।।
आपा मेटि के तारी लावै। चंद्र स्थान में सूर उगावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंध कूप में दामिनि परकासे। अगम पंथ जेहि कीन्ह गुफा से।।
पांजी द्वारा अजर जहं झांका। वहं होइ बाट चले सो ताका।।
गगन मंडल में आसन मांड़े। उलट चोर कोतवाले डांड़े।।
मंडप चहुं दिस एकहि बेरा। मिटि गई भौजल जीवन केरा।।

।।दोहा।।

रैन दिवस इस सम करै, तिमिर न होय प्रकास।
आदि ब्रह्म ते दीखई, पूजै मन की आस।।

।।सोरठा।।

सतगुरु के परसाद, सहज समाध लगाइये।
रीझि रहा मन नाद, देखि भेद सब जानिये।।

।।चौपाई-42।।

एकहि है जग ब्रह्म निनारा। निज घट घट का खेल पसारा।।
सब्द एक और एकहि रूपा। सेत से उपजा लाल सरूपा।।
एक देख तब मन पतियाई। एकहि में मन रहा समाई।।
एकहि से जग भया अनंता। सतगुरु भेद बतावें संता।।
वहीं वहां लै घर पहुंचावैं। जग अनंत में एक कहावै।।
एकहि टेक करै जिव आसा। मन बच क्रम सतगुरु बिस्वासा।।

।।दोहा।।

एक रूप इक बर्न है, एकहि है सब भेष।
दुबिधा भरम बिसारिये, ऐसा अगम संदेस।।

।।सोरठा।।

सत्तनाम है एक, जो सतगुरु सत भाखिया।
करहु एक ही टेक, मुक्ति नहीं परतीत बिनु।।

।।चौपाई-43।।

वा का ज्ञान अखरावती सारा। बावन अच्छर का बिस्तारा।।
नौ उपदेस भेद अस भाखा। नेति नेति से ऊपर राखा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इक इक अच्छर की सहदानी। बेद का मूल कथा कहो बानी।।
सत्त लोक का अगम संदेसा। सो सतगुरु जीवन उपदेसा।।
अकथ कथा अखरावति भाखी। बेद कतेब देहिं सब साखी।।
अखरावति पढ़ि भेद बखाने। सतगुरु की महिमा सो जाने।।
आदि अंत निज अच्छर बूझै। अच्छर माहिं निअच्छर सूझैं।।

।।दोहा।।

बिन अच्छर सब झूठ है, अच्छर सब में सार।
अच्छर भेद जो पावई, सोई हंस हमार।।

।।सोरठा।।

कहैं कबीर उर माहिं, सत्तलोक परतीत कर।
हंसराज की छांहिं, सो निहचै भौजल तरै।।

।।दोहा।।

सीस गुरु को अरपि के, कीजै तत्व बिचार।
सतगुरु दया से मुक्ति फल, उतरै भौजल पार।।

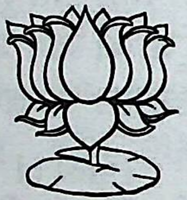

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अष्टम प्रकरण

शब्दावली

1

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये।
कीजे साहेब से हेत, परम पद पाइये॥
सतगुरु सब कुछ दीन्ह, देबन को कछु न रह्यो।
हमहिं अभागिनि नारि, सुक्ख तज दुख लह्यो॥
गई पिया के महल, पिया संग ना रची।
हिरदे कपट रह्यो छाय, मान लज्जा भरी॥
जहवां गैल सिलहली, चढ़ौं गिरि गिरि पड़ौं।
उठहुं सम्हारि सम्हारि, चरन आगे धरौं॥
जो पिय मिलन की चाह, कौन तेरे लाज है।
अधर मिलो किन जाय, भला दिन आज है॥
भला बना संजोग, प्रेम का चोलना।
तन मन अरपौं सीस, साहेब हंस बोलना॥
जो गुरु रूठे होयं, तो तुरत मनाइये।
हुइये दीन अधीन, चूक बकसाइये॥
जो गुरु होयं दयाल, दया दिल हेरि हैं।
कोटि करम कटि जायं, पलक छिन फेरि हैं॥
कहैं कबीर समुझाय, समुझ हिरदे धरो।
जगन जुगन करो राज, तो दुर्मति परिहरो॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2

सतगुरु चरन भजस मन मूरख, का जड़ जन्म गंवावस रे॥टेक॥
कर परतीत जपस उर अंतर, निसि दिन ध्यान लगावस रे॥
द्वादस कोस बसत तेरा साहेब, तहां सुरत ठहरावस रे॥
त्रिकुटी नदिया अगम पंथ जहं, बिना मेंह झर लावस रे॥
दामिनि दमकत अमृत बरसत, अजब रंग दरसावत रे॥
इंगला पिंगला सुखमन से धस, नभ मंदिर उठि धावस रे॥
लागी रहे सुरत की डोरी, सुन्न में सहर बसावस रे॥
बंकनाल उर चक्र सोधि के, मूल चक्र ठहरावस रे॥
वै करतार कै द्वार निरखि के, तहां पतंग उड़ावस रे॥
बिन सरहद अनहद जहं बाजै, कौने सुर जहं गावस रे॥
कहैं कबीर सतगुरु पूरे से, जो परिचै सो पावस रे॥

3

मैं तो आन पड़ी चोरन के नगर, सतसंग बिना जिय तरसे॥
इस सतसंग में लाभ बहुत है, तुरत मिलावै गुरु से॥
मूरख जन कोइ सार न जानै, सतसंग में अमृत बरसे॥
सब्द सा हीरा पटक हाथ से, मुट्ठी भरी कंकर से॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सुरत करो वहि घर से॥

4

सांई दरजी का कोइ मरम न पावा॥टेक॥
पानी की सुई पवन कै धागा, अष्ट मास नव सीयत लागा॥
पांच पेवंद की बनी रे गुदरिया, तामें हीरा लाल लगावा॥
रतन जतन का मकुट बनावा, प्रान पुरुष को ले पहिरावा॥
साहेब कबीर अस दरजी पावा, बड़े भाग गुरु नाम लखावा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5

भाई कोई सतगुर संत कहावै। नैनन अलख लखावै।।टेक।।
डोलत डिगै न बोलत बिसरै, अस उपदेस दृढ़ावै।
प्रान-पूज्य करिया तें न्यारा, सहज समाधि सिखावै।।
द्वार न रूंधे पवन न रोकै, नहिं अनहद अरुझावै।
यह मन जाय जहां लग जबही, परमातम दरसावै।।
करम करै निःकरमी रहै जो, ऐसी जुगत लखावै।
सदा बिलास त्रास नहिं मन में, भोग में जोग जगावै।।
धरती त्यागि अकासहुं त्यागै, अधर मड़इयां छावै।
सुन्न सिखर के सार सिला पर, आसन अचल जमावै।।
भीतर रहा सो बाहर देखै, दूजा दृष्टि न आवै।
कहत कबीर बसा है हंसा, आवागवन मिटावै।।

6

जब तें मन परतीति भई।।टेक।।
तब तें अवगुन छूटन लागे, दिन दिन बाढ़त प्रीति नई।।
सुरति निरति मिलि ज्ञान जौहरी, निरखि परखि जिन बस्तु लई।
थोड़ी बनिज बहुत है बाढ़ी, उपजन लागे लाल मई।।
अगम निगम तू खोजु निरंतर, सत्त नाम गुरु मूल दई।
कहैं कबीर साध की संगति, हुती बिकार सो छूटि गई।।

7

बीत बहुत रहि थोरी सी।।टेक।।
खाट परे नर झींखन लागे, निकर प्रान गयो चोरी सी।।
भाई बंद कुटुंब सब आये, फूंक दियो मानो होरी सी।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सिर पर देत हैं भौंरी सी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

8

साधो सब्द सों बेल जमाई।।टेक।।
तीन लोक साषा फैलाई, गुरु बिन पेड़ न पाई।।
साषा के तर पेड़ छिपाना, साषा ऊपर छाई।
साषा तें बहु साषा उपजी, दुइ साषा अधिकाई।।
बेल एक साषा दुइ फूटी, ता तें भइ बहुताई।
साषा के बिच बेल समानी, दिन दिन बाढ़त जाई।।
पांचों तत्त मील गुन उपजे, फूल बास लपटाई।
उपजा फल बहु रंग दिखावै, बीज रहा फैलाई।।
बीज माहिं दुइ दाल बनाई, मध अंकुर रहाई।
कहैं कबीर जो अंकुर चीन्है, पेड़ मिलैगा आई।।

9

अवधू अमल करै सो गावै।।
जौं लग अमल असर ना होवै, तौं लग प्रेम न आवै।।टेक।।
बिन खाये फल स्वाद बखानै, कहत न सोभा पावै।
बिन गुरु ज्ञान गांठि के हीने, नाहक बस्तु मुलावै।।
आंधर हाथ लेय कर दीपक, करि परकास दिखावै।
औरन आगे करै चांदना, आपु अंधेरे धावै।।
आंधर आप आंधर दस गोहने, जग में गुरू कहावै।
मूल महल की खबर न जानै, औरन को भरमावै।।
ले अमृत मूरख रंड सींचै, कलम-बृच्छ बिसरावै।
लैके बीज ऊसर मैं बोवै, पाहन पानी नावै।।
लागी आग जरै घर आपन, मूरख घूर बुतावै।
पढ़ा गुना जो पंडित भूलै, वाको को समुझावै।।
कहैं कबीर सुनो हो गोरख, यह संतन नहिं भावै।
है कोइ सूर पूर जग माहीं, जो यह पद अर्थावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

10

साधो सब्द सभन से न्यारा। जानैगा कोइ जाननहारा।।टेक।।
जोगी जती तपी सन्यासी,- अंग लगावै छारा।
मूल मंत्र सतगुरु दाया बिनु, कैसे उतरै पारा।।
जोग जज्ञ ब्रत नेम साधना, कर्म धर्म ब्यौपारा।
सो तो मुक्ति सभन से न्यारी, कस छूटै जम द्वारा।।
निगम नेति जा के गुन गावै, संकर जोग अधारा।
ब्रह्मा बिस्नु जेहि ध्यान धरतु हैं, सो प्रभु अगम अपारा।।
लागा रहै चरन सतगुरु के, चन्द चकोर की धारा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, नषसिष सब्द हमारा।।

11

गुरु मोहिं घुंटिया अजर पियाई।।टेक।।
जब से गुरु मोहिं घुंटिया पियाई, भई सुचित मेटी दुचिताई।।
नाम औषधी अधर कटोरी, पियत अघाय कुमति गइ मोरी।।
ब्रह्मा बिस्नु पिये नहिं पाये, खोजत संभू जन्म गंवाये।।
सुरत निरत कर पियै जो कोई, कहैं कबीर अमर होय सोई।।

12

जिनकी लगन गुरु सों नाहीं।।टेक।।
ते नर खर कूकर सम जग में, बिरथा जनम गंवाई।।
अमृत छोड़ि बिषय रस पीवै, धृग धृग तिन के ताईं।।
हरी बेल की कोरी तुमड़िया, सब तीरथ करि आई।।
जगन्नाथ के दरसन करके, अजहुं न गई कड़वाई।।
जैसे फल उजाड़ को लागो, बिन स्वारथ झरि जाई।।
कहैं कबीर बिन बचन गुरु के, अंत काल पछिताई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

13

॥चौपाई॥

दरसन दीजे नाम सनेही। तुम बिन दुख पावे मेरी देही।।टेक।।

॥ छंद॥

दुखित तुम बिन रटत निसि दिन, प्रगट दरसन दीजिये।
बिनती सुन प्रिय स्वामियां, बलि जाउं बिलंव न कीजिये॥

॥ चौपाई॥

अन्न न भावे नींद न आवे। बार बार मोहिं बिरह सतावे॥

॥ छंद॥

बिबिधि बिध हम भई ब्याकुल, बिन देखे जिव न रहे।
तपत तन में उठत ज्वाला, कठिन दुख अब कैसे सहों॥

॥ चौपाई॥

नैनन नीर बहे जलधारा। निसि दिन पंथ निहारौं तुम्हारा॥

॥ छंद॥

गुन अवगुन अपराध छिमाकर, औगुन कछु न बिचारिये।
पतित-पावन राख परमति, अपना पन न बिसारिये॥

॥ चौपाई॥

गृह आंगन मोहिं कछु न सोहाई। बज्र भई और फिरयो न जाई॥

॥ छंद॥

नैन भरि भरि रहे निरखत, निमिख नेह न तोड़ाइये।
बांह दीजे बंदी छोड़ सो, अब के बंद छोड़ाइये॥

॥ चौपाई॥

जैसे मीन मरै बिन नीरा। ऐसे तुम बिन दुखित सरीरा॥

॥ छंद॥

दास कबीर यह करत बिनती, महा पुरुष अब मानिये।
दया कीजे दरस दीजे, अपना कर मोहिं जानिये॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

14

गुरु दयाल कब करिहौ दाया।
काम क्रोध हंकार बियापै, नाहीं छूटै माया।।
जौं लगि उत्पति बिंदु रचो है, सांच कभूं नहिं पाया।
पांच चोर संग लाय दियो है, इन संग जन्म गंवाया।।
तन मन डस्यो भुवंगम भारी, लहरै वार न पारा।
गुरु गारुड़ी मिल्यो नहिं कबहीं, बिष पसर्‍यौ बिकरारा।।
कहैं कबीर दुख का सों कहिये, कोई दरद न जानै।
देहु दीदार दूर करि परदा, तब मेरो मन मानै।।

15

भीजै चुनरिया प्रेम रस बूंदन।। टेक।।
आरत साज के चली है सुहागिन, पिय अपने को ढूंढ़न।।
काहे की तोरी बनी है चुनरिया, काहे के लगे चारो फूंदन।।
पांच तत्त की बनी है चुनरिया, नाम के लागे फूंदन।।
चढ़िगे महल खुल गइ रे किवरिया, दास कबीर लागै झूलन।।

16

कैसे दिन कटि हैं जतन बताये जइयो।।टेक।।
येहि पार गंगा ओहि पार जमुना,
बिचवां मड़इया हमकां छवाये जइयो।।
अंचरा फारि के कागज बनाइन,
अपनी सुरतिया हियरे लिखाये जइयो।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
बहियां पकरि के रहिया बताये जइयो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

17

सखियो हमहूं भई ससुरासी॥ टेक॥
आयो जोबन बिरह सतायो, अब मैं ज्ञान गली अठिलाती॥
ज्ञान गली में सतगुरु मिलिगें, सो दई हमें पिया की पाती॥
वा पाती में अगम संदेसा, अब हम मरने को न डेराती॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, बर पाये अविनासी॥

18

कैसे जीवेगी बिरहिनी पिया बिन, कीजै कौन उपाय॥ टेक॥
दिवस न भूख रैन नहिं सुख है, जैसे कलियुग जाम।
खेलत फाग छांड़ि चलु सुंदर, तज चलु धन औ धाम॥
बन खंड जाय नाम लौ लावो, मिलि पिय से सुख पाय।
तलफत मीन बिना जल जैसे, दरसन लीजे धाय॥
बिना अकार रूप नहिं रेखा, कौन मिलेगी आय।
आप पुरुष समझि ले सुंदरी, देखो तन निरताय॥
सब्द सरूपी जिव पिव बूझो, छांड़ो भ्रम की टेक।
कहैं कबीर और नहिं दूजा, जुग जुग हम तुम एक॥

19

सतगुरु मोरी चूक संभारो।
हौं अधीन हीन मति मोरी, चरनन तें जिन टारो॥ टेक॥
मन कठोर कछु कहा न माने, बहु वा को कहि हारो॥
तुम हीं तें सब हेत गुसांई, या को बेग संवारो॥
अब दीजे संगत सतगुर की, जा तें होय निस्तारो॥
और सकल संगो सब बिसरैं, होउ तुम एक पियारो॥
कर देख्यो हित सारे जग से, कोइ न मिल्यो पुनि भारो॥
कहैं कबीर सुनो प्रभु मेरे, भवसागर से तारो॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

20

गगन की ओट निसाना है।।टेक।।
दहिने सूर चन्द्रमा बायें, तिन के बीच छिपाना है।।
तन की कमान सुरत का रोदा, सब्द बान ले ताना है।।
मारत बान बिंधा तनही तन, सतगुरु का परवाना है।।
मार्‍यो बान घाव नहिं तन में, जिन लागातिन जाना है।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जिन जाना तिन माना है।।

21

जा के लगी सब्द की चोट।।टेक।।
का पोखर का कुआं बावड़ी, का खाईं का कोट।।
का बरछी का छुरी कटारी, का ढालन की ओट।।
या तन की बारूद बनी है, सत्तनाम की तोप।।
मारा गोला भरमगढ़ टूटा, जीत लिया जम लोक।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तरिहौ सब्द की ओट।।

22

जोगी जन जागत रहो मेरे भाई।
जागत रहियो सोय मत जैयो, चोर मूसि लै जाई।।
बिरह फांसि डालै हित चित करि, मारै ढिंग बैठाई।
बाजीगर बंदर करि राखै, ले जाय संग लगाई।।
रस कस लेत निचोरि कामिनी, बुधि बल सब छलि खाई।
गांडे की छोई करि डारै, रहन न देत मिठाई।।
तसकर तरज हरन मृग-चितवन, कंदर्प लेत चुराई।
घृत पावक निज नारि निकट ढिग, कोई बिरले जन ठहराई।।
बन के तपसी नागा लूटे, सुर नर मुनि छलि खाई।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जग लूटा ढोल बजाई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

23

अमरपुर ले चलु हो सजना।। टेक।।
अमरपुरी की संकरी गलियां, अड़बड़ है चलना।
ठोकर लगी गुरु ज्ञान सब्द की, उधर गये झपना।।
वोहि रे अमरपुर लागि बजरिया, सौदा है करना।
वोहि रे अमरपुर संत बसतु हैं, दरसन है लहना।।
संत समाज सभा जहं बैठी, वहीं पुरुष अपना।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भवसागर है तरना।।

24

कोई प्रेम की पेंग झुलाओ रे।। टेक।।
भुज के खंभ प्रेम की रसरी, मन महबूब झलाओ रे।।
सूहा चोला पहिर अमोला, निज घट पिय की रिझाओ रे।।
नैनन बादर की झर लाओ, स्याम घट उर छाओ रे।।
आवत जावत स्त्रुत के मग पर, फिकिर पिया की सुनाओ रे।।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, पिय को ध्यान चित लाओ रे।।

25

नाचु रे मेरो मन नट होय।। टेक।।
ज्ञान कै ढोल बजाय रैन दिन, सब्द सुनै सब कोई।
राहू केतु नवग्रह नाचैं, जमपुर आनंद होई।।
छापा तिलक लगाय बांस चढ़ि, होइ रहु जग से न्यारा।
सहस कला कर मन मेरा नाचै, रीझै सिरजनहारा।।
जो तुम कूदि जाव भवसागर, कला बदौं मैं तेरो।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, हो रहु सतगुर चेरो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

26

नारद साध सों अंतर नाहीं।
जो कोइ साध सों अंतर राखै, सो नर नरकै जाहीं।। टेक।।
जागै साध तो मैं हूं जागुं, सोवै साध तो सोऊं।
जो कोइ मेरे साध दुखावै, जरा मूल से खोऊं।।
जहां साध मेरो जस गावै, तहां करौं मैं बासा।
साध चलै आगें उठं धाऊं, मोहिं साध की आसा।।
माया मेरी अर्ध-सरीरी, औ भक्तन की दासी।
अठसठ तीरथ साध के चरनन, कोटि गया और कासी।।
अंतरध्यान नाम जिन केरा, जिन भजिया तिन पाई।
कहैं कबीर साध की महिमा, हरि अपने मुख गाई।।

27

मोहिं तोहिं लागी कैसे छूटै, जैसे हीरा फोरे न फूटै।। टेक।।
मोहिं तोहिं आदि अंत बन आई, अब कैसे कै दुरत दुराई।।
जैसे कंवल-पत्र जल बासा, ऐसे तुम साहेब हम दासा।।
जैसे चकोर तकत निसि चंदा, ऐसे तुम साहेब हम बंदा।।
जैसे कीट भृंग लौ लाई, तैसे सरिता सिंधु समाई।।
हम तो खोजा सकल जहाना, सतगुरु तुम सम कोउ न आना।।
कहैं कबीर मोरा मन लागा, जैसे सोना मिला सुहागा।।

28

दुलहिनी तोहि पिय के घर जाऩा।। टेक।।
काहे रोवो काहे गावो, काहे करत बहाना।।
काहे पहिरो हरि हरि चुरियां, पहिरो नाम कै बाना।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिन पिया नाहि ठिकाना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

29

सतगुर के संग क्यों न गई री॥टेक॥
सतगुरु संग जाती सोना बनि जाती,
अब माटी के मैं मोल भई री॥
सतगुर हैं मेरे प्रान-अधारा,
तिनकी सरन मैं क्यों न गही री॥
सतगुर स्वामी मैं दासी सतगुर की,
सतगुर न भूलै मैं भूल गई री॥
सार को छोड़ि असार से लिपटी,
धृग धृग धृग मतिमंद भई री॥
प्रान-पती को छोड़ि सखी री,
माया के जाल में अरुझ रही री॥
जो प्रभु हैं मेरे प्रान-अधारा,
तिनकी मैं क्यों ना सरन गही री॥

30

बिन सतगुर नर रहत भुलाना, खोजत फिरत राह नहिं जाना।
केहर-सुत ले आयो गरड़िया, पालपोस उन कीन्ह सयाना॥
करत कलोल रहत अजयन संग, आपन मर्म उनहुं नहिं जाना॥
केहर इक जंगल से आयो, ताहि देख बहुतै रिसियाना॥
पकरि के भेद तुरत समुझाया, आपन दसा देख मुसक्याना॥
जसकुरंग बिच बसत बासना, खोजत मूढ़ फिरत चौगाना॥
कर उसवास मनै में देखै, यह सुगंधि धौं कहां बसाना॥
अर्ध उर्ध बिच लगन लगी है, छक्यो रूप नहिं जात बखाना॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, उलटि आपु में आपु समाना॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

31

बिन सतगुर नर भरम भुलाना।।टेक।।
सतगुर सब्द का मर्म न जाना, भूलि परा संसारा।।
बिना नाम जब धरि धरि खैहै, कौन छुड़ावनहारा।।
सिरजनहार का मर्म न जाने, धृग जीवन जग तेरा।।
धरमराय जब पकरि मंगैहैं, परहै मार घनेरा।।
सुत नारी को मोह त्यागि कै, चीन्हो सब्द हमारा।।
सार सब्द परवाना पावो, तब उतरो भव पारा।।
इक-मत ह्वै के चढ़ो नाव पर, सतगुर खेबनहारा।।
साहेब कबीर यह निर्गुन गावैं, संतन करो बिचारा।।

32

वा दिन की कछु सुध कर मन मां।।टेक।।
जा दिन लैचलु लैचलु होई, ता दिन संग चलै नहिं कोई।
तात मात सुत नारी रोई, माटी के संग दिये समोई।
सो माटी काटेगी तन मां।।
उलफत नेहा कुलफत नारी, किसकी बीबी किसकी बांदी।
किसका सोना किसकी चांदी, जा दिन जम ले चलि है बांधी।
डेरा जाय परै वहि बन मां।।
टांड़ा तुमने लादा भारी, बनिज किया पूरा ब्यौपारी।
जूवा खेला पूंजी हारी, अब चलने की भई तैयारी।
हित चित मत तुम लाओ धन मां।।
जो कोई गुरु से नेह लगाई, बहुत भांति सोई सुख पाई।
माटी में काया मिलि जाई, कहैं कबीर आगै गोहराई।
सांच नाम साहेब को संग मां।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

33

टुक जिंदगी बंदगी कर लेना, क्या माया मद मस्ताना।।टेक।।
रथ घोड़े सुखपाल पालकी, हाथी और बाहन नाना।
तेरा ठाठ काठ की टाटी, यह चढ़ चलना समसाना।।
रूम पाट पाटम्बर अम्बर, जरी बफ्त का बाना।
तेरे काज गजी गज चारिक, भरा रहे तोसखाना।।
खर्चे की तदबीर करो तुम, मंजिल लंबी जाना।
पहिचन्ते का गांव न मग में, चौकी न हाट दुकाना।।
जीते जी ले जीत जनम को, यही गोय यहि मैदाना।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, नहिं कलि तरन जतन आना।।

34

सुगवा पिंजरवा छोरि करि भागा।।टेक।।
इस पिंजरे में दस दरवाजा।
दसो दरवाजे किवरवा लागा।।
अंखियन सेती नीर बहन लाग्यो।
अब कस नाहिं तू बोलत अभागा।।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो।
उड़ि गे हंस टूटि गयो तागा।।

35

हम को ओढ़ावे चदरिया, चलती बिरिया।।टेक।।
प्रानराम जब निकसन लागे, उलट गईं दूनों नैन पुतिरया।।
भीतर से जब बाहर लाये, छूटि गई सब महल अटरिया।।
चार जने मिलि खाट उठाइन, रोवत ले चले डगर डगरिया।।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, संग चलेगी वहि सूखी लकरिया।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

36

क्या देख दिवाना हुआ रे।।टेक।।
माया सूली सार बनी है, नारी नरक का कूवा रे।।
हाड़ मास नाड़ी का पिंजर, ता में मनुवां सूवा रे।।
भाई बंद और कुटुंब कबीला, ता में पचि पचि मूवा रे।।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, हार चला जग जूवा रे।।

37

सोच समुझ अभिमानी, चादर भई है पुरानी।।टेक।।
टुकड़े टुकड़े जोड़ि जुगत सों, सी के अंग लिपटानी।
कर डारी मैली पापन सों, लोभ मोह में सानी।।
ना यहि लगो ज्ञान कै साबुन, ना धोई भल पानी।
सारी उमिर ओढ़ते बीती, भली बुरी नहिं जानी।।
संका मान जान जिय अपने, यह है चीज बिरानी।
कहत कबीर धरो राखु जतन से, फेर हाथ नहिं आनी।।

38

हमारे मन कब भजिहो गुर नाम।।टेक।।
बालापन जनमत हीं खोयो, ज्वानी में ब्यापा काम।
बूढ़ भये तन थाकन लागे, लटकन लागे चाम।।
कानन बहिन नैन नहिं सूझै, भये दांत बेकाम।
घर की त्रिया बिमुख होई बैठी, पुत्र किया कलकान।।
खटिया से भुइयां कर दीन्हीं, जम का गड़ा निसान।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, दुबिधा में निकसत प्रान।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

39

मन हलवाई हो, सतनाम बिमल पकवाना॥टेक॥
काया कराही कर्म घृत भरु, मन मैदा को सानु।
ब्रह्म अगिन उदगारि के, तू अजब मिठाई छानु॥
तन हमारो ताखरी हो, मन हमारो सेर।
सुरति हमारी डांड़िया हो, चित हमारो फेर॥
गगन मंडल में घर हमारो, त्रिकुटी मोर दुकान।
रहनि हमरी उनमनी, तातें लागि बस्तु बिकान॥
लोभ लहर नदिया बहै हो, लख चौरासी धार।
बिन गुरु साकित बूड़ि मुए, कोइ गुरमुख उतरे पार॥
कहैं कबीर स्वामी अगोचरा, तुम गति अगम अपार।
संतन लाद्यो सत्त नाम, सब बिष लाद्यो संसार॥

40

मन फूला फूला फिरै जक्त में, कैसा नाता रे॥टेक॥
माता कहे यह पुत्र हमारा, बहिन कहै बिर मेरा।
भाई कहै यह भुजा हमारी, नारि कहै नर मेरा॥
पेट पकरि के माता रोवै, बांहि पकरि के भाई।
लपटि झपटि के तिरिया रोवै, हंस अकेला जाई॥
जब लग जीवै माता रोवै, बहिन रोवै दस मासा।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै, फेर करै घर बासा॥
चार गजी चरगजी मंगाया, चढ़ा काठ की घोड़ी।
चारो कोने आग लगाया, फूंक दियो जस होरी॥
हाड़ जरै जस लाकड़ी, केस जरै जस घासा।
सोना ऐसी काया जरि गइ, कोई न आयो पासा॥
घर की तिरिया ढूंढ़न लागी, ढूंढ़ि फिरी चहुं देसा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, छांड़ो जग की आसा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

41

मन बनियां बानि न छोड़ै।।टेक।।
जनम जनम का मारा बनियां, अजहूं पूरा न तौले।
पासंग कै अधिकारी लै लै, भूला भूला डोलै।।
घर में दुबिधा कुमति बनी है, पल पल में चित तोरै।
कुनबा वाके सकल हरामी, अमृत में बिष घोरै।।
तुमहीं जल में तुमहीं थल में, तुमहीं घट घट बोलै।
कहैं कबीर वा सिष को डरिये, हिरदे गांठि न खोलै।।

42

उठि पछिलहरा पिसना पीस।।टेक।।
ढारु पछोरु पलक छिन दम दम।
अनहद जांत गड़ा तोरे सीस।।
कर बिन चलै झींक बिन निघरै।
बंकनाल चलै बिस्वा बीस।।
मन मैदा मीहीं कर चालौ।
चोकर तजि द्यों पांच पचीस।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो।
आपुइ आय मिलैं जगदीस।।

43

तुम जाइ अंजोरे बिछावो, अंधेरे में का करिहो।।टेक।।
जब लग स्वांस दीप जरतु है, जैसे बनै तो बनावो।।
गुन कै पलंग ज्ञान कै तोसक, सुरति तकिया लगावो।।
जो सुख चाहो सो सतमहले, बहुरि दुक्ख नहिं पावो।।
दास कबीर गुरु सेज संवारो, उनकी नारि कहावो।।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, आवा गवन मिटावो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

44

कहै कोई लाखों, करैया कोइ और है।। टेक।।
कंसा कहै बसुदेव को निरबंस करौं।
रुक्मा कहै सिसुपाल के सिर मौर है।।
रावना कहै मैं तो जम को भी मारि डारौं।
मेघनाद कहै अपार बल मोर है।।
कसिपा कहै प्रहलाद को मैं मारि डारौं।
देखो मरे भाई याही मेरो कौल है।।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो।
भक्त-बछल सतनाम माहीं ठौर है।।

45

साधो सहजै काया सोधो।
करता आप आपु में करता, लख मन को परमोधो।।टेक।।
जैसे बट का बीज ताहि में, पत्र फूल फल छाया।
काया मद्धे बुंद बिराजै, बुन्दै मद्धे काया।।
अग्नि पवन पानी पिरथी नभ, ता बिन मेला नाहीं।
काजी पंडित करौ निबेरा, का के माहिं न सांई।।
सांचे नाम अगम की आसा, है वाही में सांचा।
करता बीज लिये है खेतै, त्रिगुन तीन तत पांचा।।
जल भरि कुम्भ जलै बिच धरिया, बाहर भीतर सोई।
उन को नाम कहन को नाहीं, दूजा धोखा होई।।
कठिन पंथ सतगुरु को मिलना, खोजत खोजत पाया।
इक लग खोज मिटो जब दुबिधा, ना कहुं गया न आया।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सत्त सब्द निज सारा।
आपा मद्धे आपै बोलै, आपै सिरजनहारा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

46

नागिन ने पैदा किया नागिन डंसि खाया।
कोइ कोइ जन भागत भये गुरु सरन तकाया।।
सिंगी रिषि भागत भये बन मां बसे जाई।
आगे नागिन गांसि के वोहीं डंसि खाई।।
नेजाधारी सिव बड़े भागे कैलासा।
जोति रूप परगट भई परबत परकासा।।
सुर नर मुनि जोगी जती कोई बचन न पाया।
नोन तेल ढूंढ़े नहीं कच्चे धरि खाया।।
नागिन डरपै संत से उहवां नहिं जावै।
कहैं कबीर गुरु मंत्र से आपै मरि जावै।।

47

अवधू निरंजन जाल पसारा।।टेक।।
स्वर्ग पताल जीव मृत-मंडल, तीन लोक बिस्तारा।
ब्रह्मा बिस्नु सिव प्रगट कियो है, ताहि दियो सिर भारा।।
ठांव ठांव तीरथ ब्रत थाप्यो, ठगने को संसारा।
माया मोह कठिन बिस्तारा, आपु भयो करतारा।।
सतगुरु सब्द कों चीन्हत नाहीं, कैसे होय उबारा।।
जारि भूंजि कोइला करि डारै, फिर फिर लै अवतारा।।
अमर लोक जहं पुरुष बिराजै, तिन का मूंदा द्वारा।
जिन साहेब से भये निरंजन, सो तो पुरुष है न्यारा।।
कठिन काल तें बाचा चाहो, गहो सब्द टकसारा।
कहैं कबीर अमर करि राखौं, मानौ सब्द हमारा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

48

जोगिया खेलियो बचाय के, नारि नैन चलैं बान।।टेक।।
सिंगी की मिंगी करि डारी, गोरख के लिपटान।।
कामदेव महादेव सतावै, कहा कहा करौं बखान।।
आसन छोड़ि मुछंदर भागे, जल मां मीन समान।।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु चरनन लिपटान।।

49

तेरे गवने का दिन नगिचाना, सोहागिनि चेत करौ री।।टेक।।
बालापन तन खेल गंवायौ, तरुनै चाल कुचाल।
का उत्तर देइहौ रे सजनी, पिय पूछे जब हाल।
समुझ मन का करिहौ री।।
भौसागर औगाध भंवर है, सूझै वार न पार।
केहि बिधि पार उतरबौ सजनी, नहिं खेवट नहिं नाव।
खेवैया बिन का करिहौ री।।
सील सुमति की चुनरी पहिरो, सत मति रंग रंगाय।
ज्ञान तेल सों मांग संवारौ, निर्भय सेंदुर लाय।।
कपट पट खोल धरौ री।।
पिय घर चेत करौ री सजनी, नैहर माहिं निबाह।
नैहर नाम कहा लै करिहौ, मरिहौ भर्म भुलाय।।
पुरुष बिन का करिहौ री।।
सासुर सत्त सब्द निर्बानी, त्रिकुटी संगम ध्यान।
झिलमिल जोत तहं निसु दिन झलकै, तीन बसै इक ठाम।
सुरत दे निरत करौ री।।
कहैं कबीर सोई सतवंती, पिव के रंग रंगाय।
अमर लोक हाथै करि लैइ है, तेरो सोहाग सोहाय।
महल बिसराम करौ री।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

50

हंसा हंस मिले सुख होई।।टेक।।
इहां तो पांती है बगुलन की, कदर न जानै कोई।।
जो हंसा तोरे प्यास छीर की, कूप नीर नहिं होई।
यह तो नीर सकल ममता को, हंस तजा जस चोई।।
षट दरसन पाखंड छानबे, भेष धरे सब कोई।
चार बरन और बेद किताबें, हंस निराला होई।।
यह जम तीन लोक को राजा बांधे अस्त्र संजोई।
सब्द जीत चलो हंस हमारे, तब जम रहि है रोई।।
कहैं कबीर प्रतीत मान ले, जिव नहिं जाय बिगोई।
लै बैठारौं अमर लोक में, आवा गवन न होई।।

51

साधो सार सबद गुन गाओ।।टेक।।
काया कोट में काम बिराजै, सो जम के गढ़ छायो।
चौदह बुरुज दसो दरवाजा, कोठरी अनेक बसायो।।
पांचों यार पचीसौ भाई, सगरि गुहार बुलाओ।
तेगा तरकसि कसि के बांधो, दुरमति दूर बहाओ।।
काढ़ि कटारी जम को मारो, तबे अमल गढ़ पाओ।
त्रिकुटी मध तिरबेनी धारा, सूरमा भक्त कहाओ।।
मन बन्दूक औ ज्ञान पलीता, प्रेम पियाला लाओ।
सबद कै गोली धुनि कै रंजक, काल मारि बिचलाओ।।
जो कोइ बीर चढ़ै लड़ने पर, मन कै मैल धुवाओ।
द्वादस घाटी छेके बाटी, सुरत संगीन चढ़ाओ।।
गगन में गहगह होत महा धुन, साधक सुनि उठि धाओ।
संतन धीरा महा कबीरा, सूतल ब्रह्म जगाओ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

52

मानुष जनम सुधारो साधो, धोखे काहे बिगाड़ो हो।
ऐसा समय बहुर नहिं पैहो, जनम जुआ मति हारो हो॥
गुड़ा गुड़ी खियाल जिन भूलो, मूल तत्त लौ लाओ हो।
जब लग घट सों परिचे नाहीं, तब लग कछु नहिं पाओ हो॥
तीरथ ब्रत और जप तण संजम, या करनी मत भूलो हो।
करम फंद में जुग जुग पड़िहो, फिर फिर जोनि में झूलो हो॥
ना कछु न्याये ना कछु धोये, ना कछु घंट बजाये हो।
ना कछु नेती ना कछु धोती, न कछु नाचे गाये हो॥
सिंगी सेल्ही भभूत औ बटुआ, सांई स्वांग से न्यारा हो।
कहैं कबीर मुक्ति जो चाहौ, मानौ सब्द हमारा हो॥

53

जिन के नाम ना है हिये॥टेक॥
क्या होवै गल माला डाले, कहा सुमिरनी लिये॥
क्या होवै पुस्तक के बांचे, कहा संख धुन किये॥
क्या होवै कासी में बसि के, क्या गंगा जल पिये॥
होवै कहा बरत के राखे, कहा तिलक सिर दिये॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जाता है जम लिये॥

54

को सिखवै अधमन को ज्ञाना॥टेक॥
साध की संगत कबहुं न कीन्ही, रटत रटत जग जन्मसिराना॥
दया धर्म कबहूं नहिं चीन्हा, नहिं गुरु सब्द समाना॥
कर्जा करि के बेस्या राखै, साध आय तो नहिं घर दाना॥
कहैं कबीर जब जमपुर जै है, मारहि मार उठै घमसाना॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

55

भक्ति सब कोई करै भरमना ना टरै,
भरम जंजाल दुख दुन्द भारी।।
काल के जाल में जक्त सब फंसि रहा,
आस की डोरि जम देत डारी।।
ज्ञान सूझै नहीं सब्द बूझै नहीं,
सरन ओटा नहीं गर्व धारी।।
ब्रह्म चीन्है नहीं भर्म पूजत फिरे,
हिये के नैन क्यों फोरि डारी।।
काटि सर जीव धरि थाप निरजीव को,
जीव के हतन अपराध भारी।।
जीव का दर्द बेदर्द कसकै नहीं,
जीभ के स्वाद नित जीव मारी।।
एक पग ठाढ़ कर जोर बिनती करै,
रच्छ बल जाउं सरना तिहारी।।
वहां कछु है नहीं अरज अंधा करै,
कठिन डंडौत नहिं टरत टारी।।
यही अकर्म से नर्क पापी पड़ै,
करम चंडाल की राह न्यारी।।
धन्न सौभाग जिन साध संगत करी,
ज्ञान की दृष्टि लीजै बिचारी।।
सत्त दावा गहौ आपु निर्भय रहौ,
आपु को चीन्हि लखु नाम सारी।।
कहैं कबीर तू सत्त पर नजर कर,
बोलता ब्रह्म सब घट उजारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

57

सुख सिंघु की सैर का स्वाद तब पाइ है,
चाह का चौतरा भूमि जावै।
बीज के माहिं ज्यों बृच्छ बिस्तार,
यों चाह के माहिं सब रोग आवै।।
दृढ़ बैराग में होय आरुढ़ मन,
चाह के चौतरे आग दीजै।
कहैं कबीर यों होय निरबासना,
तत्त सों रत्त होय काज कीजै।।

56

करो रे मन वा दिन की तदबीर।।टेक।।
जब जमराजा आनि पड़ैंगे, नेक धरत नहिं धीर।।
मुंगरिन मारि के प्रान निकासत, नैनन भरि आयो नीर।।
भौसागर इक अगम पंथ है, नदिया बहत गंभीर।।
नाव न बेड़ा लोग घनेरा, खेवट है बेपीर।।
घर तिरिया अरधंगी बैठी, मातु पिता सुत बीर।।
माल मुलुक की कौन चलावै, संग न जात सरीर।।
लै कै बोरत नरक कुण्ड में, ब्याकुल होत सरीर।।
कहत कबीर नर अब से चेतो, माफ होय तकसीर।।

58

का लै जैबौ, ससुर घर ऐबौ।।टेक।।
गांव के लोग जब पूछन लगिहैं, तब तुम क रे बतैबौ।।
खोल घुंघट जब देखन लगिहैं, तब बहुतै सरमैबो।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, फिर सासर नहि पैबौ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

59

आगे समुझि परैगा भाई।।टेक।।
यहां अहार उद्र भर खायो, बहु बिधि मास बढ़ाई।।
जीव जन्तु रस मार खातु हौ, तनिक दरद नहिं आई।।
यहं सो परधन लूटि खातु हौ, गल बिच फांसि लगाई।।
तिन के पीछे तीन पियादा, छिन छिन खबर लगाई।।
साध संत की निंदा कीन्ही, आपन जनम नसाई।।
पग पग पर कांटा धसि है, यह फल आगे आई।।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, दुनियां है दुचिताई।।
सांच कहै तो मारा जावै, झूठे जग पतियाई।।

60

सुमिरन बिन गोता खावोगे।।टेक।।
मुट्ठी बांधै गर्भ से आये, हाथ पसारे जावोगे।।
जैसे मोती फरत ओस के, बेर भये झरि जावोगे।।
जैसे हाट लगावै हटवा, सौदा बिन पछितावोगे।।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सौदा लेकर जावोगे।।

61

अरे मन समुझ के लादु लदनियां।।टेक।।
काहेक टट्टुवा काहेक पाखर, काहेक भरी गौनियां।।
मन कै टट्टुवा सुरति कै पाखर, भरीं पुन्न पाप गौनियां।।
घर के लोग जगाती लागे, छीन लेयं कर धनियां।।
सौदा करु तो यहीं करु भाई, आगे हाट न बनियां।।
पानी पी तो यहीं पी भाई, आगे देस निपनियां।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सत्त नाम का बनियां।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

62

दिवाने मन भजन बिना दुख पैहौ।।टेक।।
पहिला जनम भूत का पैहो, सात जनम पछितैहौ।
कांटे पर लै पानी पैहौ, प्यासन्ही मरि जैहौ।।
दूजा जनम सुवा का पैहो, बाग बसेरा लेइहौ।
टूटे पंख बाज मंडराने, अधफड़ प्रान गंवैहौ।।
बाजीगर के बानर होइहौ, लकड़िन नाच नचैहौ।
ऊंच नीच से हाथ पसरिहौ, मांगे भीख न पैहौ।।
तेली के घर बैला होइहौ, आंखिन ढांप ढंपैहौ।
कोस पचास घरै में चलिहौ, बाहर होन न पैहौ।।
पंचवां जनम ऊंट कै पैहौ, बिन तौले बोझ लदैहौ।
बैठे से तो उठे न पैहौ, घुरच घुरच मरि जैहौ।।
धोबी घर के गदहा होइहौ, कटी घास न पैहौ।
लादि लादि आपु चढ़ि बैठे, लै घाटे पहुंचैहौ।।
पंछी मां तौ कौवा होइहौ, करर करर गुहरैहौ।
उड़ि के जाइ मैला पर बैठो, गहिरे चोंच लगैहौ।।
सत्तनाम की टेर न करिहौ, मनहीं मन पछितैहौ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, नरक निसानी पैहौ।।

63

मुरसिद नैनों बीच नवी है।
स्याह सफेद तिलों बिच तारा, अविगत अलख रबी है।।टेक।।
आंखी मद्धे पांखी चमकै, पांखी मद्धे द्वारा।
तेहि द्वारे दुर्बीन लगावै, उतरै भौजल पारा।।
सुन्न सहर में बास हमारी, तहं सरबंगी जावै।
साहेब कबीर सदा के संगी, सब्द महल ले आवै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

64

माल जिन्होंने जमा किया, सौदागर हारे जाते हैं।।टेक।।
ऊंचा नीचा महल बनाया, जा बैठे चौबारे हैं।
सुबह तलक तो जागे रहना, साम पुकारे जाते हैं।।
जग के रस्ते मत चल प्यारे, ठग बटमार घनेरे हैं।
इस नगरी के बीच मुसाफिर, अक्सर मारे जाते हैं।।
भाई बंध औ कुटुंब कबीला, सब ठग ठग के खाते हैं।
आया जम जब दिया नगारा, साफ अलग हो जाते हैं।।
जोरू कौन खसम है किसका, कौन किसी के नाते हैं।
कहैं कबीर जो बंदगी गाफिल, काल उन्हीं को खाते हैं।।

65

निज बैपारी नाम का हाटै चल भाई।।टेक।।
साध संत गहकी भये, गुरु हाट लगाई।
सार सबद कछु बस्तु है, सौदा करु भाई।।
भाव खुला पंच रंग का, बहु करत दलाली।
जा के हाथ बिबेक है, करि देत सवाई।।
पाप पुन्न पलरा भये, सूरत भइ डांड़ी।
ज्ञान दुसेरा डारि कै, पूरा करु आई।।
करि सौदा घर को चले, रोका दरबानी।
लेखा दे निज नाम का, कहं का बैपारी।।
पानी सी बानी बही, गुरु छाप दिखाई।
इतना सुन कायल भये, जम सीस नवाई।।
संत चले सतलोक को, छोड़ा संसारी।
कुन्दर भये दरबार में, प्रभु नजर गुजारी।।
कहै कबीर बैठो सही, सिख लेहु हमारी।
काल कलाप ब्यापै नहीं, इहै नफा तुम्हारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

66

अरे इन दोनों राह न पाई।। टेक।।
हिंदू अपनी करै बड़ाई गागर छुवन न देई।
बेस्या के पायन तर सोवै यह देखो हिंदुआई।।
मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी मुर्गा खाई।
खाला केरी बेटी ब्याहै घरहिं में करै सगाई।।
बाहर से इक मुर्दा लाये धोय धाय चढ़वाई।
सब सखियां मिलि जेंवन बैठीं घर भर करै बड़ाई।।
हिंदुन की हिंदुवाई देखी तुरकन की तुरकाई।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो कौन राह ह्वै जाई।।

67

सिपाही मन दूर खेलन मत जाव।। टेक।।
दूर खेलन से मनुआं दुखित होय, गगन मंडल मठ छाव।।
येहि पार गंगा वोहि पार जमुना, बीच सरसुती न्हाव।।
पांच को मारि पचीस को बस करि, तीन को पकरि मंगाव।।
कहैं कबीर धरमदास से, सब्द में सुरत लगाव।।

68

नाम भजा सोइ जीता जग में, नाम भजा सोइ जीता रे।। टेक।।
हाथ सुमिरिनी पेट कुतरनी, पढ़ै भागवत गीता रे।
हिरदय सुध किया नहिं बोरै, कहत सुनत दिन बीता रे।।
आन देव की पूजा कीन्ही, गुरु से रहा अमीता रे।
धन जोबन तेरा यहीं रहैगा, अंत समय चलि रीता रे।।
बावरिया ने बावर डारी, फंद जाल सब कीता रे।
कहत कबीर काल आई खैहै, जैसे मृग को चीता रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

69

डर लागै और हांसी आवै, अजब जमाना आया रे।। टेक।।
धन दौलत लै माल खजाना, बेस्या नाच नचाया रे।
मुट्ठी अन्न साध कोइ मांगै, कहैं नाज नहिं आया रे।।
कथा होय तहं स्त्रोता सोवैं, वक्ता मूड़ पचाया रे।
होय जहां कहिं स्वांग तमासा, तनिक न नींद सताया रे।।
भंग तमाखू सुलफा गांजा, सूखा खूब उड़ाया रे।
गुरु चरनामृत नेम न धारै, मधुवा चाखन आया रे।।
उलटी चलन चली दुनिया में, ता तें जिया घबराया रे।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, फिर पाछे पछिताया रे।।

70

ए जियरा तैं अमर लोक के, पर्‍यो काल बस आई हो।
मनै सरूपी देव निरंजन, तोहि राख्यो भरमाई हो।।
पांच पचीस तीन को पिजरा, ता में तो को राखै हो।
तुम को बिसरि गई सुधि घर की, महिमा आपन भाखै हो।।
निरंकार निरगुर है माया, तो को नाच नचावै हो।
चर्म दृष्टि का कुलफ दैके, चौरासी भरमावै हो।।
चार बेद जा की है स्वासा, ब्रह्मा अस्तुति गावै हो।
सो कथि ब्रह्मा जगत भुलाये, तहि मारग सब जाई हो।।
जोग जाप नेम ब्रत पूजा, बहु परपंच पसारा हो।
जैसे बधिक ओट टाटी के, दे बिस्वासै अहारा हो।।
सतगुरु पीव जीव के रच्छक, ता से करो मिलाना हो।
जा के मिले परमसुख उपजै, पावो पद निर्बाना हो।।
जुगन जुगन हम आय जनाई, कोइ कोइ हंस हमारा हो।
कहै कबीर ताहि पहुंचाऊं, सत्त पुरुष दरबारा हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

71

अब से खबरदार रहो भाई।।टेक।।

सतगुर दीन्हा माल खजाना, राखो जुगत लगाई।
पाव रती घटने नहिं पावै, दिन दिन बढ़ै सवाई।।
छिमा सील की अलफी पहिनै, जुगति लंगोट लगाई।
दया की टोपी सिर पर दैके, और अधिक बनि आई।।
वस्तु पाय गाफिल मत रहना, निसि दिन करो कमाई।
घट के भीतर चोर लगतु हैं, बैठे घात लगाई।।
तन बंदूक सुमति का सिंगरा, प्रीति का गज ठहकाई।
सुरति पलीता हर दम सुलगै, कस पर राखु चढ़ाई।।
बाहर वाला खड़ा सिपाही, ज्ञान गम्म अधिकाई।
साहेब कबीर आदि अदली, हर दम लेत जगाई।।

72

अभागा तुमने नाम न जाना।।टेक।।

करिके कौल वहां से आयौ, इहवां भरम भुलाना।
सत्त नाम बिसराय दियो है, मोह माया लिपटाना।।
माता पिता सुत बन्धु कुटुम्बी, औ बहु माल खजाना।
बांह पकरि जब जम लै चलि है, सब ही होय बिगाना।।
लाल फूल सेमर लखे, सुगना लिपटाना।
मारत चुंच रुई उधियानी, फिर पाछे पछिताना।।
मानुस चोला पाइ कै, का करै गुमाना।
जस पानी कै बुलबुला, छिन माहिं बिलाना।।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, देखो जग बौराना।
अब के गये बहुरि नहिं आवौ, लहौ जो सात परवाना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

73

जाग री मोरी सुरत सोहागिन जाग री।। टेक।।
का तुम सोवत मोह नींद में, उठि के भजनियां में लाग री।।
चित से सब्द सुनो सरवन दै, उठत मधुर धुन राग री।।
दोउ कर जोरि सीस चरनन दै, भक्ति अचल बर मांग री।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जक्त पीठ दै भाग री।।

74

भजो हो सतगुरु नाम उरी।। टेक।।
जप तप साधन कछु नहिं लागत, खर्चंत ना गठरी।।
संपति संतति सुख के कारन, पा सों भूलि परी।।
जेहि मुख सत्त नाम नहिं निकसत, सो मुख धूरि परी।।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु चरनन सुधरी।।

75

समुझ नर मूढ़ बिरागी रे।। टेक।।
आया लाहा कारने तैं, क्यों पूंजी हारी रे।।
गर्भ बास बिनती करी, सो तैं आन बिसारी रे।।
माया देख तू भूलिया, और सुन्दर नारी रे।।
बड़े साह आगे गये, ओछा व्यौपारी रे।।
लौंग सुपारी छांड़ि के, क्यों लादी खारी रे।।
तीरथ बरत में भटकता, नहिं तत्त विचारी रे।।
आन देव को पूजता, तेरी होगी ख्वारी रे।।
क्या लाया क्या लै चला, करि पल्ला भारी रे।।
कहैं कबीर जग यों चला, जस हारा ज्वारी रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

76

को जानै बात पराये मन की।।टेक।।
रात अंधेरी चोरा डांटे, आस लगाये पराये धन की।।
आंधर मिरग बनै बन डोलै, लागो बान खबर ना तन की।।
महा मोह की नींद परी है, चूनर लेगा सुहागिल तन की।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, गुरु जाने हैं पराये मन की।।

77

हिलि मिलि मंगल गाओ मोरी सजनी, भई प्रभात बीति गई रजनी।।
नाचे कूदे क्या होय भैना, सतगुरु सब्द समुझ ले सैना।।
स्वांस तारी सूरत संग लाओ, तब हंसा अपना घर पाओ।।
अधर निरंतर फूलि फुलवारी, मनसा मारि करो रखवारी।।
अमी सींच अमृत फल लागा, पावैगा कोई संत सुभागा।।
कहैं कबीर गूंगे की सैना, अमी महा रस चाखै नैना।।

78

सचमुच खेल ले मैदाना।।टेक।।
सब्द गुरु को दृढ़ करि बांधो, सुरति की खींच कमाना।
कड़ाबीन करु मन को बस करि, मारों मोह निदाना।।
फाका फरी ज्ञान का गदका, बांधि मरहटी बाना।
सनमुख जाय लड़ै जो कोई, वही सूर मरदाना।।
रंजक ध्यान ज्ञान की पट्टी, प्रेम बरूद खजाना।
भरि भरि तोप झड़ाझड़ मारो, लूटो मुलुक बिगाना।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, प्रेम में हो मस्ताना।
अमर लोक में डेरा दे के, सतगुरु हना निसाना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

79

भजु मन नाम उमरि रहि थोड़ी।।टेक।।
चारि जने मिलि लेन को आये, लिये काठ की घोड़ी।
जोरि लकड़िया फूंक अस दीन्हो, जस बृन्दावन की होरी।।
सीसमहल के दस दरवाजे, आन काल ने घेरी।
आगर तोड़ी नागर तोड़ी, निकसे प्रान खुपड़िया फोड़ी।।
पाटी पकरि वाकी माता रोवै, बहियां पकरि सग भाई।
लट छिटकाये तिरिया रोवै, बिछुरत हैं मोरी हंस की जोड़ी।।
सत्तनाम का सुमिरन करि ले, बांध गांठ तू पोढ़ी।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, जिन जोड़ी तिन तोड़ी।।

80

मुखड़ा क्या देखै दर्पन में, तेरे दया धरम नहिं तन में।।टेक।।
आम की डार कोइलिया बोलै, सुवना बोलै बन में।
घरबारी तो घर में राजी, फक्कड़ राजी बन में।।
ऐंठी धोती पाग लपेटी, तेल चुआ जुलफन में।
गली गली की सखी रिझाई, दाग लगाया तन में।।
पाथर की इक नाव बनाई, उतरा चाहे छिन में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, वे क्या लड़ेंगे रन में।।

81

जाके नाम न आवत हिये।।टेक।।
काह भये नर कासी बसे से, का गंगा जल पिये।।
का रे भये नर जटा बढ़ाये, का गुदरी के सिये।।
का रे भये कंठी के बांधे, काह तिलक के दिये।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, नाहक ऐसे जिये।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

82

करम गति टारे नाहिं टरी॥टेक॥
मुनि बसिष्ट से पंडित ज्ञानी, सोध के लगन धरी।
सीता हरन मरन दसरथ को, बन में बिपति परी॥
कहं वह फंद कहां वह पारधि, कहं वह मिरग चरी।
सीता को हरि ले गयो रावन, सोने की लंका जरी॥
नीच हाथ हरिचन्द्र बिकाने, बलि पाताल धरी।
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग, गिरगिट जोनि परी॥
पांडव जिन के आपु सारथी, तिन पर बिपति परी।
दुरजोधन को गर्ब घटायो, जदु कुल नास करी॥
राहु केतु औ भानु चंद्रमा, बिधि संजोग परी।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, होनी होके रही॥

83

चल हंसा सतलोक हमारे, छोड़ो यह संसारा हो॥टेक॥
यहि संसार काल है राजा, करम को जाल पसारा हो।
चौदह खंड बसै जा के मुख, सब को करत अहारा हो॥
जारि बारि कोइला करि डारत, फिरि फिरि दे औतारा हो।
ब्रह्मा बिस्नु सिव तन धरि आये, और को कौन बिचारा हो॥
सुर नर मुनि सब छल छल मारिन, चौरासी में डारा हो।
मद्ध अकास आप जहं बैठे, जोति सबद उजियारा हो॥
सेत सरूप सबद जहं फूले, हंसा करत बिहारा हो।
कोटिन सूर चंद छिपि जैहैं, एक रोम उजियारा हो॥
वही पार इक नगर बसतु है, बरसत अमृत धारा हो।
कहै कबीर सुनो धर्मदासा, लखो पुरुष दरबारा हो॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

84

साधो को है कहं से आयो।। टेक।।
खात पियत को बोलत डोलत, वाको अंत न पायो।
केहि के मन धौं कहां बसतु है, को धौं नाच नचायो।।
पावक सर्व अंग काठहिं में, को धौं डहकि जगायो।
होइ गयो खाक तेज पुनि वा को, कहु धौं कहां समायो।।
भानु प्रकास कूप जल पूरन, दृष्टि दरस जो पायो।
आभा करम अंत कछु नाहीं, जोति खींच ले आयो।।
अहै अपार पार कछु नाहीं, सतगुरु जिन्हैं लखायो।
कहैं कबीर जेहि सूझ बूझ जस, तेई तस भाष सुनायो।।

85

दुनिया झामर झूमर अरुझी।। टेक।।
अपने सुत कै मुंड़न करावै, छूरा लगन न पावै।
अजया कै चिंगना धरि मारै, तनिकौ दया न आवै।।
लैके तेगा चला बांकुरा, अजया कै सिर काटा।
पूजा रही सो मालिन लै गइ, कूकुर मूरत चाटा।।
माटी कै चौतरा बनाइन, कुत्ता मुत मुत जाई।
जो देउता में सक्ती होती, कुत्ता धरि धरि खाई।।
गोबर लैके गौर बनाइन, पूजैं लोग लुगाई।
यह बोलै यह बोल न जानै, पानी में डुबकाई।।
सोने की इक मुरति बनाइन, पूजन को सब धाई।
बिपति पड़े गहने धरि खाई, भल कीन्ह्यो सेवकाई।।
देबी जी कौ खस्सी भेड़ा, पीरन कौ नौ नेजा।
उस साहिब को कुछ भी नाहीं, बांह पकरि जिन भेजा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

86

साधो दुबिधा कहां से आई।
नाना भाव बिचार करतु है, कौने मतिहिं चोराई।।टेक।।
ऋग कहै निराकार निरलेपी, अगम अगोचर सांई।
आवै न जाय मरै नहिं जोवै, रूप बरन कछु नाहीं।।
जजुर कहै सरगुन परमेसुर, दस औतार धराया।
गोपिन के संग रस रचो है, सोई पुरानन गाया।।
साम कहै वह ब्रह्म अखंडित, और न दूजा कोई।
आपै अपरम अवगति कहिये, सत्त पदारथ सोई।।
अथरवन कहै परो पथ दीसै, सत्त पदारथ नाहीं।
जे जे गये बहुरि नहिं आये, मरि मरि कहां समाहीं।।
यह परमान सभन कै लीन्हा, ज्यों अंधरन को हाथी।
अछै बाप की खबर न जानी, पुत्र हुआ नहिं साथी।।
जा प्रकार अंधरे को हाथी, या बिधि बेद बखानै।
अपनी अपनी सब कोइ भाषै, का को ध्यानहिं ठानै।।
सांच अहै अंधरे को हाथी, और सांचे हैं सगरे।
हाथ की टोई साषि कहतु हैं, हैं आंखिन के अंधरे।।
सब्द अतीत सब्द सो अपना, बूझै बिरला कोई।
कहै कबीर सतुगुरु की सैना, आप मिटे तब सोई।।

87

छिमा गहो हो भाई, धरि सतगुरु चरनी ध्यान रे।।
मिथ्या कपट तजो चतुराई, तजो जाति अभिमान रे।।
दया दीनता समता धारो, हो जीवत मृतक समान रे।।
सुरत निरत मन पवन एक करि, सुनो सबद धुन तान रे।।
कहै कबीर पहुंचौ सतलोका, जहं रहै पुरुष अमान रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

88

महरम होय सो जानै साधो, ऐसा देस हमारा।। टेक।।
बेद कतेब पार नहिं पावत, कहन सुनन से न्यारा।
जाति बरन कुल किरिया नाहीं, संध्या नेम अचारा।।
बिन जल बूंद परत जहं भारी, नहिं मीठा नहिं खरा।
सुन्न महल में नौबत बाजै, किंगरी बीन सितारा।।
बिन बादर जहं बिजुरी चमकै, बिन सूरज उंजियारा।
बिना सीप जहं मोती उपजै, बिन सुर सब्द उचारा।।
जोति लजाय ब्रह्म जहं दरसैं, आगे अगम अपारा।
कहैं कबीर वहं रहनि हमारी, बुझै गुरुमुख प्यारा।।

89

मोतिया बरसै रौरे देसवां दिन राती।।टेक।।
मुरली सब्द सुन मन आनंद भयो, जोति बरै बिनु बाती।
बिना मूल के कमल प्रगट भयो, फुलवा फुलत भांति भांति।।
जैसे चकोर चंद्रमा चितवै, जैसे चातृक स्वांती।
तैसे संत सुरति के होइके, होइगे जनम संघाती।।
या जग में बहु ठग लागतु हैं, पर धन हरत न डेराती।
कहैं कबीर जतन करो साधो, सत्तगुरु की थाथी।।

90

हमरे सत्तनाम धन खेती।। टेक।।
मन कै बैल सुरत हरवाहा, जब चाहै तब जोती।।
सत्तनाम का बीज बोवाया, उपजै हीरा मोती।।
उन खेतन में नफा बहुत है, संतन लूटा सेंती।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, उलटि पलटि नर जोती।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

91

गगन मठ गैब निसान गड़े।।टेक।।
गुदा में मेख सेस सिर ऊपर, डेरा अचल खड़े।।
चंद्रहार चंदवा जहं टांगे, मुक्ता मनिक मढ़े।।
महिमा तासु देख मन थिर करि, रबि ससि जोति जड़े।।
रहत हजूर पूर पद सेवत, समरथ ज्ञान बड़े।।
संत सिपाही करैं चाकरी, जेहि दरबार अड़े।।
बिना नगाड़े नौबत बाजै, अनहद सब्द झरे।।
कहैं कबीर पियै जोई जन, माता फिरत मरे।।

92

मुनियां पिंजड़े वाली ना, तेरो सतगुरु है ब्योपारी।।टेक।।
पांच तत्त का बना पींजड़ा, ता में रहती मुनियां।
उड़ि के मुनियां डार पै बैठो, झींखन लागी सारी दुनियां।।
अलग डार पर बैठी मुनियां, पिये प्रेम रस बूटी।
क्या करिहै जमराज तिहारो, नाम कहत तन छूटी।।
मुनियां की गति मुनियां जानै, और कहै सब झूठी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, गुरु चरनन की भूखी।।

93

सब बातन में चतुर है, सुमिरन में कांचा।
सत्तनाम को छाड़ि के, माया संग राचा।।
दीनबन्धु बिसराइया, आया दे बाचा।
ज्योंहि नचाया कामिनी, त्यों त्यों ही नाचा।।
इन्द्रि बिषे के कारने, में ही नर्क की आंचा।
कहै कबीर हरि जब मिलै, हरिजन को साचा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

94

पिया ऊंची रे अटरिया, तोरी देखन चली।।टेक।।
ऊंची अटरिया जरद किनरिया, लगी नाम की डोरी।
चांद सुरज सम दियना बरतु है, ता बिच भूली डगरिया।।
पांच पचीस तीन घर बनियां, मनुवां है चौधरिया।
मुन्सी है कुतवाल ज्ञान को, चहुं दिस लागी बजरिया।।
आठ मरातिब दस दर्वाजा, नौ में लगी किवारिया।
खिरकी बैठ गोरी चितवन लागी, उपरां झांप झोपरिया।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के चरन बलिहरिया।
साध संत मिलि सौदा करि हैं, झींखै मूरख अनरिया।।

95

मेरे साहेब आये आज, खेलन फाग री।
बानी बिमल सगुन सब बोले, अति सुख मंगल राग री।।टेक।।
चाचर सरस सखा संग बोले, अनहद बानी राग री।
सब्द सुनत अनुराग होत है, क्या सोवै उठि जाग री।।
पानी चादर पवन बिछौना, बहुत करौं सनमान री।
देत असीस अमर पद याही, अबिचल जुग जुग बास री।।
चरन पखार लेहुं चरनोदक, उठि उनके पग लाग री।
पांच सखी मिलि मंगल गावें, पिव अपने संग पाग री।।
पंचामृत भाव से लेवौं, परम पुरुष भरतार री।
महा प्रसाद संत मुख पावौं, आन खुलो मेरो भाग री।।
चौरासी को बंद छुड़ावन, आये सतगुरु आप री।
पान पर्वाना देत जिवन को, वे पावैं सुख बास री।।
चोवा चंदन अगर कुमकुमा, पहुप माल गल हार री।
फगुवा मांग मुक्ति फल लेहूं, जिव आपन के काज री।।
सोरहो सिंगार बतीसो अभरन, सुरत सिंगार संवार री।
सत्त कबीर मिले सुख सागर, आवागवन निवार री।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

96

कर नैनों दीदार महल में प्यारा है॥टेक॥
काम क्रोध मद लोभ बिसारो, सील संतोष छिमा सत धारो।
मद्द मांस मिथ्या तजि डारो।
हो ज्ञान घोड़े असवार, भरम से न्यारा है॥
धोती नेती बस्ती पाओ, आसन पदम जुगत से लाओ।
कुम्भक कर रेचक करवाओ,
पहिले मूल सुधार, कारज हो सारा है॥
मूल कंवल दल चतुर बखानो, कलिंग जाप लाल रंग मानो।
देव गनेस तहं रोपा थानो, ऋद्धि सिधि चंवर ढुलारा है॥
स्वाद चक्र षटदल बिस्तारो, ब्रह्म सावित्री रूप निहारो।
उलटि नागिनी का सिर मारो, तहां सब्द ओंकार है॥
नाभी अष्ट कंवल दल साजा, सेत सिंघासन बिस्नु बिराजा।
हिरिंग जाप तासु मुख गाजा, लछमी सिव आधारा है॥
द्वादस कंवल हृदय के माहीं, जंग गौर सिव ध्यान लगाई।
सोहं सब्द तहां धुन छाई, गन करैं जै जै कारा है॥
दो दल कंवल कंठ के माहीं, तेहि मध बसे अबिद्या बाई।
हरि हर ब्रह्मा चंवर ढुराई, जहं ऋगं नाम उचारा है॥
ता पर कंज कंवल है भाई, बग भौंरा दुइ रूप लखाई।
निज मन करत तहां ठकुराई, सो नैनन पिछवारा है॥
कंवलन भेद किया निर्वारा, यह सब रचना पिंड मंझारा।
सतसंग का सतगुरु सिर धारा, वह सत नाम उचारा है॥
आंख कान मुख बन्द कराओ, अनहद सिंगा सब्द सुनाओ।
दोनों तिल इक तार मिलाओ, तब देखो गुलजारा है॥
चंद सूर एकै घर लाओ, सुषमन सेती ध्यान लगाओ।
तिरबेनी के संघ समाओ, भोर उतर चल पारा है॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घंटा संख सुनो धुन दोई, सहस कंवल दल जगमग होई।
ता मध करता निरखो सोई, बंकनाल धस पारा है।।
डाकिनी साकिनी बहु किलकारें, जम किंकर धर्म दूत हकारें।
सत्तनाम सुन भागें सारे, जब सतगुरु नाम उचारा है।।
गगन मंडल बिच उर्धमुख कुइया, गुरुमुख साधू भर भर पीया।
निगुरे प्यास मरे बिन कीया, जा के हिये अंधियारा है।।
त्रिकुटी महल में बिद्या सारा, घनहर गरजें बजे नगारा।
लाल बरन सूरज उंजियारा, चतुर कंवल मंझार सब्द ओकारा है।।
साध सोई जिन यह गढ़ लीन्हा, नौ दरवाजे परगट चीन्हा।
दसवां खोल जाय जिन दीन्हा, जहां कुलुफ रहा मारा है।।
आगे सेत सुन्न है भाई, मानसरोवर पैठि नहाई।
हंसन मिलि हंसा होइ जाई, मिलै जो अमी अहारा है।।
किंगरी सारंग बजै सितारा, अच्छर ब्रह्म सुन्न दरबारा।
द्वाद्वस भानु हंस उंजियारा, खट दल कंवल मंझार सब्द ररंकारा है।।
महा सुन्न सिंध विषमी घाटी, बिन सतगुरु पावै नहिं बाटी।
ब्याघर सिंघ सरप बहु काटी, तहं सहज अचिंत पसारा है।।
अष्ट दल कंवल पारब्रह्म भाई, दहिने द्वादस अचिंत रहाई।
बायें दस दल सहज समाई, ज्यों कंवलन निरवारा है।।
पांच ब्रह्म पांचो अंड बीनो, पांच ब्रह्म निःअच्छर चीन्हो।
चार मुकाम गुप्त तहं कीन्हो, जा मध बंदीवान पुरुष दरबारा है।।
दो पर्बत के संध निहारो, भंवर गुफा तें संत पुकारो।
हंसा करते केल अपारो, तहां गुरन दर्बारा है।।
सहस अठासी दीप रचाये, हीरे पन्ने महल जड़ाये।
मुरली बजत अखंड सदाये, तहं सोहं झनकारा है।।
सोहं हद्द तजी जब भाई, सत्त लोक की हद पुनि आई।
उठत सुगंध महा अधिकाई, जा को वार न पारा है।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षोड़स भानु हंस को रूपा, बीना सत धुन बजै अनूपा।
हंसा करत चंवर सिर भूपा, सत्त पुरुष दर्बारा है॥
कोटिन भानु उदय जो होई, एते ही पुनि चंद्र लखोई।
पुरुष रोम सम एक न होई, ऐसा पुरुष दीदारा है॥
आगे अलख लोक है भाई, अलख पुरुष की तहं ठकुराई।
अरबन सूर रोम सम नाहीं, ऐसा अलख निहारा है॥
ता पर अगम महल इक साजा, अगम पुरुष ताहि को राजा।
खरबन सूर रोम इक लाजा, ऐसा अगम अपारा है॥
ता पर अकह लोक है भाई, पुरुष अनामी तहां रहाई।
जो पहुंचा जानेगा वाही, कहन सुनन तें न्यारा है॥
काया भेद किया निर्बारा, यह सब रचना पिंड मंझारा।
माया अवगति जाल पसारा, सो कारीगर भारा है॥
आदि माया कीन्ही चतुराई, झूठो बाजी पिंड दिखाई।
अवगति रचना रची अंड माहीं, ता का प्रतिबिंब डारा है॥
सब्द बिहंगम चाल हमारी, कहैं कबीर सतगुरु दइ तारी।
खुले कपाट सब्द झनकारी, पिंड अंड के पार सो देस हमारा है॥

97

साधो हम घर कंत सुजान, खेल्यो रंग होरी।
जनम जनम की मिटी कलपना, पायो जीवन प्रान री॥टेक॥
पांच सखी मिलि मंगल गावैं, गुरमुख सब्द बिचारी री।
बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, अनहद सब्द गुंजार री॥
खेलन चली पंथ प्रीतम के, तन की तपन गई री।
पिचुकारी छूटै अति अद्भुत, रस की कींच भई री॥
साहेब मिलि आपा बिसरायो, लाग्यो खेल अपार री।
चहुं दिस पिय पिय धूम मची है, रटना लागी हमार री॥
सुख सागर असनान किया है, निर्मल भयो सरीर री।
आवागवन की मिटी कलपना, फगुवा कबीर री॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

98

कर नैनों दीदार यह पिंड से न्यारा है।
तू हिरदे सोच बिचार यह अंड मंझारा है।।टेक।।
चोरी जारी निंदा चारो, मिथ्या तज सतगुरु सिर धारो।
सतसंग कर सतनाम उचारो, तब सनमुख लही दीदारा है।।
जे जन ऐसी करी कमाई, तिनकी फैली जग रोसनाई।
अष्ट प्रमान जगह सुख पाई, तिन देखा अंड मंझारा है।।
षोडस अंड को अवगत राई, अमर कोट अकह नकल बनाई।
सुद्ध ब्रह्म पद तहं ठहराई, सों नाम अनामी धारा है।।
सतवीं सुन्न अंत के मांहीं, झिलमिलहट की नकल बनाई।
महाकाल तहं आन रहाई, सो अगम पुरुष उच्चारा है।।
छठवीं सुन्न जो अंड मंझारा, अगम महल की नकल सुधारा।
निरगुन काल तहां पग धारा, सो अलख पुरुष कहु न्यारा है।।
पंचम सुन्न जो अंड के माहीं, सत्तलोक की नकल बनाई।
माया सहित निरंजन राई, सो सत्त पुरुष दीदारा है।।
चौथी सुन्न अंड के माहीं, पद निर्बान की नकल बनाई।
अविगत कला ह्वै सतगुरु आई, सो सोहं पद सारा है।।
तीजि सुन्न की सुनो बड़ाई, एक सुन्न के दोय बनाई।
ऊपर महासुन्न अधिकाई, नीचे सुन्न पसारा है।।
सातवीं सुन्न महाकाल रहाई, तासु कला महासुन्न समाई।
पारब्रह्म कर थाप्यो ताही, सो निःअच्छर सारा है।।
छठवीं सुन्न जो निरंजन राई, तासु कला आ सुन्न समाई।
अच्छर ब्रह्म कहैं पुनि ताही, सोई सब्द ररंकारा है।।
पंचम सुन्न निरंजन राई, तासु कला दूजी सुन छाई।
पुरुष प्रकृति पदवी पाई सुद्ध सरगुन रचन पसारा है।।
पुरुष प्रकृति दूजी सुन माहीं, तासु कला पिर थम सुन आई।
जोत निरंजन नाम धराई, सरगुन स्थूल पसारा है।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रथम सुन्न जो जोत रहाई, ताकी कला अबिद्या बाई।
पुत्र न संग पुत्री उपजाई, यह सिंध बैराट पसारा है।।
सतवें अकास उतर पुनि आई, ब्रह्मा बिस्नु समाधि जगाई।
पत्रन संग पत्री परनाई, यहं श्रिंग नाम उचारा है।।
छठे अकास सिव अवगति भौंरा, जंग गौर रिधि करती चौंरा।
गिरि कैलास गन करते सोरा, तहं सोहं सिर मौरा है।।
पंचम अकास में बिस्नु बिराजे, लछमी सहित सिंघासन गाजे।
हिरिंग बैकुंठ भक्त समाजे, जिन भक्तन कारज सारा है।।
चौथे अकास ब्रह्मा बिस्तारा, सावित्री संग करत बिहारा।
ब्रह्म ऋद्धि ओंग पद सारा, यह जग सिरजनहारा है।।
तीजे अकास रहे धर्म राई, नर्क सुर्ग जिन लीन्ह बनाई।
करमन फल जीवन भुगताई, ऐसा अदल पसारा है।।
दूजे अकास में इंद्र रहाई, देव मुनी बासी तहं पाई।
रंभा करती निरत सदाई, कलिंग सब्द उच्चारा है।।
प्रथम अकास मृत्तु है लोका, मरन जनम का नित जहं धोखा।
सो हंसा पहुंचे सत लोका, जिन सतगुरु का नाम उचारा है।।
चौदह तबक किया निरवारा, अब नीचे का सुनो बिचारा।
सात तबक में छः रखवारा, भिन्न भिन्न सुनो पसारा है।।
सेस धौल बारह कहाई, मीन कच्छ और कुरम रहाई।
सो छः रहे सात के माहीं, यह पाताल पसारा है।

99

कोइ कुच्छ कहै कोई कुच्छ कहै, हम अटके हैं जहं अटके हैं।।
सुरत कमल पर अमल किया, महबूब के नाम से मटके हैं।।
संसार बिचार के छोड़ दिया, हम इसी बात पै सटके हैं।।
दास कबीर के झूलने में, सब पंडित काजी फटके हैं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

100

हंसा लोक हमारे अइहौ, तातें अमृत फल तुम पइहौ।।टेक।।
लोक हमारा अगम दूर है, पार न पावै कोई।
अति अधीन होय जो कोई, ता को देउ लखाई।।
मृत्यु लोक से हंसा आये, पुहुप दीप चलि जाई।
अंबु दीप में सुमिरन करिहौ, तब वह लोक दिखाई।।
माटी का पिंड छूटि जायेगा, औं यह सकल बिकारा।
ज्यों जल माहिं रहत है पुरइन, ऐसे हंस हमारा।।
लोक हमारे अइहो हंसा, तब सुख पइहौ भाई।
सुख सागर स्नान करोगे, अजर अमर होइ जाई।।
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, हंसन करो बधाई।
सेत सिंघासन बैठक देहौं, जुग जुग राज कराई।।

101

हमारे को खेलै ऐसो होरी, जा में आवागमन लागी डोरी।।टेक।।
स्त्रवन न सुन्यौ नैन नहिं देख्यौ, पिय पिय पिय लगी लौ री।
पथ निहारत जनम सिराना, परघट मिले न चोरी।।
जा कारन गृह तें कढ़ि निकसी, लोक लाज कुल तोरी।
चोवा चंदन और अरगजा, कपरा रंग भरो री।।
एकन हूं मृगछाला पहिरी, एकन गुदरी झोरी।
बहुत भेष धर स्वांग बनाये, लौ नहिं लागी ठगोरी।।
जगन्नाथ बद्री रामेसर, देस दिसंतर दौरी।
अठसठ तीरथ पृथी प्रदच्छिना, पुस्कर हू में लुटौ री।।
बेद पुरान भागवत गीता, चारो बरन ढंढोरी।
कहैं कबीर दया सतगुरु बिनु, भर्म मिटे नहिं भव री।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

102

तन मन धन बाजी लागी हो॥ टेक॥

चौपड़ खेलूं पीव से रे, तन मन बाजी लगाय।
हारी तो पिय की भई रे, जीती तो पिय मोर हो॥
चौसरिया के खेल में रे, जुग्ग मिलन की आस।
नर्द अकेली रह गई रे, नहिं जीवन की आस हो॥
चार बरन घर एक है रे, भांति के लोग।
मनसा बाचा कर्मना, कोई प्रीति निबाहो ओर हो॥
लख चौरासी भरमत भरमत, पौ पै अटकी आय।
जो अबके पै ना पड़ी रे, फिर चौरासी जाय हो॥
कहैं कबीर धर्मदास से रे, जीती बाजी मत हार।
अबके सुरत चढ़ाय दे रे, सोई सुहागिन नार हो॥

103

जन को दीनता जब आवै॥ टेक॥

रहै अधीन दीनता भाषै, दुरमति दूरि बहावै।
सो पद देवं दास अपने को, ब्रह्मादिक नहिं पावै॥
औरन को ऊंचो करि जानै, आपुन नीच कहावै।
तुम ते अवधू सांच कहतु हौं, सो मेरे मन भावै॥
सब घट एक ब्रह्म जो जानै, दुबिधा दूर बहावै।
सकल भर्मना त्यागि के अवधू, इक गुरु के गुन गावै॥
होई लौलीन प्रेम लौ आवै, सब अभिमान नसावै।
सत्त सब्द में रहै समाई, पढ़ि गुनि सब बिसरावै॥
गुरु की कृपा साध की संगत, जोग जुक्ति ते पावै।
कहैं कबीर सुनो हो साधो, बहुरि न भवजल आवै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

104

मन तू थकत थकत थक जाई।
बिन थाके तेरो काज न सरिहै, फिर पाछे पछिताई।।
जब लग तोकर जीव रहतु है, तब लग परदा भाई।
टूटि जाय ओट तिनुका की, रसक रहै ठहराई।।
सकल तेज तज होय नपुन्सक, यह मति सुन ले मेरी।
जीवन मिर्तक दसा बिचारै, पावै बस्तु घनेरी।।
या के परे और कछु नाहीं, यह मति सब से पूरा।
कहै कबीर मार मन चंचल, हौ रहु जैसे धूरा।।

105

प्रीति उसी से कीजिये, जो ओर निभावै।
बिना प्रीति के मानवा, कहिं ठोर न पावै।।
नाम सनेही जब मिलै, तब ही सच पावै।
अजर अमर घर ले चलै, भवजल नहिं आवै।।
ज्यों पानी दरियाव का, दूजा न कहावै।
हिलि मिलि ऐकौ ह्वै रहै, सतुगुरु समझावै।।
दास कबीर बिचारि के, कहि कहि जतलावै।
आपा मिटि साहिब मिलै, तब वह घर पावै।।

106

बलिहारी जाउं मैं सतगुरु के, मेरा दरस करत भ्रम भागा।।
धर्मराय से तिनुका तोड़ा, जम दुसमन से दूर किया।।
सबद पान परवाना दीया, काग करम तजि हंसा किया।।
गुरु की मिहर से अगम निगम लखि, बिन गुरु कोई न मुक्त भया।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवागमन से राखि लिया।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

107

भजि ले सिरजनहार, सुघर तन पाइ के।।टेक।।
काहे रहौ अचेत, कहां यह औसर पैहौ।
फिर नहिं ऐसी देह, बहुरि पाछे पछितैहो।।
लख चौरासी जोनि में, मानुस जन्म अनूप।
ताहि पाइ नर चेतत नाहीं, कहा रंक कहा भूप।।
गर्भ बास में रह्यो, कह्यो मैं भजिहौं तोहीं।
निसि दिन सुमिरौं नाम, कष्ट से काढ़ो मोहीं।।
चरनन ध्यान लगाइ के, रहौं नाम लौ लाय।
तनिक न तोहिं बिसारिहौ, यह तन रहै कि जाय।।
इतना कियौं करार, काढ़ि गुरु बाहर कीन्हा।
भूलि गयौ वह बात, भयौ माया आधीना।।
भूलीं बातैं उद्र की, आनि पड़ी सुधि एत।
बारह बरस बीत गे या बिधि, खेलत फिरत अचेत।।
बिषया बान समान, देह जोबन मद माते।
चलत निहारत छांह, तमक के बोलत बाते।।
चोवा चंदन लाइ के, पहिरे बसन रंगाय।
गलियां गलियां झांकि मारैं, मर तिरिया लख मुसकाय।।
तुरनापन गइ बीत, बुढ़ापा आन तुलाने।
कांपने लागे सीस, चलत दोउ चरन पिराने।।
नैन नासिका चूवन लागे, मुख ते आवत बास।
कफ पित कंठै घेर लियो है, छुटि गइ घर की आस।।
मातु पिता सुत नारि, कहौ का के संग जाई।
तन धन घर औ काम धाम, सब ही छुटि जाई।।
आखिर काल घसीटिहै, परिहौ जम के फन्द।
बिन सतगुरु नहि बाचि हौ, समुझि देख मतिमन्द।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुफल होत यह देह, नेह सतगुरु से कीजै।
मुक्ती मारग जानि, चरन सतगुरु चित दीजै।।
नाम गहौ निरभय रहौ, तनिक न ब्यापै पीर।
यह लीला है मुक्ति की, गावत दास कबीर।।

108

नाम लगन छूटै नहीं, सोइ साधु सयाना हो।। टेक।।
माटी कै बरतन बन्यों, पानी लै साना हो।
बिनसत बार न लागि है, राजा क्या राना हो।।
क्या सराय का बासना, सब लोग बिगाना हो।
होत भोर सब उठि चले, दूर दूर देस को जाना हो।।
आठ पहर सन्मुख लड़ै, सो बांधें बाना हो।
जीत चला भवसागर सोइ, सूरा मरदाना हो।।
सतगुरु की सेवा करै, पावै परवाना हो।
कहै कबीर धर्मदास से, तेहि काल डेराना हो।।

109

सुकिरत करि ले नाम सुमिरि ले, को जानै कल की।
जगत में खबर नहीं पल की।।
झूठ कपट करि माया जोरिन, बात करैं छल की।
पाप की पोट धरे सिर ऊपर, किस बिधि ह्वै हलकी।।
यह मन तो है हस्ती मस्ती, काया मिट्टी की।
सांस सांस में नाम सुमिरि ले, अवधि घटै तन की।।
काया अंदर हंसा बोलै, खुशियां कर दिल की।
जब यह हंसा निकरि जाहिंगे, मिट्टी जंगल की।।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, याही बात असल की।
ज्ञान बैराग दया मन राखो, कहै कबीरा दिल की।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

110

मन रे अबकी बेर सम्हारो॥टेक॥
जन्म अनेक दगा में खोयो, बिन गुरु बाजी हारो॥
बालापने ज्ञान नहिं तन में, जब जनमो तब बारो॥
तरुनाई सुख बास में खोयो, बाज्यो कूच नगारो॥
सुत दारा मतलब के साथी, तो को कहत हमारो॥
तीन लोक और भवन चतुरदस, सबहि काल को चारो॥
पूर रह्यो जगदीस गुरु तन, वा से रह्यो नियारो॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब घट देखन हारो॥

111

मन करि ले साहिब से प्रीत।
सरन आये सो सब ही उबरे, ऐसी उनकी रीत॥
सुन्दर देह देखि मत भूलो, जैसे तृन पर सीत।
कांची देह गिरै आखिर को, ज्यों बारू की भीत॥
ऐसो जन्म बहुतर नहि पैहौ, जात उमिरि सब बीत।
दास कबीर चढ़े गढ़ ऊपर, देव नगारा जीत॥

112

पढ़ो मन ओनामासीधंग॥टेक॥
ओंकार सबै कोई सिरजै, सबद सरूपी अंग।
निरंकार निर्गुन अबिनासी, कर वाही को संग॥
नाम निरंजन नैनन मद्धै, नाना रूप धरन्त।
निरंकार निर्गुन अबिनासी, निरखै एकै रंग॥
माया मोह मगन होइ नाचै, उपजै अंग तरंग।
माटी कै तन थिर न रहतु है, मोह ममता के संग॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सील संतोष हृदे बिच दाया, सबद सरूपी अंग।
साध के बचन सत्त करि मानौ, सिर्जनहारो संग।।
ध्यान धीरज ज्ञान निर्मल, नाम तत्त गहंत।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आदि संत परयंत।।

113

मन तू जाव रे महलिया, आपन बिरना जगाव।।टेक।।
भौजिया मरै जगाइ न जागै, लग न सकै कछु दाव।
कायागढ़ तेरे निसि अंधियरिया, कौन करै वा को भाव।।
अकिल की आग दया की बाती, दीपक बारि लगाव।
तत कै तेल चुवै दियना में, ज्ञान मसाल दिखाव।।
भ्रम के ताला लगा महल में, प्रेम की कुंजी लगाव।
कपट किवरिया खोल खोल के रे, यहि बिधि पिय को जगाव।।
चित्त चुनरिया भक्ति घाघरा, चोली चाव सिलाव।
प्रेम कै पवन करौ प्रीतम पर, प्रीति पिछौरी उढ़ाव।।
बार बार पैहौ नहिं नर तन, फेरि भूलि मत जाव।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि न लगै अस दाव।।

114

सतगुरु साह संत सौदागर, तहं मैं चलि के जाऊं जी।।टेक।।
मन की मुहर धरौं गुरु आगे, ज्ञान कै घोड़ा लाऊं जी।
सहज पलान चित कै चाबुक, अलख लगाम लगाऊं जी।।
बिबेक बिचार भरे तिर तरकस, सुरत कमान चढ़ाऊं जी।
धीर गंभीर खड़क लिये दल मल, माया कै कोट ढहाऊं जी।।
रिपु कै दल मैं सहजहि रौंदौं, आनंद तबल बजाऊं जी।
कहै कबीर मेरे सिर पर साहिब, ता को सीस नवाऊं जी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

115

जीवन मुक्त सोइ मुक्ता हो।
जब लग जीवन मुक्ता नाहीं, तब लग दुख सुख भुगता हो॥टेक॥
देह संग ना होवै मुक्ता, मुए मुक्ति कहै होई हो।
तीरथबासी होय न मुक्ता, मुक्ति न धरनी सोई हो॥
जीवत भर्म की फांस न काटी, मुए मुक्ति को आसा हो।
जल प्यासा जैसे नर कोई, सपने फिरै पियासा हो॥
ह्वै अतीत बधन तें छूटै, जहं इच्छा तहं जाई हो॥
बिना अतीत सदा बंधन में, कितहूं जानि न पाई हो॥
आवागवन से गये छूटि के, सुमिरि नाम अबिनासी हो।
कहै कबीर सोई जन गुरु है, काटी भ्रम की फांसी हो॥

116

साधो करता कर्म तें न्यारा।
आवै न जावै मरै नहिं जीवैं, ता को करै बिचारा॥
राम को पिता जो दसरथ कहिये, दसरथ कौन जाया।
दसरथ पिता राम को दादा, कहो कहां तें आया॥
राधा रुकमिन किसन की रानी, किसन दोऊ को मीरा।
सोलह सहस गोपी उन भोगी, वह भयो काम को कीरा॥
बासुदेव पितु मात देवकी, नन्द महर घरि आयो।
ता को करता कैसे कहिये, (जो) करमन हाथ बिकायो॥
जा के धरनि गगन है सहसै, ता को सकल पसारा।
अनहद नाद सबद धुनि जा के, सोई खसम हमारा॥
सतगुरु सबद हृदय दृढ़ राखो, करहु बिबेक बिचारा।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, है सतपुरुष अपारा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

117

का जोगी मुद्रा करै, साहिब गति न्यारी।।टेक।।
नेती धोती वह करै, बहु भांति संवारी।
बाजीगर का पेखना, सब देखनहारी।।
झाड़ी जंगल वे फिरै, अंधे बैपारी।
पूजा तर्पन जाप में, भूले ब्रह्मचारी।।
उलटा पवन चढ़ाइ के, जीवैं अधिकारी।
तन तजि के अजगर भये, गये बाजी हारी।।
सुन्न महल कहा सोइये, जहं निसि अंधियारी।
कहै कबीर वहं सोइये, रबि ससि उजियारी।।

118

गुरु से कर मेल गंवारा, का सोचत बारम्बारा।।
जब पार उतरना चाहिये, तब केवट से मिलि रहिये।।
जब उतरि जाय भवपारा, तब छूटै यह संसारा।।
जब दरसन करना चाहिये, तब दर्पन मांजत रहिये।।
जब दर्पन लागत काई, तब दर्श कहं ते पाई।।
जब गढ़ पर बजी बधाई, तब देख तमासे जाई।।
जब गढ़ बिच होत सकेला, तब हंसा चलत अकेला।।
कहै कबीर देख मन करनी, वा के अंतर बीच कतरनी।।
कतरनि कै गांठि न छूटै, तब पकरि पकरि जम लूटै।।

119

सतसंग लागि रहो रे भाई, तेरी बिगरी बात बनि जाई।।टेक।।
दौलत दुनियां माल खजाने, बधिया बैल चराई।
जबही काल कै डंडा बाजै, खोज खबरि नहिं पाई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐसी भगति करौ घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई।
सेवा बंदगी अरु अधीनता, सहज मिलै गुरु आई॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु बात बताई।
यह दुनियां दिन चार दहाड़े, रहो अलख लौ लाई॥

120

मन को न तौल्यौ तो का तौल्यौ बनियां॥ टेक॥
काहे की पूंजी काहे का सौदा, काहे की कैले दुकनियां।
काहे की डांडी काहे का पलरा, काहे की मारौ टेनियां॥
करम की पूंजी धरम का सौंदा, चित की कैले दुकनियां।
या तन कै जो डांडी पलरा, प्रेम की मारै टेनियां॥
काया नगर के हाट में रे, ऊंची कैले दुकनियां।
कैसन तोरी सोंठ औ आदी, कैसन तोरी धनियां॥
पकरि पैहैं बजार के बाहर, फेंक देहैं तोरी दुकनियां।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, छाड़ि दे तन की लदनियां॥

121

मन मैल न जाय कैसे कै धोवों॥ टेक॥
गांव गड़हिया में गादड़ पानी, धुबिया रसिया गुदरी पुरानी॥
बालू रेहिया साबुन घोट, बहै बयार कछु मिलै न ओट॥
सतगुरु घटिया सौंदन होइ, साधु संगति मिलि ले धोइ॥
कहै कबीर या गुदरी के भाग, मिलि गैल सतगुरु छुटि गैलैं दाग॥

122

संत जन करत साहिबी तन में॥ टेक॥
पांच पचीस फौज यह मन की, खैलैं भीतर तन में।
सतगुरु सबद से मुरचा काटो, बैठो जुगत के घर में॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बंकनाल का धावा करके, चढ़ि गये सूर गगन में।
अष्ट कंवल दल फूल रह्यो है, परखे तत्त नजर में।।
पच्छिम दिसि की खिड़की खोलो, मन रहै प्रेम मगन में।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, लहरि लेहु या तन में।।
संख घंट सहनाई बाजै, सोभा सिध महल में।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अजर साहिब लख घट में।।

123

वारी जाऊं मैं सतगुरु के, मेरा किया भरम सब दूर।।टेक।।
चंद चढ़ा कुल आलम देखै, मैं देखूं भ्रम दूर।।
हुआ प्रकास आस गइ दूजी, उगिया निरमल नूर।।
माया मोह तिमिर सब नासा, पाया हाल हजूर।।
बिषय बिकार लार है जेता, जारि किया सब धूर।।
पिया पियाला सुधि बुधि बिसरी, हो गया चकनाचूर।।
हुआ अमर मरै नहिं कबहुं, पाया जीवन मूर।।
बन्धन कटा छूटिया जम से, किया दरस मंजूर।।
ममता गई भई उर समता, दुख सुख डारा दूर।।
समझे बनै कहे नहिं आवै, भयो आनंद भरपूर।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बजिया निरमल तूर।।

124

जब कोइ रतन पारखी पैहौ, हीरा खोल भंजैहो।।टेक।।
तन को तुला सुरत को पलरा, मन को सेर बनैहो।
मासा पांच पचीस रती को, तोला तीन चढ़ैहौ।।
अगम अगोचर बस्तु गुरू की, लै सराफ पै जैहो।
जहं देख्यो संतन की महिमा, तहवां खोलि भजैहौ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
पांच चोर मिलि घुसे महल में, इन से बस्तु छिपैहो।
जम राजा के कठिन दूत हैं, उनसे आप बचैहौ॥
दया धरम से पार उतरिहौ, सहज परम पद पैहौ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, हीरा गांठ लगैहो॥

125

सतगुरु चीन्हो रे भाई।
सत्तनाम बिन सब नर बूड़े, नरक पड़ी चतुराई॥
बेद पुरान भागवत गीता, इनको सबै दृढ़ावै।
जा को जनम सुफल रे प्रानी, सो पूरा गुरु पावै॥
बहुत गुरु संसार कहावै, मंत्र देत हैं काना।
उपजैं बिनसैं या भौसागर, मरम न काहू जाना॥
सतगुरु एक जगत में गुरु हैं, सो भव के कडिहारा।
कहै कबीर जगत के गुरुवा, मरि मरि ले औतारा॥

126

सुन सतगुरु की बानी जी।
ताहि चीन्ह हम भये बैरागी, परिहर कुल की कानी जी॥
तब हम बहुतक दिन लौं अटके, सुन सुन बात बिरानी जी।
अब कुछ समझ परी अंतरगत, आदि कथा परमानी जी॥
मनमति गई प्रगट भइ सम गति, रमता से रुचि मानी जी।
लालच लोभ मोह ममता की, मिट गइ ऐंचा तानी जी॥
चंचल तें मन निस्चल कीन्हो, सुरत निरत ठहरानी जी।
कहै कबीर दया सतगुरु तें, लखी अटल रजधानी जी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

127

मेरे सतगुरु पकड़ी बांह, नहीं तो मैं बहि जाता।। टेक।।
करम काटि कोइला किया, ब्रह्म अगिनि परिचार।
लोभ मोह भ्रम जारिया, सतगुरु बड़े दयाल।।
कागा से हंसा किया, जाति बरन कुल खोय।
दया दृष्टि से सहज सब, पातक डारे धोय।।
अज्ञानी भटकत फिरै, जाति बरन अभिमान।
सतगुरु सबद सुनाइया, भनक पड़ी मेरे कान।।
माया ममता तजि दई, बिषया नाहिं समाय।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, हद तजि बेहद जाय।।

128

गुरु रंग लागा संत रंग लागा, मेरे मन का संसय भागा।। टेक।।
जब हम रहली हठिल दिवानी, तब पिय मुखहु न बोले।
जब दासी भइ खाक बराबर, साहिब अंतर खोले।।
साचे मन ते साहिब नेरे, झूठे मन ते भागा।
भक्त जनम अस साहिब मिलनो, (जस) कंचन संग सुहागा।।
लोक लाज कुल की मर्यादा, तोरि दिया जस धागा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भाग हमारा जागा।।

129

जाके रहिनि अपार जगत में, सो गुरु नाम पियारा हो।। टेक।।
जैसे पुरइनि रहि जल भीतर, जलहि में करत पसारा हो।
वा के पानी पत्र न लागै, ढरकि चलै जग पारा हो।।
जैसे सती चढ़ै सत ऊपर, स्वामी बचन न टारा हो।
आप तरै औरन को तारै, तारै कुल परिवारा हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे सूर रन ऊपर, पाछे पग नहिं डारा हो।
वा की सुरत रहै लड़ने में, प्रेम मगन ललकारा हो।।
भवसागर इक नदी अगम है, लख चौधरी धारा हो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, बिरले उतरे पारा हो।।

130

धन सतगुरु जिन दिया उपदेस, भव बूड़त गहि राखे केस।।
साकित से गुरु अपना किया, सत्तनाम सुमिरन को दिया।।
जाति बरन कुल करम न साया, साध मिले जब साध कहाया।।
पारस परसे कंचन होई, लोहा वाहि कहै नहीं कोई।।
पारस कौ गुन देखौ आय, लोहा महंगे मोल बिकाय।।
स्वांति बूंद कदली में परै, रूप बरन कुछु औरहि धरै।।
नाम कपूर बासना होई, कदली वा को कहै न कोई।।
निसि दिन सुमिरौ एकै नाम, जा सुमिरे तेरो झट ह्वै काम।।
कहै कबीर यह साचो खेल, फूल तेल मिलि भयो फुलेल।।

131

सोइहै कस नाम बिना निस्तारा।। टेक।।
देवी देवा भूतल पूजा, आतम नाम बिसारा।
बेस्या के पुत्र पितु कौन से कहिहै, ऐसो ही संसारा।।
कंचन मेरु सुमेरु लौं द्रब्य, दीजै दान अपारा।
जो जस देइ सो तैसे पावै, मुक्ति भेद है न्यारा।।
नामहि नोका या जग माही, जा चढ़ि उतरौ पारा।
ज्ञान की कड़िया सतगुरु करिले, खेइ लगा दें पारा।।
सतगुरु चीन्हि चरन चित लावो, उतरौ भौजल पारा।
नाम बराबर और न दूजा, कहै कबीर पुकारा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

132

अंखियां लागि रहन दो साधो, हिरदे नाम सम्हारा।
रीझै बूझै साहिब तेरा, कौन पड़ा है द्वारा।।
जम जालिम के सब डर मिटिगे, जा दिन दृष्टि निहारा।
जब सतगुरु ने किरपा कीन्ही, लीन्ह्यो आप उबारा।।
लख चौरासी बन्धन छूटे, सदा रहै गुरु संगी।
प्रेम पियाला हर दम पीवै, सदा मस्त बौरंगी।।
जब लग बस्तु पिछाने नाहीं, तब लग झूठी आसा।
झिलिमिलि जोति लखे कोइ गुरुमुख, उनमुनि घर के बासा।।
सब को दृष्टि पड़ै अबिनासी, बिरला संत पिछानै।
कहै कबीर यह भर्म किवाड़ी, जो खोलै सो जानै।।

चितावनी

133

परमातम गुरु निकट बिराजै, जागु जागु मन मेरे।।टेक।।
धाइ के सतगुरु चरनन लागौ, काल खड़ा सिर तेरे।
छिन छिन पल पल सबहि संघारै, बहु बिधि देत न देरे।।
जुगन जुगन तोहि सोवत बीता, अजहुं न जागु सबेरे।
काम क्रोध मद लोभ फंद तजि, छिमा दया दिल हेरे।।
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, सब स्वारथ के चेरे।
जब जम जाल में आनि पकरि है, कोइ न संग चले रे।।
भौसागर बांकी है धारा, लख चौरासी फेरे।
कहै कबीर सुनो हो साधो, जग से किये निबेरे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

134

जाग पियारी अबका सोवै, रैन गई दिन काहे को खोवै॥
जिन जागा तिन मानिक पाया, तैं बौरी सब सोइ गंवाया॥
पिय तेरे चतुर तु मूरख नारी, कबहुं न पिया की सेज संवारी॥
तैं बौरापन कीन्ह्यौ, भर जोबन पिय अपन न चीन्ह्यो॥
जागु देख पिय सेज न तेरे, तोहि छाड़ि उठि गये सबेरे॥
कहै कबीर सोई धन जागै, सबद बान उर अंतर लागे॥

135

सृष्टि गई जहंड़ाय, दृष्टि करि देखि ले॥टेक॥
चीन्हो करो बिचार, दयानिधि कहां बिराजैं॥
कहां पुरुष कै देस, कहां बैठे बिलगाजैं॥
जब लगि नैन न देखिये, तब लगि हिय न जुड़ाय।
जल बिन मीन कंत बिन बिरहिन, तलफि तलफि जिय जाय॥
बाढ़े बिरह बिरोग, रोग काहू ना चीन्हा।
घर घर बाढ़े बैद, रोग अधिका रचि दीन्हा॥
बिरह बियोग कैसे मिटै, कैसे तपन बुझाय।
बैद मिलै जब औषदी, जिय के भरम नसाय॥
औरो कहूं बताय सुनो, परपंच कै फन्दा।
पूजैं भूत पिसाच, काल घर करैं अनंदा॥
एकादसी निर्जन रहैं, भगता सुनैं पुरान।
बकरा मारि मांस कै भोजन, ऐसे चतुर सुजान॥
अरे निपट चंडाल, महा पापी अपराधी।
बिना दया अज्ञान, काया काहे नहि साधी॥
तेहिं अस निगुरा बहुत फिरत हैं, मन में करैं गुमान।
कहै कबीर जो सबद से बिछुड़े, ता को नरक निदान॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

136

रतन जतन करि प्रेम कै तत धरि,
सतगुरु इमरित नाम, जुगत कै राखब रे।।
बाबा घर रहलों बबुई कहैलौं,
सैयां घर चतुर सयान, चेतब घरवा आपन रे।।
खेलत रहलौ में सुपली मौनिया,
औचक आये लेनिहार, चलब केसिया झारि रे।।
एक तो अंधेरी राती, चोरबा मुसल थाती,
सैयां के बान कुबान, सतुल गोड़वा तानि रे।।
चुनि चुनि कलियां मैं सेजिया बिछौलौं,
बिना रे पुरुषवा कै नारि, झंखैले दिनवा राति रे।।
ताल झुराइ गैले फूल कुम्हिलाय गैले,
ऊड़त हंसा अकेल, कोई नहिं देखल रे।।
अब का झंखैल नारि, बैठलु मन मारि,
यहि बाटे मोतिया हेराल रे।।
दास कबीर इहै गावै निरगुनवां,
अब की उहवां जाब, तो फिरि नहीं आउब रे।।

137

चली है कुल-बोरनी गंगा नहाय।।टेक।।
सतुवा कराइन बहुरी भुंजाइन, घूंघट ओटें भसकत जाय।
गठरी बांधिन मोटरी बांधिन, खसम के मूड़े दिहिन धराय।।
बिछुवा पहिरिन औंठा पहिरिन, लात खसम के मारिन धाय।
गंगा न्हाइन जमुना न्हाइन, नौ मन मैलहि लिहिन चढ़ाय।।
पांच पचीस कै धक्का खाइन, घरहु की पूंजी आई गंवाय।
कहै कबीर हेत करु गुरु से, नहि तोर मुक्ती जाइ नसाय।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

138

खलक सब रैन का सपना। समझ मन कोइ नहीं अपना॥
कठिन है मोह की धारा। बहा सब जात संसारा॥
घड़ा ज्यों नीर का फूटा। पत्र ज्यों डार से टूटा॥
ऐसे नर जात जिंदगानी। अजहुं तौ चेत अभिमानी॥
निरखि मत भूल तन गोरा। जगत में जीवना थोरा॥
तजो मद लोभ चतुराई। रहो निःसंक जग माहीं॥
सजन परिवार सुत दारा। सभी इक रोज है न्यारा॥
निकसि जब प्रान जावैंगे। कोई नहिं काम आवैंगे॥
सदा जिनि जान यह देही। लगा ले नाम से नेही॥
कहत कबीर अबिनासी। लिये जम काल को फांसी॥

139

ऐसी नगरिया में केहि बिधि रहना, नित उठि कलंक लगावै सहना।
एकै कुवा पांच पनिहारी, एकै लेजुर भरैं नौ नारी।
फटि गया कुवा बिनसि गइ बारी, बिलग भईं पांचो पनिहारी।
कहै कबीर नाम बिन बेड़ा, उठि गया हाकिम लुटि गया डेरा॥

140

कलजुग में प्यारी मेहरिया॥टेक॥
बात कहत मुंह फारि खातु है, मिलि धमधुसरि धंगरिया॥
भीतर रहत तो घूंघट काढ़त, बाहर मारत नजरिया॥
सास ससुर को लातन मारत, खसम को मारत लतरिया॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जमपुर जावै मेहरिया॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

141

हिरवा भुलाय ससुरे जालू बारी धनियां।।टेक।।
कौने तन तोरा कौने मन है, कौने बेद तुम जनियां।
कौन पुरुष के ध्यान धरतु हौ, कौने नाम निसनियां।।
काया तन ओंकार मन है, सूच्छम बेद हम जानियां।
सत्तपुरुष कै ध्यान धरतु हैं, और सतनाम निसनियां।।
ई मत जानो हिरवा जिरवा, बनिया हाट बिकनियां।
ई हिरवा अनमोल रतन है, अनहुन देस तें अनियां।।
आयौ चोर सबन के मुसलस, राजा रैयत रनियां।
लाखन में कोई बिरले बचिगे, जिनके अलख लखनियां।।
काया नगर इक अजब बृच्छ है, साखा पत्र तेहिं झरियां।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, पावै बिरले टिकनियां।।

142

जनम तेरो धोखे में बीता जाय।।टेक।।
माटी कै गोंद हंस बदिजारा, उड़ि गे पंछी बोलनहारा।।
चार पहर धंधा में बीता, रैन गंवाय सुख सोवत खाट।।
जस अंजुल जल छीजत देखा, तैसे झरिगे तरवर प़ात।।
भौसागर में केहि गुहरैबौ, ऐंठी जीभ जम मारै लात।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि पछितैहौ मल मल हाथ।।

143

गाफिल मन काहे बिसारत धनी।।टेक।।
पानी के बुन्द से काया प्रगट कियो, काया सुघर बनी।
यह काया तोरे संग न जैहै, कीरति रहै बनी।।
रामनगर में बाजन बाजत, चादर लाल तनी।
मारि मारि मुगदर प्रान निकासत, माथ में भाल हनी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धीरे धीरे पग धरो मुसाफिर, सीढ़ी है अधबनी।
मन में चिंता क्या करै बौरे, ना साहिब से बनी॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अब जो समुझ बड़ी।
या घर से जब वा घर जैहौ, लिखनी सूझि पड़ी॥

144

चेत सबेरे चलना बाट॥टेक॥
मन माली तन बाग लगाया, चलत मुसाफिर को बिलमाया।
बिष के लेडुवा देत खिलाई, लूट लीन्ह मारग पर हाट॥
तन सराय में मन अरुझाना, भठियारिन के रूप लुभाना।
निसिदिन बासे बचि के रहना, सौदा करु सतगुरु की हाट॥
मन कै घोड़ा लियो बनाई, सुरत लगाम ताहि पहिराई।
जुगति कै एड़ा दियौ लगाई, भौसागर कै चौड़ा पाट॥
जल्दी चेतौ साहिब सुमिरौ, दसौ द्वार जम घेरि लियौ है।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अब का सोवै बिछाये खाट॥

145

मेरा दिल सतगुरु से राजी॥टेक॥
नंगे हि आवन नंगे हि जावन, झूठी रचिया बाजी।
या दुनिया में जीवन थोरा, गरब करें सो पाजी॥
स्याही गई सफेदी आई, हो गया राज बिराजी।
वेद पढ़न्ते पंडित भूले, कितेब पढ़न्ते काजी॥
सार सबद से सुरत लगाई, मारा रावन पाजी।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सतपुर नौबत बाजी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

146

हमैं रें कोइ कातन देइ सिखाइ।।टेक।।
कात ननदिया कात जिठनिया, कात परोसिन आइ।
पिउनी पांच पचीस रंग की, हम से कात न जाइ।।
ब्रह्मा काता बिसनू काता, नारद काता आइ।
बिस्वामित्र बसिष्टि दोउ काता, तबहूं न कात सिराइ।।
तन के काते का भया, जो मन ही कात न जाइ।
टेकुवा साधन जो बनि आवै, महंगें मोल बिकाइ।।
बाला काता तरुना काता, बृद्धै कात न जाइ।
कहै कबीर तीनों पन काता, चरखा धरा उठाइ।।

147

मेरी नजर में मोती आया है।।टेक।।
कोइ कहे हलका कोइ कहे भारी, दूनों भूल भुलाया है।।
ब्रह्म बिस्नु महेसुर थाके, तिनहूं खोज न पाया है।।
संकर सेस औ सारद हारे, पढ़ि रटि गुन बहु गाया है।।
है तिल के तिल के तिल भीतर, बिरले साधू पाया है।।
चहुं दल कंवल तिर्कुटी साजे, ओंकार दरसाया है।।
ररंकार पद सेत सुन्न मध, षटदल कंवल बताया है।।
पारब्रह्म महासुन्न मंझारा, सोइ निःअच्छर रहाया है।।
भंवर गुफा में सोहं राजै, मुरली अधिक बजाया है।।
सत्तलोक सत पुरुष बिराजै, अलख अगम दोउ भाया है।।
पुरुष अनामी सब पर स्वामी, ब्रह्मंड पार जो गाया है।।
यह सब बातैं देही माहीं, प्रतिबिंब अंड जो पाया है।।
प्रतिबिंब पिंड ब्रह्मंड है नकली, असली पार बताया है।।
कहै कबीर सतलोक सार है, यहं पुरुष नियारा पाया है।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

148

चलना है दूर मुसाफिर काहे सोवै रे।।टेक।।
चेत अचेत नर सोच बावरे, बहुत नींद मत सोवै रे।
काम क्रोध मद लोभ में फंसिगे, हो हुसियार उमिरि काहे खोवै रे।।
सिर पर माया मोह की गठरी, संग दूत तेरे होवै रे।
सो गठरी तोरी बीच में छिनि गइ, मूंड़ पकरि कहा रोवै रे।।
रस्ता तो वह दूर बिकट है, तजि चलब अकेला होवै रे।
संग साथ तेरे कोइ न चलैगा, डगरिया काकै जोवै रे।।
नदिया गहिरी नाव पुरानी, केहि बिधि पार तू होवै रे।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, ब्याज के धोखे मूल मत खोवै रे।।

149

या जग अंधा मैं केहि समुझावो।।टेक।।
इक दुइ होयं उन्हैं समझावों।
सबही भुलाना पेट के धन्धा (मैं केहि.)।।
पानी कै घोड़ा पवन असवरवा।
ढरकि परै जस ओज कै बुन्दा (मैं केहि.)।।
गहिरी नदिया अगम बहै धरवा।
खेवनहारा पड़िगा फन्दा (मैं केहि.)।।
घर की बस्तु निकट नहिं आवत।
दियना बारि के ढूंढ़त अंधा (मैं केहि.)।।
लागी आग सकल बन जरिगा।
बिन गुरुज्ञान भटकिगा बन्दा (मैं केहि.)।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो।
इक दिन जाइ लंगोटी झार बन्दा (मैं केहि.)।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

150

ससुरे का व्यौहार, अनोखी बहु सीखि ले रें।टेक।।
पिया तुम्हारें रंग बिरंगे, तुम हो नार कुचाल।
संग तुम्हारो कैसे निबहै, मूरख मूढ़ गंवार।।
इत उत तकना छोड़ि दे बहुवा, अपने महल चढ़ आव।
अंतर झाड़ू देके सजनी, कूड़ा दूर बहाव।।
ज्ञान ध्यान का गहना पहिरौ, सुखमन सेज बिछाव।
हंसि के प्रीतम आन मिलैंगे, दुबिधा दूरि बहाव।।
कहै कबीर सुनो हो बहुवा, सतसंगत को धाव।
सार सबद निरवार के रे, अमर लोक चलि आव।।

151

हौ तुम हंसा सत्त लोक के, पड़े काल बस आई हो।
मनै सरूपी देव निरंजन, तुम्हैं राशि भरमाई हो।।
पांच पचीस तीन कै पिंजरा, तेहि मां राशि छिपाई हो।
तुमको बिसरि गई सुधि घर की, महिमा अपन जनाई हो।।
निरंकार निरगुन है माया, तुम को नाच नचाई हो।
चर्म दृष्टि का कुलफा दैके, चौरासी भरमाई हो।।
चार वेद है जा की स्वासा, ब्रह्मा अस्तुति गाई हो।
सो कित ब्रह्मा जक्त भुलाये, तेहि मारग सब जाई हो।।
सतगुरु बहुरि जीव के रक्षक, तिन से कर सुमताई हो।
तिन के मिले परम सुख उपजै, पद निर्बाना पाई हो।।
चारों जुग हम आन पुकारा, कोइ कोइ हंस चिताई हो।
कहै कबीर ताहि पहुंचाऊं, सत्तपुरुष घर जाई हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

152

लोगवै बड़ मतलब के यार, अब मोहिं जान पड़ी।। टेक।।
जब लगि बैल रहे बनिया घर, तब लग चाह बड़ी।
पौरुष थके कोइ बात न पूछे, घूमत गली गली।।
बांधे सत्त सती इक निकसी, पिया के फंद परी।
सांचा साहिब ना पहिचाना, मुरदे संग जरी।।
हरा बृच्छ पंछी आ बैठा, रीति मनोरथ की।
जला बृच्छ पंछी उड़ि चाला, यह रीति जग की।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, मनसा बिषय भरी।
मनुवां तो कहिं औरहि डोलै, जपता हरी हरी।।

153

किसी दा भइया क्या ले जाना,
ओहि गया ओहि गया भंवर निमाना।।
उड़ि गया तोता रहि गया पिजरा, दसके जी जाना ठिकाना।।
ना कोइ भाई ना कोइ बन्धू, जो लिखिया सो खाना।।
काहू को नवा काहू को पुराना, काहू को अधुराना।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जंगल जाइ समाना।।

154

संग लागी मेरे ठगनी जानि पड़ी।।टेक।।
हमरें बलम कै प्रेम पटूका, चूनर लेत सुहाग भरी।।
रंग महल बिच नींद परी है, पांचों चोर मसान मरी।।
साखी सबद नवो दरवाजे, मूंदि खोलि ले दस झंझरी।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह दुनिया जंजाल भरी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

155

भाई तैंने बड़ा ही जुलम गुजारा, जो सतगुरु नाम बिसारा।।टेक।।
रखा ढका तोहि पूछन लागे, कुटुम्ब पूत परिवारा।।
दर्द मर्द की कोई न जाने, झूठा जगत पसारा।।
महल मड़ैया छिन में त्यागी, बांधि काठ पर डारा।।
साहू थे सो हुए बदाऊ, लुटन लगे घर बारा।।
घर की तिरिया चरचन लागी, क्यों नहिं नाम सम्हारा।।
काम क्रोध लोभ नहिं त्यागै, अब क्या करत बिचारा।।
सदा रंग महबूब गुमानी, यही सरूप तुम्हारा।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अब क्यों रोवै गंवारा।।

156

हंसा सुधि कर अपनो देस।।टेक।।
इहां आइ तोरी सुधि बुधि बिसरी, आनि फंसे परदेसा।
अबहूं चेतु हेतु करु पिंड से, सतगुरु के उपदेसा।।
जौन देस से आये हंसा, कबहुं न कीन्ह अंदेसा।
आइ पर्‌यो तुम मोह फंद में, काल गह्यो तेरो केसा।।
लाओ सुरत अस्थान अलख पर, जा को रटत महेसा।
जुगन जुगन की संसय छूटै, छूटै काल कलेसा।।
का कहि आयौ काह करतु हौ, कहं भूले परदेसा।
कहै कबीर वहां चल हंसा, जनम न होय हमेसा।।

157

का नर सोवत मोह निसा में, जागत नाहिं कूच नियराना।।टेक।।
पहिले नगारा सेत केस भे, दूजे बैन सुनत नहिं काना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीजे नैन दृष्टि नहिं सूझै, चौथे आइ गिरा परवाना।।
मातु पिता कहना नहि माने, बिप्रन से कीन्हा अभिमाना।।
धरम की नाव चढ़न नहिं जानै, अब जमराज ने भेद बखाना।।
होत पुकार नगर कसबे में, रैयत लोग सभै अकुलाना।।
पूरन ब्रह्म की होत तैयारी, अंत भवन बिच प्रान लुकाना।।
प्रेम नगरिया में हाट लगतु है, जहं रंगरेजवा है सतवाना।।
कहै कबीर कोइ काम न ऐहै, माटी के देहिया माटी मिलि जाना।।

158

जागत जोगेसर पाया मेरे रब जू, जागत जोगेसर पाया।।टेक।।
हंसा एक गगन बिच बैठा, जिसके पंख न काया।
बिना चोंच का चून चुगत है, दसवें द्वार बसाया।।
मूसा जाय बिल्ली संग अरुझा, स्यारन सिंह डराया।
जल की मछरी उदयचल ब्याई, ऊनज रुंड जमाया।।
अलख पुरुष की अचला बस्ती, जा की सीतल छाया।
कहत कबीर सुन गोरख जोगी, जिन ढूंढ़ा तिन पाया।।

159

एक नगरिया तनिक सी में, पांच पांच बसैं किसान।
एक बसै धरती के ऊपर, एक अगिन में जान।।
दोय बसैं पवना पानी में, एक बसै असमान।
पांच पांच उनकी घरवाली, नित उठि मांगे खान।।
इन्हीं से सब डुबकत डोलैं, मुकद्दम और दिवान।
खान पान सब न्यारा राखैं, मन में उन के मान।।
जगत की आसा तजि दे हंसा, धरि ले पिय को ध्यान।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बैठो जाई बिवान।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

160

सब का साखी मेरा साईं।
ब्रह्म बिस्नु रुद्र ईश्वर लौं, औ अब्याकृत नाहीं।।
पांच पचीस से सुमती करि ले, ये सब जग भरमाया।
अकार ओंकार मकार मात्रा, इनके परे बताया।।
जागृत सुपन सुषोपति तुरिया, इनतें न्यारा होई।
राजस तामस सातिक निर्गुन, इन तें आगे सोई।।
स्थूल सूच्छम कारन महाकारन, इन मिलि भोग बखाना।।
बिस्व तेजस पराग आतमा, इन में सार न जाना।।
परा पसंती मधमा बैखरि, चौबानी नहिं मानी।
पांच कोष नीचे करि देखो, इन में सार न जानी।।
पांच ज्ञान औ पांच कर्म हैं, ये दस इन्द्री जानो।
चित सोइ अंतःकरन बखानी, इन में सार न मानो।।
कुरम सेस किरकिला धनंजय, देवदत्त कहं देखो।
चौदह इन्द्री चौदह इन्द्रा, इन में अलख न पेखो।।
तत पद त्वं पद और असी पद, बाच लच्छ पहिचाने।
जहद लच्छना अजहद कहते, अजहद जहद बखाने।।
सतगुरु मिलै सत सबद लखावै, सार सबद बिलगावै।
कहै कबीर सोइ जन पूरा, जो न्यारा करि गावै।।

161

ऐसा रंग कहां है भाई।। टेक।।
सात दीप नौ खंड के बाहर, जहवां खोज लगाई।
वा देसवा कै मरम न जानै, जहं से चूनरि आई।।
या चूनर में दाग बहुत है, संत कहैं गुहराई।
जो यह चूनर जुगति से ओढ़ै, काल निकट नहिं आई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रेम नगर की गैल कठिन है, वह कोई जान न पाई।
चांद सुरज जहां पौन न पानी, पतिया को लै जाई।।
सोहंकार से काया सिरजी, ता में रंग समाई।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिरले यह घर पाई।।

162

चलो जहं बसत पुरुष निर्बाना।। टेक।।
अवगति गति जहं गति गम नाहीं, दुइ अंगुल परिमाना।
रबि ससि दूनों पौन चलतु हैं, तेहि बिच धरु मन ध्याना।।
तीन सुन्न के पार बसतु है, चौथा तहं अस्थाना।
उपजा ज्ञान ध्यान दृढ़ जागा, मगन भया मस्ताना।।
पोहि के डोरी चढ़ौ गगन पर, सुरत धरो सत नामा।
द्वादस चलै दसो पर ठहरै, ऐसा निरगुन नामा।।
अजर अमर जह जरा मरन नहिं, पहुंचै संत सुजाना।
बहुतक चढ़ि चढ़ि के फिरि आये, बिरला जन ठहराना।।
सबदै निरखि परखि छबि झलकै, सुमिरन मूल ठिकाना।
उलटि पवन षट चक्कर बेधै, नैनन पियत अघाना।।
सबदै सबद प्रगट भये बाहर, कहि गये बेद पुराना।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद में सुरत समाना।।

163

तू सूरत नैन निहार, यह अंड के पारा है।
तू हिरदे सोच बिचार, यह देस हमारा है।।
पहिले ध्यान गुरन का धारो, सुरत निरत मन पवन चितारो।
सुहेलना धुन में नाम उचारो, तब सतगुरु लहो दीदारा है।।
सतगुरु दरस होइ जब भाई, वे दें तुम को नाम चिताई।
सुरत सबद दोउ भेद बताई, तब देखे अंड के पारा है।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सतगुरु कृपा दृष्टि पहिचाना, अंड सिखर बेहद मैदाना।
सहज दास तहं रोपा थाना, जो अग्रदीप सरदारा है।।
सात सुन्न बेहद के माहीं, सात संख तिन की ऊंचाई।
तीनि सुन्न लौं काल कहाई, आगे सत्त पसारा है।।
प्रथम अभय सुन्न है भाई, कन्या निकल यहं बाहर आई।
जोग संतायन पूछोवाही, (कहा) ममदारा वह भरतारा है।।
दूजे सकल सुन्न करि गाई, माया सहित निरंजन राई।
अमर कोट के नकल बनाई, जिन अंड मधिरच्यो पसारा है।।
तीजे है महसुन्न सुखाली, महाकाल यहं कन्या ग्रासी।
जोग संतायन आये अबिनासी, जिन गल नख छेद निकारा है।।
चौथे सुन्न अजोख कहाई, सुद्ध ब्रह्म पुर्ष ध्यान समाई।
आद्या यहं बीजा ले आई, देखो दृष्टि पसारा है।।
पंचम सुन्न अलेल कहाई, तहं अदली बदीवान रहाई।
जिनका सतगुरु न्याव चुकाई, जहंगादी अदली सारा है।।
षष्ठे सार सुन्न कहलाई, सार भंडार याही के माहीं।
नीचे रचना जाहि रचाई, जा का सकल पसारा है।।
सतवें सत्त सुन्न कहलाई, सत भंडार याहीं के माहीं।
निःतत रचना ताहिं रचाई, जो सबहिन तें न्यारा है।।
सत सुनै ऊपर सत की नगरी, बाट बिहंगम बांकी डगरी।
सो पहुंचे चाले बिन पग री, ऐसा खेल अपारा है।।
पहिली चकरी समाध कहाई, जिन हंसन सतगुरु मति पाई।
बेद भर्म सब दियो उड़ाई, तिनगुन तजि भये न्यारा है।।
दूजी चकरी अगाध कहाई, जिन सतगुरु संग द्रोह कराई।
पीछे आनि गहे सरनाई, जो यहं आन पधारा है।।
तीजी चकरी मुनिकर नामा, जिन मुनियन सतगुरु मतिजाना।
सो मुनियन यहं आइ रहाना, करम भरम तजि डारा है।।
चौथी चकरी धुनि है भाई, जिन हंसन धुनि ध्यान लगाई।
धुनि संग पहुंचे हमरे पाहीं, यह धुनि सबद मंझारा है।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंचम चकरी रास जो भाखी, अलमीन है तहं मधि झांकी।
लीला कोट अनंत वहां की जहं रास बिलास अपारा है॥
षष्ठम चकरी बिलास कहाई, जिन सतगुरु संग प्रीति निबाही।
छुटते देह जगत यहं पाई, फिर नहि भव अवतारा है॥
सतवीं चकरी बिनोद कहानो, कोटिन बंस गुरन तहं जानो।
कलि में बोध किया ज्यों मानो, अंधकार खोया उजियारा है॥
अठवीं चकरी अनुरोध बखाना, तहां जुलहदी ताना ताना।
जा का नाम कबीर बखाना, सो सब संतन सिर धारा है॥
ऐसी ऐसी सहस करोड़ी, ऊपर तले रची ज्यों पौड़ी।
गादी अदली रही सिर मौरी, जहं सतगुरु बन्दी छोरा है॥
अनुरोधी के ऊपर भाई, पद निर्बान के नीचे ताही।
पांच संख याहि उंचाई, जहं अद्भुत ठाठ पसारा है॥
सोलह सुत हित दीप रचाई, सब सुत रहैं तासु के माहीं।
गादी अदल कबीर यहां ही, जो सबहिन में सरदारा है॥
पद निरबान है अनंत अपारा, नूतन सूरत लोक सुधारा।
सत्त पुरुष नूतन तन धारा, जो सतगुरु संतन सारा है॥
आगे सत्तलोक है भाई, संखन कोस तासु ऊंचाई।
हीरा पन्ना लाल जड़ाई, जहं अद्भुत खेल अपारा है॥
बाग बगीचे खिली फुलवारी, अमृत नहरें हो रहिं जारी।
हंसा केल करत तहं भारी, जहं अनहद घुरै अपारा है॥
ता मधि अधर सिंघासन गाजै, पुरुष सबद तहं अधिक बिराजै।
कोटिन सूर रोम इक लाजै, ऐसा पुरुष दीदारा है॥
हंस हंसनी आरति उतारैं, खोड़स भानू सुर पुनि चारैं।
पद बीना सत सबद उचारैं, जो बेधत हिये मंझारा है॥
तापर अगम महल इक न्यारा, संखन कोटि तासु बिस्तारा।
बाग बावड़ी अमृत धारा, तहं अधरी चलैं फुहारा है॥
मोती महल औ हीरन चौंरा, सेत बरन तहं हंस चकोरा।
सहस सूर छबि हसन जोरा, ऐसा रूप निहारा है॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधर सिंघासन जिंदा साईं, अर्बन सूर रोम सम नाहीं।
हंस हिरंबर चंवर ढुलाईं, ऐसा अगम अपारा है।।
तहं अधरी ऊपर अधर धराई, संखन संख तासु ऊंचाई।
झिलमिल हटसो लोक कहाई, जहं झिलमिल झिलमिल सारा है।।
बाग बगीचे झिलमिलकारी, रतनन जड़े पात औ डारी।
मोती महल औ रतन अटारी, तहं पुरुष बिदेह पधारा है।।
कोटिन भानु हंस को रूपा, धुन है वहं अजब अनूपा।
हंसा करत चंवर सिर भूपा, बिन कर चंवर ढुलारा है।।
हंसा केल सुनो मन लाई, एक हंस के जो चित आई।
दूजा हंस समझि पुनि जाई, बिन मुख बैन उचारा है।।
ता आगे निःलोक है भाई, पुरुष अनामी अकह कहाई।
जो पहुंचे जानेंगे वाही, कहन सुनन तें न्यारा है।।
रूप सरूप वहां कछु नाहीं, ठौर ठांव कछु दीसै नाहीं।
अरज तूल कछु दृष्टि न आई, कैसे कहूं सुमारा है।।
जा पर किरपा करिहैं साईं, गगनी मारग पावै ताही।
सत्तर परलय मारग माहीं, जब पावै दीदारा है।।
कहै कबीर मुख कहा न जाई, नाकागद पर अंक चढ़ाई।
मानो गूंगे सम गुड़ खाई, सैनन बैन उचारा है।।

164

सुरसरि बुकबा बटावै तो पिया के लगावैं हो।।टेक।।
सत्त सोहंगम नारि तो कुमति छुड़ावैं हो।।
घटहि में मानसरोवर घाट बंधावैं हो।
घटहि में पांचौ कहार ढुलहै नहवावैं हो।।
घटहि में दाया के दरजी तो दरज मिटावैं हो।
घटहि में मन कर माली तो मौर ले आवैं हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घटहि में जुक्ति के जेवर जिवै पहिरावैं हो।
घटहि में सोरहो सिंगार सु ढुलहै करावैं हो॥
घटहि में लोह लोहार कंगन लै आवैं हो।
तीनि गुनन के कंगन ढुलहै पहिरावैं हो॥
घटहि में नेह के नाउन चरन पखारैं हो।
घटहि में पांचौ सोहागिन मंगल गावैं हो॥
घटहि में चित कै चौका तो चौका पुरावैं हो।
सत सुकरित कै कलस तहां धरवावैं हो॥
घटहि में अनहद बाजन बजवावैं हो।
घटहि में सूरत नार तो दुलहै रिझावै हो॥
बार बार गुन गाऊं तो बरनि सुनाऊं हो।
ढुलहा कै न्योछावर परम पद पाऊं हो॥
तीन लोक ओहि पार हंसा उहां जाउब हो।
कहै कबीर धरमदास बहुरि नहिं आउब हो॥

165

काया गढ़ जीतो रे भाई॥ टेक॥
ब्रह्म कोट चहुं ओर मंडी है, माया ख्याल बनाई।
कनक कामिनी फंदा रोपे, जग राखे बिलमाई॥
पांचौ मुरचा गढ़ के भीतर, तहां लांघि के जाई।
आसा तृस्ना मनसा कहिये, तृगुन बनी जो खाई॥
पचिस सुभाव जहं निसि दिन व्यापै, काम क्रोध दोउ भाई।
लालच लोभ खड़े दरवाजे, मोह करै ठकुराई॥
मूल कंवल पर आसन कीन्हो, गुरु को सीस नवाई।
छवो कंवल इक सुर में बेधे, चढ़ी गगन गढ़ जाई॥
ज्ञान कै घोड़ा ध्यान कै पाखर, जुक्ति कै जीन बनाई।
सत्त सुकृत दोउ लगी पावरो, बिबेक लगाम लगाई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सील छिमा के बख्तर पहिरे, तत तरवार गहाई।
साजन सुरति चढ़ि छाजे ऊपर, निरत के सांग गहाई।।
सतएं कंवल त्रिकुटी के भीतर, वहां पहुंचि के जाई।
जोति सरूपी देव निरंजन, वेदन उन को गाई।।
बंकनाल की औघट घाटी, तहां न पग ठहराई।
ओहं ररंग अड़े जहं दुई दल, अजपा नाम सहाई।।
जोजन एक खरब के आगे, पुरुष बिदेह रहाई।
सेत कंवल निसि बासर फूले, सोभा बरनि न जाई।।
सेत छत्र और सेत सिघासन, सेत धुजा फहराई।
कोटिन भानु चन्द्र तारागन, छत्र की छांह रहाई।।
मन में मन नैनन में नैना, मन नैन एक ह्वै जाई।
सुरत सोहागिनि मिलत पिया को, तन कै तपन बुझाई।।
द्वादस ऊपर अजपा फेरै, मनै पवन थकि जाई।
कहै कबीर मिले गुरु पुरे, सबद में सुरत मिलाई।।

166

सुगना बोल तैं निज नाम।। टेक।।
आवत जात बिलम नहि लागै, मंजिल आठौ जाम।
लाखन कोस पलक में जावै, कहूं न करै मुकाम।।
हाथ पांव मुख पेट पीठ नहिं, नहीं लाल ना सेत न स्याम।
पंखन बिना उड़ै निसि बासर, सीत लगै नहिं घाम।।
बेद कहै सरगुन के आगे, निरगुन का बिसराम।
सरगुन निरगुन तजहु सोहागिनि, जाइ पहुंच निज धाम।।
लाल गुलाल बाग हंसन में, पंछी करै अराम।
दुख सुख वहां कहूं नहिं व्यापै, दरसन आठौ जाम।।
नूरै ओढ़न नूरै आसन, नूरै कौ सिरहान।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु का नूर तमाम।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

167

जियत न मार मुआ मत लैयो, मास बिना मत ऐयो रे।। टेक।।
परली पार इक बेल का बिरवा, वा के पात नहीं है रे।
होत पात चुगि जात मिरगवा, मृग के सीस नहीं है रे।।
धनुष बान ले चढ़ा पारधी, धनुआ के परच नहीं है रे।
सरसर बान तकातक मारै, मिरगा के घाव नहीं है रे।।
उन बिनु खुर बिनु चरन चोंच बिन, उड़न पंख नहिं जा के रे।
जो कोइ हंसा मारि लियावै, रक्त मांस नहिं तो के रे।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह पद अतिहि दुहेला रे।
जो या पद को अर्थ बतावै, सोई गुरू हम चेला रे।।

168

दूर गवन तेरो हंसा हो, घर अगम अपार।। टेक।।
नहिं वहं काया नहिं वहं माया, नहिं वहं त्रिगुन पसार।
चार बरन उहवां हैं नाहीं, ना है कुल ब्योहार।।
नौ छः चौदह बिद्या नाहीं, नहिं वह बेद बिचार।
जप तप संजम तीरथ नाहीं, नाहीं नेम अचार।।
पांच तत्त नहि उत्पति भइलैं, सो परलय के पार।
तीन देव ना तेंतिस कोटी, नाहिं दसो अवतार।।
सोरह संख के आगे होई, समरथ कर दरबार।
सेत सिंघासन आसन बैठे, जहं सबद झनकार।।
पुरुष रूप कहा बरनौं महिमा, तिन गति अपरम्पार।
कोटि भानु की सोभा जिन्ह के, इक इक रोम उजार।।
छर अच्छर दूनों से न्यारा, सोइ नाम हमार।
सार सबद को लेइके आयो, मृत्यु लोक मंझार।।
चार गुरु मिलि थापल हो, जग के हैं कड़िहार।
उन कर बहियां पकरि रहो हौ, हंसा उतरौ पार।।
जम्बू दीप के तुम सब हंसा, गहि लो सबद हमार।
दास कबीर अब की दीहल, निर्गुन कै टकसार।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

169

चरखा नहीं निगोड़ा चलता।।टेक।।
पांच तत्त का बना है चरखा, तीन गुनन में गलता।।
माल टूटि तीन भया टुकड़ा, टेकुवा होइ गया टेढ़ा।।
मांजत मांजत हार गया है, धागा नहीं निकलता।।
मित्र बढ़ैया दूर बसत है, का के घर दे आया।।
ठोकत ठोकत हार गया है, तौ भी नहीं सम्हलता।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जले बिना नहीं छुटता।।

170

चलु हंसा वा देस, जहां तोर पिया बसै।। टेक।।
वहि देसवा में अर्द्धमुख कुइयां, सांकर वाके मोहड़।
सुरत सोहागिन है पनिहारिनि, भरै ठाढ़ बिन डोर।।
वहि देसवां बादर ना उमड़ै, रिमझिम बरसै मेह।
चौबारे में बैठि रहो ना, जा भीजहु निर्देह।।
वहि देसवां में नित्त पूर्निमा, कबहु न होइ अंधेर।
एक सुरज कै कौन बतावै, कोटिन सुरज उजेर।।
लछमी वा घर झाड़ू देत है, सिव करते कोतवाली।
ब्रह्मा वा के बने टहलुवा, बिस्नु करै चरवाही।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, ई पद है निर्बानी।
जो ई पद कै अर्थ लगावै, पहुंचै मूल ठिकानी।।

171

जिन पिया प्रेम प्याला, सोइ जन है मतवाला।।
मूल चक्र को बंद लगावै, उलटी पवन चढ़ावै।
जरा मरन भय ब्यापै नाहीं, सतगुरु सरनी आवै।।
बिन धरनी हरि मंदिर देखा, बिन सागर झर पानी।
बिन दीपक मंदिर उंजियारा, बोलै गुरुमुख बानी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
इंगला पिंगला सुखमन नाड़ी, उनमुन के घर मेला।
अष्ट कंवल पर कंवल बिराजै, सो साहिब अलबेला॥
चांद न सुरज दिवस नहिं रजनी, तहां सुरत लौ लावै।
अमृत पियै मगर होय बैठै, अनहद नाद बजावै॥
चांद सुरज एकै घरि राखै, भूला मन समुझावै।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सहज सहज गुन गावै॥

प्रेम

172

आज मेरे सतगुरु आये।
रहस रहस मैं अंगना बुहारों, मोतियन चौक पुराये॥
चरन पखारि चरनामृत करिके, सब साधन बरताऊं।
पांच सखी मिलि मंगल गावैं, सबद सुरत लौ लाऊं॥
करूं आरती प्रेम निछावर, पल पल बलि बलि जाऊं।
कहै कबीर दया सतगुरु की, परम पुरुष बर पाऊं॥

173

आज सुबेलो सुहावनो, सतगुरु मेरे आये।
चन्दन अगर बसाये, मोतियन चौक पुराये॥
सेत सिंघासन बैठे सतगुरु, सुरत निरत करि देखा।
साधु कृपा ते दरसन पाये, साधू संग बिसेखा॥
घर आंगन में आनंद होवै, सुरत रही भरपूर।
झरि झरि पड़ै अमीरस दुर्लभ, है नेड़े नहिं दूर॥
द्वादस मद्ध देखि ले जोई, बिच है आपै आपा।
त्रिकुटी मध तू सेज निरखि ले, नहिं मंतर नहिं जापा॥
अगम अगाध गती जो लखिहै, सो साहिब को जीवा।
कहै कबीर धरमदास से, भेटि ले अपनो पीवा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

174

मोरी रंगी चुनरिया धो धुबिया।।
जनम जनम के दाग चुनर के, सतसंग जल से छुड़ा धुबिया।।
सतगुरु ज्ञान मिले फल चारी, सबद कै कल्प चढ़ा धुबिया।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के चरन चित ला धुबिया।।

175

आज दिन के मैं जाऊं बलिहारी।। टेक।।
सतगुरु साहिब आये मेरे पहुना। घर आंगन सुहौना।।
साध संत लगे मंगल गावन। भये मगन लखि छबि मन भावन।।
चरन पखारूं बदन निहारूं। तन मन धन सब गुरु पर वारूं।।
जा दिन आये साध धन सोई। होत आनंद परम सुखहोई।।
सुरत लगी सतनाम की आसा। कहै कबीर दासन करदासा।।

176

सुनहु अहो मेरी रांध परोसिन, आज सुहागिन अनंद भरी।। टेक।।
सबद बान सतगुरु ने मार्‍यो, सोवत तें धन चौंक परी।
बहुत दिनन तें गइ मैं खेलन, बिन सतगुरु अब भटकि मरी।।
या तन में बटमार बहुत हैं, छिन छिन रोकत घरी घरी।
जब प्रीतम कि धुनि सुनिपाई, छाड़ि सखिन भइ बिलग खड़ी।।
पांच पचीस किये बस अपने, पिया मिलन की चाह धरी।
सबद बिबेक चुनरिया पहिरे, ज्ञान गली में भई खड़ी।।
दीपक ज्ञान लिये कर अपने, निरखि पुरुष भइ मोद भरी।
मिटि गौ भर्म दूरि भयो धोखो, उलटि महल में खबर परी।।
देखि पिया को रूप मगन भइ, निरखि सेज पर धाय चढ़ी।
करत बिलास पिया अपने संग, पौंढ़ि सेज पर प्रेम भरी।।
सुखसागर से बिलसन लागी, बिछुरे पिय धन मिलि जोगई।
कहै कबीर मिलि जब पिय से, जनम जनम को अमर भई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

177

सबद की चोट लगी है तन में, घर नहिं चैन चैन नहिं बन में॥
ढूंढ़त फिरों पीव नहिं पावों, औषधि मूर खाई गुजरावों॥
तुम से बैद न हम से रोगी, बिन दीदार क्यों जिये बियोगी।
एकै रंग रंगी सब नारी, ना जानों को पिय की प्यारी॥
कहै कबीर कोई गुरुमुख पावै, बिन नैनन दीदार दिखावै॥

178

जो तू पिय की लाड़ली, अपना करिले री।
कलह कल्पना मेट के, चरनन चित दे री॥
पिय कौ मारग कठिन है, खांड़े की धारा।
डिगमिगै तौ गिरि पड़ै, नहिं उतरै पारा॥
पिय कौ मारग सुगम है, तेरो चाल अनेड़ा।
नाचि न जानै बावरी, कहै आंगन टेढ़ा॥
जो तू नाचन नीकसी, तो घूंघट कैसा।
घूंघट का पट खोलि दे, मत करै अंदेसा॥
चंचल मन इत उत फिरै, पनिबर्त जनावै।
सेवा लागी आन की, पिय कै पावै॥
पिय खोजत ब्रह्मा थके, सुर नर मुनि देवा।
कहै कबीर बिचारि के, कर सतगुरु सेवा॥

179

हूं वारी मुखफेर पियारे। करवट दे मोहिं काहे को मारे॥
करवत भला न करवट तोरी। लाग गले सुन बिनती मोरी॥
हम तुम बीच भया नहिं कोइ। तुमहि सो कंत नारि हम होई॥
कहत कबीर सुनो नर लोई। अब तुम्हरी परतीति न होई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

180

आज सुहाग की रात पियारी।
क्या सोवै मिलने की बारी।।
आये ढोल बजावत बाजन।
बनरी ढांपि रही मुख लाजन।
खोल घुंघट मुख देखैगा साजन।।
सिर सोहै सेहरा हाथ सोहै कंगना।
झूमत आवै बन्ना मेरे अंगना।।
कहत कबीर कर दरपन लीजै।
अब मन मानै सोइ सोइ कीजै।।

181

चली मैं खोज में पिय की, मिटी नहिं सोच यह जिय की।।
रहै नित पास ही मेरे, न पाऊं यार को हेरे।।
बिकल चहुं ओर को धाऊं, तबहु नहिं केंत को पाऊं।।
धरूं केहि भांति से धीरा, गयो गिरि हाथ से हीरा।।
कटी जब नैन की झाईं, लख्यो तब गगन में साईं।।
कबीरा सबद कहि भासा, नैन में यार को बासा।।

182

राखि लेहु हम तें बिगरी।। टेक।।
सील धरम जप भगति न कीन्ही, हौं अभिमान टेढ़ पगरी।।
अमर जानि संची यह काया, सो मिथ्या कांची गगरी।।
जिन निवाज साज सब कीन्हे, तिनहि बिसारि और लगरी।।
संधिक साध कबहु नहिं भेट्यो, सरन परै जिनकी पग री।।
कहै कबीर इक बिनती सुनिये, मतघालो जम की खब री।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

183

सुन सतगुरु की तान नींद नहिं आती।
बिरह में सूरत गई पछाड़े खाती॥ टेक॥
तेरे घट में हुआ अंधेर भरम की राती।
भइ न पिय से भेंट रही पछिताती॥
सखि नैन सैन से खोजि ढूंढ़ि ले आती।
मेरे पिया मिलै सुख चैन नाम गुन गाती॥
तेरि आवागवन की त्रास सबै मिटि जाती।
छबि देखत भई है निहाल काल मुरझाती॥
सखि मानसरोवर चलो हंस जहं पांती।
कहै कबीर बिचार सीप मिलि स्वांती॥

184

मैं देख्यो तोरी नगरी अजब जोगिया॥ टेक॥
जोगी के मड़ैया अजब अनूप। उलटी नीम दई महबूब॥
जट बिन लट बिन अंगन भभूत। लखिन पड़े जोगी ऐसो अवधूत॥
जोगिया की नगरी बसौ मत कोय। जोरे बसै सो जोगिया होय॥
कहै कबीर जोगी बरनो न जाय। जहं देखो गुरुगम पतियाय॥

185

कौन रंगरेंजवा रंगै मोरी चुंनरी॥ टेक॥
पांच तत्त कै बनी चुनरिया, चुनरी पहिरि के लागै बड़ सुंदरी॥
टेंकुआ तागा कर्म कै धागा, गर बिच हरवा हाथ बिच मुंदरी॥
सोरहो सिंगार बतीसो अभरन, पिय पिय रटत पिया संग घुमरी॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिन सतसंग कौन बिधि सुधरी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

186

प्रेम सखी तुम करो बिचार, बहुरि न आना यहि संसार।।
जो तोहि प्रेम खिलनवा चाव, सीस उतारि महल में आव।।
प्रेम खिलनवा यही सुभाव, तू चलि आव कि मोहिं बुलाव।।
प्रेम खिलनवा यही बिसेख, मैं तोहि देखूं तू माहिं देख।।
खेलत प्रेम बहुत पचि हारी, जो खेलिहै सो जग से न्यारी।।
दीपक जरै बुझै चहे बाति, उतरन न दे प्रेम रस माति।।
कहत कबीर प्रेम समान, प्रेम समान और नहिं आन।।

187

ननदी जाव रे महलिया, आपन बिरना जगाव।।टेक।।
भौजी सोंवै जगाये न जागै, लै न सकैं कछु दाव।
काया गढ़ में निसि अंधियरिया, कौन करै वा को भाव।।
मन के अगिन दया के दीपक, बाती प्रेम जगाव।
सत्त के तेल चुवै दीपक में, मदन मसाल जराव।।
भरम के ताला लगे मंदिर में, ज्ञान की कुंजी लगाव।
कपट किवरिया खोल के रे, यहि बिधि पिय को जगाव।।
ब्रह्मंड पार वह पति सुंदर है, अब से भूमि जिनजाव।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि न लगै अस दाव।।

188

सैयां बुलावे मैं जैहौं ससुरे, जल्दी से महरा डोलिया कस रे।।
नैहर के सब लोग छुटत रे, कहा करूं अब कुछ नहिं बस रे।।
बीरन आवो गरे तोरें लागों, फेर मिलब है न जानों कस रे।।
चालन हार भई मैं अचानक, रहौं बाबुल तोरी नगरी सुबस रे।।
सात सहेली ता पै अकेली, संग नहीं कोउ एक न दस रे।।
गवना चाला तुराव लगो है, जो कोउ रोवै वा को न हंस रे।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सैयां कै महल में बसहु सुजस रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

189

भजन में होत अनंद अनंद।
बरसत बिसद अमी के बादर, भींजत है कोई संत।।
अगर बास जहं तत की नदिया, मानो धारा गंग।
करि असनान मगन होइ बैठी, चढ़त सबद कै रंग।।
रोम रोम जा के अमृत भीना, पारस परसत अंग।
सबद गह्यो जिव संसय नाहीं, साहिब भये तेरे संग।।
सोई सार रच्यो मेरे साहिब, जहं नहि माया अहं।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जपो सोहं सोहं।।

होली

190

मैं तो वा दिन फाग मचैहौं, जा दिन पिय मोरें द्वारे ऐहैं।। टेक।।
रंग वही रंगरेजवा वाही, सुरंग चुनरिया रंगैहौं।।
जोगिन होइ के बन बन ढूंढ़ौं, वाही नगर में रहिहौं।।
बालपने गल सेल्ही बनैहौं, अंग भभूत लगैहौं।।
कहै कबीर पिय द्वारे ऐहैं, केसर माथ रंगैहौं।।

191

उड़िजा रे कुमतिया काग उड़िजा रे।। टेक।।
तुम्हरो बचन मोहि नीक न लागै। स्त्रवन सुनत दुख जागै।।
कोइल बोल सुहावन लागै। सब सुनि सुनि अनुरागै।।
हमरे सैयां परदेस बसतु हैं। मोर चित चरनन लागै।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो। गुरू मिलैं बड़ भागै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

192

मन तोहिं नाच नचावै माया।। टेक।।
आसा डोरि लगाइ गले बिच, नट जिमि कपिहि नचाया।
नावत सीस फिरै सबही को, नाम सुरत बिसराया।।
काम हेतु तुम निसि दिन नाचे, का तुम भरम भुलाया।
नाम हेतु तुम कबहुं न नाचे, जो सिरजल तोरी काया।।
ध्रूब प्रहलाद अचल भये जा से, राज बिभीखन पाया।
अजहूं चेत हेत कर पिउ से, है रे निलज बेहाया।।
सुख सम्पति सब साज बड़ाई, लिखि तेरे साथ पठाया।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गनिका बिवान चढ़ाया।।

193

बावरो सखि ज्ञान है मेरा।। टेक।।
मातु पिता मोहि नितहि सिखावैं, बरजैं बेरौ बेरा।
जौन कौल करि आयो पिय से, सो गुन एक न हेरा,
कहैं औगुन बहुतेरा।।
आय गयो अनुहार रे सजनी, कियो दरवजवै डेरा।
जल्दी डोलिया फंदाय मांगे बलमू, लावै न तनिकौ देरा,
देखैं सब लोग घनेरा।।
रोय रोय सब पूछन लागीं, कब करिहौ तुम फेरा।
सात समुद्र पार तोरा सासुर, लौटब कठिन करेरा,
जहां कहुं नाव न बेड़ा।।
कहै कबीर जब पिय से मिलौंगी, जिया न्यौछावर मेरा।
आवागवन न है या नगरी, यह लेखा सब केरा,
झूठ दुनिया का बसेरा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

194

का संग होरी खेलौं हो, बालम परदेसवा।।टेक।।
आई है अब रितु बसंत की, फूलन लागे टेसुवा।।
वस्त्र रंगीले पहिरन लागे, बिरहिनि ढारत अंसुवा।।
भरि गये ताल तलैया सागर, बोलन लागे मेघवा।
उमड़ी नदी नाव कहं पाओं, केहि बिधि लिखौ संदेसवा।।
जो जो गये बहुरि नहिं आये, कैसन है वह देसवा।
आवत जावत लखै न कोई, येही मोहि अंदेसवा।।
बालापन जोबन दोउ बीते, पाकन लागे केसवा।
कहै कबीर निज नाम सम्हारी, लै सतगुरु उपदेसवा।।

195

गगन मंडल अरुझाई, नित फाग मची है।।टेक।।
ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सखियां लै लै धाई।
उमंगि उमंगि रंग डारि पिया पर, फगुवा देहु भलाई।।
गगन मंडल बिचहोरी मची है, कोई गुरु गम ते लखि पाई।
सबद डोर जहं अगर ढरतु है, सोभा बरनि न जाई।।
फगुवा नाम दियौ मोहिं सतगुरु, तन की तपन बुझाई।
कहै कबीर मगन भई बिरहिनि, आवागवन नसाई।।

196

बिरहिनि झकोरा मारी, को बूझै गति न्यारी।।टेक।।
चोवा चन्दन अबिर अरगजा, करनी कै केसर घोरी।
प्रेम प्रीति कै भरि पिचुकारी, रोम रोम रंगी सारी।।
इंगला पिंगला रास रचो है, सुखमन बाट बहोरी।
खेलत हैं कोइ संत बिरहिया, जोग जुगति लगी तारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, तुरही तान नफीरी।
सुरत निरत जहं नाचन निकसे, बाढ़त रंग अपारी।।
फागुन के दिन आनि लगे री, अब कैसे काह करो री।
दास कबीर आतम परमातम, खेलत बहियां मिरोरी।।

197

कोई मो पै रंग न डारौ, मैं तो भइ हूं बौरी।।टेक।।
इक तो बौरी दूजे बिरह की मारी, तीजे नेह लगो री।।
अपने पिय संग होरी खेलौं, येही फाग रचों री।।
पांच सुहागिनि होरी खेलैं, कुमति सखी से न्यारी।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवागवन निवारी।।

198

ऐसी खेल ले होरी जोगिया, जा में आवागवन तजि डारी।।टेक।।
ज्ञान ध्यान कै अबिर गुलाल लै, सुरति किये पिचुकारी।
भक्ति भभूत लै अंग पर डारौ, मृग मुद्रा नृतकारी।।
सील संतोष कै पहिरि चोलना, छिमा टोप सिर धारी।
बिरह बैराग कै कानन मुद्रा, अनहद लाओ तारी।।
प्रीति प्रतीति नारि संग लैलै, केसर रंग बना री।
ब्रह्म नगर में होरी खेलौ, अलख रंग भरि झारी।।
काम क्रोध अरु मोह लोभ कै, कीच दूर तजि डारी।
जनम मरन की दुबिधा मेटौ, आसा तृस्ना मारी।।
निर्गुन सर्गुन एकहि जानो, भरम गुफा मत जा री।
आनंद अनुभव उर में धारौ, अनहद मृदंग बजा री।।
जल थल जीव औ जन्तु चराचर, एकहि रूप निहारी।
दास कबीर से होरी मचाओ, खेलो जग में धमारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

199

खेलौं नित मंगल होरी, नित बसंत नित मंगल होरी।।टेक।।
दया धरम की केसर घोरी, प्रेम प्रीति पिचुकारी।
भाव भक्ति छिड़कै सतगुरु पै, सुफल जनम नर नारी।।
प्रीति प्रतीति फूल चित चन्दन, सुमिरन ध्यान तुम्हारी।
ज्ञान गुलाल अगर कस्तूरी, उमंग उमंग रंग डारी।।
चरनामृत परसाद चरन रज, अपने सीस चढ़ाई।
लोक लाज कुल करम मेटि के, अभय निसान घुमाई।।
कथा कीरतन नाम गुन गावै, करि साधन की भीर।
कौन काज बिगरयो है तेरो, यों कथि कहत कबीर।।

200

कोइ है रे हमारे गांव को, जा से परचा पूछौं ठांव को।।टेक।।
बिन बादर बरसै अखंडधार, बिन बिजुरी दमकै अति अपार।।
ससि भानु बिना जहं ह्वै प्रकास, गुरु सबद तहं कियो निवास।।
बृच्छ एक तहं अति अनूप, साखा पत्र न छांह धूप।।
बिन फूलन भंवरा करि गुंजार, फल लागे तहं निराधार।।
ऊंच नीच नहि जाति पांति, त्रिगुन न व्यापै सदा सांति।।
हर्ष सोग नहिं राग दोष, जरा मरन नहि बध मोष।।
अखंडपुरी इक नग्रनाम, जहं बसै साध जन सहज धाम।।
मरै न जीवै न जाय, जन कबीर गुरु मिले धाय।।

201

सखीरी ऐसी होली खेल, जा में हुरमत लाज रहै री।।टेक।।
सील सिगार करौ मोरी सजनी, धीरज मांग भरो री।
ज्ञान गुलाल उड़ाओ तन से समता फेंट कसो री।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मची धमार नगर तेरे में, अनहद बीन बजो री।
गुरु से फगुवा मांग सखी री, हृदय सांति धरो री॥
खेती गऊ बनिज औ बछरा, चेला सिष्य करो री॥
नाव भरी है पार होन को, कालीदह में परो री॥
संस्कृत भाषा पढ़ि लीन्हा, ज्ञानी लोग कहां री।
आसा तृस्ना में बहि गयो सजनी, जम के डंड सहो री॥
मान मनी की मेटुकी सिर पर, नाहक बोझ मरो री।
मेटुकी पटकि मिलो सतगुरु से, दास कबीर कहो री॥

202

मानुष तन पायो बड़े भाग, अब बिचारि लेलो फाग॥ टेक॥
बिन जिभ्या गावै गुन रसाल, बिन चरनन चालै अधर चाल॥
बिन कर बाजा बजै बैन, निरखि देखि जहं बिना नैन॥
बिन ही मारे मृतक होइ, बिन जारे ह्वै खाक सोइ॥
बिन मांगे बिन जांचे देइ, सो सालिम बाजी जीति लेइ॥
बिन दीपक बरै अखण्ड जोति, पाप पुन्न नहि लागे छोति॥
चन्द सूर नहिं आदि अंत, तहं कबीर खेलै बसंत॥

203

खेल साध सदा होरी, तहं दुन्द उपाधि नहीं खोरी॥ टेक॥
ताल मूल सुर सदा बाट धरि, पछिम दिसा चढ़ि गहि डोरी।
खोलि कपाट सहज घर पाया, सुन्दर रूप सुरत गोरी॥
निर्तत सखी चतुर सब गावैं, बाजत तुरही दै दै तारी।
छिरकत चीर रंग चित चंचल, प्रेम केसर भरि पिचुकारी॥
जहं राजत राम आप मन मूरति, अति रसाल छत्र धारी।
सुर नर मुनि तहं होत कुलाहल, ज्ञान गुलाल उड़त भारी॥
कोई निर्गुन कोई सगुन राचा, आप बिसारि चले सबही।
कहै कबीर चेतु नर प्रानी, सबद सरूप मिल्यो अबही॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

204

जहं बारह मास बसंत होय, परमारथ बूझै साथ कोय।।टेक।।
बिन फूलन फूल्यो अकास, ब्रह्मादिक सिव लियो निवास।।
सनकादिक रहैं भंवर होइ, लख चौरासी जीव सोई।।
सातो सागर पिये हैं घोर, आन जुरे तैंतिस करोर।।
अमर लोक फल लियो है जाय, कहै कबीर जानैं सो खाय।।

205

मन मिलि सतगुरु खेलो होरी।। टेक।।
संसय सकल जात छिन माहीं, आवागवन कै फंदा तोरी।।
चित चंचल इसथिर करि राखो, सूरत निरत एक ठौरी।।
बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, अनहद धुनि कै घनघोरी।।
गावत राग सबै अनुरागी, सार सबद अंतर मोड़ी।।
ज्ञान ध्यान की करि पिचुकारी, केसर गुरु किरपा घोरी।।
अगर बास महकै चहुं ओरी, सेत अबीर लै भरि झोरी।।
अजर अमर फगुवा नित पावै, कहै कबीर गये जम जोरी।।

206

खेलि ले दिन चार पियारी, ये होरी रस खूब मचा री।।
ज्ञान को ढोल बिबेक मजीरा, राग उठै झनकारी।
जंत्री संग भली बिधि जानै, बाजत अनहद तारी,
न जानै कारन अनाड़ी।।
कर्म नाम की जेवरी तोड़ी, धर्म गुलाल उड़ा री।
लोभ मोह के कंगन तोड़े, भर्म भांडा फोड़ा री,
कपट जड़ मूल उखाड़ी।।
अर्ध उर्ध बिच फाग रचो है, सुखमन सुरत सम्हारी।
पिय प्यारी खेंलैं अपने पिय संग, छिरकैं रंग अपारी,
दृगन की चितवन न्यारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होरी आवै फिरि फिरि जावै, यह तन बहुरि न पावै।
पूर्न प्रताप दया सतगुरु की, आवागवन नसावै,
बात यह कठिन करारी।।
सबै संग मिलि होरी खेलैं, गगन में फाग रचा री।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बेद न पावै पारी।।
सेस की रसना हारी।।

207

सत साहिब खेलैं ऋतु बसंत। कोटि दास सुर मुनि अनंत।।टेक।।
हंसैं हंस जगमगैं दंत। सेत पुहुप बरखैं अनंत।।
अग्रसबद की बास माहिं। निरखि हंस सबदै समाहिं।।
नौ खेलैं तेंतीस तीन। लोक बेद बिष संग लीन।।
खेलैं प्रकृति पचीस संग। न्यारा न्यार धरैं रंग।।
सब नर खलैं गुनन माहिं। अधर बस्तु कोउ लखै नाहिं।।
जुगलजोरी दोउ रहै साध। जुग जुग लिख जो दीन्ह हाथ।।
बाकी निकसै पकरि लेइ। बहुरि बहुरि जग त्रास देइ।।
कहै कबीर नर अजहुं चेत। छाड़ खेल धर सबद हेत।।

208

सखि आज हमारे गृह बसंत। सुख उपज्यौ अब मिले कंत।। टेक।।
पिया मिले मन भयो अनंद, दूरि गये सब दोष दुंद।
अब नहिं ब्यापै संसय सोग, पल पल दरसन सरस भोग।।
जहं बिन कर बाजै बजैं बैन, निरखि देख तहं बिना नैन।
धुनि सुन थाक्यो चपल चित्त, पलन बिसारौं देखौं नित्त।।
जहं दीपक जेहि बरै आगि, सिव सनकादिक रहैं लागि।
कहै कबीर जहं गुरु प्रताप, तहं तो नाही पुन्न पाप।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

209

चाचरि खेलो हो, समझि मन चाचरि खेलो।।टेक।।
चाचरि खेलो संत मिलि, चित चरन लगाई।
सतसंगत सत भाव करि, सुख मंगल गाई।।
यह जग जम की खान है, या को न पतीजै।
सतगुरु सबद बिचारि ले, तो जुग जुग जीजै।।
जनम जनम भरमत रह्यो, जिव नेक न बूझेव।
चौरासी के खेल में, निज पंथ न सूझेव।।
एक कनक और कामिनी, इन संग मन बधा।
अंत नरक ले जातु हैं, चीन्हैं नहि अंधा।।
तीनि लोक चाचरि रची, इन तीनों देवा।
सुर नर मुनि औ देवता, करैं इनकी सेवा।।
चौथा पद नहि जानहीं, भूले भ्रम माया।
सेवक की सेवा करैं, साहिब बिसराया।।
यह औसर अब जातु है, चेतो नर प्रानी।
आदि नाम चित दृढ़ गहो, छूटै जम खानी।।
खेलो सुरत सम्हारि के, सुकिरत उन राखो।
प्रेम मगन बहु प्रीति से, अमृत रस चाखो।।
नाद मृदंग सम्हारि, तार दोउ संग मिलावो।
आदी मूल बिचारि के, निज धुन उपजावो।।
निसि बासर खेलो सदा, जा तें लौ लागै।
पिव सेती परिचय करो, सकलै भ्रग भागै।।
सील संतोष को अरगजा, सब अंग लगावो।
काम क्रोध मद लोभ, अबीर गुलाल उड़ावो।।
नचै नवेली नारि, सबै मिलि के इक ठौरा।
चाचरि खेलो प्रीति से, छूटै सब औरा।।
पिचुकारी भरि अगर बास, खैलो पिय संगा।
महकै बास सुबास, खेल लागे अति रंगा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छूटै बिषय बिकार, सबै भौसागर केरा।
सुख सागर में घर करै, फिर होइ न फेरा।।
खेल संत सुजान, सोई या गति को जानैं।
अनजाने बादै सबै, कोइ नेक न मानै।।
कहै कबीर बिचारि के, छाड़ो सब आसा।
ऐसी चाचरि खेलई, सोई निज दासा।।

210

मन रंगी खेलै धमार, तीन लोक में सार।।टेक।।
काहू को पाताल पठावा, काहू को आकास।
काहू को बैकुंठ देतु है, फिर मृत लोक की आस।।
सुर नर मुनि सबहीं को छलिया, काम क्रोध के संग।
अंतर और कहै कछु औरै, करत सबन मन भंग।।
निसि बासर ममता उपजावत, बाजी देत भुलाइ।
चौरासी पिचुकारी मारत, जनम जनम भरमाइ।।
षट दरसन पाखंड छानवे, भर्म पर्‍यो संसार।
बेद पुरान सबै मिलि गावत, करम लगाये लार।।
ज्ञानी गुनी चतुर कबि बांधे, माया रसरी डारि।
पछा पछी खेलत सब कोऊ, डारे पकरि पछारि।।
आंधर करि राखे सबहिन को, नैनन डारि अबीर।
काल कुटिल जो छलबल मारे, नेक न वा को पीर।।
खेलि न जानै खेलै निसि दिन, सुधि बुधि गई हिराय।
जिभ्या के लपट मरे भोंदू, मानुष जनम गंवाय।।
चीन्हो रे नर प्रानी या को, निसि दिन करत अंदोर।
होइ साह सब को घेर मूसत, तीनि लोक को चोर।।
सतगुरु सबद सत्त गहि निज करि, जा तें संसय जाय।
आवागवन रहित ह्वै तेरो, कहै कबीर समुझाय।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

211

तुम घट बसंत खेलो सुजान। सत्त सबद में धरो ध्यान।। टेक।।
एक ब्रह्म फल लगे दोय। सुबुधि कुबुधि लखि लेहु सोय।।
बिष फल खावै सब संसार। अमृत फल साधु करै अहार।।
पांच पचीस जहं फूले फल। भर्म भंवर डरि रहे मूल।।
काम क्रोध दोउ लागे पात। नरपसुखाहिं कोइ ना अघात।।
जहं नौ द्वारे औ दस जुवार। तहं सींचन हारा है मुरार।।
मेरे मुक्ति बाग में सुख निधान। देखै सौ पावै अयन जान।।
संत चरन जो रहै लाग। वह देखै अपनो मुक्ति बाग।।
कहै कबीर सुख भये भोग। एक नाम बिन सकल रोग।।

212

मेरो साहिब आवनहार, होरी मैं खेलौंगी।। टेक।।
करनी के कलस संजोय सकल बिधि, प्रीति पावरी डारी।
चरन पखारि चरनामृत लेहौं, मन को मान उतारी।।
तन मन धन सब अर्पन करिहौं, बहु बिधि आरत साज।
प्रेम लगन ह्वै होरी खेलौं, मेटौं कुल की लाज।।
धोखा धूरि उड़ाइ सरीर ते, ज्ञान गुलाल प्रकास।
पारस पान लेउं सतगुरु से, मेटौं दूसर आस।।
दया धरम कै केसर घोरौ, भाव भगति पिचुकारी।
सत्त सुकिरत अबीर अरगजा, देहौं पिय पर डारी।।
दास कबीर मिले मोहिं सतगुरु, फगुवा दीन्हो नाम।
आवागवन की मिटी कल्पना, पायौ आनंद धाम।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मंगल

213

अब हम आनंद को घर पाये।
जब ते दया भई सतगुरु की, अभय निसान उड़ाये।।
काम क्रोध की गागर फोड़ी, ममता नीर बहाये।
तजि परपंच बेद बिधि किरिया, चरन कंवल चित लाये।।
पांच तत्त कर तन कै गुदरिया, सुरत कै टोप लगाये।
हद घर छोड़ बेहद घर आसन, गगन मंडल मठ छाये।।
चांद न सूर दिवस ना रजनी, तहां जाइ लौ लाये।
कहै कबीर कोइ पिय की प्यारी, पिया पिया रटि लाये।।

214

अगमपुरी को ध्यान, खबर सतगुरु करी।
लीजे तत्त बिचार, सुरत मन में धरी।।
सुरत निरत दोउ संग, अगम को गम कियो।
सबर बिबेक बिचार, छिमा चित मे दियो।।
गुरु के सबद लौ लाय, अगोचर घर कियो।
सबद उठै झनकार, अलख तहं लखि लियो।।
अलख लखो लौ लाय, डोरी आगे धरो।
जगमगार वह देस, केल हंसा करो।।
सतगुरु डोरी लाय, पुकारें जीव को।
हंसा चले संभालि, मिलन निज पीव को।।
मंगल कहै कबीर, सो गुरुमुख पास है।
हंसा आये लोक, अमर घर बास है।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

215

अखण्ड साहिब का नाम, और सब खंड है।
खंडित मेरु सुमेरु, खंड ब्रह्मंड है।।
थिर न रहै धन धाम, सो जीवन द्वन्द्व है।
लख चौरासी जीव, पड़े जम फंद है।।
जा का गुरु से हेत, सोई निर्बन्ध है।
उन साधुन के संग, सदा आनंद है।।
चंचल मन थिर राखु, जबै भल रंग है।
तेरे निकट उलटि भरि पीव, सो अमृत गंग है।।
दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है।
कहै कबीर चित चेत, सो जगत पतंग है।।

216

बंदी छोर कबीर, भक्ति मोहिं दीजिए।
बांहि गहे की लाज, गहर मत कीजिये।।
कागा बरन छुड़ाइ, हंस बुधि लाइये।
पूरन पद को देव, महा सुख पाइये।।
जो तुम सरनै आयौं, बचन इक मानिये।
भौसागर बहै जोर, सुरत निज राखिये।।।
दसो द्वार बेकार, नवो नाटिका बहै।
सुरत नहीं ठहराय, लगन कैसे लगै।।
जैसे मीन सनेह, सदा जल में रहै।
जल बिन त्यागै प्रान, लगन ऐसो लगै।।
मेटौ सकल बिकार, भार सिर लेइयो।
तुमहिं में रहौं समाइ, आपन करि लेइयो।।
कहै कबीर बिचारि, सोई टकसार है।
हंस चले सतलोक, तो नाम अधार है।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

217

सुनो सुहागिनि नारि, प्यार पिव से करो।
ये बेले ब्यौहार तिन्हें, तुम परिहरो।।टेक।।
दिनां चार को रंग, संग नहिं जायगा।
यह तो रंग पतंग, कहां ठहरायगा।।
पांच चोर बड़ जोर, कुसंगी अति घने।
ये ठगियन जिव संग, मुसत घर निसि दिने।।
सोवत जागत रैन, दिवस घर मूसहीं।
ठाढ़े खड़े पुठवार, भली बिधि लूटहीं।।
इन ठगियन को राव, पकड़ि सो लीजिये।
जो कहुं आवे हाथ, छाड़ि नहिं दीजिये।।
चौथे घर इक गांव, ठांव पिव को बसै।
बासा दस के मद्ध, पुरुष इक तहं हंसै।।
होत है सिंध घमोर, संख धुनि अति घनी।
तन्ती की झनकार, बजत है झिनझिनी।।
महरम होय जो संत, सोई भल जानई।
कहै कबीर समुझाय, सत्त करि मानई।।

218

रिमझिम बरसै बूंद सुरतिया। का से कहौं दिल बतिया।।
अब सुन सजनी सरोवर गैलै। सुखाइ कंवल कुम्हिलाइ गैलै।।
औघट घटिया लगलि मोरी नैया। ताहि पै चढ़ लैं पांचों भैया।।
अस सुन सजनी भैलै मतवार। कस जाइब औघट के पार।।
चांद सुरज तुम मोरे साथी। सैयां दरबरवा हमार पतराखी।।
दास कबीर गावै निरगुन ज्ञनियां। समुझि बिचारि जिय लेइ सरनियां।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

219

सुरत सरोवर न्हाइ के मंगल गाइये।
दर्पन सबन निहारि, तिलक सिर लाइये।।
चल हंसा सतलोक, बहुत सुख पाइये।
परस पुरुष के चरन, बहुरि नहिं आइये।।
अमृत भोजन तहां, अमी अचवाइये।
मुख में सेत तंबूल, सबद लौ लाइये।।
पुहुप अनूपम बास, घर हंस चलीजिये।
कमृत कपड़े ओढ़ि, मुकुट सिर दीजिये।।
वह धर बहुत आनन्द, हंसा सुख लीजिये।
बदन मनोहर गात, निरखि के जी जिये।।
दुति बिन मसि बिन अंक, सो पुस्तक बांचिये।
बिन कर ताल बजाय, चरन बिन नाचिये।।
बिन दीपक उंजियार, अगम घर देखिये।
खुलि गये सबद किवाड़, पुरुष से भेटिये।।
साहिब सन्मुख होइ, भक्ति चित लाइये।
मन मानिक संग हंस, दरस तहं पाइये।।
कहै कबीर यह मंगल, भागन पाइये।
गुरु संगत लौ लाय, हंसा चलि जाइये।।

220

यह मन जालिम जोर री, बरजे नहि मानै।।टेक।।
जो कोइ मन को पकरा चाहै, भागत सांकर तोर।।
सुर नर मुनि सब पचि पचि हारे, हाथ न आवै चोर।।
जो हंसा सतगुरु कै होइ, राखै ममता छोर।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बचो गुरुन की ओट।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुम साहिब बहुरंगी, रंग बहुतै किये।
कब के बिछड़े हंस, बांहि गहि अब लिये।।
प्रथम पठाये छाप, सुरत से लीजिये।
पाइ परवाना पान, चरन चित दीजिये।।

।। छंद।।

पुरब पच्छिम देख दक्खिन, उत्तर रहै ठहराइ के।
जहां देखो गम्म गुरु की, तही तत्त समाइ के।।
सुरत उत्तर पास किलकै, पुहुप दीप ते आइके।
लाइ लौ की डोरि बांधै, संत पकरै जाइके।।
पकरि चरन कर जोरि, निछावर कीजिये।
तन मन धन औ प्रान, गुरु को दीजिये।।
तब गुरु होहि दयाल, दया चित लावईं।
गहि हंसा की बांहि, सु घर पहुंचावईं।।

।। छंद।।

दया करि जब मुक्ति दीन्हो, गह्यो तत्त बनाइ के।
परम प्रीतम जानि अपने, हृदय लियो समाइ के।।
जरा मरन को भय नसायो, जबै गुरु दाया करी।
कर्म भर्म को छाड़ि जिय तें, सकल ब्याधा परिहरी।।
तुम मेरे परम सनेही, हंसा घर चलौ।
छाड़ि बिषय भौसागर, हंस हंसन मिलौ।।
सूरत निरत बिचार, तत्त पद सार है।
बैठु हंस सत लोक, नाम आधार है।।

।। छंद।।

सत्त लोक अमान हंसा, सुखसागर सुख बास है।
सत्त सुकिरत पुरुष राजै, तहां नहि जम त्रास है।।
अजर अमर जो हंस है, सुनि सत्त सबद चित लाइके।
आवागवन से रहित होवै, कहै कबीर समुझाइ के।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

222

देखि माया को रूप, तिमिर आगे फिरै।
तेरी भक्ति गई बड़ि दूर, जीव कैसे तरै॥
जुन्हरी डार रस होय, तहू गुड़ ना पकै।
कोदक कर्म कमाय, भक्ति बिना ना तरै॥
ईखहि से गुड़ होय, भक्ति से कर्म कटै।
जम को बंद न होय, काल कागद फटै॥
कहै कबीर बिचारि, बहुरि नहिं आवई।
लोक लाज कुल मेटि, परम पद पावई॥

223

साध संगत गुरुदेव, उहां चलि जाइये।
भाव भक्ति उपदेस, तहां तें पाइये॥
अस संगत जरि जाव, न चरचा नाम की।
दूलह बिना बरात, कहो किस काम की॥
दुबिधा को करि दूर, सतगुरु ध्याइये।
आन देव की सेव, न चित्त लगाइये॥
आन देव की सेव, भली नहि जीव को।
कहै कबीर बिचारि, न पावै पीव को॥

224

वाह वाह अमर घर पाया है॥ टेक॥
दुक्ख दर्द काल नहिं ब्यापै, आनंद मंगल गाया है॥
मूल बीज बिन बिर्छ बिराजै, सतगुरु अलख लखाया है॥
कोटि भानु छबि भया उजारा, हंस हिरम्बर भाया है॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवा गवन मिटाया है॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

225

दुविधा को करि दूर, धनी क़ो सेव रे।
तेरी भौसागर में नाव, सुरत से खेव रे॥
सुमिरि सुमिरि गुरु नाम, चिरंजिव जीव रे।
नाम खांड़ बिन मोल, घोलकर पीव रे॥
काया में नहिं नाम, गुरु के हेत का।
नाम बिना बेकाम, मटीला खेत का॥
ऊंचे बैठि कचहरी, न्याव चुकावते।
ते माटी मिलि गये, नजर नहि आवते॥
तू माया धन धाम, देखि मत भूल रे।
दिना चार का रंग, मिलैगा धूल रे॥
बार बार नर देह, नहीं यह बीर रे।
चेत सके तो चेत, कहै कब्बीर रे॥

226

यह कलि ना कोइ अपनो, का संग बोलिये रे।
ज्यों मैदानी रूख, अकेला डोलिये रे॥
माया के मद माते, सुनैं नहिं कोई रे।
क्या राजा क्या रंक, बियाकुल दोई रे॥
माया का बिस्तार, रहै नहिं कोई रे॥
ज्यों पुरइनि पर नीर, थीर नहिं होई रे॥
बिष बोयो संसार, अमृत कस पावै रे।
पुरब जनम तेरो कीन्ह, दोस कित लावै रे॥
मन आवै मन जावै, मनहिं बटोरो रे।
मन बुड़वै मन तारै, मनहिं निहोरा रे॥
कहै कबीर यह मंगल, मन समझावो रे।
समझि के कहों पयाम, बहुरि नहिं आवो रे॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

227

करिके कौल करार, आया था भजन को।
अब तू मुरख गंवार, कुंवे लगा परन को॥
पर्‍यो माया के जाल, रह्यो नर फूलि के।
गर्भ बास की त्रास, रह्यो नर भूलि के॥
ऊंची अटरिया पौल, चढ़ौ चढ़ि गिरि परौ॥
सतगुरु बुधि लइ नाहिं, पार कैसे परौ॥
सतगुरु होहु दयाल, बांह मेरी गहौ।
बूड़त लेव उबारि, पार अब के करौ॥
दास कबीर सिर नाय, कहै कर जोरि के।
इक साहिब से जोरि, सबन से तोरि के॥

228

साधो यह मन है बड़ जालिम।
जा को मन से काम परो है, तिसही ह्वैहै मालुम॥
मन कारन जो उनको छाया, तेहि छाया में अटके।
निरगुन सरगुन मन की बाजी, खरे सयाने भटके॥
मन ही चौदह लोक बनाया, पांच तत्त गुन कीन्हे।
तीन लोक जीवन बस कीन्हे, परै न काहू चीन्हे॥
जो कोउ कहै हम मन को मारा, जा के रूप न रेखा।
छिन छिन में कितनौं रंग ल्यावै, जे सपनेहु नहिं देखा॥
रसातल इकइस ब्रह्मंडा, सब पर अदल चलावै।
षट रस में भोगी मन राजा, सो कैसे कै पावै॥
सब के ऊपर नाम निहच्छर, तहं लै मन को राखे।
तब मन की गति जान परै यह, सत कबीर मुख भाखै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

229

कहै कबीर सुनो हो साधो, अमृत बचन हमार।
जो भल चाहो आपनो, परखो करो बिचार।।
जुगन जुगन सब से कही, काहु न दीन्हो कान।
सुर नर मुनि पद माते, झूठे भर्म भुलान।।
ब्रह्मा भूले परथमै, आद्या का उपदेस।
करता चीन्हि पर्‍यो नहीं, लायो बिरह बिदेस।।
जे करता ते ऊपजे, ता से परि गयो बीच।
अपनी बुद्धि बिबेक बिन, सहज बिसाई मीच।।
अपनी फहम रु उक्ति करि, बिबि अच्छर धर्‍यो नाम।
सबद अनाहद थापिया, सिरजे बेद पुरान।।
बेद कथे उन उक्ति ते, बिस्नु कथे बहु रूप।
सहस नाम संकर कथे, जोग जुगत अंध कूप।।
इनकी माड़नि मड़ि रही, चहुं दिसि रोकी बाट।
फैलि गई सब सृष्टि में, समझ न मेटी फाट।।
सनकादिक तप ठानिया, तत्त साधना कीन।
गगन सुन्न में पैठि के, अनहद धुन लौलीन।।
अपनो तत्त जो सोधि के, लीन्ही जोति निकास।
जोति निरंजन थापिया, भई सबन कि उपास।।
यदि में तें सब मत चले, यही चल्यो उपदेस।
निस्चै गहि निर्भय रहौ, सुन परल तत्त संदेस।।
सनकादिक मुनि नारदा, ब्यास रु गोरखदत्त।
यही मते सब भूलि के, झूले कोटि अनंत।।
ध्रूब प्रहलाद भभीखना, भर्थरि गोपीचंद।
जहं लौं भक्ता जक्त में, सब उरझे यह फंद।।
या फन्दा तें निकसहू, मानो बचन हमार।
उलटि अपनपौ चीन्हहू, देखहु नजरि पसार।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केहि गावो केहि ध्यावहू, छोड़हु सकल धमार।
हम हिरदे सब के बसे, कस सेवो सून उजाड़॥
दूरहि करता थापि के, करी दूर की मान।
जो करता दूरे हुते, तौ को जग सिरजे आन॥
जो जानो यह है नहीं, तौ तुम धावो दूर।
दूरि के ढोल सुहावने, निस्फल मरो बिसूर॥
दुर्लभ दरसन दूर के, नियरे सद सुख बास।
कहै कबीर मोहि ब्यापिया, मत दुख पावे दास॥
आप अपनपौ चीन्हहू, नखसिख सहित कबीर।
आनंद मंगल गावहू, होहि अपनपौ थीर॥

230

आरत कीजै आतम पूजा, सत्त पुरुष की और न दूजा॥
ज्ञान प्रकास दीप उंजियारा, घट घट देखौ प्रान पियारा॥
भाव भक्ति और नहिं भेवा, दया सरूपी करि ले सेवा॥
सतसंगत मिलि सबद बिराजै, धोख दुन्द भरम सब भाजै॥
काया नगरी देव बहाई, आनंद रूप सकल सुखदाई॥
सुन्न ध्यान सब के मन माना, तुम बैठो आतम अस्थाना॥
सबद सुरत ले हृदय बसावो, कपट क्रोध को दूरि बहावो॥
कहै कबीर निज रहनि सम्हारी, सदा अनन्द रहैं नर नारी॥

231

हरि ठग जगत ठगौरी लाई। हरि के बियोगी कस जीवैं भाई॥
को काको पुरुष कौन काकी नारी। अकथ कथा जम दुष्टपसारी॥
को काको पुत्र कौन काको बापा। को रे मरै को सहै संतापा॥
ठगि ठगि मूल सबन कौ लीन्हा। राम ठगौरी काहु न चीन्हा॥
कहै कबीर ठग से मन माना। गई ठगौरी जब ठग पहिचाना॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

232

सतगुरु सबद कमान, सुरत गांसी भई।
मारत हियरे बान, पीर भारी, भई।।
निसि दिन सालै घाव, नींद आवै नहीं।
पिया मिलन की आस, नैहर भावै नहीं।।
चढ़ि गैलूं गगन अटारी, तो दीपक बारि के।
होई गैले पुरुष से भेंट, तो तन मन हारि के।।
कागा बोली बोल, कहां लगि भाखिये।
कहै कबीर धर्मदास, तीन गुन त्यागिये।।

233

समुझि बूझि के देखो गुइयां, भीतर यह क्या बोले है।।
बलि बलि जाउं आपने गुरु की, जिन यह भेद को खोले।।
आदम में वह आप समाया, जो सब रंग में घोले है।।
कहत कबीर जगे का सुपना, कहि न सकै वह बोले है।।

234

अस कोई मन हि लोह सम तावै।। टेक।।
करम जारि के कोइला करि दे, ब्रह्म अगिन परचावै।
ताय तूय के निर्मल करि लैं, सीख के नीर बुझावै।।
इतनो जोरि जुगत करि लावै, लगन लुहार कहावै।
ज्ञान बिबेक जतन से करि ले, जो बिधि अजर झरावै।।
सुरत निरत की संड़सी करि लें, जुगत निहाई जमावै।
नाम हथौड़ा दृढ़ करि मारै, करम की रेख मिटावै।।
पांच आत्मा दृढ़ करि राखै, यो करि मन समुझावै।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, भूला अर्थ लगावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

235

हम ऐसा देखा सतगुरु संत सिपाही॥टेक॥
सत्त नाम कौ पटा लिखायौ सतगुरु आज्ञा पाई।
चौरासी के दुक्ख मिटे, अनुभौ जागीरी पाई॥
सुरत सींगरा सांग समुझ को तन की तुपक बनाई।
दम को दारू सहज को सीमा, ज्ञान के गज ठहकाई॥
सील संतोष प्रेम की पथरी, चित चकमक चमकाई।
जोग को जामा बुद्धि मुद्रिका, प्रीति पियाला पाई॥
सत कै सेल्ही जुगत कै जमधर, छिमा ढाल ठनकाई।
मोह मोरचा पहिले मास्यो, दुबिधा मारि हटाई॥
सत्त नाम कै लगा पलीता, हरहर होत हवाई।
गम गोला गढ़ भीतर मास्यो, भरम के बुर्ज ढहाई॥
सुरत निरत कै घेरा दीन्हो, बंद कियो दरवाजा।
सबद सूरमा भीतर पैठा, पकरि लिये मन राजा॥
पांचों पकरे कामदार जो, पकरी ममता माई।
दास कबीर चढ़्यो गढ़ ऊपर, अभय निसान बजाई॥

236

हीरा नाम अमोल है, रहै घट घर थीरा।
सिद्धी आसन सोधि के, बैठे वहि तीरा॥
गंग जमुन के रेत पर, बहै झिरि झिरि नीरा।
पुरब सोधि पच्छिम गये, करिके मन धीरा॥
बिरहिनि बाजे बांसुरी, सुनि गइ मोर पीरा।
आठ पहर बाजत रहै, अस गहिर गंभीरा॥
हीरा झलकै द्वार पर, परखै जोइ सूरा।
कहै कबीर गुरु गम्म से, पहुंचै कोइ पूरा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

237

दिन रातै गावो मोरी सजनी, सतगुरु को सिर नाइ हो।
फिर पाछे पछितैहौ सजनी, जब जम पकरै आइ हो।।
सुख सागर में परौं हो सजनी, दुख को देहु बहाइ हो।
भक्ति घांघरा पहिरौ सजनी, रैन दिवस गुन गाइ हो।।
निरभय अंगिया कसि लेउ सजनी, भयहिं भगावो दूरि हो।
प्रीति लगी साहिब संग सजनी, डारि जगत पर धूरि हो।।
प्रेम चुनरिया ओढ़ौ सजनी, सतगुरु दीन्ह रंगाइ हो।
जित देखौं तित साहिब सजनी, नैनन रह्यो समाइ हो।।
फहम फुलेल बनाइ के सजनी, सिर में दीन्ही डारिहो।
ज्ञान की कंगही लैकै सजनी, कर्म केस निरवारु हो।।
समुझ की पटिया पारो सजनी, चुटिया गुहौ सम्हारि हो।
संतोष सहेलरि गुहि ले आई, झबिया सहज अपार हो।।
दया भाव को टिकुली सजनी, बिरह बीज अनुसार हो।
जा को दया न आवै सजनी, परै चौरासी धार हो।।
सील के सेंदुर मांग भरु सजनी, सोभा अगम अपार हो।
धीरज अंजन आंजी सजनी, छिमा की बेंदी लिलार हो।।
बेसर बनी बुद्धि की सजनी, मोती बचन सुधार हो।
दीन गरीबी रहो गुरन से, सोई गले कै हार हो।
बाजूबंद बिबेक के सजनी, बहुंटा ब्रह्म बिचारि हो।
चाल की चुरियां पहिरो सजनी, परख पटीला डारि हो।।
नेह निगरही दुहरी सजनी, ककना अकिल के ढारि हो।
मन की मुंदरी पहिरो सजनी, नाम नगीना सार हो।।
नाम जपो निसि बासर सजनी, काटे जम के फांसि हो।
पहिरो चोप चुनरिया सजनी, काट मत करहु उदास हो।।
सत सुकिरत दोउ नुपूर सजनी, उठै सबद झनकार हो।
पहिरि पचीसो बिछिया सजनी, धरि ल्यो पांव सम्हार हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
तीनों गुन कै अनवट सजनी, गुरु से ल्यों बदलाइ हो।।
काम क्रोध दोउ सम करि सजनी, अमर लोक कौ जाइ हो।
घर जो बाड़ा कुमति को सजनी, सहर से देव बहाइ हो।
पिया जो सोवै महल में सजनी, उनको लेव लगाइ हो।।
येहि बिधि सुन्दर साजि के सजनी, करि ल्यो सोरहो सिंगार हो।
पांच सहेलरि संग ल्यो सजनी, गावो मंगलचार हो।।
पिय मोर सोवै महल में सजनी, अगम अगोचर पार हो।
अकिल आरसी लैकै सजनी, पिय को रूप निहार हो।।
घूंघट खोलि कपट को सजनी, हेरो गुरुन की ओर हो।
पान लेंहु मुक्ती को सजनी, जम से तिनुका तोरि हो।।
बिन सतगुरु चरचा के सजनी, सो पुनि बड़े लबार हो।
बिना पुरुष की तिरिया सजनी, उन कौ झूठ सिंगार हो।।
सो दिन जिन जानो मोरि सजनी, जो गावै संसार हो।
यह तो दिन मुक्ती कै सजनी, साधो लेहु बिचार हो।।
दास कबीर की बिनती सजनी, सुन लेहु संत सुजान हो।
आवागवन न होइहै, पावो पद निर्बान हो।।

238

अब कोइ खेतिया में मन लावै।। टेक।।
ज्ञान कुदार ले बंजर गोड़ै, नाम को बीच बोवावै।
सुरत सरावन नय कर फेरै, ढेला रहन न पावै।।
मनसा खुरपनी खेत निराबै, दूब बचन नहिं पावै।
कोस पचीस इक बथुआ नीचें, जड़ से खोदि बहावै।।
काम क्रोध के बैल बने हैं, खेत चरन को आवैं।
सुरत लकुटिया ले फटकारै, भागत राह न पावैं।।
उलटि पलटि के खेत को जोतै, पूर किसान कहावै।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जब वा घर को पावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

239

वाह वाह सरनागति ता की है।।टेक।।
बोल अबोल अडोल अचाहक, ऐसी गतिया जा की है।।
अंतरगति में भया उजाला, बिन दीपक बिन बाती है।।
सुरत सुहागिनि भई मतवारी, प्रेम सुधा रस चाखी है।।
निरखि निरखि अंतर पग धरना, अजब झरोंखे झोंकी है।।
कहै कबीर इक नाम सुमिरि ले, आदि अंत जो साखी है।।

240

ना मैं धर्मी नहिं अधर्मी, ना मैं जती न कामी हो।
ना मैं कहता ना मैं सुनता, ना मैं सेवक स्वामी हो।।
ना मैं बंधा ना मैं मुक्ता, ना निर्बंध सरबंगी हो।
ना काहू से न्यारा हुआ, ना काहू को संगी हो।।
ना हम नरक लोक को जाते, ना सुरग सिधारे हो।
सबही कर्म हमारा कीया, हम कर्मन ते न्यारे हो।।
यह मत को कोइ बिरला बूझै, सो सतगुरु हो बैठे हो।
मत कबीर काहू को थापे, मत काहू को मेटे हो।।

241

ज्ञान आरती इमरित बानी, पूरन ब्रह्म लेव पहिचानी।।
जिनके हुकुम पवन अरुपानी, तिनकी गति कोई बिर्ले जानी।।
तिरदेवा मिलि जोति बखानी, निरंकार की अकथ कहानी।।
दृष्टि बिना दुनिया बौरानी, भरम भरम भटकै नर खानी।।
जो आसा सबहि मिलि ठानी, साहिब छाड़ि जम हाथ बिकानी।।
गगन बाव गरजै असमाना, निःचै धुजा पुरुष फहराना।।
कहै कबीर सोइ संत सियाना, जिन जिन सबद गुरुन कैमाना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

242

हीरा वहां भंजैये, जहं कोइ रतन पारखी पैये॥ टेक॥
बस्तु हमारी अगम अगोचर, जाइ सराफा लैये।
जहां जाइ जम हाथ पसारै, तहं तुम बस्तु छिपैये॥
मूल कै डांड़ी तत्त कै पलरा, ज्ञान कै डोर लगैये।
मासा पांच पचीस रती के, तोला तीन तुलैये॥
तोल ताल के जमा सुलाखा, तब वा के घर जैये।
जौहरि नाम अनादी के रे, तहं तुम बस्तु दिखैये॥
चलत फिरत में बहुतक ठग हैं, तिन को नहिं दिखलैये।
कहै कबीर भाव के सौदा, पूरा गांठि लगैये॥

243

अपनपौ आपुहि ते बिसरो॥ टेक॥
जैसे स्वान कांच मंदिर में भ्रम से भूंकि मरो॥
ज्यों केहरि बपु निरख कूप जल प्रतिमा देखि गिरो॥
वैसे ही गज फटिक सिला में, दसनन आनि अड़ो॥
मरकट मूठि स्वाद नहिं बहुरै, घर घर रटत फिरो॥
कहै कबीर नलनी के सुगना तोहि कवन पकरो॥

244

हरि दरजी का मरम न पाया, जिन यह चोला अजब बनाया॥
पानी की सुई पवन कै धागा, आठ मास दस सीवत लागा॥
पांच तत्त कै गुदरी बनाई, चांद सुरज दुई थेगली लगाई॥
जतन जतन करि मुकट बनाया, ता बिच हीरा लाल जड़ाया॥
आपहि सीवे आप बनावे, प्रान पुरुष को ले पहिरावे॥
कहै कबीर सोइ जन मेरा, या चोले का करै निबेरा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

245

जोंगवै निस बासर जोग जती।। टेक।।
जैसे सोना जोगवत सोनरा, जाने देत न एक रती।।
जैसे कृपिन कनी को जोगवै, क्या राजा क्या छत्रपती।।
जैसे ब्रह्मा बिस्नुहि जोगवत, जरति पिया संग होत सती।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, कोइ कोइ बचि गये सूर सती।।

246

डुगडुगी सहर में बाजी हो।। टेक।।
आदि साहिब अदली आये, पकरे पंडित काजी हो।।
कोतवालन के गुरुआ पकरे, पांच पचीस समाजी हो।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, रैयत हो गई राजा हो।।

247

कंवल के भंवरा बिछुड़ल हों, जहं कोइ न हमार।।
भौजल नदिया भयावन हो, बिन जल कै धार।।
ना देखूं नाव न बेड़ा हो, कैसे उतरब पार।।
सत्त के सबद की नहरिया हो, खेइ उतरब पार।।
दास कबीर निरगुन गावल हो, संत लेहु बिचार।।

248

आऊं गान जाऊं गान मरूंगा न जिऊंगा। गुरु के साथ अमी रस पिऊंगा।।
कोई फेरै माला कोई फैरै तसबी। देखो रे लोगो दोनों कसबी।।
कोई जावे मक्के कोई जावै कासी। दोऊ के गल बिच परि गइ फांसी।।
कोई पूजै मड़ियां कोई पूजै गौरां। दोऊ की मतियां हरिलई चोरां।।
कहत कबीर सुनो नर लोई। हम न किसी के न हमारा कोई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

249

चली चल मग में का भरवावै।।टेक।।
नई बहुरिया गौने आई, लहबर लहबर होय।
इन बातन में नफा नहीं है, सुधी सड़क टटोय।।
तोहुं बहुरिया अजहुं न मानै, डारयो खलक बिलोय।
पिया मिले पीहर को रोवै, लाज न आवै तोंहि।।
सृंगी ऋषि तो बन के बासी, वो भी डारे खोय।
नैन मारि पलकों में राखे, पल में डारे बिगोय।।
सोहं नारी अधिक दुलारी, पिय की प्यारी होय।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जबरदस्त की जोय।।

250

जग में सोइ बैराग कहावै।।टेक।।
आसन मारि गगन में बैठे, दुर्मति दूरि बहावै।।
भूख प्यास औ निद्रा साधै, जियते तनहिं जरावै।।
भौसागर के भरम मिटावै, चौरासी जिति आवै।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, भाव भक्ति मन लावै।।

251

बलिहारी अपने साहिब की, जिन यह जुक्ति बनाई।
उनकी सोभा कहि बिधि कहिये, मो से कही न जाई।।
बिना जोत की जहं उंजियारी, सो दरसै वह दीपा।
निरतैं हंस करैं कौतूहल, वोही पुरुष समीपा।।
झलकै पद्म नाना बिधि बानी, माथे छत्र बिराजै।
कोटिन भानु चन्द्र की क्राँती, रोम रोम में छाजै।।
कर गहि बिहंसि जबै मुख बोले, तब हंसा सुख पावै।
अंस बंस जिन बूझि बिचारी, सो जीवन मुक्तावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौदह लोक बेद का मंडल, तहं लगि काल दुहाई।
लोक बेद जिन फंदा काटी, ते वह लोक सिधाई।।
सात सिकारी चौदह पारिंद, भिन्न भिन्न निस्तावै।
चार अंस जिन समुझि बिचारी, सो जीवन मुक्तावै।।
चौदह लोक बसै जम चौदह, तहं लगि काल पसारा।
ता के आगे जोति निरंजन, बैठे सून्य मंझारा।।
सोरह खंड अच्छर भगवाना, जिन यह सृष्टि उपाई।
अच्छर कला से सृष्टी उपजी, उनहीं माहिं समाई।।
सत्रह संख पै अधर द्वीप जहं, सब्दातीत बिराजै।
निरतै संखी बहु बिधि सोभा, अनहद बाजा बाजै।।
ता के ऊपर परम धाम है, मरम न कोऊ पाया।
जो हम कही नहीं कोउ मानै, ना कोउ दूसर आया।।
बेदन साखी सब जिव अरुझे, परम धाम ठहराया।
फिर फिर भटके आप चतुर होइ, वह घर काहु न पाया।।
जो कोइ होइ सत्य का किनका, सो हम को पतियाई।
और न मिले कोटि कहि थाके, बहुरि काल घर जाई।।
सोरह संख के आगे समरथ, जिन जग मोहिं पठाया।
कहै कबीर आदि की बानी, बेद भेद नहिं पाया।।

252

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहं पूरन पुरुष हमारा।। टेक।।
जहं नहिं सुख दुख साच झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा।
नहिं दिन रैन चन्द नहिं सूरज, बिना जोति उंजियारा।।
नहिं तहं ज्ञान ध्यान नहिं जप तप, बेद कितेब न बानी।
करनी धरनी रहनी गहनी, ये सब उहां हिरानी।।
धर नहिं अधर न बाहर भीतर, पिंड ब्रह्मण्ड कछु नाहीं।
पांच तत्त्व गुन तीन नहीं तहं, साखी सब्द न ताहीं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूल न फूल बेलि नहिं बीजा, बिना बृच्छ फल सोहै।
ओहं सोहं अर्ध उर्ध नहिं, स्वासा लेख न कोहै॥
नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई, नहिं सूच्छम अस्थूलं।
नहिं अच्छर नहिं अविगति भाई, ये सब जग के भूलं॥
जहां पुरुष तहवां कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना।
हमरी सैन लखै जो कोई, पावै पद निरबाना॥

253

हंसा जगमग जगमग होई॥टेक॥
बिन बादर जहं बिजुली चमकै, अमृत बर्षा होई।
ऋषि मुनि देव करै रखवारी, पिये न पावै कोई॥
राति दिवस जहं अनहद बाजै, धुनि सुनि आनंद होई।
जोति बरै साहिब के निसु दिन, तकि तकि रहत समोई॥
सार सब्द की धुनी उठत है, बूझै बिरला कोई।
झरना झरै जूह के नाके, (जेहिं) पियत अमर पद होई॥
साहिब कबीर प्रभु मिले बिदेही, चरनन भक्ति समोई।
चेतनवाला चेत पियारे, नहिं तौ जात बहोई॥

254

सुरति से देखिले वहि देस॥टेक॥
देखत देखत दीसन लागे, मिटिगे सकल अंदेस॥
वहं नहिं चन्द वहां नहिं सूरज, नाहिं पवन परवेस॥
वहं नहिं जाप वहां नहिं अजपा, निःअच्छर परबेस॥
वहं के गये बहुरि नहिं आये, नहिं कोउ कहा संदेस॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गहु संतगुरु उपदेस॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

255

हंसन का इक देस है, तहं जाय न कोई।
काग बरन छूटे नहीं, कस हंसा होई।।
हंस बसै सुख सागरे, झीलर नहिं आवै।
मुक्ताहल को छाड़ि कै, कहुं चुंच न लावै।।
मानसरोवर की कथा, बकुला का जानै।
उन के चित तलिया बसै, कहो कैसे मानै।।
हंसा नाम धराइ कै, बकुला संग भूले।
ज्ञान दृष्टि सूझै नहीं, वाही मति झूले।।
हंसा उड़ि हंसा मिले, बकुला रहि न्यारा।
कहैं कबीर उठि ना सकै, जड़ जीव बिचारा।।

256

हंसा गवन बड़ि दूर, साजन मिलना हो।।टेक।।
ऊंची अटरिया पिया कै दुअरिया, गगन चढ़ै कोइ सूर।।
यहि बन बोलत कोइल कोकिला, वोहि बन बोलत मोर।।
अंतर बीच प्रेम कै बिरवा, चढ़ि देखब देस हजूर।।
कह कबीरे सुनु पिय की प्यारी, नाचु घुंघट करि दूर।।

257

चलो हंसा वा लोक में, जहं प्रीतम प्यारा।।टेक।।
अगम पंथ सूझै नहीं, नहिं दिस ना द्वारा।
नाम के पेच घुमाइ कै, राहु जग से न्यारा।।
रैन दिवस उहवां नहीं, नहिं रबि ससि तारा।
जहां भंवर गुंजार है, गति अगम अपारा।।
मात पिता सुत बधु है, सब जग्त पसारा।
इहां मिले उहां बिछुरे, हंसो होइ न्यारा।।
निरगुन रूप अनूप है, तन मन धन वारा।
कहै कबीर गुरु ज्ञान में, रहु सुरति सम्हारा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

258

कहौ उस देस की बतियां, जहां नहिं होत दिन रतियां॥
नहीं रबि चन्द्र औ तारा, नहीं उंजियार अंधियारा॥
नहीं तहं पवन औ पानी, गये वहि देस जिन जानी॥
नहीं तहं धरनि आकासा, करै कोइ संत तहं बासा॥
उहां गम काल की नाहीं, तहां नहिं धूप औ छाहीं॥
न जोगी जोग से ध्यावै, न तपसी देह जरवावै॥
सहज में ध्यान से पावै, सुरति का खेल जेहि आवै॥
सोहंगम नाद नहिं भाई, न बाजै संख सहनाई॥
निहच्छर जाप तहं जापै, उठत धुन सुन्न से आपै॥
मंदिर में दीप बहु बारी, नयन बिनु भई अंधियारी॥
कबीरा देस है न्यारा, लखै कोई नाम का प्यारा॥

महिमा नाम

259

सुरति नाम से अटकी॥ टेक॥
करम भरम औ बेद बड़ाई, या फल से सटकी।
नाम के चूके पार न पैहौ, जैसे कला नट की॥
जागत सोवत सोवत जागत, मोहिं परै चट सी।
जैसे पपिहा स्वांति बुन्द को, लागि रहै रट सी॥
भरम मेटुकिया सिर के ऊपर, सो मेटुकी पटकी।
हम तो अपनी चाल चलत हैं, लोग कहैं उलटी॥
प्रीत पुरानी नई लगन है, या दिल में खटकी।
और नजर कछु आवत नाहीं, नहिं मानै हटकी॥
प्रेम की डोरी में मन लागा, ज्ञान डोर झटकी।
जैसे सलिता सिंधु समानी, फेर नहीं पलटी॥
गहु निज नाम खोज हिरदे में, चीन्हि परै घट की।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फेर नहीं भटकी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

260

अजर अमर इक नाम है सुमिरन जो आवै॥टेक॥
बिन मुखड़ा से जप करो, नहिं जीभ डुलावो।
उलटि सुरति ऊपर करो, नैनन दरसावो॥
जाहु हंस पच्छिम दिसा, खिरकी खुलवावो।
तिरबेनी के घाट पर, हंसा नहवावो॥
पानी पवन कि गम नहीं, वोहि लोक मंझारा।
ताही बिच इक रूप है, वोहि ध्यान लगावो॥
जिमीं असमान उहां नहीं, वो अजर कहावै।
कहै कबीर सोइ साधु जन, वा लोक मंझावै॥

261

हंसा करो नाम नौकरी॥टेक॥
नाम बिदेही निसु दिन सुमिरै, नहिं भले छिन घरी॥
नाम बिदेही जो जन पावै, कभुं न सुरति बिसारी॥
ऐसो सब्द सतगुरु से पावै, आवा गवन हरी॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, पावै अमर नगरी॥

262

ब्योपारी निज नाम का, हाटे चलु भाई॥टेक॥
साध संत गहकी भये, गुरु हाट लगाई।
अग्र वस्तु इक मूल है, सौदागर लाई॥
सील संतोष पलरा भये, सूरति करि डांड़ी।
ज्ञान बटखरा चढ़ाइ कै, पूरा करु भाई॥
करि सौदा घर को चले, रोके दरबानी।
लेखा मांगे बस्तु का, कहं के ब्योपारी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अच्छर पुरुष इक मूल है, गुरु दीन्ह लखाई।
इतना सुनि लज्जित भये, सिर दीन्ह नवाई।।
हाट गली पचरंग की, भव करत दलाली।
जो होवै वहि पार को, तिन्ह देत उतारी।।
अमर लोक दाखिल भये, तजि कै संसारा।
खबर भई दरबार पुरुष, पै नजर गुजारा।।
कहै कबीर बैठे रहो, सिख लेहु हमारी।
काल कष्ट ब्यापै नहीं, यही नफा तुम्हारी।।

263

सुमिरन बिन अवसर जात चली।।टेक।।
बिन माली जस बाग सूखि गै, सीचे बिन कुम्हिलात कली।।
छमा संतोष जबै तन आवै, सकल ब्याध तब जात टली।।
पांचों तत्त बिचारि के देखो, दिल की दुरमति दूर करी।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सकल कामना छोड़ि चली।।

महिमा शब्द

264

हंसा सब्द परख जो आवै।
करि अकास चित तान पार को, मूल सब्द तब पावै।।
पांच तत्त पच्चीस प्रकिरती, तीनों गुनन मिलावै।
अंक परवाना जबही पावै, तब वह संत कहावै।।
अंक परवाना सब्द अतीत है, जो निसु दिन गोहरावै।
अंस बंस है मलयागिरि परसत, सत्त सबै बिधि पावै।।
एकै सब्द सकल जग पूरा, सुरति रहनि जब आवै।
चांद सुरज दुई साखी देई, सुखमनि चंवर ढुरावै।।
कहै कबीर सुनो भाई हंसा, या पद को अरथावै।
जगमग जो झलाझल झलकै, निर्मल पद दरसावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

265

हंस परखु सब्द टकसारा॥टेक॥
बिन पारख कोई पार न पावै, भूला जग संसारा।
सब आये ब्योपार करन को, घर की जमा गंवाया॥
राम रतन प्रहलाद पारखा, नित उठि पारख कीन्हा।
इंद्रासन सुख आसन लीन्हा, सार सब्द नहिं चीन्हा॥
अब सुनि लेहु जवाहिर मोदी, खरा खोट नहिं बूझा।
सिव गोरख अस जोगी नाहीं, उनहूं को नहिं सूझा॥
बड़ बड़ साधू बांधे छोरे, राम भाग दुइ कीन्हा।
'रारा' अच्छर पारख लीन्हा, 'मा' हिं भरम तज दीन्हा॥
जो कोइ होय जौहरी जग में, सो या पद को बूझै।
तीन लोक औ चार लोक लौं, सब घट अंतर सूझै॥
कहै कबीर हम सब को देखा, सबै लाभ को धावै।
सतगुरु मिलै तो भेद बतावै, ठीक और तब पावै॥

266

इक दिन साहिब बेनु बजाई।
सब गोपिन मिल धोखा खाई, कहैं जसुदा के कन्हाई॥
कोई जंगल कोइ देवल बतावै, कोई द्वारिका जाई।
कोइ अकास पाताल बतावै, कोई गोकुल ठहराई॥
जल निर्मल परवाह थकित भे, पवन रहे ठहराई।
सोरह बसुधा इकइस पुर लों, सब मुर्छित होय जाई॥
सात समुद्र जबै घहरानो, तैंतिस कोटि अघानो।
तीन लोक तीनों पुर थाके, इन्द्र उठों अकुलानो॥
दस औतार कृष्न लों थाका, कुरम बहुत सुख पाई।
समुझि न परो वार पार लों, या धुनि कहं तें आई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेसनाग और राजा वासुक, बराह मुर्छित होइ आई।
देव निरंजन आद्या माया, इन दुनहुन सिर नाई।।
कहैं कबीर सतलोक के पुरुष, सब्द केर सरनाई।
अमी अंक ते कुहुक निकारी, सकल सृष्टि परछाई।।

साध महिमा

267

साधु घर सील संतोष बिराजै।
दया सरूप सकल जीवन पर, सब्द सरोतरि गावै।।
जहां जहां मन पौरत धावै, ताके संग न जावै।
आसन अदल अरु छमा अग्र धुज, तन तजि अंत न धावै।।
ततबादी सतगुरु पहिचाना, आतम दीप प्रगासा।
साधू मिलै सदा सीतल गति, निसु दिन सब्द बिलासा।।
कहैं कबीर प्रीति सतगुरु से, सदा निरंतर लागी।
सतगुरु चरन हृदय में धारे, सुख सागर में बासी।।

268

धन्य भाग जाकै साध पाहुना आये।।टेक।।
भयो लाभ चरन अमृत लै, महा प्रसाद कि आसा।
जौन मता हम जुग जुग ढूंढ़ो, सो साधन के पासा।।
जौन प्रसाद देवन को दुर्लभ, साध से नित उठि पाये।
दगाबाज दुरमति के कारन, जनम जनम डहकाये।।
कथा ग्रंथ होय द्वारे पर, भाव भक्ति समझावैं।
काम क्रोध मद लोभ निवारे, हिलि मिलि मंगल गावैं।।
सील संतोष बिबेक छमा धरि, मोह के सहर लुटावैं।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अमर लोक पहुंचावैं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

269

बसै अस साध के मन नाम॥टेक॥
जैसे हेत गाय बछवा से, चाटत सूखा चाम॥
कामी के हिये काम बसो है, सूम की गांठी दाम॥
जस पुरइन जल बिन कुम्हिलावै, वैसे भगत बिन नाम॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, पद पाये निरबान॥

270

नगर में साधू अदल चलाई॥टेक॥
सार सब्द को पटा लिखावो, जम से लेहु लड़ाई।
पांच पचीस करो बस आपन, सहजे नाम समाई॥
सुरति सब्द एक सम राखो, मन का अदल उठाई।
काम क्रोध की पूंजी तौलो, सहज काल टरि जाई॥
सूरति उलटि पवन को सोधो, त्रिकुटी मधि ठहराई।
सोहं सोहं बाजा बाजै, अजब पुरी दरसाई॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सतगुरु बस्तु लखाई।
अरध उरध बिच तारी लावो, तब वा लोके जाई॥

271

है कोइ अदली अदल चलावैं।
नगर में चोर मूसन नहिं पावै॥
संतन के घर पहरा जागै।
फिरि वो काल कहां होइ लागै॥
पांचों चोर छठे मन राजा।
चित के चौतरा न्याय चुकायै॥
लालच नदिया निकट बहुत है।
लोभ मोह सब दूरि बहावै॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधों।
गगन में अनहद डंक बजावै॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिरह और प्रेम

272

जो कोइ येहि बिधि प्रीति लगावै।।टेक।।
गुरु का नाम ध्यान ना छूटै, परगट ना गोहरावै।।
कुरम सुतन को धरतु है ऊंचे, आप उद्र को धावै।
निसु दिन सुरत रहै अंडन पर, पल भर ना बिसरावै।।
जैसे चात्रिक रटै स्वांति को, सलिता निकट न आवै।
दीनदयाल लगन हितकारी, स्वांती जल पहुंचावै।।
फूटि सुगंध कंज की जैसे, मधुकर के मन भावै।
ह्वै गइ सांझि बंधि गे संपुट, ऐसी भक्ति कहावै।।
जैसे चकोर ससी तन निरखे, तन की सुधि बिसरावै।
ससि तन रहत एक टक लागो, तब सीतल रस पावै।।
ऐसी जुगत करै जो कोई, तब सो भगत कहावै।
कहै कबीर सतगुरु की मूरति, तेहि प्रभु दरस दिखावै।।

273

बिरहिनि तो बेहाल है, को जानत हाला।।टेक।।
सजन सनेही नाम का, हर दम का प्याला।
पीवैगा कोइ जौहरी, सतगुरु मतवाला।।
पीवत प्याला प्रेम का, हम भइ हैं दिवानी।
कहा कहूं पिय रूप की, कछु अकथ कहानी।।
नाचन निकसी हे सखी, का घूंघट काढ़ो।
नाच न जाने बावरी, कहे आंगन टेढ़ो।।
निःअच्छर के ध्यान में, मेटै अंधियाला।
कहै कबीर कोइ संत जन, बिच लावत ख्याला।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

274

साहिब हमरे सनेसी आये।।टेक।।
आये सनेसी मोरे आदि घरा से, सोवत मोहिं जगाये।।
पाती बांचि जुड़ानी छाती, नैनन में जल धाये।।
धन्य भाग मोर सुनो हो सखी री, अजर अमर बर पाये।।
साहिब कबीर मोहिं मिलिगे सतगुरु, बिगरल मोर बनाये।।

275

अमी रस भंवरा चाखि लिया।।टेक।।
जा के घट में प्रेम प्रगासा, सो बिरहिन काहे बारै दिया।।
अंते न जाये अपन घट खोजै, सो बिरहिनि निज पावै पिया।।
पाव पलक में तसकर मारूं, गुरु अपने को साखि दिया।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, जियतै यह तन जीति लिया।।

276

पिय को सोइ सुहागिन भावै।
चित चंदन को निसु दिन रगरै, चुनि चुनि अंग चढ़ावै।।
अति सुगंध बोलै मुख बानी, यहि बिधि खसम मनावै।
दाबत चरन दगा नहिं दिल में, काग कुबुधि बिसरावै।।
बीते दिवस रैन जब आई, कर जोरि सेवा लावै।
इक इक कलियां चुनै महल में, सुंदर सेज बिछावै।।
सुरति चंवर लै सनमुख झारै, तबै पलंग पौढ़ावै।
मगन रहै नित गगन झरोखे, झलकत बदन छिपावै।।
मिलि दुलहा जब दुलहिनि सो है, दिल में दिल ही मिलावै।
कहै कबीर भाग वहि धन के, पतिब्रता बनि आवै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

277

अलमस्त दिवानी, लाल भरी रंग जोबनियां।
रस मगन भरी है, देखि लालन की सेजरियां।।
कर पंखा डुलावै, संग सोहंग सहेलरियां।
जहं चंद न सूरा, रैन नहीं वहं भोरनियां।।
जहं पवन न पानी, बिनु बादल घनघोरनियां।
जहं बिजुली चमकै, प्रेम अमी की लगीं झरियां।।
वहां काया न माया, कर्म नहीं कछु रेखनियां।
जहं साहिब कबीर है, बिगसित पुहुप प्रकासनियां।।

278

जेहि कुल भग्त भाग बड़ होई।। टेक।।
गनिये न बरन अबरन रंक धनी, बिमल बास निज सोई।।
बाम्हन छत्री बैस सुद्र सब, भग्त समान न कोई।।
धन वह गांव ठांव अस्नाना, ह्वै पुनीत संग सब लोई।।
होत पुनीत जपे सतनामा, आपु तरै तारै कुल दोई।।
जैसे पुरइनि रहै जल भीतर, कहै कबीर जग में जन सोई।।

सूरमा

279

लागा मोरे बार कठिन करका।। टेक।।
ज्ञान बान धरि सतगुरु मारा, हिरदे माहिं समाना।
बीच करेजा पीर होत है, धीरज ना धरना।।
करिया काटे जिये रे भाई, गुरु काटे मरि जाई।
जिनके लागे सब्द के डंडा, त्यागि चले बादशाही।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह दुनिया सब भई दिवानी, रोवत है धन कां।
दौलत दुनिया छोड़ि दिया है, भागि चलो बन कां।।
चारि दिनां की है जिंदगानी, मरना है सब का।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गाफिल है कब का।।

280

बाजत कींगरी निरबान।। टेक।।
सुनि सुनि चित भइ बावरी, रीझे मन सुल्तान।
सील संतोष कै बख्तर पहिरी, सत दृष्टी परवान।।
ज्ञान सरोही कमर बांधि लै, सूरा रनहिं समान।
प्रेम मगन ह्वै घायल खेलै, कायर रन बिचलान।।
सूरा के मैदान में, का कायर को काम।
सूर को सूरा मिलै, तब पूरा संग्राम।।
जीवत मिरतक ह्वै रहु जोधा, करो बिमल असनान।
उनमुनि दृष्टि गगन चढ़ि जावो, लागै त्रिकुटी ध्यान।।
रोम रोम जाको पद परगासा, तो को निरमल ज्ञान।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, करो इस्थिर मन ध्यान।।

281

भाई ऐन लड़ै सोइ सूरा।। टेक।।
मन मारि अगमपुर लेहू, चित्रगुप्त परे डेरा करहू।।
जहं नाहिं जनम अरु मरना, जम आगे न लेखा भरना।।
जमदूत है तेरा बैरी, का सोवै नींद घनेरी।।
जहं बांधि सकल हथियारा, गुरु ज्ञान को खड़ग सम्हारा।।
गढ़ बस किये पांचों थाना, जहं साहिब़ है मिहरबाना।।
जहं बाजै जुझावर बाजा, सब कायर उठि उठि भाजा।।
कोइ सूर अड़े मैदाना, तहं काटि कियो खरिहाना।।
जहं तीन तुपक नहिं छूटे, तहं सब्दन सों गढ़ टूटे।।
जहं बाजै कबीर को डंका, तहं लूटि लिये जम बंका।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिनती

282

अबकी बार उबारिये, मेरी अरजी दीनदयाल हो।।टेक।।
आई थी वा देस से हो, भई परदेसिन नारि।
वा मारग मोहिं भूलि गयो, (जासे) बिसरि गयो निज नाम हो।।
जुगन जुगन भरमत फिरी हो, जम के हाथ बिकाय।
कर जो रे बिनती करों हो, मिलि के बिछुर नहिं जाय हो।।
बिषम नदी बिकरार है हो, मन हठ करिया धार।
मोह मगर वा के घाट में (जिन) खायो सुर नर झारि हो।।
सब्द जहाज कबीर के हो, सतगुरु खेवनहार।
कोइ कोइ हंसा उतरिहैं हो, पल में देउं छोड़ाइ हो।।

283

कब लखि हौं बंदी-छोर।।टेक।।
जरा मरन मेटो जिय केरो, जियत मरत दुख जोर।।
हे साहिब मोहिं अरज न आवै, पुरवो ललसा मोर।।
हे साहिब मैं बारी भोरी, आखिर आमिन तोर।।
हे साहिब मोर भरम मिटावो, राखो चरन कि ओर।।
कहै कबीर सुनो मोर आमिनि, ले चलुं फंदा तोड़।।

284

साहिब मैं ना भूलौं दिन राती।।टेक।।
जैसे सींपि रहै जल भीतर, चाहत नीर सुवांती।
बारह मास अमी रस बरसै, ता से नाहिं अघाती।।
जैसे नारि चहै पिय आपन, रहै बिरह रस माती।
अंतर वा के उठै मलोला, बिरह दहै तन छाती।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गम्म अगम कोउ जानत नाहीं, रोकै काल अचानक घाटी।
या ते नाम से लगन लगाओ, भक्ति करो दिन राती।।
साहिब कबीर अगम के बासी, नाहिं जाति नहिं पांती।
निसु दिन सतगुरु चरन भरोसे, साध के संग संगाती।।

दीनता

285

गरीबी है सब में सरदार।।टेक।।
उलटि कै देखो अदल गरीबी, जा की पैनी धार।।
सतजुग त्रेता द्वापर कलिजुग, परलय तारनहार।।
दुखभंजन सुखदायक लायक, बिपति बिडारनहार।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, हंसा उबारनहार।।

286

साहिब को मेहीं होय सों पावै।।टेक।।
मोटी माटी परै कोंहरा घर, उठि चार लात लगावै।
वो माटी को मेहीं करि सानै, तबै चाक बैसावै।।
मोटा सूत परे कोरिया घर, मेंही मेंही गोहरावै।
वोही सूत को ताना तानै, मेहीं कहां से आवै।।
बिखरी खंड़ परै रेती में, कुंजर मुख ना आवै।
मान बड़ाई छोड़ बावरे, चिंउटी होइ चुनि खावै।।
बड़े भये तौ सब जग जानै, सब पर अदल चलावै।
कहै कबीर बड़ बांधा जैहै, वा को कौन छुड़ावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भेद बानी

287

उतर दिसा पंथ अगम अगोचर, अधर अंग इक देस हो।
चल हो सजन वो देस अमर है, जहं हंसन को बास हो।।
आवै जाय मरै ना कबहूं, रहै पुरुष के पास हो।
आलस मोह एको नहिं ब्यापौ, सपन सूरति जास हो।।
पीवो हंस अमृत सुख धारा, बिन सुरही के दूध हो।
संसय सोग कछू नहिं मन में, बिन मुक्ता गुन सूझ हो।।
सेत सिंहासन सेत बिछौना, जहं बसै पुरुष हमार हो।
अच्छर मूल सदा मुख भाखौ, चित दे गहहु सुहाग हो।।
सेत तंबूल समरथ मुख छाजै, बैठे लोक मंझार हो।
हंसन के सिर मटुक बिराजै, मानिक तिलक लिलार हो।।
आमिनि ह्वै उतरे भवसागर, जिन तारे कुल बंस हो।
सतगुरु भाव कछनी तन कपरा, मिलि लेहु पुरुष कबीर हो।।

288

पियत मरहमी यार, अमी रस बुंद झरै।। टेक।।
बिन सागर के अमृत भरिया, बिना सीप के मोती।
संत जवाहिर पारख कीन्हा, अग्र लै बस्तु धरी।।
डोरी डगर गगर सिर ऊपर, गेडुर मद्ध धरी।
चेतन चलै सुरति नहिं चूकै, उलटा नीर चढ़ी।।
टोह लिया सतसंग पाइ कै, बिन गुरु कौन कहीं।
सोना थीर कसौटी नाहीं, कैसे कै समुझि परी।।
भेदी होय सो भरि भरि पीवै, अनभेदी भरम फिरी।
कहै कबीर मिलैं जो सतगुरु, जीवन मुक्ता करी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

289

जो कोइ निरगुन दरसन पावै।। टेक।।
प्रथमें सुरति जमावैं तिल पर, मूल मंत्र गहि लावै।
गगन गराजै दामिनि दमकै, अनहद नाद बजावै।।
बिन जिभ्या नामहिं को सुमिरै, अमि रस अजर चुवावै।
अजपा लागि रहै सूरति पर, नैन न पलक डुलावै।।
गगन मंदिल में फूल फुलाना, उहां भंवर रस पावै।
इंगला पिंगला सुखमनि सोधै, प्रेम जोति लौ लावै।।
सुन्न महल में पुरुष बिराजै, जहां अमर घर छावैं।
कहै कबीर सतगुरु बिन चीन्हे, कैसे वह घर पावै।।

290

पिया कै खोजि करै सो पावै।। टेक।।
ई करता बसिया घट भीतर, कहत न कछु बनि आवै।
स्वांसा सार सुरति में राखै, त्रिकुटी ध्यान लगावै।।
नाभि कमल अस्थान जीव का, स्वांसा लगि लगि जावै।
ठहरत नाहिं पलक निस बासर, हाथ कवन बिधि आवै।।
बंक नाल होइ पवन चढ़ावै, गगन गुफा ठहरावै।
अजपा जाप जपै बिनु रसना, काल निकट नहिं आवै।।
ऐसी रहनि रहै निस बासर, करम भरम बिसरावै।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बहुरि न भवजल आवै।।

291

अबधू हंस देस है न्यारा।। टेक।।
तीरथ ब्रत औ जोग जाप तप, सुरति निरति से न्यारा।
तीन लोक से बाहर डोलै, करम भरम पचि हारा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोटि कोटि मुनि ब्रह्मा होइगे, कोइ न पाये पारा।
मंतर जाप उहां ना पहुंचै, सुरति करो दरबारा।।
सुख सागर में बासा कीजै, मुकता करो अहारा।
बंकनाल चढ़ि गरजन गरजै, सतगुरु अधर अधारा।।
कहै कबीर सुनो हो अबधू, आप करो निरवारा।
हंसा हमरे मिले हंसन में, पुनि न लखे भवजारा।।

292

सतगुरु सब्द गही मोरे हंसा, का जड़ जन्म गंवावसु हो।।टेक।।
त्रिकुटी धार बहै इक संगम, बिना मेघ झरि लावसु हो।
लोका लौकै बिजुली तड़पै, अजब रूप दरसावसु हो।।
करहु प्रीति अभिअंतर उर में, कवने सुर लै गावसु हो।
गगन मंदिर में जोति बरतु है, तहां सुरत ठहरावसु हो।।
इंगला पिंगला सुखमनि सोधो, गगन पार ठहरावसु हो।
मकर तार के द्वारे निरखो, ऊपर गढ़ी उठावसु हो।।
बंकनाल षट खिरकि उलटिगै, मूल चक्र पहिरावसु हो।
द्वादस कोस बसै मोर साहिब, सूना सहर बसावसु हो।।
दूनों सरहद अनहद बाजै, आगे सोहंग दरसावसु हो।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अमर लोक पहुंचावसु हो।।

293

हंसा कोइ सतगुरु गम पावै।।टेक।।
उजल बास निसु बासर देखै, सीस पदम झलकावै।
राव रंक सब सम करि जानै, प्रगट संत गुन गावै।।
अति सुख सागर नर्क स्वर्ग नहिं, दुरमति दूर बहावै।
जहं देखूं तहं परसत चंदा, फनि मनि जोति बरावै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रमै जगत में ज्यों जल पुरइनि, यहि बिधि लेप न लावै।
जल के पार कंवल बिगसाना, मधुकर के मन भावै।।
बरन बिबेक भेद सब जाना, अवरन बरन मिलावै।
अटक भटक आड़ नहिं कबहीं, घट फूटे मिलि जावै।।
जब का मिलना अब मिलि रहिये, बिछुरत छुरी लखावै।
कहै कबीर काया का मुरचा, सिकल किये बनि आवै।।

294

निरभय होइ कै जागु रे मन मोर।। टेक।।
दिन के जागो राति के जागो, मूसै ना घर चोर।।
बावन कोठरी दस दरवाजा, सब में लागैं चोर।।
आगे जेठ जिठनियां पाछे, संग में देवर तोर।।
कहै कबीर चलु गुरु के मत में, का करिहै जम जोर।।

295

देखब साईं कै बजार, सखी संग हमहुं चलब अब।। टेक।।
सासु के आये पाहुना, ननदी के चालनहार।
खिरकी के पैंड़ा लै चले हैं, खुलि गये कपट किवार।।
चार जतन का बिना खटोलना, आले आले बांस लगाय।
पांच जना मिलि लै चले हैं, ऊपर से लालि उढ़ाय।।
भव सागर इक नदी बहतु हैं, रोवो कुल परिवार।
एक न रोवै उनकी तिरिया, जिन्ह के सिखावनहार।।
भवसागर के घाट पर, इक साध रहे बिकरार।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिररे उतरिगे पार।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

296

रासा परचे रास है, जानै कोइ जागृत सूरा।
सतगुरु की दाया भई, लखो जगमग नूरा।।
दो परबत के संधि में, लखो जगमग नूरा।
अद्भुत कथा अपार है, कैसे लागे तीरा।।
तन मन से परिचय करौ, सहजै ध्यान लगावो।
नाद बिन्द दोउ बांधि के, उलटा गगन चढ़ावो।।
अधर मध्य के सुन्न में, बोलै सब्द गंभीरा।
ज्यों फूलन में बास है, त्यों रमि रहे कबीरा।।

297

जुक्ति से परवान बावा, जुक्ति से परवाना बे।।टेक।।
मूल बांधो नाभि साधो, पियो हंसा पवन बे।
सुषमना घर करो आसन, मिटै आवागवन बे।।
तीन बांधो पांच साधो, आठ डारो काटि बे।
आव हंसा पियो पानी, त्रिबेनी के घाट बे।।
माय मार पिता को बांधो, घर को देव जराय बे।
ऐसो बाबा चतुर भेदी, गगन पहुंचै जाय बे।।
मार ममता टार तृस्ना, मैल डारो धोय बे।
कहै कबीर सुनौ साधो, आप करता होय बे।।

298

अबधू जानि राखु मन ठौरा, काहे को बाहर दौरा।।टेक।।
तो में गिरवर तो में तरवर, तो में रबि औ चन्दा।
तारा मंडल तोहि घट भीतर, तो में सात समुन्दा।।
ममता मेटि पहिर मन मुद्रा, ब्रह्म बिभूति चढ़ावो।
उलटा पवन जटा कर जोगी, अनहद नाम बजावो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
सील के पत्र छामा कै झोली, आसन दृढ़ करि कीजै।
अनहद सब्द होत धुन अंतर, तहां अधर चित दीजै।।
सुकदेव ध्यान धर्‌यो घट भीतर, तहां हुती कहं माला।
कहै कबीर भेष सोइ भूला, मूल छोड़ि गहि डाला।।

299

माई मैं तो दीनों कुल उंजियारी।। टेक।।
सास ससुर को लातन मारी, जेठ की मूछ उखारी।
रांध पड़ोसिन कीन्ह कलेवा, धरि बुढ़िया महतारी।।
पांच पूत कोखिया के खाये, छठएं ननद दुलारी।
स्वामी हमरे सेज बिछावैं, सूतब गोड़ पसारी।।
पांच खसम नैहर में कीन्हे, सोरह किये ससुरारी।
वा मुंडो का मूड़ मुड़ाऊं, जो सरवर करै हमारी।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, आपै करो बिचारी।
आदि अंत कोइ जानत नाहीं, नाहक जनम खुवारी।।

300

दिखलूं मैं सजनवां, पियवा अनमोल के।। टेक।।
दिखलूं मैं कायानगर में, काया पुरुषवा खोजि के।
कोहे सजनवां बिराजे भवनवां, दूनौं नयनवां जोरि कै।।
इंगला पिंगला सुषमन साधो, मनुवां आपन रोकि के।
दसईं दुअरिया लागी किवरिया, खोलो सब्द से जोरि के।।
रिमिझिमि रिमिझिमि मोती बरसै, हीरा लाल बटोरि के।
लौका लौकै बिजुली चमकै, झिंगुर बोलै झनकोरि के।।
कहै कबीर सुनौ भाइ साधो, यह पद है निर्बान के।
या पद के जो अर्थ लगावै, सोइ पुरुष अनमोल के।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

चेतावनी

301

तोरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया का रे सोवै।। टेक।।
पांच पचीस तीन है चोरवा, यह सब कीन्हा सोर।
बटोहिया का रे सोवै।।
जाग सबेरा बाट अनेड़ा, फिर नहिं लागै जोर।
बटोहिया का रे सोवै।।
भवसागर इक नदी बहतु है, बिन उतरे जाव बोर।
बटोहिया का रे सोवै।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, जागत कीजै भोर।।
बटोहिया का रे सोवै।।

302

दिन रात मुसाफिर जात चला।। टेक।।
जिन का चलना रैन सबेरा, सो क्यों गाफिल रहत परा।।
चलना सहर का कौन भरोसा, इक दिन होइ है पवन कला।।
मात पिता सुत बंधू ठाढ़े, आड़ि न सकै कोइ एक पला।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, देह धरे का यही फला।।

303

जागु हो काया गढ़ के मवासी।। टेक।।
जो बंदे तुम जागत रहि हौ, तुमहिं को मिलत सुहाग हो।।
जागत सहर में चोर मूसै, नहिं लूटै भंडार हो।।
अनहद सब्द उठे घट भीतर, चढ़ि के गगन गढ़ गाज हो।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सार सब्द टकसार हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

304

बंदे जागो अब भइ भोर।
बहुतक सोये जन्म सिराये, इहां नहीं कोइ तोर।।
लोभ मोह हंकार तिरिसना, संग लीन्हे कोर।
पछिताहुगे तुम आदि अंत से, जइहौ कवनी ओर।।
जठर अगिन से तोहि उबारे, रच्छा कीन्ह्यो तोर।
एक पलक तुम नाम न सुमिरे, बड़े हरामीखोर।।
बार बार समझाय दिखाऊं, कहा न माने मोर।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, ध्रिग जीवन जग तोर।।

305

का सेवो सुमिरन की बेरिया।। टेक।।
जिन सिरजा तिन की सुधि नाहीं, झकत फिरो झक झलनि झलरिया।।
गुरु उपदेस संदेस कहत हैं, भजन करो चढ़ि गगन अटरिया।।
नित उठि पांच पचीस कै झगरा, ब्याकुल मोरी सुरति सुंदरिया।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भजन बिना तोरी सूनी नगरिया।।

306

तन बैरागी ना करौ, मन हाथ न आवै।
पुरुष बिहूनी नारि को, नित बिरह सतावै।।
चोवा चंदन अर्गचा, घसि अंग चढ़ावै।
रोकि रहै मग नागिनी, जुग जुग भरमावै।।
मान बड़ाई उर बसै, कछु काम न आवै।
अष्ट कोट के भरम में, कस दरसन पावै।।
माया प्रान अकोर दे, कर सतगुरु पूरा।
कहै कबीर तब बाचिहौ, जम कागद चीरा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

307

मन बौरा रे जग में भूल परी, सतगुरु सुधि बिसरी।। टेक।।
आवत जात बहुत दिन बीते, जैसे रहट घरी।
निर्गुन नाम बिना पछितैहौ, फिर फिर येहि नगरी।।
मिथ्या बन तृस्ना के कारन, परजिव हतन करी।
मानुष जन्म भाग से पायो, सुधर के फिर बिगरी।।
जेहि कारन तुम निसि दिन धायो, धरे पाप मोटरी।
मातु पिता सुत बंधु सहोदर, सुगना कै ललरी।।
जग सागर मन भंवर भुलाना, नाना बिधि घुमरी।
तेहि से काल दिया बंदिखाना, चौरासी कोठरी।।
कालहिं धाय चीन्हि नहिं पाये, बहु प्रकार भरी।
ज्यों केहरि प्रतिबिम्ब देखि के, कूप में कूदि परी।।
जोरि जोरि बहुत तप गूंधे, भूसा की रसरी।
सत्तलोक की गैल बिसरि गे, परे जोनि जठरी।।
सतगुरु सरन हरन भव संकट, ता में चित्त न धरी।
पानी पाथर देव गोहराये, दर दर भटक मरी।।
सुख सागर आगर अबिनासी, ता में चित न धरी।
पासहिं रहा चीन्हि नहिं पाये, सुधि बुधि सकल हरी।।
निःचिंता निःतत्व निहच्छर, डोरी नहिं पकरी।
जा घर से तुम या घर आये, घर की सुधि बिसरी।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिरलहिं सूझि परी।
सत्तनाम परवाना पावै, ता से काल डरी।।

308

क्या सोवै गफलत के मारे, जागु जागु उठि जागु रे।
और तेरे कोइ काम न आवै, गुरु चरनन उठि लागु रे।।
उत्तम चोला बना अमोला, लगत दाग पर दाग रे।
दुइ दिन का गुजरान जगत में, जरत मोह की आग रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तन सराय में जीव मुसाफिर, करता बहुत दिमाग रे।
रैन बसेरा करि ले डेरा, चलन सबेरा ताक रे।।
ये संसार विषय रस माते, देखो समुझि बिचार रे।
मन भंवरा तजि बिष के बन को, चलु बेगम के बाग रे।।
केंचुलि करम लगाइ चित्त में, हुआ मनुष ते नाग रे।
पैठा नाहिं समुझ सुख सागर, बिना प्रेम बैराग रे।।
साहिब भजै सो हंस कहावै, कामी क्रोधी काग रे।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, प्रगटे पूरन भाग रे।।

309

सुल्तान बलख बुखारे का।। टेक।।
जिनके ओढ़न साल दुसाला, नवो तार दस तारे का।
सो तो लागे भार उठावन, नव मन गुदरा भारे का।।
जिन के खाना अजब सराहन, मिसरी खांड़ छुहारे का।
अब तो लागे बखत गुजारन, टुकड़ा सांझ सकारे का।।
जा के संग कटक दल बादल, नौ सै घोड़ कंधारे का।
सो सब तजि के भये औलिया, रस्ता धरे किनारे का।।
चुनि चुनि कलियां सेज बिछावै, डासन न्यारे न्यारे का।
सो मर्दों ने त्याग दिया है, देखो ज्ञान बिचारे का।।
सोलह सौ साहेलरि छाड़े, साहिब नाम तुम्हारे का।
कहै कबीर सुनो औलिया, फक्कर भये अखाड़े का।।

310

तुम तौ दिये नर कपट किवारी।। टेक।।
वहि दिन कै सुधि भूलि गयो हौ, कियो जो कौल करारी।
जाते भजन करौं दिन राती, गहिहौं सरन तुम्हारी।।
बार बार तुम अरज कियो है, कष्ट निवारु हमारी।
यहां आइ कै भूलि पर्‌यो है, कीयो बहुत लवारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपु भुलायो जगत भुलायो, सब को कियो संघारी।
नाम भजे बिनु कौन बचावै, बहुत कियो मतवारी।।
बार बार जंगल में धावै, आगि दियो परचारी।
बहुत जीव तुम परलय कीन्हा, कस होय हाल तुम्हारी।।
तुम्हरे बेद तो नरक बना है, अगिन कुंड में डारी।
मार पीटि के जम लै डारै, तब को करत गोहारी।।
बिन गुरु भक्ति के माता कैसी, जैसी बांझिन नारी।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भक्ती करो करारी।।

311

मुसाफिर जैहौ कौनी ओर।।टेक।।
काया सहर कहर है न्यारा, दुइ फाटक घनघोर।
काम क्रोध जहं मन है राजा, बसत पचीसो चोर।।
संसय नदी बहैं जल धारा, बिषय लहर उठै जोर।
अब का गाफिल सोवै बौरा, इहां नहीं कोइ तोर।।
उतर दिसा इक पुरुष बिदेही, उन पै करो निहोर।
दाया लागै तब लै जैहैं, तब पावो निज ठौर।।
पाछल पैंड़ा समुझो भाई, ह्वै रहो नाम कि ओर।
कहै कबीर सुनो हो साधो, नाहीं तो पैहौ झकझोर।।

312

धुबिया बन का भया न घर का।।टेक।।
घाटै जाय धुबिनिया मारै, घर में मारै लरिका।।
आज काल आपै फुटि जाई, जैसे ढेल डगर का।।
भूला फिरै लोभ के मारे, जैसे स्वान सहर का।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भेज न कहो नगर का।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

313

भजन कर बीती जात घरी।।टेक।।
गरभ बास में भगति कबूले, रच्छा आन करी।
भजन तुहार करब हम साहिब, पक्का कौल करी।।
वहं से आय हवा जब लागी, मा अमल करी।
दूध पिये मुसकात गोद में, किलकिल कठिन करी।।
खात पियत अैंड़ात गली में, चर्चा वह बिसरी।
ज्वान भये तरुनी संग माते, अब कहु कैसे करी।।
बृद्ध भये तन कांपन लागे, कंचन जात बही।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिरथा जनम गई।।

314

करो भजन जग आइ कै।।टेक।।
गरभ बास में भक्ति कबूले, भूलि गए तन पाइ कै।।
लगी हाट सौदा कब करिहौ, का करिहौ घर जाइ कै।।
चतुर चतुर सब सौदा कीन्हा, मूरुष मूल गंवाइ कै।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु के चरन चित लाइ कै।।

315

कोल्हुवा बना तेरा तेलिनी, पेरे संसार।।टेक।।
करम काठ कै कोल्हुवा हो, संसय परी जाठ।
लोभ लहर के कातर हो, जग पाचर लाग।।
तीरथ बरत कै बैल हो, मन देहु नधाय।
लोक लाज कै आंतरि हो, उबरि चलै न कोय।।
तिरगुन तेल चुआवै हो, तेलहन संसार।
कोइ न बचे जोगी जती, पेरे बारम्बार।।
कुमति महल बसै तेलनी, नापै कड़ुवा तेल।
दास कबीर दे हेला हो, देखो औरै खेल।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

316

जनम यहि धोखे बीता जात॥टेक॥
जस जल अंचुली में भल सीझै।
छुटि गये प्रान जस तरवर पात॥
चारि पहर धंधा में बीते।
रैन गंवाई सोवत खाट॥
एकै पहर नाम को गहि ले।
नाम न गहौ तो कौने साथ॥
का लै आये का लै जावो।
मन में देख हृदय पछितात॥
जम के दूत पकरि लै जैहैं।
जीभ ऐंठि के मरिहैं लात॥
कहै कबीर अबहि नर चेतो।
यह जियरा कै नहिं बिस्वास॥

317

सब्दै चीन्ह मिलै सो ज्ञानी॥टेक॥
गावत गीत बजावत ताली, दुनिया फिरै भुलानी।
खोटा दाम बांधि के गांठी, खोजै बस्तु हिरानी॥
पोथी बांधि बगल में दाबे, थापै बस्तु बिरानी।
मूल मंत्र कै मरम न जानै, कथनी बहुत बखानी॥
आठो पहर लोभ में भूले, मोह चलै अगवानी।
ये सब भूत प्रेत होइ धावैं, अगिला जनम नसानी॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निरबानी।
हंसा हमरे सब्द महरमी, सो परखै निज बानी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

318

भजो सतनाम आह रे दिवाना॥टेक॥
गुदरी तोरी रंग बिरंगी, धागा अहै पूराना।
वा दरजी से परिचै नाहीं, कैसे पैहौ ठिकाना॥
चाल चलै जस मैगल हाथी, बोली बोलै गुमाना।
ऐसे जम्म पकरि लै जैहै, आखिर नर्क निसाना॥
पानी क सुइंस ऐसन सरि जैहौ, तब ऐहै परवाना।
सिरजनहार बसै घट भीतर, तुम कस भरम भुलाना॥
लौका लौकै बिजुली तड़पै, मेघ उठै घमसाना।
कहै कबीर अमी रस बरसै, पीवत संत सुजाना॥

319

हंसा हो यह देस बिराना॥टेक॥
चहुं दिसि पांति बैठि बगुलन की, काल अहेरत सांझ बिहाना॥
सुर नर मुनि निरंजन देवा, सब मिलि कीन्हा एक बंधना॥
आपु बंधे औरन को बांधे, भवसागर को कीन्ह पयाना॥
काजी भुलना दुइ ठहराना, इनका कलिया लेत जहाना॥
कोइ कोइ हंसा गे सत लोकै, जिन पायो अमर परवाना॥
कहै कबीर और न जैहै, कोटि भांति हो चतुर सयाना॥

320

इक दिन परलै होइ है हंसा, अबहिं सम्हारो हो॥टेक॥
ब्रह्मा बिस्नु जब ना रहै, नहिं सिव कैलासा हो॥
चांद सुरज जब ना रहै, नहिं धरनि अकासा हो॥
जोत निरंजन ना रहै, नहिं भोग भगवाना हो॥
सत बिस्नु मन मूल है, परलय तर आई हो॥
सोरह संख जुग ना रहै, नहिं चौदह लोका हो॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंड पिंड जब नारहै, नहिं यह ब्रह्माण्डा हो॥
कबीर हंसा पुरुष मिले, मोरे और न भावै हो॥
कोटिन परलय टारि कै, तोहि आंच न आवै हो॥

उपदेश

321

बिरहिनी सुनो पिया की बानी॥ टेक॥
सरल सुभाव मूल रहु रहनी, सुनो सब्द स्त्रुत तानी।
सीत संतोष कै बांधो कामरि, होइ रहो मगन दिवानी॥
दुइ फल तोरि मिलो हंसन में, सोंई नाम निसानी।
तत्त भेष धारे जब बिरहिन, तब पिव के मन मानी॥
कुमति जराइ सुमति उजियारी, तब सूरति ठहरानी।
सो हंसा सुख सागर पहुंचे, भरै मुक्त जहं पानी॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निरबानी।
जो या पद की निंदा करिहै, ता की नरक निसानी॥

322

सम्हारो सखी सुरति न फूटै गगरी॥ टेक॥
कोरा घड़ा नई पनिहारिनि, सील संतोष की लागी रसरी॥
इक हाथ करवा दुसर हाथ रसरी, त्रिकुटी महल की डगर पकरी॥
निसु दिन सुरति घड़ा पर राखो, पिया मिलन की जुगति यहि री॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, पिय तोर बसत अमरपुर नगरी॥

323

अंधियरवा में ठाढ़ गोरी का करलू॥ टेक॥
जब लग तेल दिया में बाती, येहि अंजोरवा बिछाय घलतू॥
मन का पलंग संतोष बिछौना, ज्ञान क तकिया लगाय रखतू॥
जरिगा तेल बुझाय गइ बाती, सुरति में मुरति समाय रखतू॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, जोतिया में जोतिया मिलाय रखतू॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

324

बिना भजे सतनाम गहे बिनु, को उतरै भवपारा हो।।टेक।।
पुरइनि एक रहै जल भीतर, जलहिं में करत पुकारा हो।
वा के पत्र नीर नहिं लागै, ढरकि परै जस पारा हो।।
तिरिया एक रहै पतिबरता, पिय का बचन न टारा हो।
आपु तरै औरन को तारै, तारै सकल परिवार हो।।
सूरा एक चढ़े लड़ने को, पाछे पग नहिं धारा हो।
वा के सुरति रहे लड़ने में, प्रेम मगन ललकारा हो।।
नदिया एक अगम्म बहुत है, लख चौरासी धारा हो।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, संत उतरि गे पारा हो।।

325

जागि कै जनि सोवो बहुरिया।।टेक।।
जो बहुरी तुम आइ जगत में, जगत हंसै तुम रोवो बहुरिया।।
जो बहुरी तुम बनिहौ बनाई, अपने हाथ जनि खोवो बहुरिया।।
निसु दिन परी पाप सागर में, लै साधन में धोवों बहुरिया।।
चाखो नाम अमी रस प्याला, तज बिषै रस मोवो बहुरिया।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सत्तनाम जपि लेवो बहुरिया।।

326

सुनि सुमति सयानी, तोहि तन सारी कौन दई।।टेक।।
रंगरेज न चीन्हो, रंगरेज कछू लखि ना परै।।
मिलो मिलो सतगुरु से, धर्मराय नहिं खूंटि गहै।।
जौ लौं अटक न छूटै, तौ लौं भर्म खुवार करी।।
दुबिधा के मारे, सुर नर मुनि बेहाल भये।।
कहि कहि समुझाऊं, तोहि मन गाफिल खबर नहीं।।
भवसागर नदिया, साहिब कबीर गुरु पार करी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

327

सोइ बैरागी जिन दुबिधा खोई।। टेक।।
टोपी तंत सुमिरनी चितवे, सेली अनहद होई।
नाम निरंतर चोलना पहिरे, सो लै सुरति समोई।।
छिमा भाव सहज की चोबी, झोरी ज्ञान की डोरी।
दिल मांगे तो सौदा कीजे, ऊंच नीच ना कोई।।
भुंइ कर आसन अकास को ओढ़न, जोति चंद्रमा सोई।
रैन पौन दुइ करै रखवारी, दृढ़ आसन करि सोई।।
उनमुनि दृष्टि उदास जगत में, भरम कै महल ढहाई।
करि असनान सोहं सागर में, बिमल अनहद धुनि होई।।
एक एक से मिल रैन में, दिल की दुबिधा धोई।
कहै कबीर अमर घर पावै, हंस बिछोह न होई।।

माया

328

साधो बाघिन खाइ गइ लोई।। टेक।।
अंजन नैन दरस चमकावै, हंसि हंसि पारै गारी।
लुभुकि लुभुकि चरै अभि अंतर, खात करेजा काढ़ी।।
नाक धरे मुलना कान धरे काजी, औलिया बछरू पछारी।
छत्र भूपति राम बिडारा, सोखि लीन्ह नर नारी।।
दिन बाघिन चकचौंधी लावै, राति समुंदर सोखी।
ऐसन बाउर नगरि के लोगवा, घर घर बाघिन पोसी।।
इन्द्राजित और ब्रह्मादिक दुनि, सिव मुख बाघिन आई।
गिरि गोबरधन नख पर राख्यो, बाधिन उनहूं मरोरी।।
उतपति परलै दो दिसि बाघिन, कहै कबीर बिचारी।
जो जन सत्त कै भजन करत है, ता से बाघिन न्यारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

329

यह समधिन जग ठगे मजगूत।। टेक।।
यह समधिन के मात पिता नहिं, और धिया ना पूत।।
यह समधिन के गांव गांव नहिं, करता फिरै सगरे अजगूत।।
ठगत ठगत यह सुर पुर खाये, ब्रह्मा बिस्नु महेस को खात।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, ठगरी कै अंत काहु नहिं पात।।

मिश्रित

330

ठगिया हाट लगाये भवसागर तिरवा।। टेक।।
आगे आगे पंडित चालत, पाछे सब दुनियाई।।
कोटिन बेदे स्वान के लागे, मिटे न पूंछ टेढ़ाई।।
इक दुइ होय ताहि समझाओं, सृष्टि गई बौराई।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, को बकि मरै लबराई।।

331

संतो चूनर मोर नई।
पांच तत्त कै बनल चुनरिया, सतगुरु मोहिं दई।।
रात दिवस के ओढ़त पहिरत, मैली अधिक भई।
अपने मन संकोच करत है, किन रंग बोर दई।।
बड़े भाग हैं चूनर के रे, सतगुरु मिले सही।
जुगन जुगन की छुटि मैलाई, चटक से चटक भई।।
साहिब कबीर यह रंग रचो है, संतन कियो सही।
जो यह रंग की जुगत बतावै, प्रेम में लटक रही।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

332

कुमतिया दारुन नितहिं लरै।।टेक।।
सुमति कुमतिया दूनों बहिनी, कुमति देखि कै सुमति डरै।।
औषद न लागे द्वाई न लागै, घूमि घूमि जस बीछु चढ़ै।।
कितना कहौं कहा नहिं मानौ, लाख जीव नित भच्छ करै।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह बिष संत के झारे झारै।।

333

नर तोहिं नाच नचावत माया।
नाम हेत कबहीं नहिं नाचे, जिन यह सिरजल काया।।
सकल बटोर करै बाजीगर, अपनी सुरति नचाया।
नावत माथ फिरो बिषयऩ संग, नाम अलग बिसराया।।
भुगते अपनी करनी करि करि, जो यह जग में आया।
नाम बिसारि यही गति सब की, निसु दिन भरम भुलाया।।
जेहि सुमिरे ते अचल अछय पद, भक्ति अखंडित पाया।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भक्त अमर पद पाया।।

334

सखी हो सुनि लो हमरो ज्ञान।।टेक।।
मात पिता घर जन्म लियो है, नैहर भे अभिमाना।
रैन दिवस पिय संग रहत है, मैं पापिनि नहिं जाना।।
मात पिता घर जन्म बीति गे, आय गवन नगिचाना।
का लै मिलौ पिया अपने से, करिहौं कौन बहाना।।
मानुष जन्म तो बिरथा खोये, सत्तनाम नहिं जाना।
हे सखि मेरो तन मन कांपै, सोई सब्द सुनो काना।।
रोम रोम जा के पद परगासा, ता को निर्मल ज्ञाना।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, करो इस्थिर मन ध्याना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

335

पायो जिन नाम गले कै हरवा।। टेक।।
सतगुरु कुंजी दई महल की,
जब चाहो तब खोल किवरवा।
सतगुरु पठवा अगवनिहरवा,
छोटि मोटि डुलिया चारि कहरवा।।
प्रेम प्रीति की पहिरि चुनरिया,
निहुरि निहुरि नाचौं दरबरिया।
यही मेरो ब्याह यही मेरो गवना,
कहै कबीर बहुरि नहिं अवना।।

336

परदेसिया तू मोर कहीं मानु हो।। टेक।।
पांच सखी तोरे निसु दिन ब्यापै, उनके रूप पहिचान हो।।
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर देवा, घर घर ठाकुर दिवान हो।।
तिरगुन तीन मता है न्यारा, अरुझो सकल जहानं हो।।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, आदि सनेही मोहिं जान हो।।

337

मोर पियवा ज्वान मैं बारी।। टेक।।
चारि पदारथ जगत बीचि में, ता में बरतन हारी।।
मेरी कही पिय एक न मानै, जुग जुग कहि के हारी।।
ऊंची अटरिया कैसे क चढ़बौं, बोलै कोइलिया कारी।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, केहू न बेदन टारी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

338

पहिरो संत सुजान, भजन कै चोलनियां।।टेक।।
गुरु हीरा करो हार, प्रेम के झूलनियां।
कंकन रतन जड़ाव, पचीसो लागे घूंघुरियां।।
पूरन प्रेम अनंद, धुनन की झालरियां।
दही लै निकरी ग्वालिन, सुरत के डागरियां।।
है कोई संत सुजान, करै मोरी बोहनियां।
चलो मोरे रंग महल में, करों तोरी बोहनियां।।
लगि सेज संवारे, छुटि गई तन तापनियां।
मिले दास कबीरा, बहुरि न आवै संसारनियां।।

339

साधो मन कुंजड़ी नीक नियाई।।टेक।।
तन बारी तरकारी करि ले, चित करि ले चौराई।
गुरु शब्द का बैंगन करि ले, तब बनिहै कुंजड़ाई।।
प्रेम के परवर धरो डलिया में, आदि की आदी लाई।
ज्ञान के गजरा दृढ़ कर राखो, गगन में हाट लगाई।।
लौ की लौकी धरो पलरे में, सील कै सेर चढ़ाई।
लेत देत के जो बनि आवै, बहुरि न हाट लगाई।।
मन धोओ दिल जान से प्यारे, निर्गुन बस्तु लखाई।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सिंधु में बुंद समाई।।

340

गुंगवा नसा नियत भो बौरा।।टेक।।
पी के नसा मगन होइ बैठा, तिरथ बरत नहिं दौड़ा।।
खोलि पलक तीन लोके देखा, पौढ़ि रहे जस पौढ़ा।।
बड़े भाग से सतगुरु मिलिगे, घोरि पियाये जस मोहरा।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, गया साध नहिं बहुरा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

341

नाम बिना कस तरिहै, भूला माली।।टेक।।
माटी खोदि के चौरा बांधा, ता पर दूब चढ़ाई।
सो देवता को कूकुर चाटै, सो कस जाग्रत भाई।।
पत्थर पूजे जो हरि मिलते, तौ हम पुजत पहारा।
घर की चक्की कोई न पूजै, जाकै पीसल खाय संसारा।।
भूला माली फूलहि तोरै, फूल पत्र में जीव।
जो देवता को फूल चढ़ाये, सो देवता निरजीव।।
पत्थर काटि के मुरत बनाये, देइ छाती पर लात।
वा देवा में शक्ति जो होती, गढ़नहार को खात।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह सब लोक तमासा।
यह तन जात बिलम ना लागे, जस पानी पड़े बतासा।।

342

अबधू चाल चलै सो प्यारा।।टेक।।
निसु दिन नाम बिदेही सुमिरै, कबहूं न सूरति टारा।।
सुपने नाम न भूलै कबहूं, पलक पलक ब्रत धारा।।
सब साधुन से इक ह्वै रहवे, हिलि मिलि सब्द उचारा।।
कहै कबीर सुनो हो अबधू, सत्त नाम गहि तारा।।

343

कोइ ऐसा देखा सतगुरु संत सिपाही।।टेक।।
ब्रह्म तेज की प्रेम कटारी, धीरज ढाल बनाई।
त्रिकुटी ऊपर ध्यान लगाई, सुरति कमान चढ़ाई।।
सिंगरा सत्त समुझि कै बांधो, तन बंदूक बनाई।
दया प्रेम का अड़बंद बांधो, आतम खोल लगाई।।
सत्त नाम लै उड़ै पलीता, हरदम चढ़त हवाई।
दम के गोला घट भीतर में, भरम के मुरचा ढहाई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सार सब्द का पटा लिखावो, चलत जगीरी पाई।
दया मूल संतोष धिरज लै, सहज काल टरि जाई॥
सील छिमा की पारस पथरी, चित चकमक चमकाई।
पहिले मारे मोह के मुरचा, दुबिधा दूर बहाई॥
अविगत राज बिबेक भये हैं, अजर अमर पद पाई।
ममता मोह क्रोध सब भागे, लायो पकरि मन राई॥
पांच पचीस तीन को बस करि, फेरी नाम दुहाई।
निर्मल पद निरबान गुरु का, संत सुरंग लगाई॥
चुगुल चोर सब पकरि मंगाये, अनहद डंक बजाई।
साहिब कबीर चढ़े गढ़ बंका, निरभय बाज बजाई॥

344

कोइ कहा न मानै हम काहे के कही॥ टेक॥
पूजि आतमा पुजै पषाना, ताते दुनिया जात बही॥
पर जिव मारि आपन जिव पालै, ता कै बदला तुरत चही॥
लख चौरासी जीव जंतु है, ता में रमिता हमहिं रही॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सत्त नाम तुम काहे न गही॥

345

निरंजन धन तेरो परिवार॥ टेक॥
रंग महल में जंग खड़े हैं, हवलदार और सूबेदार।
धूर धूप में साध बिराजे, काहे को करतार॥
बिस्वा ओढ़े खासा मलमल, मोती मूंगा के हार।
पतिब्रता कौ गजी जुरै नहिं, रूखा सूख अहार॥
पाखंडी कौ आदर जग में, साच न मानै लबार।
साचा मानै साध बिबेकी, झूठा मानै गंवार॥
कहै कबीर फकीर पुकारी, सब्द गहो टकसार।
सांचि कहौं जग मारन धावै, झूठा है संसार॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

346

काया नगर में अजब पेच है, बिरले सौदा पाया हो।। टेक।।
ओहि दुकनिया कै तीन सौदागर, पांच पचीस भरि लाया हो।
खांड़ कपूर एक संग लादै, कहु कैसे बिलमाया हो।।
ऊंची दुकनिया के नीची दुवरिया, गाहक फिरि फिरि जाई हो।
चतुर चतुर सब सौदा कीन्हा, मूरख भाव न पाई हो।।
सार सब्द के बने पालरा, सत कै डांड़ी लागी हो।।
सतगुरु समरथ घट सौदागर, जो तौलत बनि आवै हो।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिरले सौदा पाया हो।
आपु तरै जग जिव मुक्तावै, बहुरि न भवजल आवै हो।।

347

पंडित तुम कैसे उत्तम कहाये।। टेक।।
एक जोइनि से चार बरन भे, हाड़ मास जिव गूदा।
सुत परि दूजे नाम धराये, वा को करम न छूटा।।
छेरी खाये भेड़ी खाये, बकरी टीका टाके।
सरब मांस एक है पंडित, गैया काहे बिलगाये।।
कन्या जाति जाति की बेचत, कौने जाति कहाये।
आपन कन्या बेचन लागे, भारी दाम चढ़ाये।।
जहं लगि पाप अहै दुनियां में, सो सब कांध चढ़ाये।
कहै कबीर सुनो हो पंडित, घर चौरासी मा छाये।।

348

पंडित सुनहु मनहिं चित लाई।। टेक।।
जोई सुत कै बन्यो जनेऊ, ता की पाग बनाई।
धोती पहिर के भोजन कीन्हा, पगरी में छूत लगाई।।
रकत मांस को दूध बनो है, चमड़ा धरी दुराई।
सोइ दूध से पुरवा तरिगे, चमड़ा में छूत लगाई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनम लेत उढ़री अबला के, लै मुख छीर पियाई।
जब पंडित तुम भये गियानी, चालत पंथ बड़ाई।।
कहै कबीर सुनो हो पण्डित, नाहक जग में आई।
बिना बिबेक ठौर न कतहूं, बिरथा जनम गंवाई।।

349

पंडित बाद बेद से झूठा।
राम के कहे जगत तरि जाई, खांड़ कहे मुख मीठा।।
पावक कहे पांव जो जरई, जल कहे त्रिषा बुझाई।
भोजन कहे भूख जो भागै, तब दुनिया तरि जाई।।
नर के पास सुवा हरि बोलै, गुरु परताप न जाना।
जो कबही उड़ि जात जंगल में, बहुरि सुरत नहिं आना।।
बिन देखे बिन दरस परस बिन, नाम लिये का होई।
धन के कहे धनी जो होई, निरधन रहै न कोई।।
सांची हेत बिषै माया से, सतगुरु सब्द की हांसी।
कहै कबीर गुरु के बेमुख, बांधो जमपुर जाहीं।।

350

नाम में भेद है साधो भाई।। टेक।।
जो मैं जानूं सांचा देवा, खट्टा मीठा खाई।
मांगि पानी अपने से पीवै, तब मोरे मन भाई।।
ठुक ठुक करिके गढ़े ठठेरा, बार बार तावाई।
वा मूरत के रहो भरोसे, पछिला धरम नसाई।।
ना हम पूजी देवी देवा, ना हम फूल चढ़ाई।
ना हम मूरत धरी सिंघासन, ना हम घंट बजाई।।
कासी में जो प्रान तियागे, सो पत्थ भे भाई।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भरमे जन भकुवाई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।। सत्यनाम ।।

मांसाहार निषेध

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल।
जो नर बकरी खात हैं, ताको कौन हवाल।।1।।

काजी का बेटा मुआ, उर में सालै पीर।
वह साहेब सबका पिता, भला न मानै बीर।।2।।

गला काटि बिस्मिल करै, ते काफिर वेबूझ।
औरों को काफिर कहै, अपना कुफर न सूझ।।3।।

जोर करे और जबह करै, मुख सो कहे हलाल।
साहेब लेखा मांगसी, होगी कौन हबाल।।4।।

कहता हूं कहि जात हूं, कहा जो मान हमार।
जाका गला तुम काटिहो, सो फिर काटे तुम्हार।।5।।

तेई पीर है, जो जाने पर पीर।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर वे पीर।।6।।

मुस्लमान मारे करद सो, हिन्दु मारे तलवार।
कहैं कबीर दोनों मिलि, जैइहैं यम के द्वार।।7।।

हिन्दु के दया नहीं, मेहर तुरुक के नाहिं।
कहैं कबीर दोनों गया, लख चौरासी मांहि।।8।।

हिन्दु व्रत एकादसी साधे, दूध सिंगारा सेती।
अन्न को त्यागे मन को न हटके, पारन करै सगौती।।9।।

दया दिल में राखिये, तूं क्यों निर्दय होय।
साईं के सब जीव हैं, कीड़ी कुंजर दोय।।10।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Thoughts of some renowned persons about Kabir Saheb

- Kabir can be fittingly, described as the Indian Luther of the Fifteenth Century.

  —W.W. Hunter

- Shri Kabir, a *Yug-Avatar* is comparable to himself only. A foremost *Dharam-Guru* Shri Kabir was of god from head to toe.

  —Dr. Hazari Prasad Dwivedi

- The words of two men of the past can still be heard in every village of Hindustan. These are Tulsidas and Kabir the weaver of Banaras (Varanasi).

  —George Grievson

- Behold the merit of the name of God with body did Kabir depart from the world.

  —Saint Ravidas

- The message of Satguru Kabir is one of the best hope for the humanity of large.

  —Gyani Zail Singh (Ex. President of India)

- Shri Kabir delivered his message in such a way that the words on reaching the recipients go deep in their heart and sit there in firmly.

  —Dr. Shyam Sunder Dass

- Shri Kabir was a great singer and *Avdhoot* (perfect renunciated), an advocate of *Advaitavad* (non quality) who placed the Law of the Universe in the heart of man as his highest self. Where alone the soul can discover him.

  —C.H. Wescott

- Glory to Kabir, glory to *Satguru* who hath shown me the ultimate truth.

  —Saint Ravidas

- By means of God's name, Kabir became well known.

  —Sri Adi Granth Saheb

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राचीन साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद, शरत्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा बंकिमचंद्र का प्रामाणिक साहित्य

प्रेमचंद साहित्य

- ❑ प्रेमचंद की 75 लोकप्रिय कहानियां 120/-
- ❑ रंगभूमि 100/-
- ❑ प्रेमाश्रम 100/-
- ❑ कायाकल्प 100/-
- ❑ प्रेमचंद की 21 श्रेष्ठ कहानियां 75/-
- ❑ प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां 75/-
- ❑ प्रेमचंद की 25 अमर कहानियां 75/-
- ❑ गोदान 100/-
- ❑ गबन 80/-
- ❑ सेवासदन 75/-
- ❑ कर्मभूमि 75/-
- ❑ मानसरोवर (खण्ड-1) 80/-
- ❑ मानसरोवर (खण्ड-2) 80/-
- ❑ मानसरोवर (खण्ड-3) 80/-
- ❑ मानसरोवर (खण्ड-4) 80/-
- ❑ मानसरोवर (खण्ड-5) 80/-
- ❑ मानसरोवर (खण्ड-6) 80/-
- ❑ मानसरोवर (खण्ड-7) 80/-
- ❑ मानसरोवर (खण्ड-8) 80/-
- ❑ कफ़न 75/-
- ❑ वरदान 75/-
- ❑ प्रतिज्ञा 75/-
- ❑ निर्मला 75/-
- ❑ मनोरमा 75/-
- ❑ अहंकार 70/-
- ❑ गुल्ली-डंडा 30/-
- ❑ ईदगाह 30/-
- ❑ दो बैलों की कथा 30/-
- ❑ नमक का दारोगा 30/-
- ❑ प्रेमचंद जीवन परिचय 30/-
- ❑ सोजे-वतन 30/-
- ❑ पूस की रात 30/-
- ❑ रामलीला 30/-
- ❑ लॉटरी 30/-
- ❑ कजाकी 30/-
- ❑ घर जमाई 30/-
- ❑ दो भाई 30/-
- ❑ शतरंज के खिलाड़ी 30/-
- ❑ बड़े घर की बेटी 30/-
- ❑ पंच परमेश्वर 30/-
- ❑ बूढ़ी काकी 30/-
- ❑ ज्योति 30/-

रवीन्द्रनाथ टैगोर साहित्य

- ❑ गोरा 100/-
- ❑ गीतांजलि 75/-
- ❑ आंख की किरकिरी 75/-
- ❑ टैगोर की सर्वश्रेष्ठ कहानियां 75/-
- ❑ काबुलीवाला व अन्य कहानियां 75/-
- ❑ कथा कुमुदिनी 75/-
- ❑ टैगोर की अमर कहानियां 75/-
- ❑ बहूरानी 75/-
- ❑ नौका डूबी 75/-
- ❑ टैगोर का बाल साहित्य 50/-

बंकिमचंद्र साहित्य

- ❑ मृणालिनी 75/-
- ❑ कपाल कुण्डला 75/-
- ❑ आनंदमठ 75/-
- ❑ चन्द्रशेखर 75/-
- ❑ विषवृक्ष 75/-
- ❑ रजनी-इंदिरा (टू-इन-वन) 75/-
- ❑ सीताराम-युलांगुरीय (" ") 75/-
- ❑ दुर्गेशनन्दिनी 75/-
- ❑ देवी चौधरानी 75/-
- ❑ कृष्णकांत का वसीयतनामा 75/-

शरत्चंद्र साहित्य

- ❑ शरत्चन्द्र की 35 श्रेष्ठ कहानियां 75/-
- ❑ शरत्चन्द्र की कहानियां 75/-
- ❑ शरत्चन्द्र की अमर कहानियां 75/-
- ❑ चरित्रहीन 75/-
- ❑ श्रीकांत 75/-
- ❑ देवदास (नया संस्करण रंगीन चित्रों सहित) 75/-
- ❑ विराज बहू-देहाती समाज 75/-
- ❑ विप्रदास 75/-
- ❑ लेन-देन 75/-
- ❑ दत्ता 75/-
- ❑ गृहदाह 75/-
- ❑ शुभदा 75/-
- ❑ पथ के दावेदार 75/-
- ❑ शेष प्रश्न 75/-
- ❑ आखिरी परिचय 75/-
- ❑ काशीनाथ-पंडितजी 75/-
- ❑ मंझली दीदी- निष्कृति-जागरण 75/-
- ❑ वैकुंठ का दानपत्र-परिणीता 75/-
- ❑ बड़ी दीदी-स्वामी 75/-
- ❑ ब्राह्मण की बेटी-बिन्दो का लड़का 75/-
- ❑ नवविधान-अरक्षणीया 75/-
- ❑ देवदास-चन्द्रनाथ 75/-

जयशंकर प्रसाद साहित्य

- ❑ जयशंकर प्रसाद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां 100/-
- ❑ कामायनी 100/-
- ❑ कंकाल 100/-
- ❑ तितली 100/-
- ❑ जयशंकर प्रसाद की अमर कहानियां 100/-
- ❑ इरावती 100/-

अन्य विश्वप्रसिद्ध साहित्यकार

- ❑ मां (मैक्सिम गोर्की) 100/-
- ❑ गोर्की की अमर कहानियां 80/-
- ❑ मैक्सिम गोर्की की सर्वश्रेष्ठ कहानियां 80/-
- ❑ शेक्सपियर की कहानियां 60/-
- ❑ अन्तोन चेखव की सर्वश्रेष्ठ कहानियां 80/-
- ❑ चेखव की अमर कहानियां 80/-
- ❑ लखनऊ की नगर वधू 50/-
- ❑ टॉलस्टाय की कहानियां 60/-
- ❑ मेघदूत (कालीदास) 80/-
- ❑ रोम की नारी 50/-
- ❑ ओ. हेनरी की सर्वश्रेष्ठ कहानियां 80/-

वेदप्रकाश शर्मा के उपन्यास

व्हाइट पेपर पर

- ❑ दहकते शहर 30/-
- ❑ वतन 30/-
- ❑ गुलिस्तां खिल उठा 30/-
- ❑ विकास दी ग्रेट 30/-

बाबू देवकीनंदन खत्री के उपन्यास

- ❑ चंद्रकांता 80/-
- ❑ चंद्रकांता संतति-1 80/-
- ❑ चंद्रकांता संतति-2 80/-
- ❑ चंद्रकांता संतति-3 80/-
- ❑ चंद्रकांता संतति-4 80/-
- ❑ चंद्रकांता संतति-5 80/-
- ❑ चंद्रकांता संतति-6 80/-

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी के सभी रेलवे बुक स्टॉल व रोडवेज बुक स्टॉलों से खरीदें न मिलने पर 300/- या अधिक मूल्य की पुस्तकें मनीऑर्डर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ।

राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी-84. Ph. : 27611410, 27612036

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

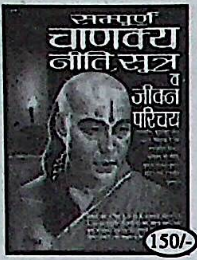

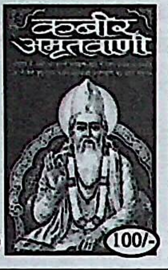

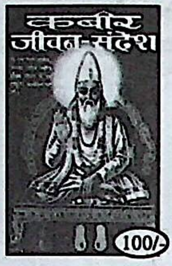

धार्मिक आराधना व स्तुति की पुस्तकें व महान संतों की अमरवाणी

- असली प्राचीन रावण संहिता (सजिल्द) 1000/-
- चाणक्य नीति, सूत्र व जीवन परिचय 150/-
- मनुस्मृति 200/-
- सम्पूर्ण व्रत त्योहार 80/-
- गृहस्थ गीता 80/-
- हनुमान भजनमाला 100/-
- अष्टावक्र गीता 120/-
- भजन अमृतवाणी 80/-
- भजन सागर 100/-
- श्री राधा-कृष्ण लीला रहस्य 100/-
- सूरदास के लोकप्रिय पद 100/-
- मीरा के लोकप्रिय पद 80/-
- रहीम दोहावली 80/-
- तुलसीदास के लोकप्रिय दोहे 80/-
- चाणक्य कथा 60/-
- चाणक्य सूत्र 60/-
- चाणक्य नीति (दो कलर में) 80/-
- विदुर नीति 80/-
- भर्तृहरि शतक 80/-
- सिखों के दस गुरु 100/-
- कबीर अमृतवाणी 100/-
- कबीर जीवन-संदेश 100/-
- कबीर की रमैनी 60/-
- कबीर साखी 100/-
- क्या कहते हैं संत कबीर साहेब 50/-
- अनुराग सागर 100/-
- कबीर बीजक 100/-
- कबीर सबद सागर 100/-
- श्रीकृष्ण और उनकी नीति 60/-
- महान लोगों के अनमोल वचन 95/-
- महापुरुषों की अमर सूक्तियां 80/-
- महाराजा अग्रसेन 100/-
- बाल रामायण (सचित्र) 100/-
- बाल महाभारत (सचित्र) 100/-
- हमारे पूज्य तीर्थ स्थल 120/-
- जागरण की भेंटें 100/-
- श्रीमद् भगवद् गीता(सजिल्द) (रंगीन चित्रों सहित) 120/-
- श्रीदुर्गा सप्तसती (सजिल्द) (दो कलर में) 120/-
- नवदुर्गा साधना (सजिल्द) (दो कलर में) 100/-
- संतों की वाणी 60/-
- बिहारी सतसई 110/-
- मेघदूत (कालीदास) 80/-
- अभिज्ञान शाकुन्तलम (कालीदास) 80/-
- भजन संग्रह 30/-
- अनुभव के मोती 30/-
- प्रेम सागर 30/-
- सुखी जीवन के 1001 टिप्स 30/-
- संतों के अनमोल वचन 30/-
- शिरड़ी साईं दर्शन 30/-
- चलो सालासर धाम (रंगीन चित्रों सहित) 50/-
- हमारे धार्मिक रीति-रिवाज 110/-
- जागरण की भेंटें 100/-
- दृष्टांत सागर 250/-
- सद्गुरु महिमा (सजिल्द) 50/-
- क्या हैं सोलह संस्कार 30/-
- सोलह संस्कार पूजन विधान 30/-
- हनुमान ज्योतिष 30/-
- दृष्टांत सागर 30/-
- शिव उपासना 30/-
- गणेश उपासना 30/-
- हनुमान उपासना 30/-
- भैरव उपासना 30/-
- दुर्गा उपासना 30/-
- गायत्री उपासना 30/-
- काली उपासना 30/-
- शनि उपासना 30/-
- सूर्य उपासना 30/-
- सरस्वती उपासना 30/-
- लक्ष्मी उपासना 30/-
- बगुलामुखी मंत्र साधना 30/-
- कामाख्या तंत्र के गोपनीय रहस्य 30/-
- पृथ्वी में छिपा धन कैसे पाएं? 30/-
- दान और उपवास द्वारा रोग निवारण 30/-
- क्या कहा था संतों ने 30/-
- रत्न, रंग रुद्राक्ष द्वारा भाग्य बदलें 30/-
- रावण संहिता 30/-
- हिन्दुओं के व्रत-त्योहार 30/-
- महापुरुषों की अनमोल सूक्तियां 30/-

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी के सभी रेलवे बुक स्टॉल व रोडवेज बुक स्टॉलों से खरीदें न मिलने पर 300/- या अधिक मूल्य की पुस्तकें मनीऑर्डर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ।

राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84. Ph.: 27611410, 27612036

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर्यटन, धार्मिक व आत्मज्ञान पर आधारित अत्यंत रोचक व ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें

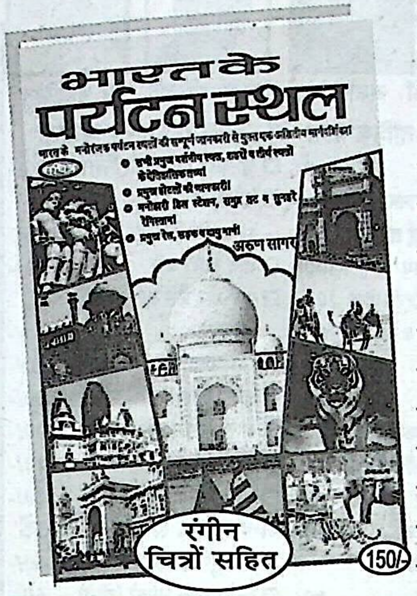

देशाटन से मनुष्य का भरपूर मनोरंजन होता है। कहीं ऊंचे-ऊंचे शैल शिखर मन को लुभाते हैं तो कहीं सुंदर घाटियां। कहीं ऐतिहासिक स्थल देखने को मिलते हैं तो कहीं म्यूजियम, अजायबघर आश्चर्य में डाल देते हैं।

इस पुस्तक में प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्यों व जम्मू-कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत के सभी प्रमुख राज्यों में देखने योग्य पर्यटन स्थलों की पूर्ण जानकारी दी गई है। शहरों व तीर्थ-स्थलों के ऐतिहासिक तथ्य, प्रमुख होटलों की जानकारी, मनोहारी हिल स्टेशन, समुद्र-तट व सुनहरे रेगिस्तान, प्रमुख रेल, सड़क व वायुमार्गों की भी अच्छी जानकारी दी गई है।

इस पुस्तक में लेखक ने हिंदुओं की धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं, रीति-रिवाजों व रस्मों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने का अच्छा प्रयास किया है। पुस्तक को चार खंडों में विभक्त किया गया है। जिज्ञासुओं की जिज्ञासा शांत करने वाली यह पुस्तक आपके अंतर्मन में उठने वाले हर 'क्यों' का जवाब अपने पन्नों में समेटे हुए है।

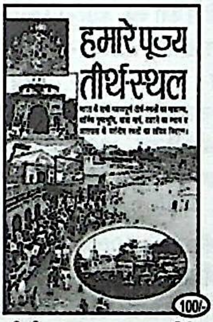

तीर्थ यात्रा का हिंदू संस्कृति तथा हिंदू धर्म में प्रथम स्थान है। तीर्थ स्वयं भी देवता हैं। भारत देवभूमि है, इसके कण-कण में तीर्थ हैं। प्रस्तुत पुस्तक तीर्थ यात्रियों का भरपूर मार्ग दर्शन करेगी तथा सभी श्रद्धालु पाठकों को घर बैठे ही तीर्थ यात्रा का आनंद प्रदान करेगी।

आचार्य प्रमोदश्री का कहना है— आज बच्चे को विकसित करना है तो माता-पिता को स्नेह का समुद्र बनना होगा, अपरिमित धैर्य रखना होगा, उनकी त्रुटियों को सदैव सहकर उनमें प्रेमपूर्ण तरीके से सुधार करना होगा। प्रस्तुत पुस्तक बच्चों का सही मार्गदर्शन करने वाली ज्ञान की कुंजी है।

परम पूज्य आचार्यजी विष्णु के. महाराज श्री की अनमोल वाणी से निकले मधुर वचन हीरों से अनमोल हैं। समय-समय पर दिए गए समारोहों में महाराज श्री के प्रवचनों से निकली यह वचन भागीरथी है, जो आपके जीवन प्रवाह में नौका के समान पार उतारकर ले जाएगी।

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, ए.एच. व्हीलर एंड कम्पनी के रेलवे बुक स्टॉल व रोडवेज बुक स्टॉल से खरीदें, न मिलने पर कोई भी 320/- या अधिक मूल्य की पुस्तकें नीचे लिखे पते पर मनीऑर्डर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें।

राजा पॉकेट बुक्स 330/1 बुराड़ी, दिल्ली-84 फोन : 27611410, 27612036, 27612039

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई तथा तंत्र-मंत्र पर आधारित अत्यंत प्रामाणिक पुस्तकें

डॉ. राधेश्याम मिश्र · डॉ. राधाकृष्ण · पं. केवल आनंद · डॉ. अशोक दत्त · कमल श्रीमाली · पं. शशिमोहन

डॉ. राधेश्याम मिश्र 'परमहंस'

- ☐ असली प्राचीन लाल किताब 600/-
- ☐ कुंडलियों से भविष्य जानें 200/-
- ☐ असली प्राचीन लाल किताब 200/-
- ☐ कालसर्प योग कारण-निवारण 200/-
- ☐ कुंडलियों से दाम्पत्य जानें 200/-
- ☐ शिखर तक पहुंची महिलाएं 200/-
- ☐ राहु-केतु प्रकोप एवं उपचार 100/-
- ☐ भारतीय ज्योतिष के मूल सिद्धांत 120/-
- ☐ ज्योतिष योग दर्पण 100/-
- ☐ फेंग शुई 201 अनुपम सूत्र 100/-
- ☐ फेंग शुई दोष और निवारण 100/-
- ☐ फलित ज्योतिष मार्तण्ड 100/-
- ☐ लाल किताब के अनुभूत टोटके 100/-
- ☐ मांगलिक दोषों का ज्योतिषीय आधार 100/-
- ☐ आधुनिक ज्योतिष रहस्य 200/-
- ☐ यंत्र साधना रहस्य 200/-
- ☐ सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र रहस्य 300/-
- ☐ चमत्कारी यंत्र एलबम(फोर कलर) 50/-
- ☐ कालसर्प दोष निवारण 300/-
- ☐ शनि प्रकोप शांति 200/-

पं. केवल आनंद जोशी

- ☐ कालसर्प योग 80/-
- ☐ नक्षत्रों का मानव-जीवन पर प्रभाव 100/-
- ☐ रत्न पहनें भाग्य बदलें 80/-
- ☐ फलित दर्पण 200/-
- ☐ भृगुसंहिता 200/-
- ☐ ज्योतिष कैसे सीखें 100/-
- ☐ कीरो का हस्तरेखा शास्त्र 80/-
- ☐ असली प्राचीन बड़ा इंद्रजाल 200/-

पं. अशोक दत्त शर्मा

- ☐ ग्रहों के शुभ-अशुभ प्रभाव 60/-
- ☐ शिशु पालन और ज्योतिष योग 60/-
- ☐ सरल वास्तु विज्ञान 100/-
- ☐ वर्ग कुंडलियां साधन और फलित 100/-
- ☐ अष्टवर्ग से भविष्य ज्ञान 100/-

पं. शशिमोहन व तांत्रिक बहल

- ☐ ज्योतिष सीखिए 100/-
- ☐ जन्मकुंडली स्वयं बनाएं 100/-
- ☐ वास्तुशास्त्र फेंग शुई ज्ञान 200/-
- ☐ तंत्र-मंत्र-यंत्र रहस्य 300/-
- ☐ 11000 गंडे-तावीज और टोने-टोटके 200/-
- ☐ तंत्र गुरु के टोटके व उपाय 200/-
- ☐ मंत्र रहस्य 100/-
- ☐ तंत्र और सेक्स 80/-
- ☐ तंत्र-मंत्र की सत्यकथाएं 80/-
- ☐ तंत्र की गोपनीय शक्ति साधना 80/-
- ☐ पुनर्जन्म की सत्य घटनाएं 80/-
- ☐ शाबर मंत्र और यंत्र 60/-
- ☐ मंत्र-तंत्र-यंत्र द्वारा शारीरिक चिकित्सा 80/-
- ☐ तांत्रिक आक्रमणों से कैसे बचें 80/-
- ☐ कुंडलिनी जागरण शक्ति 200/-
- ☐ दुर्लभ शाबर मंत्र 100/-
- ☐ श्री महामृत्युंजय उपासना 100/-
- ☐ असली प्राचीन काली किताब 200/-
- ☐ क्या कहती हैं आपकी रेखाएं और तिल-मस्से 200/-
- ☐ रावण संहिता (सजिल्द) 1000/-

पं. राधाकृष्ण श्रीमाली

- ☐ स्वप्न-शकुन से भविष्य ज्ञान 60/-
- ☐ अंक ज्योतिष और आप 80/-
- ☐ राशि भाव संबंध और शुभ-अशुभ प्रभाव 60/-
- ☐ यंत्र साधना द्वारा सर्वमनोकामना सिद्धि 100/-
- ☐ तंत्र साधना द्वारा सर्वमनोकामना सिद्धि 100/-
- ☐ मंत्रों द्वारा सर्वमनोकामना सिद्धि 100/-

राजेंद्र बंसल

- ☐ धरती का प्रकोप और उपचार 100/-
- ☐ फेंग शुई वास्तु द्वारा सुखदायक आवास प्रवास 100/-
- ☐ फेंगशुई वास्तु द्वारा धनलक्ष्मी प्रवेश 100/-
- ☐ फेंगशुई वास्तु दर्पण के चमत्कार 50/-

पं. कमल राधाकृष्ण श्रीमाली

- ☐ गृह-क्लेश कारण और निवारण 120/-
- ☐ भविष्य जानने की 41 प्राचीन विधियां 120/-
- ☐ शनि बनाए धनी 120/-
- ☐ कब और कैसे लक्ष्मी करेगी वारे न्यारे 120/-
- ☐ रत्न अमृत भी जहर भी 120/-
- ☐ लाल किताब (दो कलर में) 200/-
- ☐ वास्तु अपनाएं सुख-समृद्धि पाएं 300/-
- ☐ पितृदोष क्यों? 120/-
- ☐ कर्ज से मुक्ति 120/-

अन्य प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें

- ☐ जन्मकुण्डली प्रदीप 60/-
- ☐ कीरो आपके सितारे (कीरो) 60/-
- ☐ कीरो का अंक विज्ञान (कीरो) 95/-
- ☐ प्रेमविवाह और हस्तरेखा शास्त्र (कीरो) 50/-
- ☐ प्राचीन सामुद्रिक शास्त्र 100/-
- ☐ सम्पूर्ण स्वप्न विज्ञान 60/-
- ☐ हस्तरेखाओं से अपराधियों को पहचानें (भारती आनंद) 80/-
- ☐ सम्पूर्ण हस्तरेखा शास्त्र (सेंट जर्मेन) 300/-
- ☐ हस्तरेखा शास्त्र के वैज्ञानिक सिद्धांत (विलियम जी बेन्हम) 200/-
- ☐ हस्त, मस्तक व पाद रेखाओं से भविष्य जानें (सी.एम. श्रीवास्तव) 60/-
- ☐ वास्तु नियमानुसार इंटिरयर डिजाइन (प्रेम कुमार शर्मा) 200/-
- ☐ नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियां 80/-
- ☐ नक्श-ए-सुलेमानी 120/-
- ☐ महाशक्तिशाली टोने-टोटके 200/-
- ☐ यंत्र-मंत्र से सम्पूर्ण स्वास्थ्य 80/-
- ☐ देश-विदेश के भूत 80/-
- ☐ नवग्रह सिद्धि (प्रमोद सागर) 120/-

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी के सभी रेलवे बुक स्टॉल व रोडवेज बुक स्टॉलों से खरीदें न मिलने पर 300/- या अधिक मूल्य की पुस्तकें मनीऑर्डर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ।

राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84. Ph. : 27611410, 27612038

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

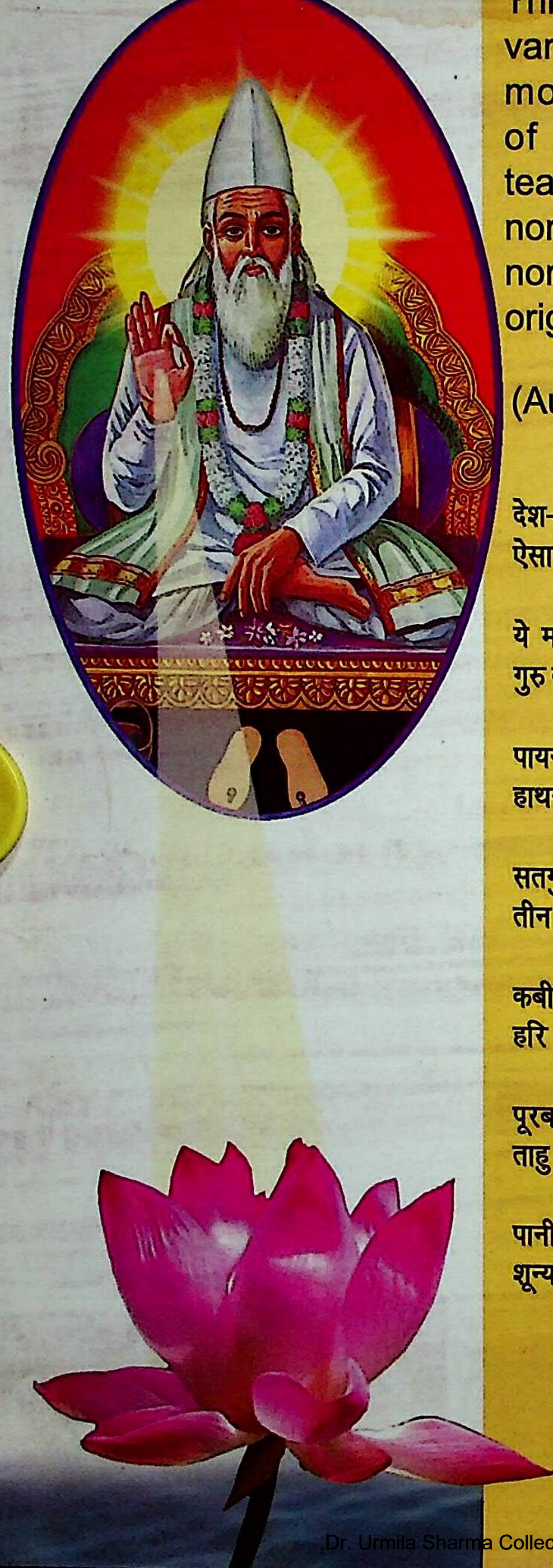

This collection of hymns in various metres contains the most authoritative record of Kabir's teachings. His teachings are neither Vedanta nor Sankhyas, neither Nyaya nor Mimansa, but are based on original thinking of his own.

—Ahmad Shah
(Author of 'The Bijak of Kabir')

देश-विदेशे हौं फिरा, गांव-गांव की खोर।
ऐसा जियरा ना मिला, लेवे फटक पछोर।।

× × ×

ये मरजीवा अमृत पीवा, क्या धंसी मरसी पतार।
गुरु की दया साधु की संगति, निकर आव यही द्वार।।

× × ×

पायन पहुमी नापते, दरिया करते फाल।
हाथन पर्वत तौलते, तेहि धर खायो काल।।

× × ×

सतगुरु सम कोई नहीं, सात दीप नौ खण्ड।
तीन लोक न पाइये, अरु इक-इस ब्रह्माण्ड।।

× × ×

कबीर ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर।।

× × ×

पूरब उगे पश्चिम अथवे, भरवे पवन के फूल।
ताहु को राहु ग्रासे, मानुष काहेको भूल।।

× × ×

पानी पवन संजोय के, रचिया यह उतपात।
शून्यहि सूरति समोय के, कासों कहिये जात।।

राजा पॉकेट बुक्स

ISBN : 81-7604-661-2
9 788176 046619
Price : ₹ 110
A.H.W. TIGER SERIES

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi